रामायण सार

गोस्वामी तुलसीदास जी रचित

सम्पादक

महात्मा सर्वाज्ञानन्द

प्रकाशक

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)

बी-18, भाटी माइन्स रोड, भाटी, महरौली, नई दिल्ली-110074

परमपूज्य परमसन्त सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

* वंदना *

नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं,
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं।
निकाम स्याम सुन्दरं भवाम्बु नाथ मंदरं,
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनम्।।

हे भक्तों पर कृपा करनेवाले, हे कृपालु कोमल स्वभाव वाले मैं आपको प्रणाम करता हूं। आपके चरणकमलों का मैं ध्यान करता हूं जो निष्काम पुरुषों को परमधाम के दाता हैं। हे नाथ! आप नीलकमल के समान उज्जवल सुन्दरता के घर एवं कामनाओं से रहित हैं। खिले कमल के समान नेत्रवाले विभु! आप मद आदि दोषों से मुक्त करते हो।

त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं,
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम्।
भजामि भाव बल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं,
स्वभक्त कल्प पादपं समं सुसेव्यमन्वहम्।।

आप ही केवल एक अद्भुत प्रभु, इच्छा रहित ईश्वर व्यापक, जगत के सनातन गुरु हो! केवल तुरीय अवस्था में दिखाई देने वाले परमेश्वर विभु! मैं आपका प्रेमभाव से भजन करता हूँ आप कुयोगियों के लिए अति दुर्लभ हैं। आपके चरणकमल अपने भक्तों के लिए एवं उत्तम सेवक-भक्तों के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं।

मनोज वैरि वंदितं अजादिदेव सेवितं
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहम्।
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं,
भजे सशक्ति सानुजं शचिपति प्रियानुजम्।।

कामदेव के शत्रु शिव जी आपकी वंदना करते हैं और ब्रह्मादि देवता आपकी सेवा करते हैं। विशुद्ध ज्ञान मयी-आपकी देह विज्ञान स्वरूप है और समस्त दोषों को नष्ट करने वाली है। हे विभु! आप शक्तिपति शिव और लक्ष्मीपति विष्णु के प्यारे हैं, आपको मैं प्रणाम करता हूँ।

त्वदंघ्रिमूल ये नरा भजन्ति हीन मत्सराः,
पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले।
विविक्त वासिनः सदा भजंति मुक्तये मुदा,
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम्।।

जो मानव ईर्षा रहित होकर आपके चरणकमलों का ध्यान करते हैं, वे तर्क-वितर्क रूपी लहरों से परिपूर्ण संसार सागर में नहीं गिरते। एकान्त वासी साधुजन मुक्ति के लिए सांसारिक विषयों से विरक्त होकर इन्द्रिय निग्रह करके आनंदपूर्वक नित्य आप का ध्यान करते हैं वे आपके परमधाम को पाकर सेवा भक्ति में लग जाते हैं।

प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभो प्रमेय वैभवं,
मुनीन्द्र संत रंजनं सुरारि वृन्दं भंजनम्।
अनूप रूप भूपतिं नतोडहमुर्विजा पतिं।,
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्ज भक्ति देहिमे।।

हे विभो! आपकी लम्बी भुजाओं का वैभव अपार है। आप संतों एवं भक्तों को शत्रुओं को नष्ट करके सुख देने वाले हैं। हे विश्वपति आपका रूप परम अनूप है। आपको मैं प्रणाम करता हूं। आप कृपा करके अपने चरण कमलों की भक्ति दीजिए।

अपठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेन ते पदं।
ब्रजंति नात्र संशयं त्वदीय भक्ति देहिमे।।

भूमिका

रामायण का अध्ययन कर रहा था कि एक दिन पढ़ते समय देखा कि-रामायण में प्रसंग अधूरे हैं। बहुत खोजने पर भी नहीं मिले तो श्री ज्वाला प्रसाद मिश्र की क्षेपक सहित टीका वाली रामायण पढ़ी। तब यह समझ में आया कि जिस प्रकार मूल कथा क्षेपक में मिल गई है इसी प्रकार क्षेपक की कथाएं भी मूल में मिल गई होंगी। दैव योग से प्रथम आवृति की भूमिका पढ़ी जिसमें पं. श्री ज्वालाप्रसादजी ने लिखा है

''गुणी और गुण में कोई विशेष भिन्नता नहीं होती, यह राम चरित राम का गुण होने से राम से भिन्न दृष्टि नहीं आता और सबको आनन्द दायक है। इस ग्रन्थ पर बड़े-बड़े-प्रेमी महात्माओं ने तिलक भी रचे हैं और उनमें यथाशक्ति अपनी प्रीति भी झलकाई है। परन्तु अब काल क्रम से इस पुस्तक में क्षेपक भी बहुत से मिश्रित हो गये हैं और उन का भी प्रचार इस के संग होने से ऐसा हो गया है कि जिस रामायण में क्षेपक कथा नहीं होती उसको बहुत ही कम मनुष्य लेना अंगीकार करते हैं। बहुधा रामायण जो तिलक सहित हैं उनमें क्षेपक छोड़कर मुख्य कथा की ही महात्माओं ने टीका रची है। जिसमें क्षेपक न होने से लोग उसे ग्रहण करने में हिचकिचाते हैं। इस कारण मेरा बहुत दिनों से यह विचार था कि तुलसीकृत रामायण के तिलक की रचना इस प्रकार की जाय जिसमें सम्पूर्ण क्षेपक की कथाओं की भी तिलक रचना हो और उस टीका में किसी बात की अपेक्षा न रहे।....इस तिलक को इतना नहीं बढ़ाया है जो मूल अर्थ खो जाय और समझ में न आए। सम्बंधित कथाएं इसमें जहां उचित जाना है वहां मिश्रित कर दी गई हैं और उनका भी तिलक कर दिया गया है। यद्यपि इस के मिलाने पर विद्वान कहेंगे कि मिलाकर इस ग्रन्थ में यह कैसे विदित रहेगा कि कौन सी कविता तुलसीदास जी की है और कौन सी मिलाई गई है। इसके निश्चय करने में बड़ी गड़बड़ी होगी। सो यह दोष भी इसमें से निकाल दिया है।''

वास्तव में मूल से क्षेपक अथवा क्षेपक से मूल को पृथक करना उतना ही असम्भव है कि जितना कोई द्रव पदार्थ गंगाजल में मिलाकर निकालना कठिन है।

बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम चरित मानस की शुद्ध टीका की जाय। आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान की असीम कृपा, जगदम्बे माँ भवानी की दया एवं अति आग्रह करने पर-हृदय सम्राट-प्राण पति श्री भोलेनाथ जी के अनुग्रह से अथवा जिन के सहारे के बिना कार्य सफल नहीं होता उन श्री लक्ष्मी जी, सर्व मंगलों की दाता श्री पार्वती जी का सहारा पाकर अनेकों महापुरूषों की देख रेख में-कार्यकर्ताओं, प्रेमी भक्तों का सहयोग पाकर इस अनुपम सद्ग्रन्थ-''श्री राम चरित मानस'' के सातों काण्डों की भाव प्रबोधिनी भाषा टीका लिखी गई है। जिससे मानव मात्र राम चरित मानस के भाव को समझकर उस आनन्द को प्राप्त करें जिसका वर्णन प्राणेश्वर श्री विश्वनाथ जी ने श्री पार्वती जी के प्रति किया और अपने हृदय में रखा जिससे इसका नाम मानस हुआ। इस मन के-हृदय के सरोवर में गोता लगाए बिना बड़े-बड़े ज्ञानी भक्तों की बुद्धि भी पवित्र नहीं होती एवं संतों की थकान भी दूर नहीं होती।

''राम चरित मानस'' मानव मात्र के लिए भगवान शंकर की एक अनुपम देन है। सारे विश्व की आत्मा जिसे परमात्मा कहते हैं वह एक है। वह विश्वात्मा आकार आदि विकार से रहित-निर्विकार है और वह सर्व शक्तिवान है। शक्ति सहित प्रगट होने से वह निराकार साकार हो गया। कैसे हो गया? क्यों हो गया? और कब हुआ यह विश्वपति श्री स्वयंभु नाथ शंकर जी ने श्री पार्वती जी को-जगदम्बा उमा श्री भवानी जी को अतिशय आग्रह एवं दीन भाव से विनय करने पर बताया है।

भगवान शंकर ने यह भी समझाया है कि वास्तव में विश्वात्मा-विश्वपति परमात्मा विभु जो सारे विश्व में व्यापक हैं वह अपने स्वरूप से परम प्रकाश में निवास करता है जो कि ध्यान करने पर जब प्राण और अपान समान हो जाते हैं और उसमें प्राणी समा जाता है तब दिखाई देता है। इसीलिये शिव जी ने अपने हृदय में प्रसन्न होकर इसका नाम ''राम चरित मानस'' रखा है। उस विश्वपति को हृदय के मानसरोवर में जब विश्वपति शंकरजी ने खोजा तो उसे सारे विश्व में रमा हुआ होने से 'राम' शक्ति का गुण होने से 'चरित' और हृदय में प्राणों की स्थापना करने वाला होने से मानसरोवर-''मानस'' बताया जिसमें हंस निवास करता है। यह ''राम चरित मानस'' शिव जी के मनका, हृदय का सर अर्थात् सरोवर है जिसमें सभी गुण एकत्रित हो जाते हैं।

अतः वह विश्वात्मा-परमात्मा सर्वगुण सम्पन्न है किन्तु ज्ञान के वक्ताओं ने समझाने के लिए अप्रगट रूप को निर्गुण और प्रगट रूप को सगुण कहा है। वह हंस आकार से रहित होने पर निराकार और साकार होने से साकार कहा गया है। किंतु इस रहस्य को न समझकर उस अद्वैत आत्मा को जो सारे विश्व की आत्मा हैद्वैत मान लिया। यहाँ तक कि उसके बार-बार प्रगट होने पर वह जिस-जिस नाम से पुकारा गया उसे अलग-अलग मानकर लोगों में भेदभाव उत्पन्न कर दिया और अज्ञानता के कारण अनेकों मतों की स्थापना की गई। जिसके कारण लोग आपस में लड़ने लगे, द्वेष भावना की जागृति हुई और धर्म अनेको भागों में बंट गया। इन धर्मावलम्बियों ने स्वार्थ एवं अज्ञानता के कारण लोभवश लोगों को आपस में लड़ा कर देश के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। लोग अपने देश व धर्म को भूल गए। यहाँ तक कि अपने कर्त्तव्य को भूल कर कर्म की जाति भेद को न समझकर अहंभववश ऊंच-नीच का भेदभाव प्रगट करके नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं।

जब एक ही परिवार में एक भोजन बनाता है दूसरा बच्चों को पढ़ाता है तीसरा खेत में जाकर किसान का काम करता है तथा सामान को आवश्यकतानुसार खरीदता और बेचता है तो उसे नीच और ऊंच नहीं समझा जाता तो नीच जाति और उच्च जाति का मानना एवं घृणा करना महान मूर्खता है। अज्ञानता के कारण द्वेष भाव का फैलाना ही महान मूर्खता है। अज्ञानता के कारण द्वेष भाव का फैलाना ही महान नीचता है। नीच तो वही है जो प्रभुकी भक्ति न कर के दूसरों को भी प्रभु के दर्शन से वंचित रखता है। मानव मात्र का धर्म तो ईश्वर को अपने हृदय में जानकर उसकी अनुभूति करना है। जो धर्म से विमुख है उसके समान नीच इस संसार में और कौन होगा?

द्वेषाग्नि में जलते हुए प्राणियों को देख करके एवं कलियुग के सभी पापों से मुक्त करने के लिए शिवजी ने इस ''राम चरित मानस'' की जो कि नाम के गुणों का सरोवर है सर्व प्रथम मान सरोवर के निकट रहने वाले तत्वदर्शी-सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी एवं अविनाशी-जीवन मुक्त महामुनि लोमश को प्रदान किया। जिससे मुनि भुसुण्डि जी ने पाया और वे भी जीवन मुक्त-अविनाशी हो गये।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने जीव से लेकर ब्रह्म और पार ब्रह्म की वन्दना करते हुए उनके सभी गुण-दोष, कर्म-स्वभाव, प्रभाव और प्रताप का भी वर्णन किया है। जिससे साधारण व्यक्ति भी पढ़कर या सुनकर समझ सकें। सद्गुरू को, संतों को, दुष्टों को, संत-असंतों को, ऋषि-मुनियों को, देव दनुजों को, साधु के वेष में जो असाधु हैं उन्हें पहचान सकें। तुलसीदास जी कहते हैं

तेहिते कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।।

कुछ गुण और दोषों का इसलिए वर्णन किया है कि बिना जाने न तो गुण ग्रहण किये जा सकते हैं और न अवगुणों का त्याग ही हो सकता है। संत और असन्तों की पहचान उन के गुण एवं दोषों को देखकर ही हो सकती है।

पहचान ने की बड़ी आवश्यकता है क्योंकि पहचाने बिना मानव धोखे में आ जाता है। असाधु को साधु मानकर एवं निगुरों को गुरु मानकर ही मानव यमराज के फंदों में पड़ जाता है। अतः इस ग्रन्थ का पढ़ना बड़े-बड़े ज्ञानीभक्तों के लिए भी परम आवश्यक है। इसमें एक बहुत ही बड़ी विशेषता यह भी है कि प्रभु के वास्तविक नाम जिसके जाने बिना आज के भक्तों का समाज अज्ञानता को प्राप्त होकर अनेकों भागों में बंट चुका है, जिसका जानना मानव मात्र का धर्म है, जिसके जाने बिना बड़े-बड़े विद्वान, पुण्यात्मा, दानी, संयमी, साधु एवं धर्मात्मा होने पर भी अज्ञान वश कलि के मल से ग्रसित हैं, कलियुग के मल को दूर करने वाले प्रभु उस नाम को भी प्रभाव, प्रताप एवं गुण सहित वर्णन करते हुए यह बताया है कि वह नाम क्या है और कलियुग में कैसे प्रगट होता है।

पाठकगण-ज्ञान, भक्ति, सद्गुण एवं सतकर्मों में निपुण होते हुए भी इसका अध्ययन अवश्य करें। यह प्रतिदिन पाठ करने योग्य है किंतु लक्ष्य समझने का होना बहुत ही आवश्यक है। केवल पाठ करने का नहीं क्योंकि विवेक के बिना पढ़ना निष्फल है। जैसा कि-सूर्पणखा ने रावण को चेतावनी देते समय बताया कि

राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा।।
विद्या बिनु विवेक उपजाए। श्रम फल पढे किये अरु पाए।।

नीति के बिना राज्य, धर्म के बिना धन प्राप्त करने से, आनंदकंद सच्चिदानंद सद्गुरुदेव भगवान विष्णु को अर्पण किये बिना सतकर्म करने से और विवेक उत्पन्न किए बिना विद्या पढ़ने से परिणाम में केवल परिश्रम ही हाथ लगता है। नीति के बिना अनीति अर्थात् अधर्म होता है जिसका फल महान दुःख-चौरासी लाख योनियों में भोगना पड़ता है। जो धन-धर्म में न लगा उसे अधर्म कहते हैं और प्रभु को अर्पण किया हुआ तन, मन, धन धर्म आदि उनकी सेवा भक्ति में न लगाकर या उन्हें अर्पण न कर के यदि दान, पुण्य में हवन किया जाय तो उसका फल नरक में भी भोगना पड़ता है।

इस रामचरित मानस में अहंकारी रावण के मद को दमन करने एवं महामुनि नारद का मोह-भ्रम दूर करने का उपाय भी बताया है और ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर हैं जिनके जाने बिना ज्ञानी भक्त भी भ्रम में पड़कर संशय आत्म विनश्यति की गति पाते हैं।

सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों को पढ़कर अहंभाव हो सकता है परन्तु ''राम चरित मानस'' का नित्य नियम पूर्वक अध्ययन करने पर प्रभु की भक्ति एवं निष्काम प्रेम उत्पन्न होता है जिसके बिना कोई भी परमगति नहीं पा सकता। अतः अपने जीवन का बहुमूल्य समय सांसारिक धन्धों से बचाकर इसका अध्ययन अवश्य करें।

यह ''मानस'' कल्पवृक्ष के समान इच्छानुसार अभीष्ट एवं उत्तम फलों का दाता है। किंतु कुछ दम्भियों ने व्यर्थ की बातें इसमें मिलाकर इसके प्रभाव को घटा दिया और कलियुग के श्रोतागण भी उन्हें मनोरंजन के लिए सुनना पसंद करते हैं। जिससे वे वास्तविकता से वंचित रह जाते हैं। अतः उन व्यर्थ की बातों को छोड़कर जो प्रसंग को काटती थी और मूल कथा जो क्षेपक में थीं उन्हें लेकर प्रसंग पूरे किये गये हैं। **निवेदकमहात्मा सर्वाज्ञानन्द**

रामायण सार की
विषय सूची

अयोध्या काण्ड

अरण्यकाण्ड

किष्किंधा काण्ड

सुन्दर काण्ड

लंकाकाण्ड

उत्तर काण्ड

चित्रों की सूची

माँ उमा का प्रश्न

जो मोपर प्रसन्न सुखरासी। जानिय सत्य मोहिं निजदासी।।
जो अर्नीह व्यापक विभु कोई। कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोई।।
पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहि विज्ञान मग्न मुनि ज्ञानी।।
भक्तिज्ञान-विज्ञान विरागा। पुनि सब वर्णहु सहित विभागा।।

भगवान शंकर ने इस रामचरित मानस में परम प्रभु विभु जो सारे विश्व में व्यापक और इच्छा रहित अजन्मा है; भली भाँति समझा कर बताया है कि वह अव्यक्त प्रभु किस तरह कब और क्यों प्रगट होता है। वह निर्गुण ब्रस्म अपनी शक्ति द्वारा-शक्ति सहित कैसे प्रगट होता है और शरीर क्यों धारण करता है।

विज्ञान (Science) के बल पर महामुनि ज्ञानी जन ध्यान में मगन रहते हैं और किस प्रकार उनको वैराज्ञ अर्थात् सांसारिक राग (प्रेम) से रहित होकर विराग-अर्थात् प्रभु से विशेष प्रेम होता है। भक्ति और ज्ञान का विस्तार सहित अलग-अलग भी और एक दूसरे का अलग सम्बन्ध भी समझाकर बताया है। यह ग्रंथ सभी धर्मग्रन्थों में सर्वोपरि है। यह चारों वर्णों के लिए, चारों आश्रमों के लिए और सभी जातियों के लोगों के लिए भी अति उत्तम है भले ही वह बालक हो, किशोर हो, युवा हो और वृद्ध हो।

यह माध्यमिक के छात्रों से लेकर विद्या वाचस्पति एवं महाज्ञानी और विज्ञानियों के लिए तथा भगवत भक्तों के लिए भी परम उपयोगी है। इसमें नर-नारी अथवा वर्गों के लिए सभी प्रकार की सामग्री उपलब्ध है। यह बुद्धि विकास के लिए अद्वितीय ग्रन्थ है। यह कलियुग के अवगुणों को दूर करके एक नये महान पवित्र युग की स्थापना के लिए परम सहयोगी है। अतः लेखक का नम्र निवेदन है कि प्रत्येक मानव इसका अध्ययन करने के लिए इसे प्राप्त अवश्य करें। भले ही इसके लिए भिक्षा या कर्ज भी क्यों ना लेना पड़े।

इसके पढ़ने या सुनने से थोड़ा सा विद्वान भी बहुत बड़ा विद्वान, लेखक, कर्मठ और ज्ञानी, वक्ता, मर्मी सज्जन बनकर परमगति पा सकता है। इसकी भाषा शुद्ध, सरल एवं परम पवित्र है। यह बहुत से आध्यात्मिक-गूढ़ शब्दों का शब्द कोष भी है। इसके पढ़ने या सुनने से मानव पापों से मुक्त होता है''पाप घटहिं हरि के गुण गाए।'' यह ''रामचरित मानस'' राम के गुणों का सरोवर है।

भगवत्-प्रेमियों एवं श्रद्धालु भक्तों की रुचि देखकर ही इस भाव प्रबोधिनि भाषा के परिश्रम को सफल समझूंगा।
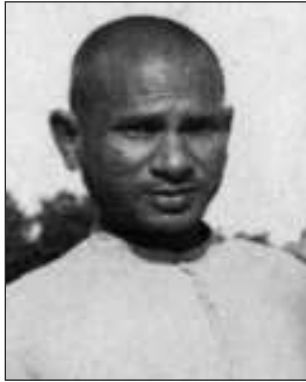
विनीत
महात्मा सर्वाज्ञानन्द

नोट: दानी सज्जन, जो इस रामायण सार का दान करेंगे या विस्तार के लिए दान देकर इसे घर-घर पहुँचाने का कष्ट करेंगे, उनके समान भाग्यशाली दाता दूसरा कौन होगा?

भक्तवत्सल भगवान श्री रामचन्द्र जी

श्री सद्गुरुं वंदे विष्णु विभुं शिवंस्वयंभुवम्

श्री राम चरित मानस

बालकाण्ड

* मंगलाचरण *

कुन्देन्दी वर सुन्दरावति बलौ विज्ञान धामा विभौ
ब्रम्हाम्भोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययं।
श्री मच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्री राम नामा मृतम् ।।१।।

चमेली के पुष्प नील कमल एवं पुर्णचन्द्र के समान उज्जवल प्रकाश युक्त गौरवर्ण अति बलवान एवं विज्ञान के धाम विभु! आप ज्ञानियों के द्वारा वंदित पूजनीय और विज्ञानियों द्वारा, कहे सुने जाते हो एवं ब्रम्ह के ध्यान में प्रगट होते हो। कलियुग के मल को सर्वथा नष्ट कर देने वाले अविनाशी प्रभो! शंकर के मुखारविन्द से गाये जाने वाले एवं हृदय में सदा शोभायमान विभो! आपके नामरूपी अमृत को वही पान कर सकते हैं जो शुभकर्म-सेवाभक्ति करने वाले हैं।

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शान्तिप्रदं
ब्रम्हा शम्भु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेष कारण परं रामाख्यमीशं हरिम् ।।२।।

शान्त, सनातन, अनुपम, निष्पाप, मोक्ष, सरूप, परम शान्ति देने वाले-जिसकी विधाता, शंभु और विष्णु दिन रात सेवा करते हैं। जो ज्ञानियों के परम लक्ष्य, जानने योग्य परम प्रभु विभु हैं। जिनके चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिये एक मात्र नौका हैं जो अंधकार से अत्यन्त परे एवं कर्ता कर्म के कारण हैं। उन राम कहलाने वाले भगवान विष्णु की मैं वंदना करता हूं।

भाव-''यहां विभु के विश्व व्यापी प्रकाश का वर्णन है।''

यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्माादि देवा सुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः।
योगीन्द्र ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं
मायातीतं सुरेशं खल बध निरतं ब्रह्म वृन्दैक देवम्।। ३।।

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व ब्रह्मादि सम्पूर्ण देवता और असुर हैं। जिनकी सत्ता से यह सारा जगत् यद्यपि यह भ्रम है किन्तु रस्सी में सर्प की भाँति सत्य जान पड़ता है। जो योगियों के स्वामी, ज्ञान के द्वारा जानने योग्य और गुणों के भण्डार हैं। अजेय, निगुर्ण, निर्विकार, माया से परे, देवताओं के स्वामी हैं। दुष्ट जनों को नष्ट करने के लिए तत्पर और ब्रह्मवृन्द-शिष्यगणों के एकमात्र परम देव-सद्गुरू विभु हैं।

यं ब्रह्मा वरूणेन्द्र रूद्र मरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेंदैः साङ्ग पद क्रमोपनिषदै र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्तियं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः।। ४।।

जिसकी ब्रह्मा, वरूण, इन्द्रादि देवगण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं। वेद उपनिषद् सामा-पद-क्रम-छन्द सहित जिसका गायन करते हैं और ध्यान अवस्था में योगीजन जिस विभु को गत चित होकर हृदय में देखते हैं। जिसके आदि अन्त को देव और दैत्य कोई भी नहीं जानते उस परम प्रभु विभु को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम है।

मूलं धर्म तरोविवेक जलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैरागयाम्बुज भास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहं
मोहाम्भोधरपूगपाटन विधौ स्वः सम्भवं शंकरं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्री रामभूपप्रियम।।५।।

धर्म रूपी वृक्ष के मूल, विवेक रूपी समुद्र के आनंद दाता-पूर्ण चन्द्रमा एवं वैराग्य रूपी कमल के विकसित करने वाले सूर्य हैं। पापरूपी घोर अंधकार को निश्चय ही मिटाने वाले, तीनों तापों को हरण करके मोहरूपी बादलों के समूह को छिन्न-भिन्न करने की विधि में निपुण हैं। कल्याण स्वरूप शंकर एवं स्वयं प्रगट होने वाले विभु जो ब्रह्मकुल के कलंक को नाश करने वाले-महाराज राम के प्रिय हैं। मैं उस परम प्रभु विभु की वंदना करता हूँ।

वंदे बोधमयं नित्यं गुरूं शंकरं रूपिणम्
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरूं तं नमामि।। ६।।

मैं भवानीपति शंकर जी की वंदना करता हूँ जो ज्ञानमय नित्य सनातन सतगुरू हैं। जिनकी शरण में आने पर टेढ़े चन्द्रमा की भाँति अनिष्ट करने-कराने वालों की भी वंदना की जाती है। जो ब्रह्मानंद और परम सुख के दाता केवल ज्ञान ही की मूर्ति हैं तथा भावनाओं से भी परे त्रिगुणातीत हैं। तीनों गुणों के स्वामी-सद्गुरूदेव को हाथ जोड़कर चरणों में मत्था टेककर मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण सुभांगम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं
बन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैकनाथम्।। ७।।

विश्वाधार, शान्ताकार, जगन्निवास, देवेश; जिनकी नाभि में कमल है और आकाश के सदृश मेघवर्ण सुन्दर बदन है। लक्ष्मीपति-कमलनेत्र सर्वलोकों के ईश्वर, भवभयहारी, योगियों के ध्यान में आने वाले आनन्दकंद-सच्चिदानन्द भगवान विष्णु की मैं वन्दना करता हूँ।

सदाशिव भगवान श्री भोलेशंकर

सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारणौ
वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ।
उद्भव स्थिति संहारकारिर्णी कलेश हारिर्णी
सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं राम वल्लभाम्।।८।।

योगियों के हृदय स्वरूपी मानसरोवर में रमन करने वाले राम-सीता रूपी प्रभु के नाम-गुण समूह-पुण्य रूपी पवित्र वन में विहार करने वाले भवानी-शंकर जहाँ विशुद्ध विज्ञान स्वरूप कवियों के ईश्वर हैं वहां वानरों के स्वामी भगवान राम और श्री सीता जी हैं मैं उनकी वंदना करता हूँ। आदि शक्तिभवानी जो उत्पत्ति, पालन एवं संहार करने वाली हैं तथा उनके सभी श्रेष्ठ कार्यो के करने वाली-लक्ष्मी स्वरूपा राम की प्रिया श्री सीता जी को प्रणाम करता हूँ।

सो **नील सरोरुह श्याम, तरुन बारिज नयन।**
करहु सो मम उर धाम, सदा क्षीर सागर सयन।।१।।
सो **कुन्द इन्दु सम देह, उमा रमण करुणा अयन।**
जाहि दीन पर नेंह, करहु कृपा मर्दन मयन।।२।।

नील कमल के समान श्याम और पूर्ण खिले हुए लाल कमल के समान जिनके नेत्र हैं। जो सदा क्षीरसमुद्र अर्थात् अथाह अमृत रस के सागर में शयन करते हैं। वे सदैव परमप्रकाश में निवास करनेवाले विभु मेरे हृदयाकाश में निवास करें। जिनका चमेली के पुष्प एवं चन्द्रमा के सदृश उज्जवल गौरवर्ण वदन है जिस में आदि शक्ति-जगतमाता भवानी सहित परमेश्वर-भगवान शंकर रमण करते हैं। जो दया के सागर हैं, जिनका दीनों पर स्नेह है, वे कामदेव के मर्दन करने वाले अर्थात्-जिस हंस नाम का स्मरण करने से काम-शक्ति शान्त हो जाती है वे भवानीपति शंकर मुझ पर कृपा करें।

श्री सद्गुरुचरण वंदना

मनुष्य रूप में साक्षात् भगवान विष्णु जो तीनों तापों के हरण करने वाले-कृपा के समुद्र हैं। ऐसे सद्गुरूदेव आनंदकंद के श्रीचरण कमलों की मैं वंदना करता हूँ जिन के वचन से महान् मोह और अज्ञानांधकार का ढेर ऐसे नष्ट हो जाता है जैसे कि सूर्य के उदय होने पर रात्रि का अंधकार नष्ट हो जाता है। ।।दो३।।

मैं वंदना करता हूँ श्रीचरण कमलों के पराग की, जो चरणामृत है और चरणरज की-जो अमृत बूटी का चूर्ण है। चरणामृत के सेवन से प्रेम और नामामृत के सूंघने से उत्तम रूचि उत्पन्न होती है। चरणरज रूपी बूटी के सुंदर अमृतमय चूर्ण के सेवन करने से काम, क्रोध, मद, लोभ, और मोह आदि रोग जो माया के परिवार हैं वे सभी नष्ट हो जाते हैं। वह पवित्र विभूति भगवान शंकर के तन पर शोभायमान है जो मन के दोषों को दूर करके मंगल मोद और ब्रह्मानंद की दाता है। वह भक्त जनों के मन के मल को धोकर तिलक करने पर सभी गुण समूहों को वश में करती है।

श्री सद्गुरू के चरणों के नाखूनों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान हैं जिसका स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। मोह एवं अज्ञानांधकार को नष्ट करने वाला हंस का प्रकाश हृदय में आता है। वह बड़ा ही भाग्यशाली है, उसके हृदय के नेत्र खुल जाते हैं। उसका अज्ञानांधकार एवं माया का मोह तथा संसार रूपी रात्रि के सभी दोष-दुःख मिट जाते हैं और नाम के गुण-मणियों की खान में प्रभु का गुप्त एवं प्रगट-विभुस्वरूप तथा प्रकाश दिखता है।

जिस प्रकार साधक और सिद्धजन आँखों में उत्तम अंजन लगाकर वन-पर्वतों में नाना भाँति के दृश्य एवं पृथ्वी के अन्दर बाहर की सब खानें देखते हैं, उसी प्रकार मैं भी श्री सद्गुरूदेव के श्री चरण कमलों की रज से अपने मन के मैल को धोकर प्रभु के निर्मल यश का वर्णन करता हूं जो हृदय स्थित ध्यान, सुमिरन, अमृतपान, एवं अनहदनाद इन चारों फलों का दाता है। ।।दो-४-५।।

आनंदकंद-सच्चिदानंद श्री सदगुरूदेव भगवान के श्रीचरण कमलों की रज-कोमल, सुन्दर और अमृतमय अंजन है जो नेत्रों के दोषों को दूर करके पवित्र करने वाली है। उस चरणरज रूपी अंजन से नेत्रों को पवित्र करके संसार के सभी दुःखों को नष्ट करने वाले नाम के गुणों का वर्णन करता हूं।

नाम-गुण
नाम-नामी की वंदना में स्वरूप का वर्णन

राम के गुण समूहों का वर्णन ही रामचरित मानस है। यह सभी रामायणों का सार है। यहाँ वंदना के रूप में नाम के गुणों का वर्णन है।

अक्षरों के अर्थ समूह एवं रसों, छन्दों आदि से गाये जाने वाले संगीत को उत्पन्न करने वाली वाणी है। उस वाणी के नायक उमापति महादेव-श्री भोलेनाथ जी की मैं वंदना करता हूं। वे भवानी शंकर श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप है। हंस-नाम के दो अक्षरों में शिव-शक्ति अर्थात भवानी-शंकर विराजमान हैं। अतः हंस-नाम के बिना हृदय स्थित आनन्दकंद भगवान विष्णु को सिद्धजन भी नहीं देख सकते। वे दोनों अक्षर हृदय के नेत्र हैं।

जिस हंस नाम का स्मरण करने से हाथी के बदन जैसे गणेश जी भी सिद्ध हो जाते हैं-वह मुझ पर अनुग्रह करें। जो बुद्धि को उत्पन्न करने वाला सब गुणों का घर है तथा जिस नाम का स्मरण करने से गूंगा वाचाल हो जाता है और पंगु पर्वतों पर चढ़ता है। जिस हंस की कृपा से कलियुग के मल नष्ट हो जाते हैं। ।।दो०-७।।

मैं वन्दना करता हूँ राम के उस नाम की जो अग्नि, सूर्य और चंद्रमा के उत्पत्ति का कारण है। वह हंस नाम विधाता, विष्णु और शिव सहित प्राणों का ज्ञान है अर्थात् उस नाम के ज्ञान से ही विष्णु और शिव विधाता जाने जाते हैं वह नाम गुण नहीं किन्तु गुणों का निधान है, उपमा रहित एवं शिव जी के हृदय में निवास करने वाला हंस है। जिस महामंत्र को शिव जी स्वयं जपते हैं और काशी में मुक्ति के लिए उपदेश करते हैं, जिस नाम की महिमा को जानकर गणेश जी देवताओं में प्रथम पूजे गए, वह उस हंस नाम का ही प्रभाव है।

उस आदि नाम-हंस के प्रताप को जानकर ही कवि-ज्ञानी संतजन उलटा जपकर सिद्ध हो गये। उस नाम की महिमा को सहस्रों नामों के समान शिव जी के सत्संग से जानकर पार्वती जी ने शिव जी के साथ जपा जो सब नामों का बीज मंत्र है। उस नामके प्रेम सहित जपने से पार्वती के हृदय का प्रेम देख शिव जी ने प्रसन्न हो कर जो शिव जी पार्वती के भूषण थे उन्होंने पार्वती को सब का भूषण बना दिया। नाम के प्रभाव को शिव जी भलिभाँति जानते हैं जिससे शिव जी ने विष पिया और उस विष ने अमृत का फल दिया। उस आदि नाम के सिवाय अन्य कोई नाम भी उल्टा नहीं जपा जाता।

तुलसीदास जी कहते हैं कि उत्तम सेवक रूपी धान के लिए प्रभु भक्ति वर्षा ऋतु के समान हैं। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में श्रावण और भादों दो महीनों की जोड़ी है, उसी प्रकार भक्ति में वर्ण माला में नाम के दो अक्षरों की जोड़ी है। ।।दोह।।

ये दोनों अक्षर मधुर और मनोहर हैं तथा भक्तों के हृदय के नेत्र हैं। सुमिरण करने में सुलभ और सभी को सुखदायक हैं। इस लोक में लाभदायक और परलोक का निबाह करने वाले हैं। ये दोनों अक्षर तुलसीदास को एक राम के समान दूसरा लक्ष्मण के समान प्यारे हैं। ये कहने, सुनने और स्मरण करने में अति सुन्दर हैं किन्तु इन अक्षरो के कहने पर प्रभु की प्रीति टूट जाती है। ये जीव को ब्रह्म से मिलाने में सहज और सहयोगी हैं। अतः नाम अकथनीय एवं जानने का विषय है।

नर नारायण के समान सुन्दर भ्राता, जगत के पालन करने तथा भक्तजनों के रक्षक हैं। ये भक्ति रूपी स्त्री के कानों के कर्णफूल हैं, जो जगत के लिए निर्मल सूर्य और चन्द्र के समान हैं। ये दोनों अक्षर स्वाद में अमृत, सन्तोष में सद्गति और पृथ्वी को धारण करने में शेष तथा कच्छप के समान हैं। भक्तों के हृदय-कमल में भौंरे के समान, यशोदा रूपी जीव के लिए कृष्ण-बलराम जैसे प्यारे हैं।

संत तुलसीदास जी कहते हैं कि नाम के दो अक्षरों पर एक छत्र और दूसरा मुकटमणि विराजमान है। छत्रोकार और मुकटमणिकार है। 'हं' शिव और 'स'-शक्ति है। शिव के ऊपर मणि है और शक्ति के ऊपर छत्र विराजमान हैं। ।।दोह।।

समझने में नाम और नामी दोनों सरल हैं, दोनों की आपस में प्रीति है और दोनों ही प्रभु के साथी हैं। नाम और रूप प्रभु की दो ऐसी उपाधी हैं जो दोनों ही अकथ और अनादी हैंजिसको साधना करने वाले साधुजन ही भली-भाँति समझते हैं। जब नाम और रूप दोनों एक ही ईश्वर के हैं तो छोटा-बड़ा कहना अपराध है किन्तु नाम के गुण और रूप के रहस्य को सुनकर साधु जन ही समझेंगे। वे रूप को नाम के आधीन देखेंगे क्योंकि रूप का ज्ञान भी नाम के बिना नहीं होता।

हाथ में रखी वस्तु की पहचान नाम के जाने बिना नहीं होती। रूप के बिना देखे भी यदि नाम के सुमिरण में प्रेम हो जाय तो विशेष प्रेम के कारण रूप भी ध्यान में आ जाता है। नाम और रूप की गति अकथनीय है यह समझने पर ही सुख दाई है, कहने में नहीं आती। अगुण-सगुण, व्यक्त-अव्यक्त इन दोनों रूपों का साक्षी एवं दोनों का बोध कराने वाला नाम ही चतुर दुभाषी है।

सो हे तुलसी! यदि तूं भीतर और बाहर उजाला चाहता है तो नाम मणि के प्रकाशमान दीपक को प्राणों के द्वार की देहली भृकुटी में धारण कर। ।।दो१०।।

संसार रूपी रात्रि की मोह रूपी निद्रा से योगीजन नाम को हृदय में जपकर ही जागते हैं। नाम के विशेष प्रेम और योग से ब्रह्मा ने विश्व की रचना की है। नाम के स्मरण से ही ब्रह्म का अनुभव एवं अनुपम परम सुख की प्राप्ति होती है। वह नाम अकथ है एवं रूप भी रचना से न्यारा है। नाम का निरूपण यत्न करने पर नाम के द्वारा ही हो सकता है जिस प्रकार रत्न से ही उसका मूल्य प्रगट होता है। नाम की गूढ़गति को जानना चाहें तो हृदय में जपकर जान सकते हैं। वह प्रभु सृष्टि से पहले बिना जन्मे ही प्रगट होता है जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है।

अत्यन्त दुःखी भी जब नाम जपता है तो उस के संकट मिटकर वह सुखी हो जाता है। राम के भक्त जगत् में चार प्रकार के हैं और चारों ही उत्तम कर्म करने वाले पाप रहित उदार चित्त हैं। इन बुद्धिमान भक्तों को नाम का ही आधार है। किन्तु नाम के प्रभाव को जानने वाला ज्ञानी भक्त प्रभु को विशेष प्यारा है। जो साधक नाम में लीन होकर लौ लगाए जपते हैं वे अनुलघु और दीर्घ प्राण की गति की समानता पाकर सिद्ध हो जाते हैं।

सकल कामना हीन जे, राम भक्ति रस लीन।
नाम सप्रेम पियूस हृद, तिन्हुं किये मन मीन।।

जो सभी कामनाओं से रहित होकर राम भक्ति के नाम रूपी रसामृत में लीन हैं। जिन्हों ने अपने हृदय में नाम के प्रेम रूपी रस में मन को मछली की भांति डुबोया हुआ है। ।।दो१।।

मैं अपने विश्वास, प्रेम और रुचि के अनुसार कहता हूँ। बृद्ध संत जन ही मुझ दास के हृदय की जानते हैं। जिस प्रकार एक अग्नि लकड़ी में प्रज्वलित है और एक व्यापक है, इसी प्रकार ब्रह्म का विचार है। व्यक्त और अव्यक्त दो ब्रह्म के स्वरूप हैं, ये दोनों ही अकथ, अगाध और अनुपम हैं। मेरे मत से इन दोनों व्यक्त और अव्यक्त रूपों में नाम बड़ा है जिसने अपने बल पर दोनों को अपने वश किया है। वह अव्यक्त प्रभु नाम से ही व्यक्त होता है।

प्रभु के दोनों रूप अगम हैं परन्तु नाम से सुगम हैं। इसलिए मैंने नाम को ब्रह्म और राम से अर्थात् राम के व्यक्त और अव्यक्त रूप से बड़ा कहा है। एक ही ब्रह्म सर्व व्यापक विभु-अविनाशी सत, चेतन और आनन्द स्वरूप है। ऐसा विकार रहित प्रभु सभी के हृदय में है तब भी सब जीव दीन और दुःखी हैं परन्तु भक्त जन प्रेम सहित नाम जपते ही बिना प्रयास के मोद और मंगल में बास करते हैं। नाम के बिना नामी रक्षा नहीं करता।

इस प्रकार व्यापक-सत चित आनंद स्वरूप ब्रह्म से नाम का प्रभाव अत्यन्त बड़ा है। अब मैं अपने विचार से देहधारी राजा दशरथ के पुत्र राम से नाम किस प्रकार बड़ा है कहता हूँ। ।।दो२।।

राम ने भक्तों के हित के लिए मनुष्य देह धारण करके स्वयं कष्ट सहन कर साधुओं को सुखी किया और विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने हेतु सुकेत की पुत्री ताड़िका एवं उसके पुत्र सुबाहु को सेना सहित समाप्त किया। परन्तु नाम भक्तों के दोष, दुख और सब बुरी आशाओं को ऐसे नष्ट कर देता है, जैसे सूर्य रात्रि के अंधकार को। मैं नाम की बड़ाई कहां तक करूं! राम स्वयं भी नाम के गुणों को न गा सके। क्योंकि राम जीवन भर मुनियों की रखा करने में ही लगे रहे। नाम के गुण तो संत जन गाते हैं, राम भक्तों के गुण ही गाते हैं।

राम ने एक तपस्वी अहल्या को तारा परन्तु नाम ने करोड़ों दुष्टों की दुर्मतियों को सुधारा। राम ने शान्ति के लिये स्वयं ही शिव दण्ड-मोहरूपी धनुष को तोड़ा जो सभी दुःखों का मूल है किन्तु नाम के प्रताप से जन्म-मरण का भय ही मिट जाता है। राम ने दण्डक वन को शोभायमान किया किन्तु नाम ने अनेक भक्तों के हृदय पवित्र किए। राम ने त्रेता में प्रगट होकर अनेकों निशाचरों का संहार किया किन्तु हंस नाम ने कलियुग में हंस रूप धारण कर कलि के मलःअज्ञान को ही नष्ट कर दिया।

राम ने शबरी, जटायु तथा उत्तम सेवकों को ही सद्गति दी किन्तु नाम ने अनेकों दुष्टों का उद्धार किया। जिस हंस के गुण वेद में विदित हैं। ''हंस मंत्र समोनास्ति प्राणायाम् परं तपः। ।।दो-१३।।

यह सभी जानते हैं कि राम ने विभीषण और सुग्रीव को शरण दी किन्तु नाम ने अनेकों गरीबों पर दया करके उन्हें अपनी शरण में रखा, जिस हंस का यश वेद में वर्णित है तथा लोक में विद्यमान है। रामने पुल बांधने के लिए परिश्रम थोड़ा नहीं किया बहुत से भालू वानरों का दल एकत्र किया किन्तु हंस नाम के लेने मात्र से मानव भवसागर से पार हो जाते हैं। भक्त शिरोमणि इस पर विचार करें।

अभिमानी रावण को मारकर राम सीता सहित अवधपुरी में पधारे। राम के राज्य एवं राजधानी अयोध्या के गुण-देव, मनुष्य-मुनि गाते हैं। किन्तु सेवक बिना ही परिश्रम के प्रेम से नाम का स्मरण करके बड़े भयंकर मोह दल को जीत लेता है। सेवक नाम के प्रेम में मग्न रहकर अपने सुख में नाम के प्रताप से भ्रमण करता है जिसे स्वप्न में भी चिन्ता नहीं।

इस प्रकार ब्रह्म् और राम से नाम बड़ा है। भगवान शंकर ने करोड़ों नामों में से जिस हंस नाम को अपने हृदय में जाना, वह वर देने वालों को वर देता है। ।।दो१४।।

नाम के प्रसाद से शिव जी के धारण किये अमंगल साज भी सब मंगलमय हो गये। मुनि सुकदेव, सनक आदि संत एवं सिद्ध मुनि योगी इन सभी ने हंस प्रभु के कृपा प्रसाद से ही ब्रह्म सुख भोगा है। महामुनि नारद जी ने नाम के प्रताप को भलीभाँति जाना। जिससे जगत् के प्यारे भगवान विष्णु हैं किन्तु नारद जी को भगवान विष्णु और शिव जी दोनों प्यारे हो गये। नाम जपने से ही प्रहलाद पर प्रभु ने कृपा की जिससे वे भक्तों में शिरोमणि हो गये।

त्रयतापों को हरण करने वाले हंस नाम को ध्रुव ने लगन सहित जपा जिससे अविचल अनूपम धाम पाया। उसी पवित्र नाम को जपकर हनुमान जी ने राम को वश में किया। अजामिल, गज, गणिका आदि भी नाम के प्रभाव से ही मुक्त हुए हैं। अतः चारों युगों में, चारों वेदों में हंस नाम का ही प्रभाव है परन्तु कलियुग में विशेषता यह है कि वह हंस साकार रूप से प्रगट है। भक्त भले ही करोड़ों जन्मों तक नाम जपता रहे परन्तु नामी के बिना दर्शन के परमगति नहीं मिलती। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।

वह हंस-नाम कल्पवृक्ष के रूप में कलियुग में भक्तों को परम सुख देने के लिये निवास करेगा। जिस नाम का सुमिरन करने से तुलसी-तुलसी ''दास'' अर्थात संत हो गये। वह बीज नाम साकार सद्गुरु रूप में प्रगट है। ।।दो॰५।।

भूत भविष्य वर्तमान इन तीनों कालों में, चारों युगों में और तीनों लोकों में नाम जप कर ही जीव शोक से मुक्त हुए हैं। वेद पुराण और सभी संतों का यही मत है कि नाम में प्रेम का होना ही सब शुभ कर्मो का फल है। प्रथम सतयुग में ध्यान से, त्रेता में योग यज्ञ-अर्थात नाम के साधन से तथा द्वापर युग में प्रभु की पूजा से भक्तजन संतुष्ट होते हैं। कलियुग में भक्त मलीन स्वभाव के हैं जिनका मन पापरूपी समुद्र में मछली की भांति गोता लगाता रहता है ऐसे भक्तों के लिए

इस विकराल कलिकाल में हंस नाम कल्पवृक्ष की भाँति मनुष्य रूप में प्रगट होता है जिस नाम के सुमिरन से संसार के सभी जंजाल नष्ट हो जाते हैं। वह हंस नाम कलियुग के भक्तों के लिए बड़ा दयालु और सब का प्राणदाता है। वह परलोक का

चारों युगों में नाम की महिमा

हित करने वाला हंस इस लोक में माता-पिता है। 'हं' पिता के रूप में और 'स' माता के रूप में प्रभु को प्रगट करने के लिए प्रगट होता है। कलियुग में जिन भक्तों को कर्म और भक्ति का ज्ञान नहीं है उनको एकमात्र हंस नाम का ही आधार है। कलियुग में कपट और छल में निधान कालनेमि के समान कपटी साधुओं के लिए उत्तम बुद्धि हनुमान की भाँति नाम समर्थ है।

नरसिंह रूपी नाम हिरण्य कश्यपु रूपी कलियुग को नष्ट करने के लिए कलियुग में प्रगट होगा। जापक जन प्रह्लाद की भाँति दुष्टों को नष्ट करके साधु सन्तों की रक्षा एवं पालना करेंगे। ।।दो॰६।।

जिस नाम को श्रद्धाभाव से, बुरे भाव से, ईर्षा से और आलस्य से जपकर भक्तजन दशों दिशाओं में मंगल प्राप्त करते हैं उस नाम को सुमिरन करते हुए मैं रघुकुल के स्वामी हंस प्रभु को प्रणाम कर के राम के गुणों की गाथा करता हूँ। वे प्रभु मेरी सभी प्रकार से सुधारेंगे जिनकी कृपा करने पर भी नहीं अघाती, जो कृपा करते ही रहते हैं। ऐसे कृपालु प्रभु जो भूतकाल में हुए, जो वर्तमान में हैं तथा भविष्य में होंगे। मैं छल कपट को त्यागकर उन सबको प्रणाम करता हूं।

सच्चे स्वामी सद्गुरु की पहचान

उत्तम स्वामी-सद्गुरुदेव आनंदकंद प्रभु की रीति का वर्णन लोक और वेद में इस प्रकार है कि वे अपने सेवक की विनय को सुनते ही प्रेम को पहचान लेते हैं। यह नियम है कि अमीर, गरीब, ग्रामवासी या नगरवासी, पंडित हो या मूर्ख निंदनीय या यशस्वी ऐसे ही कुकवि और सुकवि सभी नर-नारी अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार अपने राजा की सराहना करते हैं। साधु-महात्मागण उत्तम भक्तजन एवं शील स्वभाव वाले राजागण ये सभी आनन्द कृपालु प्रभु की भक्ति, गति, उत्तम मति देखकर तथा उनके सत्संग-प्रवचन सुनकर अपनी अति सुन्दर वाणी द्वारा सम्मान करेंगे और उनके गुण गायेंगे। भोले भण्डारी जी का तो यह प्राकृतिक ही स्वभाव है कि आनंदकंद प्रभु को सर्व शिरोमणि जानकर उनके प्रेम में प्रसन्न रहते हैं। मुझसे

अधिक ऐसा कौन मंदमति होगा जो ऐसे प्रभु से प्रेम न करे। राम जैसे उत्तम स्वामी और मुझ जैसे कुसेवक यह मेल मिलता तो नहीं था किन्तु प्रभु ने अपनी ओर देखकर मुझ दास का पालन पोषण किया।

मैं प्रभु का सेवक कहाता हूँ यह सभी कहते हैं किन्तु मेरे प्रभु इस उपहास को सहन करते हैं कि सीता पति राम जैसे लक्ष्मीपति विष्णु तो मेरे स्वामी और मुझ तुलसीदास जैसा सेवक। मुझ दुष्ट सेवक की चाहना और प्रेम मेरे कृपालु प्रभु इसी प्रकार रखते हैं जिस प्रकार राम ने पत्थरों की नाव बनाकर जल में तैराया और वानर, भालुओं को बुद्धिमान मंत्री बनाया। ।।दो१७-१८।।

मेरे प्रभु सरल स्वभाव, सर्व शक्तिवान और सब के स्वामी हैं। वे भक्तों की बिगड़ी को सुधारकर एवं भूले भटके हुए जीवों को सदमार्ग पर लगाकर गरीबों पर दया करते हैं। अपनी करनी को समझकर मुझे अपने आप ही डर लग रहा है किन्तु मेरे दयालु प्रभु ने तो स्वपन में भी मेरे अवगुणों पर ध्यान नहीं दिया। आनंदकंद कृपासिंधु प्रभु तो सुनकर देखकर, अपने उत्तम चित्त में धारण कर तथा भली भाँति निरीक्षण कर मेरी भक्ति और बुद्धि की सराहना ही करते हैं। अपने अवगुण कहने से नष्ट होते हैं, हृदय पवित्र होता है और प्रभु अपने भक्त के हृदय के प्रेम को जानकर ही प्रसन्न होते हैं।

प्रभु के हृदय में अपने भक्तों की भूल-चूक याद नहीं रहती किन्तु सैकड़ों बार उनकी, अच्छाई को, हृदय के प्रेम को याद करते हैं जिस राज्य के कारण बाली ने सुग्रीव को मारा फिर उसी राज्य के कारण सुग्रीव ने बाली को मारा और वही करनी विभिषण ने की थी, किन्तु भक्ति के कारण राम ने सपने में भी इस पर विचार नहीं किया। उसी विभीषण का राज्य सभा में भरत जी से मिलते समय सम्मान किया और उनके गुणों का वर्णन किया।

इस प्रकार अपने गुण और दोषों को कहकर, सबको सिर नवाकर मैं रघुकुल के स्वामी हंसवंश के सूर्य परम प्रभु के परम पवित्र गुणों का वर्णन करता हूं। जिसके सुनने से कलियुग के पाप नष्ट होते हैं। ।।दो१९।।

अव्यक्त प्रभु का व्यक्त होना

शारदा, शेष, शिव, विधाता, एवं वेद-शास्त्र-पुरान सभी जिस अनन्त विभु के गुण निरन्तर यह कहकर गान करते हैं कि उस विभु का कल्पान्त में भी अन्त नहीं होता। ।।दो२०।।

प्रभु की प्रभुता को सभी जानते हैं कि उसका नाम अकथ हैं परन्तु कहे बिना भी कोई नहीं रहा। इसका कारण वेद ने यह बताया है कि संतों ने नाम के भजन-ध्यान का प्रभाव बहुत प्रकार से वर्णन किया है। नाम नहीं कहा जाता, उसके गुण गाए जाते हैं। वह एक ही विभु नाम, रूप एवं इच्छा रहित, अजन्मा, परमधाम-सत चेतन आनन्द स्वरूप, विश्व व्यापक, विश्वरूप है। उसी विभुने देह धारण कर अनेक चरित्र किए।

वह कृपालु विभु केवल भक्तों के हित के लिए ही अपनी शरण में आए हुए शरणागतों से प्रेम करता है। जिसकी भक्तों पर बड़ी ममता है, जो दया करके भी क्रोध नहीं करता। सद्गुरू देव-माता-पिता; परमेश्वर हंस आदि शक्ति भवानी के श्री चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ जो दीनों पर दया करके नित्य प्रतिदिन दान देते रहते हैं। जो मुझ सेवक के स्वामी श्री भोलेनाथ-शिव जी मुझ तुलसीदास का बाधा रहित सब प्रकार से हित करते हैं।

जिन्होंने कलियुग को देखकर जगत् के हित के लिए शाबर मंत्र के जाल की रचना की जिस मंत्रराज से सारा विश्व बंधा है। जिसका न अर्थ है न जाप है, जो अक्षरों में भी नहीं मिलता वह शिव जी के प्रताप से ही प्रगट होता है। वे उमापति महादेव मुझ पर प्रसन्न होकर इस कथा को आनन्द और मंगल की मूल बनाएंगे। हृदय में स्मरण करके उनके चरणों की कृपा का प्रसाद पाकर मैं चाव भरे चित्त से नाम के गुणों का वर्णन करता हूं।

मेरी कविता शिव जी की कृपा से ऐसी सुशोभित होगी जैसे तारागणों के साथ पूर्ण चन्द्रमा की चांदनी रात शोभा पाती है। जो इस कथा को प्रेम सहित सावधानी के साथ समझ बूझकर कहेंगे और सुनेंगे, वे कलियुग के पापों से रहित होकर सुन्दर

कल्याण के भागी बनेंगें और वे आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान के चरणों के प्रेमी बन जाएंगे। जैसा भी बुद्धि का बल और विवेक होगा वैसा ही मैं आनंदकंद भगवान विष्णु की प्रेरणा से कहूँगा।

मेरे माता-पिता भवानी शंकर स्वपन में सचमुच ही यदि प्रसन्न हैं तो जो मैं अपनी भाषा में कहता हूँ वह सब प्रभाव सत्य हो। राम चरित मानस-हृदय स्थित मानसरोवर का हंस ज्ञानियों का विज्ञान है और भक्तों के हृदय आकाश में रहने वाला विभु है। जो हृदयाकाश के प्रकाश में स्थित हैं और प्रगट हैं वे मुझ बालक की विनय सुनकर प्रेम सहित मुझ पर कृपा करें। ।।दो-२१-२२।।

रामकथा में नाम एवं सगुण नामी के गुणों का वर्णन

राम कथा बुद्धिमान ज्ञानियों को विश्राम एवं सब भक्तों को आनन्द तथा कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली है। यह कलियुग रूपी सर्प को मारने के लिए मोरनी और विवेक रूपी अग्नि को प्रगट करने के लिए अरनी है। यह कलियुग में सब भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करने के लिए कामधेनु के समान और संत जनों के लिए सुन्दर संजीवनी बूटी है। पृथ्वी पर यही अमृत की गंगा है और जन्म-मरण के भय को नष्ट करके भ्रम रूपी मेंढकों को खाने वाली सर्पनी के समान है।

असुरों को एवं नरक को नष्ट करने में राम कथा सेना के समान है। और साधु समाज रूपी भक्तों के कुल का हित करनेके लिए पार्वती के समान है। संत समाज के लिये दूध के समुद्र के समान लक्ष्मी जैसी है और विश्व का भार उठाने में पृथ्वी के समान है। यह नाम के गुणों की गाथा सभी सिद्धि, सुख और सम्पति को उत्पन्न करने के लिए शिव-पार्वती के समान है। सद्गुणी भगवद् भक्तों के लिये भगवान विष्णु की माता जगदम्बा-जगद्जननी के समान माता है। प्रभु के प्रेम भक्ति और विश्वास की सीमा का छोर अर्थात् अंतिम लक्ष्य है।

राम कथा-मंदाकिनि रूपी हृदया स्थित दिव्य गंगा है और चित्रकूट रूपी तुलसीदास जी का सुन्दर चित है जिसमें सुंदर सुहावना वन ही तुलसीदास जी का प्रेम है। जिसमें सीता और राम रूपी हंस नाम के दो अक्षर भवानी और शंकर के रूप में विहार करते हैं। ।।दो२३।।

रामगुण-राम नाम सुन्दर चिन्तामणि प्रकाश युक्त है जो सन्तों की सद्बुद्धि रूपी स्त्री का सुन्दर सिंगार है। नाम के दो अक्षर जो जगत के मंगल के हेतु, भक्ति, धन, धर्म और परमधाम के दाता हैं। मुक्ति के देने वाले ज्ञान, वैराग्य और योग के सद्गुरू हैं वे संसार के भंयकर रोगों का नाश करने के लिए बुद्धिमान वैद्यों के समान हैं। वे दोनों अक्षर सीता राम रूपी लक्ष्मी-विष्णु के माता-पिता-हंस एवं आदि शक्ति, भवानी-शंकर के समान हैं, जो सम्पूर्ण व्रत नेम और धर्म के बीज हैं।

पाप संताप और शोक को हरने वाले सद्गुरू इस लोक और परलोक के पालक सब के प्यारे हैं। वे विचार रूपी राजा के लिए बलवान मंत्री के समान हैं। लोभ रूपी समुद्र को सोखने के लिए अगस्तमुनि के समान हैं। भक्तजनों के मन रूपी वन के काम क्रोध एवं कलियुग रूपी हाथी को मारने के लिये शेर के बच्चों के समान हैं। वे राम और गुण रूपी राम और सीता जैसे लक्ष्मी-नारायण दोनों शिव जी के परम पूज्य और परम प्यारे अतिथि हैं। वे दरिद्रता रूपी अग्नि के लिये बादल और इच्छानुसार फलों के दाता हैं।

बुरे मार्ग पर चलने वाले कुतर्की, कपटी, दंभी और पाखंडी रूपी कलियुग को जलाने के लिए दोनों अक्षर नाम व रूप ईन्धन और अग्नि के समान हैं। जो कलियुग को नष्ट कर देंगे। ।।दो२४।।

विषयरूपी सर्प का विष उतारने के लिए महामंत्र, मणि के समान हैं जो ललाट में लिखे कठिन से कठिन बुरे लेखों को मिटा देते हैं। अज्ञान रूपी अंधकार को हरण करने के लिए सूर्य और उसकी किरणों के समान तथा सेवक रूपी धान के पालन करने के लिए पानी और बादल के समान है वे राम के गुण दोनों अक्षर संपूर्ण पुण्यों के फल स्वरूप भाग्यों के दाता संत एवं जगत का हित करने के लिये साधु लोग से हैं। मनोइच्छित फल देने के लिए कल्पवृक्ष और सेवा भक्ति करने के लिए भगवान विष्णु और भोलेनाथ श्री शिव जी जैसे सुलभ हैं।

उत्तम कवि के मनरूपी निर्मल आकाश में तारों के समान शोभायमान और भक्ति के लिए तो वे विष्णु और शिव प्रत्यक्ष जीवन धन के समान हैं। सेवकों के मन रूपी मानसरोवर में रहने वाले हंस तथा पवित्र करने में ज्ञान गंगा की तरंगों के समान वे दोनों अक्षर हैं।

यह राम गुण चन्द्रमा की किरणों के समान सभी को सुख देने वाला है। संतो के चित के लिए चकोर की भाँति विशेष हितकारी है। ।।दो२५।।

''रामचरित रामगुण है और नाम या गुण एक ही बात है अतः नाम और नामी रूप और नाम हुआ। यहां प्रभु के नाम व रूप का व्यक्त और अव्यक्त दोनों का वर्णन है।''

सन्त-वंदना

प्रथम पृथ्वी के देवता संतजनों के चरणों की वंदना करता हूँ जो मोह से उत्पन्न होने वाले सभी संशय तथा भ्रम दूर करते हैं। ऐसा संतों का समाज सब गुणों की खान है, उनके चरणों मे उत्तम वाणी से मैं प्रेम सहित प्रणाम करता हूँ। साधु का पवित्र गुण कपास के सदृश है जो निरस होने पर भी जिसका फल पवित्र और गुणयुक्त है। जो स्वयं दुःख को सहन करके भी दूसरों के बदन को ढकता है इसी प्रकार साधु महान दुःखों को सहन कर के भी दूसरों का हित करता है। इसलिए साधु जगत् वंदनीय है और सारे जगत् में उसका यश फैला है।

आनंद और मंगल के देने वाला संतों का समाज जगत् में चलता फिरता तीर्थो का राजा है। संत समाज रूपी प्रयागराज में भगवान की भक्ति का वर्णन दिव्य गंगा की धारा है, स्वरस्वति ब्रह्म का विचार और उसका प्रचार है और कलियुग के मल को नष्ट करने वाली कर्म कथा का वर्णन ही यमुना की धारा है। सत्संग रूपी गंगा की धार में भगवान विष्णु और शंकर की कथा ही त्रिवेणी की धार है जिसके सुनने से मोद मंगल की प्राप्ति होती है।

जो सन्तों का सत्संग सुनकर प्रेम सहित समझेंगे वे ज्ञान गंगा में गोता लगाकर जीवन के चार फल जो इस तन में हैं-ध्यान, सुमिरन, नाद और अमृतपान प्राप्त कर लेंगे। अतः संतों का समाज ही प्रयाग राज है। जिसमें गोता लगाने पर जीव भव बन्धन से मुक्त हो जाता है। ।।दो२६।।

संत समाज रूपी प्रयागराज में हृदय स्थित ईश्वर की अनुभूति ही मानव धर्म है, उसमें अटल विश्वास ही अक्षय बट है। वह संत समाज सभी को सब देशों में, सभी दिनों में सुलभ है जिसकी सेवा करने से तुरन्त ही कलेशों का नाश हो जाता है। यह शुभ कर्म करने वाला संतों का समाज अलौकिक और अकथनीय तीरथराज है। यह उत्तम फलों को देनेवाला है और इस का प्रभाव भी प्रत्यक्ष ही प्रगट है। सत्संगरूपी गंगा में स्नान करने का फल तत्काल ही ऐसा देखने में आता है कि कौवे के स्वभाव वाला मनुष्य कोयल और बगुले के स्वभाव वाला मनुष्य हंस के स्वभाव को ग्रहण करता है।

बाल्मीकि, नारद और अगस्त मुनि ने अपने-अपने मुंह से अपने जीवन का वृतांत कहा कि किस प्रकार से वे सत्संग के द्वारा परमगति को प्राप्त हुए। जल में रहने वाले जीव, पृथ्वी पर रहने वाले जानवर और आकाश में उड़ने वाले पक्षी आदि जितने भी चल और अचल इस संसार में हैं इनमें से जिसने भी सदगति, उत्तम मति कीर्ति और ऐश्वर्य भलाई जिस प्रकार और जहाँ भी पाई है वह केवल सत्संग का ही प्रभाव है। बिना सत्संग के लोक और वेद में भी कोई दूसरा उपाय नहीं है।

यह सुनकर कोई आश्चर्य न करें क्योंकि सत्संग का प्रभाव छिपा नहीं है। बिना सत्संग के विवेक नहीं होता और संत प्रभु की कृपा के बिना नहीं मिलते। संतो की संगति ही मोद और मंगल का मूल है, उनसे जो ज्ञान की प्राप्ति होती है वह ज्ञान, फल और उसके सब साधन फूल हैं। सन्तों की संगति पाकर दुष्ट जन भी सुधर जाते हैं जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है।

श्री सुकदेव जी, सनक आदि संत और नारद आदि जो मुनियों में श्रेष्ठ और विज्ञान में निपुण हैं मैं उन सब के चरणों में पृथ्वी पर सिर टेककर प्रणाम करता हूँ, हे मुनीश्वरो! आप सब मुझे अपना दास जानकर कृपा करें। विधाता, विष्णु, शिव तथा ज्ञानी और विज्ञानियों की वाणी भी साधु की महिमा कहने में सकुचाती है। वह मुझ से कैसे नहीं कही जाती जैसे साक बेचने वाले मणियों के गुण का वर्णन नहीं कर सकते।

मैं संतों की वंदना करता हूँ, संतों का चित सब के लिए समान है उनका जगत में न कोई शत्रु हैं और न कोई मित्र। जिस प्रकार पुष्प दाएं और बाएं दोनों हाथ की अंजली में समान रूप से सुगंध देते हैं उसी प्रकार संतजन भी सब को ज्ञान देते हैं। संतों का हृदय सरल स्वभाव जगत् के हित के लिए है। उनका ऐसा प्रेम जानकर विनय करता हूँ वे कृपा कर के प्रभु के चरणों में प्रेम दें। ।। दो२७-२८ ।।

मैं महाबीर श्री हनुमान जी की वंदना करता हूँ जिन के यश का वर्णन स्वयं राम ने किया है। वानरराज सुग्रीव, रीछराज जामवंत और निशिचरपति विभीषण तथा अंगद आदि जितना भी भक्त शिरोमणियों का समाज है, जिनका मन राम के चरण कमलों में भौंरे की भाँति लुभायमान है, कभी भी साथ नहीं छोड़ता, मैं उन सबके चरण कमलों की वंदना करता हूँ जो प्रभु के निष्काम दास हैं। ''जो कोई भी कर्म अपनी कामना से न करके प्रभु की आज्ञा से ही करते हैं। प्रभु की सेवाभक्ति ही जिनकी इच्छा रहती है।

मैं पवन के अवतार श्री हनुमान जी को प्रणाम करता हूँ जो दुष्टों के समूह रूपी वन को जलाने के लिए अग्नि के समान और ज्ञान के प्यासों के लिए बादल के समान ज्ञान की वर्षा करने वाले हैं। जिनके हृदय रूपी भवन में धनुष बाण धारण किए राम सदा निवास करते हैं।

वाणी और वाणी का अर्थ जल और लहर के समान है। जिस प्रकार स्वर और स्वर से उत्पन्न होने वाले व्यंजन कहने में अलग कहे जाते हैं परन्तु अलग हैं नहीं क्योंकि कोई भी व्यंजन स्वर के बिना उच्चारण नहीं होता। ऐसे ही नाम और नामी में अन्तर नहीं हैं। मैं उनके चरणों की वंदना करता हूँ जिन्हें दुखी प्यारे हैं। ।। दो३० ।।

मैं संतों और असंतों दोनों की वन्दना करता हूं, ये दोनों ही दुःखदाई हैं। इनमें अंतर यह है कि संत जब बिछुड़ते हैं तो प्राण निकलने के समान दुःख देते हैं और जब असंत मिलते हैं तो वे भी महान दुःख देते हैं। ये दोनों जगत् में एक साथ उत्पन्न होते हैं। जैसे जोंक और कमल जल से उत्पन्न होते हैं किंतु इन दोनों का गुण

पृथक-पृथक है। साधु प्रभु से मिलाने में अमृत के समान है और असाधु बातें बनाकर प्रभु से अलग रखने में विष के समान हैं इनके बनाने वाले भी एक ही हैं जिससे ये उत्पन्न होते हैं।

दोनों संत और असंत अच्छी और बुरी अपनी-अपनी करनी के अनुसार यश और अपयश प्राप्त करते हैं इन दोनों विभूतियों का यश संसार गाता है। संत जन चन्द्रमा की भाँति ज्ञान रूपी अमृत प्रदान कर सत्संगरूपी गंगा की धार बहाते हैं और असंतजन कलियुग के अवगुणों में लिप्त रख कर, मोह में भरमा कर व्याध की भाँति विष पिलाते हैं। इनके गुण और अवगुण सब कोई जानते हैं; किंतु जिसे जो भाता है वही अच्छा लगता है। मेरी विनती समझकर, कथा सुनकर कोई दोष नहीं देगा।

भले भलाई ही ग्रहण करते हैं और नीच नीचता को ही ग्रहण करते हैं। अमृत की सराहना ज्ञान देकर अमर करने में और विष की भरमा कर मारने में होती है। ।। दो॰१।।

असंत अवगुण एवं पाप के और संत गुणों के भंडार हैं, ये दोनों ही अपार और अथाह हैं। गुण और दोषों का वर्णन इसलिये किया गया है कि बिना जाने और पहचाने न तो साधु के गुणों को ही ग्रहण कर सकते है न दुष्ट असंतों से एवं उनके अवगुणों से ही बच सकते हैं। भले और बुरे सब विधाता ने ही उत्पन्न किये हैं किन्तु विचार कर वेद ने गुण और दोषों को पृथक कर दिया है। वेद शास्त्र, इतिहास और पुराण कहते हैं कि विधाता का प्रपंच गुण और अवगुणों से रचा गया हैं।

दानव-देव, ऊंच और नीच, अमृत और विष, जीवन और मृत्यु। काशी और मगहर, सुरसरि-देवगंगा और कर्मनाशा नदी, मारवाड़ और मालवा ऐसे ही संत और कसाई। माया और ब्रह्म, जीव और ईश्वर, लक्ष्य-धर्म और अलक्ष्य अधर्म, निर्धन और राजा। स्वर्ग और नर्क, प्रेम और वैराग्य इन सब गुण और दोषों का वेद शास्त्रों ने विभाग कर दिया है।

बंदौ संत असज्जन चरणा। दुख प्रद उभय बीच कछु वरणा।
उपजहिं एक संग जगमाहीं। जलज जोंक जिमि गुण विलगाहीं।।

विधाता ने विश्व को जड़-चेतन और गुण-दोष सहित रचा है। किन्तु संत जन हंस के गुण ग्रहण करते हैं और कलियुग के दोष त्याग देते हैं।

जो प्रभु से अलग होकर जगत में सत्य से वंचित हैं वे भी सुन्दर वेष बना कर वेष के प्रताप से पूजे जाते हैं किन्तु भेद खुल जाने पर उनका निबाह नहीं होगा। जिस प्रकार कालनेमि, रावण और राहु ने छल-कप्ट से साधु वेष बनाकर छल किया। साधु वेष में न होने पर भी प्रभु के साथ रहने पर जामवंत और हनुमान जी का संतों के समान ही सम्मान हुआ। कुसंगति से हानि और सन्तों की संगति से लाभ होता है यह वेदों में, जगत् में विदित है और सभी जानते हैं।

तोता और मैना साधु की संगति से राम का सुमिरन करते हैं और असाधु की संगति से गाली देते हैं। धूल पवन के साथ आकाश में उड़ जाती हैं किन्तु वही धूल जब नीचे जल में मिलती हैं तो कीच बन जाती है। वही धूल जब धूम्र की संगति से स्याही बनती है तो संतों की संगति से पुराण लिखती हैं। वही जल जिस की संगति से धूल कीच बन जाती है किन्तु जब वह जल अग्नि और पवन का संग पाता है तो बादल बनकर जगत में जीवन का दाता बन जाता है।

ग्रह, औषध, वस्त्र, जल और वायु ये सब कुसंग और सुसंग पाकर संसार में भले और बुरे हो जाते हैं। चतुर और विवेकशील पुरुष ही इस बात को जान पाते हैं। महीने के दो पखवाड़ों में उजाला और अंधेरा एक समान ही रहता है परन्तु विधाता ने इनके नाम में भेद कर दिया है। जगत् में बढ़ते हुए चन्द्रमा की रात्रि को पोषक और घटते हुए चन्द्रमा की रात्रि को शोषक समझकर यश और अपयश दिया है। ।।दो३३-३४।।

ऐसा विवेक ज्ञानदाता विधाता जब देता है तब दोषों को त्यागकर मन गुणों में लगता है। समयानुसार स्वभाव और कर्मों के प्रभाव से प्रकृति के वश हुए भले पुरुष भी भलाई से वंचित रह जाते हैं परन्तु भगवान विष्णु के संत जन अपनी संगति से उनके दुख और दोषों को मिटाकर उन्हें सुधार कर अपनी युक्ति द्वारा निर्मल यश देते हैं। दैव के संयोग से यदि उत्तम भक्त जन भी कुसंगति में पड़ जाते हैं तो वे

अपने गुणों को इस प्रकार नहीं छोड़ते जिस प्रकार सांप के साथ रहने पर भी मणि अपने गुण को नहीं छोड़ती।

जो विकराल कलिकाल में कलियुग के रूप में जन्मे हैं, जिनका कर्तव्य कौए के समान और वेष हंस जैसा बनाए हैं वे सत्य मार्ग को छोड़कर एवं वेद की विधि को त्यागकर कुमार्ग पर चलते हैं। जो कपट की मूर्ति, कलियुग के अवतार एवं पापों के भण्डार हैं। जो प्रभु से विमुख रहकर भी भक्त कहलाते हैं और धन के लोभ से काम क्रोध के गुलाम हैं। उन सबसे पहले मेरी ही गिनती है जो धर्म ध्वजा उठाने में लगा है।

जगत् में जड़बुद्धि और चेतन बुद्धि के जितने भी जीव हैं उन सब में प्रभु को रमा हुआ जानकर उनके चरण कमलों में दोनों हाथ जोड़कर, प्रणाम करता हूं। मेरा भाग्य बहुत छोटा है और अभिलाषा बहुत बड़ी है किन्तु मुझे यह विश्वास है कि इस कथा को सुनकर सब ही संतजन सुख पाएंगे और जो असंत है वे दुष्ट जन हंसी उड़ायेंगे। ।।दो३५-३६।।

जिनका प्रभु के चरणों में न तो प्रेम ही है और न जिनकी समझ ही अच्छी है उन्हें यह कथा सुनने में फीकी ही लगेगी। त्रयतापहारी ज्ञानदाता विष्णु एवं शिव जी के चरणों में जिनका प्रेम है, इनके प्रति जिनकी बुद्धि में कुतर्क नहीं है उन्हें यह कथा मीठी लगेगी। जो हृदय में इसे भक्तिमणि से भूषित जानेंगे वे संत सुन्दर वाणी से सराहना करेंगे, जो न तो कविता के रसिक हैं और न जिनका प्रभु के चरणों में प्रेम ही है उन के लिए यह कथा हास्य रस का काम देगी।

अब मैं सरल स्वभाव से दुष्टों की वन्दना करता हूं जो बिना ही प्रयोजन अपना हित करने वाले के विरुद्ध आचरण करते हैं। दूसरों के हित की हानि ही जिनकी दृष्टि में लाभ है, जिनको दूसरों के उजड़ने में हर्ष और बसने में दुःख होता है। जो सद्गुरुदेव विष्णु के और भोलनाथ शिव जी के यश रूपी चन्द्रमा के लिए राहु के समान हैं और दूसरों की बुराई करने में सहस्रबाहु के समान योद्धा हैं। जो दूसरों में दोषों को नेत्रों से सहस्रबार देखते हैं और दूसरों के हित के लिए ऐसे हैं जैसे घृत के लिए मक्खी।

अब मैं फिर भी उन दुष्टों की इन्द्र के समान वंदना करता हूँ। इन्द्र देवलोक के राज्य के मद में मस्त रहता था किन्तु दुष्ट सदा मदिरा पान करने में ही अपना हित समझते हैं। जिन्हें कठोर वन बज्र जैसे प्यारे लगते हैं और दूसरों में सहस्रों नेत्रों से दोष देखते हैं। ये दूसरों का कार्य नष्ट करने के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर कर देते हैं जिस प्रकार ओले खेती को नष्ट करके स्वयं भी नष्ट हो जाते हैं। जो दुष्ट जन हैं वे भी संतों का संग पाकर अच्छा काम करने लग जाते हैं। परन्तु इन असन्तों के नीच स्वभाव जो अटल हैं वे नहीं मिटते।

असंतों का यह स्वभाव है कि वे उदासी, वैरागी, संन्यासी या उनका कोई मित्र या शत्रु हो उन सबका हित सुनकर जलते हैं। यह उनकी रीति है ऐसा जानकर, दोनों हाथ जोड़कर प्रेम सहित विनय करता हूं। ।।दो३७।।

मैंने अपनी ओर से विनती की है परन्तु वे अपनी ओर से नहीं चुकेंगे। कौए को चाहे कितने ही प्यार से क्यों न पाला जाय परन्तु वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। मैं प्रभु के नाम के गुण गाना चाहता हूँ किन्तु मेरी बुद्धि बहुत छोटी है और नाम के गुण अथाह हैं। मुझे अपनी बुद्धि के बल का भरोसा नहीं है इसलिए सब से विनय करता हूँ।

जीवों के चार उत्पत्ति स्थान हैं और चौरासी लाख जातियां हैं जो आकाश, जल और पृथ्वी में रहते हैं। उन सब में एक हंस रूप से भवानी-शंकर, लक्ष्मी पति विष्णु, उमापति भोलेनाथ-शिव एवं सीता-राम को व्यापक जानकर जो विष्णु अवतार हैं तथा विभु के अनेकों रूप हैं उन सभी को दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। वे सब मिलकर छल कपट छोड़कर मुझे अपना छोटा-सा दास जानकर कृपा करें। मुझे अपनी बुद्धि और बल का भरोसा नहीं है इसलिए सब से विनय करता हूँ।

मैं न तो कवि हूँ और न चतुर ही कहाता हूँ, मैं तो अपने विचार से नाम के गुण गाता हूं। भाँति-भाँति के अक्षर, अर्थ और अलंकार आदि दोष, अनेक प्रकार की छन्द रचना, भावों, रसों के अपार भेद और कविता के भाँति-भाँति के गुण-दोष होते हैं। इनमें से काव्य सम्बन्धी एक भी बात का मुझे ज्ञान नहीं है। यह मैं कोरे कागद पर लिखकर सत्य कहता हूं।

मेरी रचना कविता के सब गुणों से रहित हैं, इसमें जगत प्रसिद्ध एक ही गुण है। जिसे विचार कर उत्तम बुद्धि-ज्ञानीजन जिन का विवेक निर्मल है सुनेंगे। ।।दो॰८।।

राम चरित मानस में राम के उदार नाम का वर्णन है जो कलि के मल को नष्ट करके जगत् को पावन करता है और वेद-शास्त्र, पुराणों का सार है। यह सब मंगलों का वर और अमंगलों को नष्ट करता है जिस हंस नाम को श्री पार्वती सहित भगवान शिव सदा जपते हैं।

शिव पार्वती संवाद

परम रमणीक एक सुन्दर कैलाश पर्वत है, जहाँ शिव-पार्वती भक्तों के सहित निवास करते हैं। उस कैलाश पर्वत पर एक विशाल बरगद का वृक्ष है जो नित्य नवीन और सब समय सुन्दर हरा भरा रहता है। वहाँ तीनों प्रकार की शीतल, मंद और सुगंध वायु बहती है। उस वृक्ष की शीतल छाया अति सुन्दर है जिसे वेदों ने शिव विश्राम विटप कहकर गाया है। जो भगवान विष्णु और शिव से विमुख हैं और धर्म में जिनका प्रेम नहीं है, वे वहां स्वप्न में भी नहीं जा सकते।

एक बार शिव जी उस वृक्ष के नीचे गये और उसे देखकर उनके हृदय में बहुत आनंद हुआ। अपने हाथ से बाघम्बर बिछाकर कृपालु शिव जी वहां बैठ गए, जिनका चमेली के फूल एवं चन्द्रमा जैसा गौर वदन और लम्बी भुजाएं थीं। उनके मुनियों जैसे वस्त्र, लाल चरण और नखों की ज्योति भक्तों के हृदय का अंधकार हरती थीं।

उनके सिर की जटाओं पर मुकुट शोभायमान है, मस्तक पर दिव्य गंगा इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना-तिलक की भाँति विराजमान हैं और कमल के समान विशाल नेत्र सुंदरता के भंडार है। उनका कंठ नीला और मस्तक उगते हुए चंद्रमा की भाँति सुशोभित है।

काम शक्ति को जीतने वाले शिव जी वहाँ बैठे हुए ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो शान्त रस ही शरीर धारण किये बैठा हो। शुभ अवसर जानकर पार्वती जी

उन के पास गईं। अपनी प्यारी पत्नी जान कर शिव जी ने अति आदर किया और अपनी बाईं ओर आसन दिया। पार्वती प्रसन्न होकर जैसे ही बैठीं कि उन्हें पिछले जन्म की याद आ गई।

जो सारे विश्व का हित करने वाली कथा है वही श्री पार्वती जी पूछना चाहती हैं। स्वामी के हृदय में अधिक प्रेम देखकर श्री पार्वती जी ने अति प्रसन्न हो प्यारे और सुन्दरतम वचन बोले-हे नाथ! आप सारे विश्व के स्वामी हैं, आपकी महिमा तीनों लोकों में विख्यात हैं। चर, अचर, नाग, मनुष्य और सभी भक्तगण आप के श्रीचरण कमलों की सेवा करते हैं।

श्री पार्वती जी के प्रश्न

हे प्रभु! आप सर्वज्ञ, कल्याण सरूप, सकल कलाओं एवं गुणों के निधान हैं। आप योग, ज्ञान और वैराग्य के भण्डार हैं। आपका हंस नाम शरणागतों के लिए कल्पवृक्ष हैं।

हे प्रभु! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी सच्ची दासी जानिए। जिसका घर कल्पवृक्ष के नीचे हो तो वह दरिद्र जनित दुःख क्यों सहेगा? सो हे प्रभु! हृदय में ऐसा विचार कर मेरी बुद्धि के भारी भ्रम को दूर कीजिए। मुझे अनजान समझ कर मुझ पर क्रोध न कीजिए। जिस प्रकार भी भ्रम दूर हो सो वही कीजिए।

हे प्रभु! जो परमार्थ तत्त्व के ज्ञाता और वक्ता मुनि हैं वे राम को अजन्मा-जनम रहित, अनादि ब्रह्म कहते हैं और फिर आप भी राम के नाम को दिन रात जपते हो। तो वह राम अजन्मा, निर्गुण, अगोचर-दिखाई न देने वाला जिसकी गति अलख है वह राम ब्रह्म् है या वह राम अयोध्या के राजा का पुत्र है? हे जगत् के राजाओं के भूषण, भक्तों के स्वामी! राम के गुणों की पवित्र कथा कहिए।

मैं पृथ्वी पर सिर टेक कर आपके चरण कमलों की बंदना करती हूँ और हाथ जोड़कर विनती करती हूँ। आप वेद के सिद्धान्तों का जो सार है उस प्रभु के निर्मल यश का वर्णन कीजिए।

जो इच्छा रहित, अनादि, विश्वव्यापक विभु कोई है तो हे नाथ! मुझे समझाकर कहिए। यद्यपि मैं आपकी विवाहिता होने के नाते अधिकारी नहीं हूँ किंतु मन कर्म और वचन से मैं आपकी दासी हूँ। जब कोई जिज्ञासु दीनता एवं नम्रता के साथ पूछता है तो साधु अधिकारी पाकर गूढ़तत्त्व को नहीं छिपाते। हे प्रभु! भक्तों के स्वामी! मैं अति दीनता से नम्रता पूर्वक पूछती हूँ दया करके राम कथा सुनाइए।

हे प्रभु! प्रथम विचार कर यह बताइए कि निर्गुण ब्रह्म जो सारे विश्व में व्यापक है उस विभु ने किस कारण से सगुण देह धारण की? तब राम के अवतार की कथा एवं बाल चरित कहिये। और हे नाथ! राम ने बन में जाकर जो चरित किये और रावण को मारा सो कहिए। हे प्रभु! राम ने राज सिंहासन पर बैठकर जो लीला की थीं वह सब कहिए।

शिव जी द्वारा राम के स्वरूप का वर्णन

हे दयानिधि प्रभु! राम ने जो अदभुत लीलाएं कीं वह सब कहिए! वे प्रजा सहित किस प्रकार अपने धाम को गये।

हे प्रभु! आप उस तत्त्व को भी समझाकर कहिए जिसकी अनुभूति में ज्ञानी संत-मुनिगण मग्न रहते हैं और भक्ति-ज्ञान का, विज्ञान तथा वैराग्य का भी विभाग सहित वर्णन कीजिए। हे नाथ! विमल विवेकपूर्ण और जितने भी अनेकों राम के रहस्य हैं वे भी कहिए! हे दयालु प्रभु! जो पूछा न हो वह भी छिपाकर न रखिए।

आप तीनों लोकों के गुरु हैं ऐसा वेद कहते हैं, दूसरे अज्ञानी मनुष्य इस रहस्य को क्या जानें। पार्वती जी के सरल, सुन्दर और छल रहित प्रश्न शिवजी को अति प्यारे लगे। उनके हृदय में राम का स्वरूप आ गया, नाम के प्रेम में मग्न हो गये और नेत्रों में आंसू भर आये। प्रभु के गुणों को याद कर ध्यान के परमानन्द में अत्यंत सुख पाया।

भगवान शिव दो घड़ी तक ध्यान में मग्न रहे। तब उन्होंने बाहर देखा और प्रसन्न होकर प्रभु के रूप गुण वर्णन करने लगे।

जिसके जाने बिना झूठ भी सत्य जान पड़ता है जैसे रस्सी को देखकर बिना जाने सर्प का भ्रम हो जाता है। जिसे जान लेने पर जगत् उसी प्रकार से खो जाता है जैसे जागने पर स्वप्न का भ्रम चला जाता है। मैं राम के उसी रूप की वंदना करता हूं, जिसका नाम जपने से सभी वस्तु सुलभ और सभी कार्य सफल हो जाते हैं। राम सर्व व्यापक हैं यह जगत् जानता है, वह ईश्वरों को ईश्वर परम आनंद स्वरूप सनातन विभु है।

प्रभु को प्रणाम करके आनंद मग्न होकर शिव जी अमृत के समान वचन बोले हे पार्वती! तुम धन्य हो! धन्य हो! तुम्हारे समान कोई भी उपकारी नहीं है। तुमने वह प्रसंग पूछा है जो रामकथा पवित्र गंगा के समान सम्पूर्ण जगत् को पवित्र करती है। तुम प्रभु के चरणों में प्रेम रखती हो, तुमने प्रश्न जगत् के कल्याण के लिये किया है।

हे पार्वती! मेरे विचार से तो तुम्हारे मन में स्वप्न में भी शोक, मोह, भ्रम और सन्देह कुछ भी नहीं है।

तब भी तुमने वही शंका की है जिसके कहने और सुनने से सबका कल्याण होता है। जिन्होंने अपने कानों से भगवान विष्णु की कथा नहीं सुनी उनके कानों के छिद्र सर्प के बिल के समान हैं और नेत्रों से संतों के दर्शन नहीं किये उनके नेत्र मोर के पंख समझो। वे सिर भी कड़वी तुम्बी के समान है जो सद्गुरुदेव आनंदकंद श्री सच्चिदानन्द भगवान विष्णु के चरण कमलों में नहीं झुकते।

जिन्होंने आनंदकंद भगवान विष्णु की भक्ति को हृदय में स्थान नहीं दिया, वे प्राणी जीते हुए भी मरे के समान हैं। जो जीभ राम के नाम का गुणगान नहीं करती वह मेढ़क की जीभ के समान है। वह हृदय बज्र के समान कठोर और निष्ठुर है जो प्रभु के गुण सुनकर हर्षित नहीं होता। हे पार्वती सुनो! प्रभु की लीला कैसी अद्‌भुत है जो भक्तों के कल्याण करने वाली है और दुष्ट जनों को विशेष रूप से मोहित करती है फिर उनमें शीलता नहीं रहती।

राम कथा कामधेनु के समान सुखों की दाता है, संत सभा कथामृत पिलाने में देव लोक के समान है ऐसा जानकर कौन नहीं सुनेगा?

कलियुग रूपी वृक्ष को काटने के लिए "रामकथा" कुल्हाड़ी के समान है। हे, पार्वती! जिस प्रकार राम का अन्त नहीं है, प्रतियुग में राम का अवतार होता है। उसी प्रकार उनकी कथा एवं कीर्तियों का भी अन्त नहीं है। तब भी मैं अपने ध्यान के अनुसार जैसी मेरी मति है तुम्हारे अति प्रेम को देखकर कहूँगा। हे पार्वती! तुम्हारा प्रश्न स्वभाविक ही सुंदर, सुखदायक और संत सम्मत है। तुम्हारे प्रश्न मुझे बहुत ही अच्छे लगे हैं।

सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है ऐसा वेद, पुराण, संत-मुनि एवं ज्ञानी भक्तजन कहते हैं। जो न तो गुण ही है और न माया से उत्पन्न होने वाला रूप ही है। जो आँखों से देखा नहीं जाता और अजन्मा है जिसे योगीजन ध्यान में देखते हैं वह व्यापक विभु भक्तों के प्रेम के वश में होकर गुण सहित देह धारण करता है। वह राम हंस वंश का सूर्य आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान है, वहाँ मोहरूपी रात्रि लेश मात्र भी नहीं है। जब वह स्वयं प्रकाश रूप है तो वहां विज्ञान रूपी दिन भी नहीं है।

जो प्रकाश का भण्डार है और वह सबका स्वामी प्रकाश में पुरुषोत्तम रूप से प्रगट है, वे रघुकुलमणि मेरे स्वामी हैं यह कहकर शिव जी ने मस्तक नवाया।

जैसे सूर्य की किरणों में पानी का एवं सीप में चांदी का भास होता है जबकि यह तीनों कालों में मिथ्या है तो भी इस भ्रम को कोई हटा नहीं सकता।

इसी प्रकार सारा जगत् भगवान विष्णु के आश्रित रहता है। यह संसार यद्यपि असत् है पर दुःख तो देता ही है। जैसे स्वप्न में कोई सिर काट दे तो बिना जागे वह दुःख दूर नहीं होता। सो हे, पार्वती! जिसकी कृपा से ऐसा भ्रम मिट जाता है वह कृपालु भगवान विष्णु ही राम हैं जिसका आदि और अंत किसी ने नहीं पाया उस के लिये वेद ने इस प्रकार गाया है। कि

जो प्रभु के साथ बिना पैर चलता है, उसकी वाणी बिना कान के सुनता है और उसे प्राप्त करने के लिए बिना हाथ के भाँति-भाँति के कर्म करता है। बिना मुंह के सब रसों को भोगता है और वह श्रेष्ठ योगी बिना वाणी के अखण्ड नाम का वक्ता है। प्रभु को बिना शरीर के स्पर्श करता है, बिना आँखों के ध्यान में प्रभु के नाम की सुगंधि को सूंघता है। जिसकी इस प्रकार अलौकिक करनी है उस की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती।

जिस नाम के बल से काशी में मरते हुये जीवों को देखकर मैं उन्हें शोक रहित कर देता हूँ वो ही मेरे स्वामी इस चराचर विश्व के स्वामी हंस प्रभु हैं। जो सबके हृदय में रमण करते हैं वे राम ही विश्व व्यापक विष्णु हैं जिनके नाम का सुमिरन करके मानव संसार सागर से तर जाते हैं जैसे गौ पदचिन्हों में भरे पानी को लांघ जाते हैं। जो पर बस होकर भी नाम जपते हैं उनके अनेक जन्मों के संचित पाप भस्म हो जाते हैं।

हे पार्वती! राम परमात्मा सर्व व्यापक हैं उसमें भ्रम है यह कहना तुम्हारा असंगत है। इस प्रकार का संदेह जो हृदय में लाता है उसके ज्ञान, वैराग्य आदि सभी सद्गुण नष्ट हो जाते हैं। शिव जी के भ्रमनाशक वचनों को सुनकर पार्वती जी के सभी तर्कों की रचना मिट गई। उनकी भावना में जो व्यापक और प्रगट रूप का अद्वेत भाव था वह कठिन भेद मिट गया और प्रभु के चरणों में प्रेम तथा विश्वास उत्पन्न हो गया।

बारम्बार स्वामी के चरण कमलों को पकड़कर अपने कर कमलों को जोड़कर पार्वती जी विनय करके प्रेम रस में सने हुए सुंदर वचन बोलीं

अव्यक्त विभु के व्यक्त होने का कारण

चन्द्र किरन के समान आपकी वाणी सुनकर मेरा मोहरूपी शरद ऋतु का भारी ताप मिट गया। हे कृपालु! आपने मेरा सब संदेह हर लिया राम का यथार्थ स्वरूप मेरी समझ में आ गया। हे नाथ! आपकी कृपा से सुखी हो गई हूँ। यद्यपि मैं सरल स्वभाव की बुद्धिहीन बालिका हूँ, अब आप मुझे अपनी दासी जानकर

मैंने पहले पूछा है वह कहिये। राम ब्रह्म् चेतन्यमय, अविनाशी और सबसे परे, सबके हृदय में निवास करने वाले विभु हैं तो हे प्रभु! उन्होंने मनुष्य तन किस कारण से धारण किया? हे धर्म की ध्वजा धारण करने वाले प्रभु! वह कथा मुझे समझाकर कहिये।

पार्वती जी के गम्भीर वचनों को सुनकर कामदेव के शत्रु कृपा के सागर जो स्वभाव से ही बड़े चतुर हैं ऐसे भोलेनाथ शंकर अति प्रसन्न हुए और श्री पार्वती की प्रशंसा करते हुए बोले ॥दो१३॥

स्वयंभू मनु सतरूपा का तप एवं वरदान

हे पार्वती! वह सब कथा मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मन लगा कर सुनो! यह "राम कथा" कलि के मल को हरण करने वाली सर्व मंगलों की दाता, अति सुन्दर और सुहावनी है। ॥दो१४॥

इस सृष्टि से पहले परम प्रभु विभु स्वयंभु मनु और सतरूपा के रूप में प्रगट हुए जिनसे यह अनुपम सृष्टि उत्पन्न हुई। उनके हृदय में सदैव यही अभिलाषा रहती है कि हम उस परम प्रभु को अपने नेत्रों से देखें। जिसके अंश से विष्णु, शिव, आदि मनु ब्रह्मा भाँति-भाँति से उत्पन्न होते हैं। यदि यह वेदों का बचन सत्य है तो प्रभु हमारी अभिलाषा पूरी करें।

ऐसा विचार कर साक, मूल और फल का भोजन करते हुए सच्चिदानंद ब्रह्म का चिन्तन करने लगे। ध्यान की तपस्या में वे इतने लीन हो गये कि फल मूल त्यागकर वायु के आधार पर रहे। तपस्वी दम्पति की अनन्य गति देख हृदय की जानकर सर्वज्ञ विभु ने अपना दास जाना और परम गम्भीर कृपामृत में सनी हुई आकाशवणी द्वारा बोले किवर मांगो! वर मांगो!

हंस रूप में प्रगट होना

परम प्रभु विभु के अमृतमय वचनों को सुनकर उनके बदन पुलकित और प्रफुल्लित हो गये। उनका अतिशय प्रेम हृदय में नहीं समाता था, वे प्रेम में गद्-गद् होकर दण्डवत प्रणाम करके बोले ॥दो१५॥

हे अनाथों का कल्याण करने वाले प्रभु! यदि हम पर आप का स्नेह है तो प्रसन्न होकर यह वर दीजिए! आज का जो स्वरूप शिव जी के हृदय में निवास करता है, मुनिजन यत्न करते हैं और मुनि भुसुण्डि के मन रूपी मानसरोवर में विहार करने वाला हंस है। जिसके निर्गुण-सगुण रूप की वेद प्रशंसा करते हैं। हे शरणागतों के दुःख मिटाने वाले विभु! ऐसी कृपा कीजिए कि हम आपके उस हंस रूप को नेत्र भर कर देखें।

स्वयंभु मनु-सतरूपा के कोमल और विनय युक्त, प्रेमरस में पगे हुए वचन प्रभु को अति प्रिय लगे। भक्त वत्सल, कृपा निधान संपूर्ण विश्व में वास करने वाले विभु हंस रूप में प्रगट हो गये। शोभा की खान आदि शक्ति जगत की मूल कारण, प्रभु के अनुकूल जगत माता भी भगवान हंस की बाईं ओर सुशोभित थीं। जिस के अंश से अनेकों लक्ष्मी, पार्वती और ब्रह्माणी उत्पन्न होती हैं।

प्रभु के नीले कमल, नील मणि और श्यामवर्ण नीले मेघ के समान चैतन्य प्रकाशमय तेज युक्त गौरवर्ण वदन की शोभा को देखकर करोंड़ों कामदेव लजाते हैं। ॥दो१६॥

उनके वदन की शोभा शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान चमक रही है। शंख के समान त्रिरेखा युक्त उतार चढ़ाव वाला गला, गाल और ठोड़ी अति ही सुन्दर हैं। लाल-लाल ओंठ, चमकीले दांत, सुन्दर नाक तथा मधुर मुस्कान चन्द्रमा की ज्योति को नीचा दिखाती हैं। नेत्रों की छवि खिले हुए कमल के सामन अति सुन्दर और मन को हरने वाली चितवन बड़ी प्यारी लगती है। ललाट पर प्रकाशमान तिलक और भौहें कामदेव के धनुष की शोभा को हरने वाली हैं।

कानों में मकराकृत कुण्डल और सिर पर मुकुट सुशोभित है, टेढे घुंघराले बाल ऐसे काले थे जैसे भौरों के झुंड हों। हृदय पर श्री वत्स सुन्दर बनमाला, रतन जड़ित हार और मणियों के आभूषण सुशोभित हैं। सिंह के समान कंधा सुन्दर जनेऊ तथा भुजाओं के गहने भी अति सुन्दर हैं। उनके चरण कमलों का तो वर्णन ही नहीं हो सकता जिनमें सन्तों के, भक्तों एवं सेवकों के मन रूपी भौंरे बास करते हैं।

परम प्रभु द्वारा मनु सतरूपा को वरदान

हंस रूप की शोभा का वर्णन

बिजली की चमक को लजाने वाले स्वर्ण वर्ण के चमकीले पीताम्बर वस्त्र वदन पर शोभायमान हैं। पेट पर सुन्दर त्रिबली है और नाभि ऐसी मनोहर है मानो जमुना जी के भंवर की छवि को छीन लेती हो। ॥दो५७॥

शोभा के समुंद्र हंस रूप को देखकर मनु-सतरूपा नेत्रों के पट रोके हुए एकटक होकर देखते ही रह गये। उस अनूपम हंसरूप को वे बड़े आदर सहित देख रहे थे और अघाते नहीं थे। वे आनंद में विभोर हो जाने के कारण अपने तन की सुध भूल गये। उन्होंने प्रभु के चरण कमलों को पकड़कर दण्डवत प्रणाम किया। कृपा के समुद्र दयालु प्रभु ने उनके मस्तक पर हाथ रखकर तुरंत उठाकर हृदय से लगा लिया।

भाव भरी विनय सुनकर प्रभु ने वरदान दिया कि हे तात! मैं अपने अंशों सहित देह धारण करके भक्तों को सुख देने वाले चरित्र करुंगा। किंतु यह आदि शक्ति जिसने जगत् को उत्पन्न किया है वह जगतमाता भी प्रगट होगी। यह मेरी रचना है, मेरा यह वचन सत्य है! सत्य है! मैं तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी करुंगा। ऐसा कहकर कृपा के सागर, दीनों के नाथ दया सागर प्रभु हंस अंतर ध्यान हो गये।

स्वयंभु मनु को वरदान देने के कारण एक कल्प में प्रभु ने हंस रूप धारण किया और सन्तों के दुःख दूर करने तथा भक्तों को सुख देकर पृथ्वी का भार हरने के लिए भगवान विष्णु ने अवतार लिया। हे पार्वती! भगवान विष्णु के गुणों की और नाम की महिमा अपार है। उनके अनेकों रूप और कथाओं का अंत नहीं है। मैं अपनी मति के अनुसार कहता हूँ आदर सहित सुनो

हे पार्वती! भगवान विष्णु के सुंदर पवित्र चरित्र वेद ने गाये हैं। उनके अवतार का कारण यही है ऐसा नहीं कहा जा सकता, अनेकों हैं। हे पार्वती! मेरा ऐसा मत है कि राम, मन, बुद्धि, वाणी और तर्क का भी विषय नहीं है। मैं एक दो जन्मों के कारण कहता हूँ सावधान होकर सुनो!

हिरण्य कश्यप और हिरण्याक्ष ये दोनों देवलोक के राजा इन्द्र का गर्व नष्ट करने में जगत विख्यात थे। दोनों समर में विजयी थे, एक को भगवान विष्णु ने विकराल रूप धारण कर मारा और दूसरे को नर नारायण का अवतार लेकर मारा। अपने भक्त प्रह्लाद का यश जगत में फैलाया, जिसे गाकर भक्त जन संसार सागर को पार कर जाते हैं। भगवान विष्णु भक्तों के लिये अनेकों देह धारण करते हैं।

राम अवतार के कारण

एक बार नारद ने शाप दिया जिसके कारण एक कल्प में प्रभु ने अवतार लिया। एक जन्म का कारण यह है कि भगवान विष्णु के दो द्वारपाल जय और विजय थे जिन्हें सब जानते हैं। वे संतों के शाप से तामसिक आसुरी देह को प्राप्त हुए।

दोनों रावण और कुम्भकरण अति बलवान और निशाचर हुए जिन्होंने देवताओं पर विजय प्राप्त की, जिन्हें सारा जगत् जानता है। प्रभु असुरों को मारकर अपनी मर्यादा रखने के लिए संत जनों की स्थापना करते हैं। भक्त जनों की रक्षा करके जगत में यश फैलाते हैं। यही राम जन्म का कारण है।

प्रभु के प्रत्येक अवतार की कथाएं मुनियों ने, कवियों ने अनेक-अनेक प्रकार से सुनकर वर्णन की हैं। वह सब हे पार्वती! जैसा मेरी समझ में आता है तुम्हें सुनाता हूँ। वेद, पुराण, मुनि एवं संत जन भी अपनी मति के अनुसार ही कहते हैं। वह राम कथा जो आदर सहित सुनते हैं, वे भाग्यशाली हैं और ममता तथा मद को त्यागकर भवसागर से पार उतर जाते हैं।

इस प्रकार भगवान श्री राम अवतार के कारण अनेकों हैं और एक से एक विचित्र, हैं क्योंकि प्रत्येक कला में आनन्दकंद सच्चिदानंद भगवान विष्णु अनेकों अवतार लेकर भाँति-भाँति के सुन्दर सुहावने चरित्र करते हैं। इस प्रकार परम प्रभु के अनेकों जन्म और कर्म विचित्र, सुन्दर और सुख के दाता हैं। उस राम अवतार में परम प्रभु ने लीलाएं जो जो भी, जिस-जिस भी प्रकार से अपने भक्तों को सुख देने के लिए की हैं वह सब मैं अपनी मति के अनुसार कहता हूँ।

कश्यप-अदिति यहाँ प्रभु श्री रामचन्द्र जी के माता और पिता हुए जो अयोध्यापुरी के राजा दशरथ और महारानी कौशल्या के नाम से विश्व विख्यात हुए। दशरथ और कौशल्या के हित के लिए एकबार अपने भक्तों पर प्रेम करने वाले प्रभु ने नर देह धारण की। अवधपुरी में रघुकुल के शिरोमणि राजा दशरथ हुए जिनका नाम वेद में विदित है। वे धर्म में निपुण सर्व गुणों के धाम और ज्ञानी थे। जिनके हृदय में आनन्दकंद सच्चिदानन्द भगवान विष्णु के श्रीचरण कमलों में परम भक्ति थी।

रामजन्म

कौशल्या आदि प्यारी रानियाँ जिनके आचरण बड़े पवित्र हैं जो सदा अपने पति राजा दशरथ के अनुकूल रहती हैं। जिनका प्रभु के चरण कमलों में अटूट प्रेम है।

वे सब रानियाँ राज भवन में विराजमान रहती हैं। शोभा, शील और तेज की खान सब रानियों का सुख पूर्वक समय बिताते हुए वह अवसर आ गया जब प्रभु ने प्रगट होना था। चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी अभिजित मुहूर्त में दोपहर का समय था, उस समय न शीत था, न तेज धूप ही थी, जब राम का जन्म हुआ वह पवित्र समय सब लोकों को शान्ति देने वाला था।

उस समय शीतल, मंद और सुगंध वायु बहती थी। विश्व के सभी भक्त एवं संत जन अति प्रसन्न हुए एवं सभी के मन में दर्शनों का चाव था। वन फल और फूलों से, पर्वत मणियों के निकलने से और नदियां-ताल अमृत जल से सुशोभित हो गये। साधु-संत एवं भक्तगण बहुत प्रकार से अपनी-अपनी सेवा लाते हैं और स्तुति करके पुष्प बरसाते हैं। बधाइयाँ गाने से, दुंदुभी आदि बाजे बजने से आकाश गूंज उठा।

साधु संत एवं भक्त गण विनती करके अपने अपने आश्रम में पहुंच गये। अखिल लोक को विश्राम देने के लिये विश्व व्यापी प्रभु प्रगटे।

कौशल्या के हितकारी दीनों पर दया करने वाले प्रभु प्रगट हो गये। मुनियों के मन को हरण करने वाले प्रभु के अद्‌भुत रूप को देख कर माता प्रसन्न हो गई। चमकते बादल जैसा श्याम गौर बदन आनंद के दाता जिनकी भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और पद्म, सुन्दर भूषण, वनमाला एवं सुगंधित पुष्पों के हार सुशोभित हैं। आनंदकंद भगवान विष्णु के विशाल नेत्र शोभा के धाम पापों को नाश करते हैं।

दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगीहे अनंत प्रभु! मैं किस प्रकार तुम्हारी स्तुति करूं? वेद पुराण तुम्हें माया के ज्ञान से और गुण से न्यारा, मान रहित बताते हैं। दया एवं सुख के सागर सर्व गुणों के धाम कहकर वेद एवं संत महात्मा आपका गुण गान करते हैं। वही भक्तों पर प्रेम करने वाले, लक्ष्मीपति भगवान विष्णु के रूप में आप मेरे लिए प्रगट हुए हैं।

हे प्रभु! वेद ऐसा कहते हैं कि आप के रोम-रोम में माया से रचे हुए अनेक ब्रह्माण्ड़ों के समूह हैं, ऐसे प्रभु मेरे हृदय में निवास करते हैं यह बड़ी हंसी की बात है। ऐसा सुनकर बड़े-बड़े धीर पुरुषों की मति भी स्थिर नहीं रहती। जब कौशल्या को यह ज्ञान उत्पन्न हुआ तो प्रभु हँसे क्योंकि अभी तो अनेक चरित्र करने हैं इसलिये माता को अनेक प्रकार की कथा कहकर प्रभु ने ऐसा समझा दिया कि जिससे मन में पुत्र प्रेम उत्पन्न हो गया।

माता के विचार बदल गये तब वह बोलीहे तात! यह स्वरूप छोड़कर अतिशय बाल लीला कीजिये। आपका बाल रूप मुझे अति प्यारा लगता है, यह परम अनुपम सुख का दाता है। माता के वचन सुनकर प्रभु बालक की भाँति रोने लगे। हे पार्वती! जो मनुष्य यह चरित्र गाएंगे वे अवश्य ही भगवान विष्णु के चरण कमलों के दर्शन पाएंगे, वे फिर कभी जन्म-मरण के चक्र रूपी कुएं में नहीं पड़ेंगे।

माया के गुण एवं इन्द्रियों के ज्ञान से जो न्यारे हैं ऐसे प्रभु ने गऊ, साधु-संत एवं भक्त गणों के हित के लिये अपनी इच्छा से देह का निर्माण किया।

योग, लग्न, ग्रह, तिथि और वार सभी अनुकूल थे। राम का जन्म सभी सुखों का मूल है। सभी चर-अचर प्रफल्लित हो उठे।

परम माधुर्य रोना सुनकर रानी सुमित्रा और कैकेयी दौड़ी हुई चली आईं। सभी दासियाँ जहाँ तहाँ दौड़ीं और नगर के लोग सब आनंद में मग्न हो गये। राजा दशरथ ने जैसे ही कानों से सुना कि पुत्र का जन्म हुआ है, उनका मन ब्रह्मानंद में लीन हो गया। वे ऐसे प्रेम में मग्न हो गये कि उनका मन स्थिर न रहा।

राजा दशरथ मन में यह विचार कर बड़े मग्न हुए कि जिस प्रभु का नाम सुनने से ही परम गति हो जाती है वे विभु मेरे घर में आये हैं। ब्रह्मानंद में परिपूर्ण राजा ने बाजे वालों को बुला कर बाजे बजाने के लिए कहा। मुनि वशिष्ठ जी के यहाँ बुलावा गया, वे द्विजों के साथ राजा के द्वार पर आए। उन्होंने जब बालक को देखा तो आंखें चौंधिया गईं। उनके तेज को देख न सके, जिनके रूप का और गुणों का वर्णन करते-करते कभी समाप्त नहीं होता। और किसी का पेट नहीं भरता।

बधाइयाँ गा-गाकर आनंदोत्सव में नगर सजाना

नन्दीमुख श्राद्ध करके राजा ने जात कर्म किए और साधु ब्राह्मणों को स्वर्ण, गौ, वस्त्र और भूषण, रतनादिक दान दिये।

ध्वजा पताकाओं से नगर छा गया, उस समय की सजावट किसी भी भाँति कहने में नहीं आती। आकाश से फूलों की वर्षा हुई, नगर के लोग अति आनंद में मग्न हो गये। सब स्त्रियाँ श्रृंगार किये जहाँ तहाँ से आकर उत्सव देखने चलीं। सोने के कलश और मांगलिक द्रव्य लेकर गाती हुई स्त्रियाँ राजा के द्वार पर गईं।

वे आरती करके अपनी श्रद्धा भक्ति के अनुसार न्योछावर करती हैं और बार-बार बालरूप भगवान के चरण कमलों में दूर ही से प्रमाण करती हैं उनके चरण कमलों को परम पवित्र जानकर हाथों से स्पर्श नहीं करतीं। मगध महिमा गाने वाले भाट, सूत-गुणों को गानेवाले विद्वान वक्ता, वंदीगण आदि गायक प्रभु के पवित्र गुणों को गाते हैं। अपनी सारी शक्ति लगाकर जितना भी दे सकते थे सभी को दान दिया, जिसने लिया उसने भी दूसरों को दिया। नगर को चन्दन, कस्तूरी और कुंकुम से इतना सींचा कि गलियों में कीच हो गई।

घर घर में शुभ मंगल के बधावे बजने लगे। आनंदकंद भगवान प्रगट हुए हैं। जहाँ-तहाँ नगर के नर-नारियों के दल प्रसन्न हैं।

कैकयी और सुमित्रा इन दोनों रानियों ने भी सुन्दर पुत्र जन्मे। उस समय के भक्तों के समाज का आनंद एवं सम्पत्ति का वर्णन शेष और नारद भी नहीं गा सके। उस समय अवधपुरी ऐसी शोभायमान थी-मानो प्रभु से मिलने के लिए रात्रि आई हो और वह सूर्य को देख सकुचा रही हो। यद्यपि वह संध्या अनुमानिक थी क्योंकि

वहाँ चन्दन और धूप का धुआँ आकाश में इतना छा गया था कि मानोसंध्या हो गई हो, और अबीर इतना उड़ाया गया कि जिस से वह संध्या ऐसी दिखती थी जैसे सूर्य के अस्त होते समय लालिमा होती है। घरों में जो अनेक प्रकार के रत्न जड़े थे वे ही मानो तारागण हैं और राज भवन पर जो कलश था वही मानों अमृत का दाता चन्द्रमा है। राज भवन में वेदों की ध्वनि ऐसी शोभायमान थी; जैसे पक्षी गण सुन्दर मधुर वाणी द्वारा प्रेम में सने गीत गाते हों। प्रभु की मोहनी मूरत देखकर सूर्य भी चलना भूल गया और एक मास तक समय जाते नहीं जाना।

हे पार्वती! तेरी बुद्धि अति दृढ़ देखकर एक और चरित्र तुम से मैं कहता हूँ जो सुनो! काक भुसुण्डि और मैं दोनों मनुष्य रूप में एक साथ चोरी-चोरी वहाँ गये। जिसे कोई जान नहीं पाया। हमें कुछ दिन ऐसे ही बीत गये और दिन-रात जाते प्रतीत नहीं हुए। प्रभु के नामकरण का अवसर जानकर राजा दशरथ ने ज्ञानीमुनि वशिष्ठ को बुलाया।

प्रभु की पूजा करके राजा दशरथ ने मुनि वशिष्ठ जी से कहाहे मुनिराज! आपने उनके नाम जो विचार रखे हैं वे नाम रखिये! तब मुनि वशिष्ठ जी बोलेहे राजन! ये जो आनंद के समुद्र, सर्व गुणों के भण्डार, सर्व सुखों के धाम हैं इन का नाम राम है। जिनके अंश से सारा विश्व उत्पन्न होता है और सारे विश्व को शान्ति के दाता एवं सब में रमे हुए हैं। यथा-"रमन्ते योगिनो ऽसमिन राम"। और ये जो सारे विश्व को भरण पोषण करते हैं उनका नाम भरत है।

जो सुलक्षणों के घर और राम के प्यारे सदा जगत के आधार हैं इनका नाम वशिष्ठ जी ने लक्ष्मण रखा जो परम उदार हैं।

जिनका सुमिरण करने से शत्रुओं का नाश हो जाता है उनका नाम वेद ने शत्रुघ्न प्रकाशित किया है। इस प्रकार मुनि ने हृदय में नाम का विचार कर सब नाम रखे, ये सब नाम के ही गुण हैं। हे राजन! तेरे चारों पुत्र ज्ञान के परम तत्व हैंविभु का हंस नाम सबमें रमा होने से "राम", उस नाम ही से सबका भरण-पोषण होता है इसलिए "भरत", नाम ही जिसका परम लक्ष्य है वह "लक्ष्मण" एवं नाम का सुमिरण करने से शत्रुओं का नाश होता है इस कारण से "शत्रुघ्न"। यह हंस नाम मुनि भुसुण्डि का धन, शिव जी का प्राण है जिन्होंने प्रभु की बाल लीला में ही रती मानी है। लक्ष्मण जी बचपन से ही प्रभु को हित और स्वामी जानकर प्रेम करते हैं।

भरत और शत्रुघ्न भी स्वामी और सेवक जैसी प्रीति बढ़ाते हैं। श्याम-गौर वर्ण दोनों सुन्दर जोड़ी की सुन्दरता को देखकर माताएं प्रेम से विभोर हो गईं। जिनका अनुग्रह इन्दु के हृदय का प्रकाश एवं उस प्रकाश की किरणें ही उनकी मनोहर प्रसन्नता की मुस्कराहट को सूचित करती हैं। माताएं गोद में लेकर हिलारें लेती हैं, ललना कहकर पालने में झुलाती हैं।

जो प्रभु सर्वत्र व्यापक, निर्मल, निर्गुण और इच्छा रहित है वह अजन्मा अव्यक्त विभु विष्णु रूप में भक्ति वश कौशल्या की गोद में खेल रहे हैं।

बालरूप भगवान की शोभा का वर्णन

इनके नील कमल और मेघ के समान गौरवर्ण सुंदर शरीरों में करोड़ों कामदेवों की शोभा है। जिनके लाल कमल के सदृश चरणों के नाख़ून ऐसे चमक रहे थे, उनकी ज्योति ऐसी शोभायमान थी जैसे कमल के पत्तों पर मोती चमकते हों। तलवों में बज्र, ध्वजा और अंकुश के चिन्ह सुशोभित थे। उनके पैजनियों की ध्वनि तो मुनियों के मन को भी मोह रही थी। कमर में करधनी पेट पर त्रिबली और नाभि की गम्भीरता को तो वही जानता जिसने देखा है। किंतु लिख नहीं सकता।

विशाल भुजाओं पर सुंदर आभूषण एवं छाती पर बाघ के नेत्रों की अद्भुत ही छटा थी। लाल-लाल ओंठ, दो-दो दंतुलियां सुंदर नासिका, माथे पर त्रिपुण्ड तिलक की अपार शोभा थी। सुन्दर कान, लाल-लाल गाल और अति मधुर तोतली बोली थी। चिकने और घुंघराले बाल भी बहुत ही सुंदर मन को मोहित करने वाले माता ने संवारे थे।

जो सुख के पुंज मोह से परे और इन्द्रिय, वाणी एवं ज्ञान से न्यारे हैं जिन्हें बड़े-बड़े ज्ञानी और वक्ता भी नहीं जान पाते, वे परम प्रभु विभु-विष्णु रूप में दशरथ और कौशल्या के प्रेम वश पवित्र लीलाएं करते हैं।

जगत के माता-पिता राम जो सारे विश्व में हंस रूप से रमण करते हैं, वे "हैं" शिव-पिता और "स" शक्ति-माता हैं वे अवध वासियों को सुख देने के लिये लक्ष्मीपति विष्णु के रूप में प्रगटे हैं। हे पार्वती! जिनका प्रभु के चरणों में प्रेम है उन्हें ही ऐसा आनंद प्राप्त होता है। जो प्रभु से विमुख हैं वे चाहे करोड़ों यत्न क्यों न करें, उनके जन्म-मरण के बंधन नहीं छूट सकते। प्रभु की जिस माया ने सब जीवों को अपने वश में किया हुआ है, वह माया भी प्रभु के सामने बोलने में भय खाती है।

भृकुटी में निवास करने वाले प्रभु उस माया को इशारे से नचाते हैं। ऐसे प्रभु को छोड़कर कहो किसका भजन किया जाय? जो भक्त चतुराई को छोड़कर मन कर्म और वचन से भजते हैं, उनकी आज्ञा का पालन करते हैं उन्हीं पर प्रभु कृपा करते हैं। इसी प्रकार बचपन के प्यार से प्रभु ने नगर वासियों को सुख दिया। माता उमंग भर कर गोदी में लेकर हिलोरें देती हैं और कभी पालने में झुलाती हैं।

प्रभु के प्रेम में माता इतनी मग्न हो गई कि दिन रात जाते नहीं जाना। पुत्र के स्नेह वश माता प्रभु की बाललीला के गुण गाती है।

माता कौशल्या को प्रभु के अद्भुत दर्शन

एक बार माता कौशल्या ने प्रभु को स्नान कराया और वस्त्र पहनाकर श्रृंगार करके पालने में लिटा दिया। अपने कुल के ईष्टदेव भगवान हंस की पूजा करने के लिये माता ने पकवान बनाया और नैवेद्य चढ़ाकर पूजा की और पकवान प्रभु को चढ़ाया। पूजा करके माता पाकघर में गई और फिर पूजा के स्थान में जाकर प्रभु को भोजन करते देखा।

फिर माता भयभीत होकर पुत्र के पास गई तो वहाँ भी पुत्र को सोते हुए देखा। फिर दुबारा वहाँ आकर देखा तो भोजन कर रहे हैं। यह देखकर माता का हृदय कांपने लगा और अधीर हो उठी। दोनों जगह पुत्र को देख मति भरमा गई। प्रभु माता को व्याकुल देख हंसकर मधुर-मधुर मुसकाने लगे।

प्रभु ने माता को अपना अद्भुत और अखण्ड रूप दिखाया जिनके प्रत्येक रोम-रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड दिखाई दे रहे थे।

अगनित सूर्य, चन्द्रमा, शिव, ब्रह्मा और बहुत से पर्वत, नदी, समुद्र, पृथ्वी, बन देखे। कालकर्म, गुणज्ञान और स्वभाव जो किसी ने नहीं सुना वह माता कौशल्या ने देखा। माता ने अतिप्रभावशाली माया को देखा जो भयभीत होकर हाथ जोड़े खड़ी थी। उन जीवों को भी देखा जिन्हें माया भ्रमाकर नचाती है और उन में प्रभु की भक्ति देखकर बंधन से छुड़ाती है।

ऐसे अनुपम दृश्य को देखकर माता पुलकाय मान हो उठी। उसके मुँह से कोई वचन नहीं निकला और घबड़ाकर आँखें मूंद प्रभु के चरणों में सिर नवाया। माता को आश्चर्यवन्त देखकर प्रभु बालरूप हो गये। भय के कारण माता स्तुति भी नहीं कर सकी और सोचने लगी कि मैंने जगत पिता परमेश्वर को अपना पुत्र जाना। प्रभु ने माता को भाँति-भाँति से समझाकर कहा कि हे माता! यह कहीं भी किसी से मत कहना।

यह देखकर कौशल्या हाथ जोड़कर बार-बार विनय करती है कि हे प्रभु! मुझे आपकी माया कभी न व्यापे।

चूड़ाकरण एवं किशोर अवस्था

प्रभु ने अनेक प्रकार की बाल लीलाएं कीं और अपने सेवकों को अपार आनंद दिया। कुछ समय बीतने पर अपने भक्तों के सुखदाता चारों भाई बड़े हुए। तब मुनि वशिष्ठ जी ने चूड़ाकरण संस्कार किया, जिसमें साधु सन्तों ने भोजन करके बहुत सी दक्षिणा पाई। चारों राजकुमार परम मनोहर अपार चरित्र करते हैं।

जो मन, कर्म और वचन तथा इन्द्रियों के विषय नहीं हैं, वही विभु राजा दशरथ के आंगन में बिचर रहे हैं। राजा जब प्रभु को भोजन करने के लिए बुलाते हैं तो बाल समाज को छोड़कर नहीं आते और जब माता बुलाने जाती है तो प्रभु ठुमुक-ठुमुक कर भाग जाते हैं। कल्पान्त में भी जिनका अंत नहीं है ऐसा वेद कहते हैं, उन्हें माता हठ पूर्वक पकड़ती हैं।

चपल चित से भोजन करते हुए मुख में दधी भात लिपटाए अवसर पाकर किलकारी मारते हुए जहाँ-तहाँ दृष्टि चुराकर भाग चलते हैं।

प्रभु के अति सरल और सुहावने बालचरित्र नारद, शेष, शिव और वेद ने गाए हैं। जिनका मन इनसे नहीं लगा वे बड़े ही अभागे हैं, उन्हें विधाता ने वंचित ही रखा है। चारों भाई विद्या, विनय, गुण और शीलता में बड़े निपुण हैं, वे सभी खेल राजाओं जैसे खेलते हैं। जिन गलियों में वे विचरत हैं तो वहाँ के नर नारी स्थिर होकर देखते ही रह जाते हैं।

भगवान राम अपने भाइयों और सखाओं के साथ भोजन करते हैं और माता-पिता की आज्ञा लेकर नगर का कार्य करते हैं। जिस तरह नगर के लोग सुखी हों प्रभु वैसा ही करते हैं। प्रभु प्रातःकाल उठकर माता पिता और मुनि वशिष्ठ जी को मस्तक नवाते हैं। प्रभु के चरित्रों को देख राजा प्रसन्न होते हैं।

जो ब्रह्म व्यापक, अजन्मा, निर्गुण और इच्छा रहित है जिसका न नाम है न रूप वह विभु भक्तों के प्रेम से प्रगट होकर लीला करते हैं जो हंस, विष्णु शिव नाम से कहे जाते हैं। अवध निवासियों को प्रभु प्राणों से अधिक प्यारे लगते हैं। स्त्री पुरुष, बाल और वृद्ध सब बड़े ही भाग्य शाली हैं।

विश्वामित्र के ज्ञानयज्ञ की रक्षा

हे पार्वती! प्रभु के बाल चरित्र मैंने कहे अब आगे की कथा मन लगाकर सुनो! वन में एक पवित्र आश्रम था जहाँ ज्ञानियों में श्रेष्ठ महामुनि विश्वामित्र जी रहते थे। सत्संग समारोह "ज्ञानयज्ञ" जब भी मुनि करते थे तो निशाचर आकर उपद्रव मचाते थे जिससे सभी मुनि दुःख पाते थे। मुनिगण जहाँ भी भजन ध्यान यज्ञादि करते थे तो सेनापति सुबाहु और मारीच से सदैव ही डरते रहते थे।

विश्वामित्र के मन में चिंता छा गई कि पापी निशाचर प्रभु के बिना नहीं मरेंगे। तब मुनि ने मन में विचार किया कि भगवान विष्णु ने भूमि का भार उतारने के लिए अवतार लिया है। मैं इसी बहाने जाकर प्रभु के चरणों का दर्शन करूं और विनती करके दोनों भाइयों को ले आऊं। वे प्रभु ज्ञान, वैराग्य और सभी गुणों से निपुण हैं उन्हें मैं नेत्र भरकर देखूंगा।

इसी प्रकार बहुत से मनोरथ करते हुए जाते देर नहीं लगी, सरयू में स्नान करके विश्वामित्र जी राजदरबार में पहुंचे।

राजा दशरथ ने मुनि विश्वामित्र को दण्डवत प्रणाम करके सम्मान किया और अपने आसन पर बैठाया। चरण धोकर भली भाँति से भोजन, मणिभूषण आदि से पूजा की और बोले हे नाथ! आज मेरे समान भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है। मन में हर्षित होकर राजा दशरथ ने कहाहे मुनिनाथ! ऐसी कृपा तो आज तक किसी ने भी नहीं की। आपका आगमन किस कारण से हुआ है वह कहिये जिससे मैं उसे करने में देर न करूं।

तब मुनि विश्वामित्र जी बोलेहे राजन्! निशाचरों के समूह मुझे बहुत सताते हैं अतः मैं आपसे मांगने के लिए आया हूँ। आप लक्ष्मण सहित राम को दे दो जिससे निशाचरों का वध हो और मैं सनाथ हो जाऊं नाथ के बिना सभी महाज्ञानी मुनि भी अनाथ ही हैं। राजा ने बड़े आदर से दोनों पुत्रों को बुलाकर छाती से लगाया और भाँति-भाँति से समझाकर कहाये दोनों मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। मुनिराज! आप ही इनके माता-पिता हो! दूसरा कोई नहीं।

राजा ने आशीर्वाद देकर दोनों पुत्र मुनि को सौंप दिये। तब प्रभु माता के घर गये और मस्तक नवाकर मुनि के साथ चल दिये।

हनुमान जी को विदा, ताड़िका उद्धार

पुरुष सिंह दोनों वीर मुनि के भय को हरण करने के लिए प्रसन्न होकर चले जो धीर मति अखिल विश्व के प्राणियों को भवसागर से पार उतारने के लिये कारण एवं आधार हैं।

चलते समय प्रभु ने हनुमान जी को पंपापुर के लिए भेज दिया और कहा कि मैं वन में मिलूंगा। लाल कमल के समान प्रभु के नेत्र चौड़ी छाती और विशाल भुजा हैं। नीलकमल और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल बदन है, कमर में पीला दुपट्टा कसे हैं और सुंदर तरकस तथा दोनों हाथों में धनुषबाण शोभायमान हैं। श्यामगौर-वर्ण के दोनों भाई परम सुन्दर हैं, यह महान निधि मुनि को मिल गई।

ताड़िका को मुनि जाते दिखाई दिये और यह सुनकर कि साथ में दो पुरुष सिंह हैं तो वह आतुर होकर दौड़ी हुई आई। प्रभु ने एक ही वाण से उसके प्राण हर लिए और दीन जानकर भगवान विष्णु के परमधाम को भेज दिया। तब विश्वामित्र जी ने अपने प्रभु को पहचान लिया और विद्या के सागर प्रभु को विद्या दी, जिससे न भूख लगे और न प्यास ही लगे। उससे तन में अपार बल और प्रकाश का तेज था।

अज्ञानरूपी निशा को नष्ट करने वाले ज्ञान के चारों अस्त्र, चारों साधन मुनि ने प्रभु को अर्पण कर दिये और आश्रम में ले जाकर भक्ति प्राप्त करने के लिए कंदमूल फल आदि का भोजन देकर पूजा की।

प्रातः समय प्रभु ने मुनि से कहाकि आप जाकर निर्भय होकर यज्ञ करिए। तब सब मुनिगण यज्ञ करने लगे और आप रक्षा करते रहे। यज्ञ की ध्वनि-सत्संग सुनकर, ज्ञान होते हुए भी अज्ञान में रमण करने वाला निशाचर मारीच, संतों का द्रोही सहायकों को लेकर आया। तब राम ने बिना फर का बाण मारकर उसे समुद्र के पार उसकी कुटिया में जा गिराया। जहाँ वह आश्रम में रहता था।

भगवान श्रीराम एवं लक्ष्मण द्वारा ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा

तब प्रभु ने सुबाहु को अग्निबाण से मारा और लक्ष्मण जी ने सारे निशाचरों का संहार किया। जब ऋषि-मुनियों को निर्भय करने वाले प्रभु ने असुरों को मार दिया तो देव-मुनि स्तुति करने लगे। प्रभु ने कुछ दिन वहाँ रहकर मुनियों पर दया की। यद्यपि वे ऋषि, मुनि प्रभु को जानते थे, महान ज्ञानी थे परन्तु फिर भी उनकी भक्ति के लिए वेद और पुराणों की बहुत-सी कथाएं कहते थे, जिन्हें सुनकर अहिल्या आई

भक्ति से अहिल्या का उद्धार

मुनि विश्वामित्र जी ने कहाहे प्रभु! महामुनि गौतम के आश्रम की एक महिला शाप वश धीरज धारण करके पत्थर जैसी स्थिर बुद्धि वाली आई है। यह आपके चरण कमलों की रज चाहती है, हे प्रभु! इस अहिल्या पर कृपा करके मुनि के वरदान को पूरा कीजिए।

प्रभु के पवित्र और शोक का नाश करने वाले चरणों का स्पर्श करते ही अहिल्या की तपस्याओं का प्रभाव प्रगट हो गया। भक्तों को सुख देने वाले प्रभु को देखकर अहिल्या हाथ जोड़कर सामने खड़ी हो गई। उसका बदन पुलकित हो उठा, प्रेम से वह अधीर हो गई और उसके दोनों नेत्रों से जल की धार बहने लगी। वह अतिशय भाग्यवान प्रभु के चरणों में गिरी, उसके मुँह से कोई वचन नहीं निकला।

अहिल्या ने प्रभु को पहचान कर मन में धीरज किया और प्रभु की कृपा से भक्ति पाकर निर्मल वाणी से स्तुति की। हे ज्ञान के प्रकाश में देखे जाने वाले विभु! आपकी जय हो। हे, प्रभु! आपने मुझ अपावन महिला को परम पवित्र बना दिया, हे ऋषि-मुनियों एवं भक्तों को सुख देने वाले! मैं आपकी शरण में आई हूँ। मेरी रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए!

हे प्रभु! मुनि ने मुझे जो शाप दिया, वह बहुत ही अच्छा किया मैं उसे अति अनुग्रह मानती हूँ जिसके कारण संसार के बंधन छुड़ाने वाले आपका दर्शन हुआ। इसी को शिव जी जीवन का परम लाभ समझते हैं। हे प्रभु! मैं बुद्धि की भोली हूँ, मैं और कुछ नहीं चाहती हूं। मेरी एक यही विनय है कि मेरा मन रूपी भौंरा सदा आपके चरण कमलों में लगा रहे और सुगंध रस का पान करता रहे।

जिन चरणों से देवगंगा सरस्वती प्रगट हुई जिसे शिव जी ने अपने सिर पर धारण किया। वही चरण कमल जिसकी ब्रह्मा भी पूजा करते हैं। हे प्रभु! वही चरण कमल आपने मेरे सिर पर रखे हैं इसी प्रकार बार-बार चरणों में प्रणाम करके अहिल्या परलोक को गई।

"सरयू के तट पर जहां महामुनि गौतम का आश्रम था वहीं मुनि विश्वामित्र का भी आश्रम था। अहिल्या गौतम की पत्नी नहीं आश्रम में रहने वाली एक तपस्वी महिला थी जिसे जाते समय गौतम ने आश्रम सौंपा था। गौतम ने पहले शाप दिया फिर अपनी गलती समझ यह वरदान दिया था कि इसी आश्रम में रहो प्रभु के चरणों के स्पर्श से तुम्हारा कल्याण होगा उनके दर्शन से परमपद पाओगी। आश्रम में प्रभु का आना सुनकर अहिल्या आई, उसके हृदय की विश्वामित्र जानते थे इसलिये विश्वामित्र ने प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु! इसका उद्धार कीजिए और गौतम के वरदान को पूरा कीजिए।"

राजा जनक का विश्वामित्र को जनकपुर में लाना

राजा जनक अपने मंत्री और अच्छे योद्धाओं, साधु-सन्तों, ऋषि-मुनियों एवं कुल पुरोहित सतानंद जी को साथ लेकर मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी से मिलने चले।

जनक राज विदेह ने विश्वामित्र के चरणों में सिर टेककर प्रणाम किया। राजा को मुनि ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। राजा जनक ने अपने को भाग्यशाली मानते हुये साधुओं को प्रणाम किया। मुनि ने कुशल पूछकर राजा को बैठाया। उसी समय दोनों भाई आये। जो पूजा हेतु पुष्प लेने फुलवाड़ी देखने गये थे।

प्रभु को आते देखकर सब खड़े हो गये। आदर सहित मुनि ने उन्हें अपने पास बैठाया, वे श्याम-गौर सुन्दर किशोर अवस्था के दोनों भ्राता जो अपनी शोभा से समस्त संसार के चित्त को चुराते हैं। उन्हें देखकर सभी के नेत्रों में प्रेम के आँसू भर आए। उन दोनों मधुर मनोहर मूर्ति को देखकर राजा जनक जो विदेह हैं वे भी अपनी देह की सुध भूल गये प्रभु को देखकर सभी के हृदय का प्रेम उमड़ आया।

अपने को प्रेम में मग्न होकर खोया हुआ सा जानकर राजा जनक ने धीरज धारण किया और विचार कर गद्-गद् हृदय से मुनि के चरणों में प्रणाम करके गम्भीर वचन बोले।

हे मुनिनाथ! ये दोनों सुन्दर बाल मुनियों के कुल के स्वामी हैं या राजाओं के कुल की रक्षा करने वाले हैं? या जिस ब्रह्म् को अनन्त कहकर वेद ने गाया है क्या वही ब्रह्म् ये दोनों वेष धारण करके आये हैं? हे प्रभु! मैं सच्चे भाव से पूछता हूँ, आप मुझ से छिपाइये नहीं क्योंकि मेरा सहज स्वभाव, वैराग्य वाला मन भी इन्हें देखकर ऐसा मोहित हो रहा है जैसे चन्द्रमा के लिए चकोर का होता है।

इन्हें देखते ही प्रेम में मग्न होकर मेरा मन बरबस होकर ब्रह्मानंद में लीन हो रहा है। मुनि ने हंसकर कहा हे राजन्। तुम्हारी वाणी सत्य है। ये दोनों भाई रघुकुल के मणि राजा दशरथ के पुत्र हैं। राजा ने इन्हें मेरे हित के लिये मुनियों की रक्षा करने भेजा है। संसार में जितने प्राणी हैं ये सभी को प्रिय हैं। मुनि के वचन सुनकर प्रभु मन में मुसकाने लगे।

तब राजा जनक ने कहाहे मुनिराज! आपके चरणों के दर्शन करके मैं अपने पुण्यों का प्रभाव नहीं कह सक रहा हूँ। ये दोनों भाई श्याम-गौर अति सुंदर आनंद के भी आनंद दाता हैं। राजा जनक बार-बार राम की ओर देखते हैं, उनका हृदय आनंद और उत्साह से भर गया एवं तन पुलकायमान हो गया। महाराजा जनक ने महामुनि विश्वामित्र की प्रशंसा करके प्रणाम किया और अपने नगर को ले चले।

जो भवन सुन्दर और सब समय में सुखदायक था वहाँ उन्हें वास कराया और सेवा पूजा करके आज्ञा पाकर राजा अपने गृह में आए। तब राजा ने मुनि सतानंद को बुलाया और तुरंत ही मुनि विश्वामित्र के पास उन्हें बुलाने भेजा। उसने आकर राजा जनक की विनय सुनाई तब मुनि ने दोनों भाइयों को प्रसन्न होकर बुलाया।

सतानंद ने प्रभु के चरणों में प्रणाम किया, प्रभु मुनि के पास जाकर बैठ गये। तब मुनि ने कहाहे तात! जनक ने बुलावा भेजा है, चलिए!

चलो! चलकर श्री सीता जी के स्वयंवर को देखें, न जाने आज विधाता किस को यश देता है। लक्ष्मण जी बोले हे नाथ! जिस पर आपकी कृपा होगी वही यश का पात्र होगा। लक्ष्मण जी की श्रेष्ठ वाणी सुनकर सब मुनि बड़े प्रसन्न हुए। प्रसन्न हो सुख मानकर सब मुनियों ने प्रभु को आशीर्वाद दिया। तब आनंदकंद प्रभु मुनि समूह के साथ चले।

जब नगर वासियों को यह विदित हुआ कि दोनों राजकुमार स्वयंवर में आए हैं तो उनको देखने के लिए बालक, युवा, वृद्ध नर नारी सब अपने घरों का कार्य छोड़ कर चल दिये। राजा ने जब देखा कि भीड़ बहुत हो गई है तो विश्वासपात्र सेवकों को बुलाकर कहा कि सब लोगों को यथा योग्य आसन दो।

उन सेवकों ने कोमल और मधुर वचन कहकर सबको बैठाया। सभी अपने अपने योग्य स्थल देखकर बैठ गये। किसी ने भी धक्का मुक्की नहीं की, सभी की दृष्टि आनंदकंद प्रभु पर थी।

उसी समय मुनि विश्वामित्र सहित दोनों भाई वहाँ पर आए। वे ऐसे सुन्दर लग रहे थे कि मानो मनोहरता ही उनके वदन पर छा गई हो। गुणों के सागर तथा चतुरता में श्रेष्ठ, जिनका श्यामल गौर बदन अतिही शोभायमान था। वे राजाओं की सभा में ऐसे विराजमान थे मानो तारागणों के बीच में दो पूर्ण चन्द्रमा शोभायमान हों। वहाँ पर जिसकी जैसी भावना थी उसने प्रभु को वैसा ही देखा।

राजाओं ने उन्हें ऐसा महान् रणधीर योद्धा देखा मानो वीर रस ही शरीर धारण करके आये हों। नगर वासियों ने दोनों भाइयों को आँखों को सुख देने वाले परमपुरुष के रूप में देखा। उनकी चितवन मन को हरने वाली सुंदर, हृदय को अति प्यारी लगी जो अकथनीय थी। सुंदर गाल, कानों में कुण्डल, ठोड़ी, ओंठ सुन्दर और वाणी अति कोमल है।

नारियाँ अपने हृदय में प्रसन्न होकर अपनी रुचि के अनुसार देख रही हैं। वे ऐसे शोभायमान थे मानों श्रृंगार रस ही अनुपम मूर्ति धारण किए हुए सुशोभित हो।

ज्ञानी भक्तों को प्रभु विराट रूप में दिखे। जिनके अनेकों मुख, हाथ, पैर, नेत्र और सिर हैं। जनक के सजातियों को प्रभु प्यारे सगे-संबंधी जैसे लगे। राजा जनक सहित रानी सुनयना अपने बच्चे के समान प्यार से निहार रहे हैं। उनकी प्रीति कही नहीं जा सकती। योगियों ने प्रभु को परम तत्वमय कहा और अपने हृदय में शान्त, शुद्ध, सहज प्रंकाश में स्थित विभु के समान देखा।

भगवान राम को जिस भाव से श्री सीता जी देख रही थीं वे स्वयं भी उस स्नेह को नहीं कह सक रही थीं तो और कोई कैसे किस प्रकार से वर्णन करे। इस प्रकार जिसकी भावना जैसी थी उसने प्रभु को वैसा ही देखा।

विश्व के नेत्रों को चुराने वाले और लुभाने वाले सुन्दर श्यामल-गौर बदन दोनों कौशल प्रदेश के राज किशोर राज सभा में विराजमान थे जिनकी शोभा निराली थी।

राम लक्ष्मण दोनों भाई स्वभाव से ही मन को हरने वाले हैं। उनके सामने करोड़ों कामदेव की उपमा भी फीकी जान पड़ती है। मुख की शोभा शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा को भी लजाती है और नेत्रों की छटा देखकर लोग आनंद में मग्न हो रहे हैं। वे सब टकटकी लगाए देख रहे हैं, उनके नैन हटाये नहीं हटते। राजा जनक दोनों भाइयों को देखकर अति प्रसन्न हुए और मुनि के चरण कमलों में प्रणाम किया।

राजा जनक ने महामुनि विश्वामित्र को अपनी सब कथा कह सुनाई और उन्हें सारी रंगभूमि दिखाई। दोनों राजकुंवर जहाँ-जहाँ जाते हैं सब लोग चकित रहकर देखते रहते हैं। नगरवासियों ने अपनी-अपनी रूचि के अनुसार प्रभु को देखा किंतु वास्तविक रहस्य को किसी ने नहीं जाना। विश्वामित्र जी रंग भूमि को देखकर अति प्रसन्न हुए और बोलेहे राजन्! रंग भूमि की रचना अति ही सुन्दर है। यह सुनकर राजा अति प्रसन्न हुए।

महाराज जनक ने दोनों भाईयों सहित विश्वामित्र जी को सुन्दर परम विशाल मंच पर बैठाया।

प्रभु को देखकर सब राजाओं में मन में यह विश्वास हो गया। कि ये धनुष अवश्य ही तोड़ देंगे इसमें कोई संदेह नहीं। भवरूपी संसार के जन्म-मरण के कारण मोह रूपी धनुष ज्ञानरूपी खड़ग से तोड़े बिना ही श्री सीता जी राम के हृदय में जयमाला पहना देंगीं। यह सुनकर दूसरे राजा जो धर्मशील और आनंदकंद भगवान विष्णु के भक्त थे वे मुसकराकर बोले कि हमारी परम पवित्र शिक्षा को सुनो! तुम सीता जी को जगत की माता जानो।

हंस वंश रघुकुल के स्वामीसूर्यवंश के रक्षक राम को आप जगत पिता मानो। ऐसा मन में धारण कर नेत्र भरकर इनके रूप को देख अपना जीवन सफल बनाओ। ये आनंद दाता, गुणों के भण्डार, शिव जी के हृदय में रहने वाले हंस हैं। ऐसा कहकर सभी राजा अति प्रसन्न हुए और प्रभु के अनुपम रूप को देखने लगे। जिसको जो अच्छा लगे वह करे, हमने तो अपने जीवन का फल पा लिया।

तब सुन्दर अवसर जानकर राजा जनक ने श्री सीता जी को बुलाने भेजा। सुन्दर सखियाँ प्रेम पूर्वक सीता जी को ले चली।

श्री सीता जी का स्वयंवर में शुभागमन

चतुर सखियाँ श्री सीता जी को साथ लेकर मनोहर गीत गाती हुई चलीं। उनके कोमल बदन पर सुन्दर साड़ी सुशोभित थी, जिसकी शोभा अति अतुलनीय थी। सखियों ने श्री सीता जी के प्रत्येक अंगों के आभूषण अति ही सुन्दर और सुहावने बनाकर सजाए थे। श्री सीता जी जब स्वयंवर के मंडप में पधारीं तो उनके देखकर सभी स्त्री-पुरुष आनंद में विभोर हो गये।

सभी ऋषि-मुनि आदि भक्तों ने एवं सभी नर-नारियों ने प्रसन्न होकर दुंदुभी बजाई और फूलों की वर्षा करके मंगल गीत गाए। श्री सीता जी के कर कमलों में जयमाला देखकर सब राजा चकित हो देखते ही रह गये। श्री सीता जी का चित भगवान राम को चाह रहा था यह देख राजा प्रेम में मग्न हो गये। सीता जी ने देखा कि वे मुनि विश्वामित्र के पास बैठे हैं तो उनके नेत्र अपना जीवन धन पाकर वहीं जा लगे।

श्री सीता जी बहुत बड़े मुनिजनों के एवं राजाओं के समाज को देखकर सकुचा गईं। तब वे प्रभु की सुन्दर छवि को हृदय में धारण करके सखियों की ओर देखने लगीं।

भगवान राम और सीता जी की छवि सभी नर-नारी एकटक लगाए देखने लगे-उनकी पलकें नहीं झपकतीं। वे सोचते हैं पर कहने में सकुचाते हैं। वे विधाता से प्रार्थना करते हैं कि हे विधाता! जनक जी को हमारी सद्‌बुद्धि दे दो! जिससे वे बिना ही सोचे अपना प्रण छोड़कर सीता जी का विवाह राम के साथ कर दें।

इसे संसार अच्छा ही कहेगा, यह बात सभी को अच्छी लग रही है। हठ करने में हृदय में जलन होगी। सभी लोग इस लालसा में मग्न हैं कि सीता जी के योग्य बर तो राम ही हैं। राजा जनक ने वंदीजनों को बुलाया, वे वंश की कीर्ति का गान करते हुए आये। राजा ने अपना प्रण सुनाने के लिए कहा तब भाट गण हृदय में अत्यधिक प्रसन्न होकर चले।

वंदी जन इस प्रकार श्रेष्ठ वाणी बोलेहे समस्त राजा लोगो! हम अपनी भुजाओं को उठाकर महाराज जनक जी का प्रण सुनाते हैं उसे आप सब लोग सुनें।

महाराजा जनक की घोषणा

राजाओं की बुद्धि का बल चन्द्रमा है और उसे ग्रसने के लिए शिव जी का मोह रूपी दण्ड राहु है। मोह को तोड़ना कितना कठिन है यह सब जानते हैं। रावण जैसा योद्धा जिसने शिव जी की सेवा-तप करते समय अनेकों बार अपने सिर अर्पण कर दिये। वह रावण और वाणासुर जैसे शिव भक्त भी मोह रूपी दण्ड को देख कर चले गये। शिव जी के भव वंधन के कारण मोह दण्ड को जो अति ही कठोर है उसे जो तोड़ेगा वह जग विजयी होगा। उसे श्री सीता जी बिना विचार किये ही वरण करेंगी।

सभी राजा योग साधन में उपहास के पात्र बन गये जैसे बिना वैराग्य के सन्यासी होते हैं। वे कीर्ति, विजय, वीरता को हारकर प्रभाव हीन होकर चले गये। सब राजाओं को असफल देख जनक ने व्याकुल होकर बचन बोले दीप-दीप के राजा मेरा प्रण सुनकर आए।

बहुत बड़ी इस विजय को, सुंदर कीर्ति को एवं मनोहर सीता को पाने के लिए मोह को दमन करने वाला ब्रह्मा ने मानों कोई बनाया ही नहीं।

यह लाभ कहो किसको अच्छा न लगा? किसी ने भी कल्याणकारी मोहरूपी धनुष को नहीं तोड़ा। अब कोई वीरता का अभिमान न करे मैंने जान लिया कि पृथ्वी वीरों से खाली है। यदि में प्रण तजता हूँ तो पुण्य-सतकर्म जाता है, अब यदि सीता कुंआरी रहे तो मैं क्या करूं? यदि मैं ऐसा जानता कि पृथ्वी ऐसे वीरों से खाली है जो मोह को न तोड़ सकें तो प्रण करके उपहास का पात्र न बनता।

राजा जनक के ऐसे वचनों को सुनकर सभी नर-नारी श्री सीता जी को देखकर दुःखी होने लगे। राजा जनक के वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी क्रोध से तमतमा उठे, उनकी भौंहें क्रोध से टेढ़ी हो गईं, ओंठ फरकने लगे और नेत्र लाल हो गये। रघुवंशियों में से जहाँ कोई भी हो तो उस समाज में ऐसे वचन कोई नहीं कहता जैसे अनुचित वचन राजा जनक ने राम की उपस्थित जानकर भी कहे हैं।

वे प्रभु के डर से कुछ कह नहीं सक रहे थे परन्तु राजा के वचन वाणों के समान लगने पर प्रभु के चरणों में प्रणाम करके ऐसा बोले

महारानी सुनयनासखी संवाद

लक्ष्मण जी के क्रोध युक्त वचन सुनकर पृथ्वी डगमगाने लगी, दिशाओं के हाथी दिकपाल कांप गये और सारी जनता एवं राजाओं में भय समा गया। राजा जनक सकुचा गये, सीता जी को बड़ी प्रसन्नता हुई और राम सब मुनियों सहित बड़े आनंदमग्न हुए। राम ने लक्ष्मण को सैन के संकेत से प्रेम सहित अपने पास बैठाया।

महामुनि श्री विश्वामित्र जी समयानुकूल स्नेह वचन बोलेहे राम! अब आप मोह रूपी धनुष को तोड़कर राजा जनक के संताप को दूर करो! मुनि की आज्ञा सुनकर राम ने उनके चरणों में प्रणाम किया, राम के हृदय में न हर्ष ही है, न कुछ विषाद ही है, वे स्वभाविक ही आज्ञा का पालन करने चल दिये। उनकी चाल को देखकर युवा सिंह भी लजाते थे।

मोहरूपी धनुष तोड़ने के लिए पर्वताकार सुन्दर मंच सजाया गया था। उस मंच पर उगते हुए सूर्य की भाँति राम प्रगट हुए। राम के तेज को देखकर सब संतों के हृदय-कमल खिल उठे और नेत्र रूपी भंवरे प्रसन्न हो गये।

राम को देखकर प्रेम वश हो रानी सुनैना ने सखियों को अपने पास बुलाया। सीता जी को माता ने प्रेम में विभोर होकर रोते हुए कहा

हे सखी! यहाँ सब खेल देखने वाले हैं किन्तु जो हमारे हितैषी हैं वे भी तो राजा को समझाकर नहीं कहते। ये बालक हैं, ये कैसे इस संसार के मोह को तोड़कर वैराग्य धारण करेंगे? इनके लिए हठ करना उचित नहीं है। रावण और बाणासुर जैसे वृद्ध पुरुष भी जो शिव जी के परम भक्त और योद्धा हैं वे भी हार मानकर चले गये, उन्होंने इस विषय को छुआ तक नहीं। सभी राजा अपनी शक्ति के आगे हार गये, जब वे परिवार को देखते हैं तो मोहित हो ही जाते हैं तो फिर ये हंस के छोटे से बाल क्या इस मंदराचल पर्वत जैसे मोह के भार को उठा सकते हैं?

तब सखी मधुर वचन बोलीहे महारानी जी! तेजवंत को कभी छोटा नहीं जानना चाहिये। देखो! अपार समुद्र को कुम्भज ऋषि ने सोखा, जिनका यश संसार में फैला है। जैसे सूर्य मण्डल देखने में अति छोटा सा लगता है पर जब वह सूर्य उदय होता है तो तीनों लोकों का अंधकार भाग जाता है। ऐसे ही जिस प्रकार मंत्र बहुत छोटा है परन्तु उसके वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सभी देवता हैं, जैसे एक छोटा सा अंकुश महान् मतवाले हाथी को भी अपने वश में कर लेता है।

श्री सीता जी! मन ही मन शिव-पार्वती से प्रार्थना करने लगीं कि हे भवानी शंकर प्रसन्न हो जाइए और कृपा करके मेरी की हुई सेवाओं को सफलकर मोह के भार को हलका कर दीजिए यदि तन मन और वचन से मेरा यह प्रण सच्चा है कि मेरा मन प्रभु के चरण कमलों में लगा है। जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है उसे वह अवश्य ही मिलता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है तो प्रभु मेरी इच्छा अवश्य पूरी करें।

सीता जी को राम ने अति विकल देखा, उनका एक-एक पल कल्प के समान बीत रहा है। प्रभु ने सोचा कि यदि कोई जल के बिना देह त्याग दे तो अमृत का सरोवर भी क्या करेगा। खेती के सूख जाने पर वर्षा होने से क्या लाभ? यह विचार कर श्री सीता जी की प्रीति को देख प्रभु पुलकायमान हो गये।

राम ने सभी की ओर देखा तो वे ऐसे दिखाई पड़े मानो, कागद पर चित्र लिखे हों। कृपानिधान प्रभु ने जब सीता को देखा तो अति व्याकुल जाना।

प्रभु ने श्री सद्गुरुदेव को मन ही मन में प्रणाम करके सहज ही में मोह रूपी धनुष को उठाया किन्तु उस विषय को लेते, लम्बा खेंचते, बहुत अच्छी तरह ऊँचा उठाते किसी ने भी नहीं जान पाया तो प्रभु ने उस मोह को तोड़कर भूमि में दे पटका। यह देखकर सभी सुखी हो गये। सन्यास के उस ब्रह्मचारी वेष को देखकर सखियाँ सहित रानी बड़ी प्रसन्न हुई, जैसे सूखे धान में वर्षा हुई हो।

राजा जनक चिंता को त्यागकर ऐसे प्रसन्न हुए मानो किसी तैराक को थक जाने पर थाह मिल गई हो। उस समय श्री सीता जी के हृदय में जो सुख हुआ उसका वर्णन कैसे हो। मानो पपीहा को स्वाति जल की बूंद मिल गई हो। लक्ष्मण जी प्रभु को ऐसे देखते हैं जैसे चकोर चन्द्रमा को देखता है। तब तो प्रसन्न होकर सतानन्द ने आज्ञा दी और सीता जी राम के पास आ गईं।

* जय माला *

श्री सीता जी के साथ सुन्दर चतुर सुखियाँ मंगलाचार गाती हुई चलीं। उनकी चाल बालहंस जैसी थी और अंगों की अपार शोभा थी।

सखियों के बीच में सीता जी ऐसी शोभायमान थीं जैसे छवि गणों में अति सुन्दर छवि विद्यमान हो। उनके कर कमलों में जय माला ऐसी शोभा दे रही थी जिसमें विश्व के विजय की शोभा छाई हुई थी। उनके तन में संकोच, मन में अति प्रसन्नता है किन्तु उनका गूढ़ प्रेम तो किसी को दिखाई नहीं देता था। सीता जी राम को देखकर खड़ी रह गईं।

यह देखकर चतुर सखी ललिता ने कहासुन्दर शोभायमान जय माला पहनावो। तब सीता जी ने दोनों कर कमलों से विजय माला उठाई किंतु स्नेहवश एवं प्रभु के ऊंचे होने के कारण पहनाई नहीं जाती थी। उन के कर कमलों की शोभा ऐसी सुंदर थी मानो दो कमल चन्द्रमा को विजय माला देते हों। प्रेम के इस दृश्य को देखकर ऋषि-मुनि, सन्त एवं भक्तगण, दोनों राजसमाज, सब सखियाँ मंगल गीत गा-गाकर जय-जय कार के बाजे बजाने लगे।

दूल्हे के वेष में हंस वंस के सूर्य-प्रभु के गले में विजय माला देखकर प्रसन्न हो सभी पुष्पों की वर्षा करने लगे। जिसे देखकर सभी राजाओं का समाज आनंद में मग्न होकर ऐसा खिल उठा जैसे सूर्य को देखकर कमल प्रसन्न होकर खिल उठता है।

किन्नर गंधर्व आदि भक्तों की स्त्रियाँ नाचती और गाती हैं जिन्हें देखकर सभी युवतियां अंजली भर-भर पुष्प बरसाती हुई नाचने और गाने लगीं। साधु ऋषि-मुनि वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे और भाट हंस वंस की विरदावली एवं यश गाने लगे। संपूर्ण नगर एवं आकाश में बाजे बजने लगे और सब ऋषिमुनि-साधु संत जन आनंद में विभोर हो गये। सुर, नर, किन्नर, नाग और मुनीश, सभी नारियाँ जय-जयकार ध्वनि से आशीर्वाद देने लगे।

राम का धनुष तोड़ कर सीता को ब्याह ने का समाचार पृथ्वी, पाताल एवं नाग लोक में फैल गया। नगर के सभी नर-नारी आरती करके धन का लोभ छोड़ कर प्रेम से भेंट पूजा न्योंछावर कर रहे हैं। प्रभु सीता सहित ऐसी शोभा पा रहे हैं मानो शोभा और श्रृंगार एकत्र हों। सखियों ने सीता जी से चरण पकड़ने को कहा किंतु संकोचवश भय के कारण न पकड़ सकीं।

राम का अवध शुभ आगमन

मुनि गणों ने दुंदुभी बजाकर पुष्प बरसाए। जनकपुर के सभी नर नारी अति प्रसन्न हुए, उनके सभी मोह, भ्रम और भय के दुःख मिट गये।

जनकराज विदेह ने मुनि विश्वामित्र जी को प्रणाम करके कहा कि हे प्रभु! आपकी कृपा प्रसाद से राम ने मोह रूपी धनुष को तोड़ा है। इन दोनों भाइयों ने मुझे कृतार्थ कर दिया। हे गोसाई! अब जो उचित हो वह कहिये? मुनि ने कहाहे बुद्धिमान नीति में निपुण राजा सुनो! विवाह तो धनुष के आधीन था सो हो गया। यदि धनुष को राम नहीं तोड़ते तो भी स्वयंवर के अनुसार सीता जी राम को बरतीं सीता और राम के विवाह को देवगण, मनुष्य अैर नाग सभी जान गये हैं।

समय जानकर मुनि विश्वामित्र जी ने आज्ञा दी तब प्रभु ने नगर में प्रवेश किया। नगर के नर-नारी प्रभु को देख कर अपने नेत्रों का फल पाकर सुखी हो गये। सब ने अपने-अपने सुन्दर घर, हाट, मार्ग, चौराहे और नगर के सभी द्वार संवारे। सभी पुलकायमान होकर नेत्रों में प्रेम से आंसू भर कर मणी, भूषण, वस्त्र निछावर करते हैं।

इस प्रकार सबको सुख देते हुये राजकुमार राज द्वार पर आए। माताएँ प्रसन्न मन से सीता सहित राजकुंवर भगवान राम का परिछन्न करने लगीं।

माताएँ बारम्बार आरती करती हैं, उस प्रेम और आनंद का वर्णन करके कौन पार पा सकता है। स्वभाविक ही मन को प्रिय लगने वाला सुन्दर सिंहासन जिसे मानो कामदेव ने अपने हाथों से बनाया हो। उस आसन पर माता ने राम और सीता जी को बड़े प्रेम से बैठाया और आदर सहित उनके पवित्र चरण धोए। साखियाँ सीता जी के मुख को बार बार देखकर अपने पुण्यों की सराहना करती हुई गान कर रही हैं।

सूर्य कुल के जीवन को पवित्र और राम-सीता के यश को मंगलों की खान जानकर हे पार्वती! अपनी वाणी पवित्र करने के लिये मैं वर्णन कर रहा हूँ।

भगवान राम का यश, सीता जी का विवाह प्रसंग जो प्रेम से पढ़ेंगे या सुनेंगे उनके लिये मंगलों का धाम और सदा उत्साह है।

अयोध्याकाण्ड

सेवा सत्कार सहित विश्वामित्र को विदा

आनंद में मग्न होकर सभी प्रणाम कर-करके भेंट चढ़ाते हुए प्रभु के गुणों की गाथा गा रहे हैं। तब साधु समाज सहित मुनि विश्वामित्र के साथ राम ने गृह में प्रवेश किया।

महामुनि विश्वामित्र की बहुत प्रकार से पूजा करके राजा दशरथ ने कहाहे नाथ! आज मेरे समान भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है। रानियों सहित राजा ने मुनि की प्रशंसा करके उनके चरणों की रज ली। राजा और रानियां बहुत दिनों से बाट जोह रहे थे, उन सबकी भवन के भीतर ही रहने की सब व्यवस्था की और पुनः मुनि के भवन के भीतर ही रहने की सब व्यवस्था की और पुनः मुनि के चरण कमलों की पूजा करके नम्र भाव से प्रेम पूर्वक विनय की।

पुत्र, सम्पत्ति सब मुनि के चरणों में रखकर विनय करके राजा अति प्रसन्न हुए और राम को देख आज्ञा पाकर अपने-अपने घर सिर नवाकर चले गये। प्रातः पवित्र समय में प्रभु जागे और मुर्गे बोलने लगे। भाट-बंदीगण प्रभु के गुण गाने लगे और नगर निवासी प्रणाम करके सेवा पूजा करने के लिए आए।

तत्पश्चात् मुनि वशिष्ठ जी और विश्वामित्र जी राम के पास आए और राजा दशरथ ने उन्हें सुन्दर आसनों पर बैठाया। जो मुनियों के मन को भी अगम्य अर्थात् जिनके विवेक तक मुनियों की भी पहुँच नहीं थी ऐसे विश्वामित्र जी की करनी को वशिष्ठ जी ने आनंदित होकर बहुत प्रकार से वर्णन किया। जिसे सुनकर सब बड़े प्रसन्न हुए और राम-लक्ष्मण के हृदय में अति ही प्रसन्नता हुई। विश्वामित्र जी चलना चाहते हैं पर राम के प्रेम वश रह जाते हैं।

विश्वामित्र जी के विदा मांगने पर राजा दशरथ प्रेम में अति मग्न होकर पुत्र सहित आगे खड़े हो गये। तब रघुकुल के ज्ञानी मुनि एवं मुनि बामदेव ने महा मुनि विश्वामित्र जी की महिमा का वर्णन किया। मुनि का उत्तम यश सुनकर राजा अपने पुण्यों के प्रभाव की प्रशंसा करने लगे। मुनि की आज्ञा पाकर राजा पुत्रों सहित घर को लौटे।

विश्वामित्र जी अति प्रसन्न होकर राम के स्वरूप का ध्यान करते हुए, राजा दशरथ की सेवा-भक्ति की एवं विवाह के आनन्द उत्सव की मन ही मन सराहना करते हुए चले जा रहे हैं।

जब से राम ब्याह करके घर आये तब से नित्य नये-नये मंगल और आनंद की बधाइयाँ गाई जा रही हैं। अवधकी शोभा ऐसी है मानो चौदह लोक भारी पर्वतों पर उत्तम सत्कर्म रूपी बादल अमृत की वर्षा कर रहे हों, रिद्धि-सिद्धि सम्पत्ति रूपी नदियाँ उमंग भरकर अवधरूपी समुद्र में आई हों और नगर के नर-नारी रूपी अच्छी जाति की मणियों की बाढ़ जो भाँति-भाँति की सुन्दर और अनमोल थी अवध में आ गई हों।

नगर का ऐश्वर्य कुछ कहा नहीं जाता, ऐसा जान पड़ता है मानो ब्रह्मा जी की रचना ही बस इतनी हो। सब नगर निवासी आनंदकंद भगवान के मुख चन्द्र को देखकर सब प्रकार से सुखी हैं। सब माताएं और सखी सहेलियां अपनी मनोरथ रूपी बेल को फैली हुई देख कर आनंद में मग्न हो रही है। राम के रूप, गुण, शील और स्वभाव को देख कर मुनि वशिष्ठ जी और राजा दशरथ बड़े प्रसन्न हो रहे हैं।

सबके हृदय में ऐसी अभिलाषा है और सभी शिव जी को मना कर यही कहते हैं कि राजा अपने रहते हुए राम को युवराज पद देवें।

एक बार राजा दशरथ जी अपने सारे समाज सहित राज सभा में विराजमान थे। महाराज समस्त पुण्यों की मूर्ति हैं, उन्हें राम का सुन्दर यश सुनकर अति आनंद हो रहा है। सब राज्य अधिकारी उनकी कृपा के अभिलाषी हैं। लोकपाल, सब दिशाओं के दिकपाल राजा के रूख को देखकर प्रीति करते हैं। तीनों भुवन और तीनों कालों में राजा दशरथ के समान भाग्यशाली कोई नहीं है।

मंगलों के मूल श्री रामचन्द्र जी जिनके पुत्र हैं उनके लिए जो कुछ भी कहा जाय सो थोड़ा है। मुनि वशिष्ठ जी ने समय पाकर कहा कि हे राजन्! सुनो! जिनका विरोध करने पर या जिनसे विमुख रहने पर लोग पछताते हैं, जिनके भजन के बिना

हृदय का ताप नहीं मिटता वही प्रभु आपके पुत्र हुए हैं जो पवित्र प्रेम के अनुगामी हैं। हे राजन्! आप राम को युवराज पद देकर अपने जीवन का लाभ प्राप्त क्यों नहीं कर लेते हो?

हे राजन्! अब देर न कीजिए! शीघ्र ही सब समान सजाकर समाज को बुलाकर राम को युवराज पद दीजिए। शुभ दिन वही है और सुमंगल भी तभी है जब राम युवराज हो जायें।

राम को युवराज पद देने का निर्णय

राजा दशरथ प्रसन्न होकर राज भवन में आए और सेवकों, मंत्रियों सहित सुमंत को एवं सभासदों को बुलाया। उन लोगों ने जयजीव कहकर सिर नवाया। तब राजा ने मंगलदायक बात सुनाई कि आज मुनि वशिष्ठ जी ने प्रसन्न होकर मुझसे कहा है कि "हे राजन्!" राम को युवराज पद दिया जाय।" सो यह विचार यदि आप सब लोगों को सब पंचों को अच्छा लगता है तो बड़ी प्रसन्नता के साथ राम को राजतिलक दो।

राजा के प्रिय वचनों को सुनकर मंत्रीगण ऐसे प्रसन्न हुये मानो, उनके मनोरथ रूपी पौधे पर पानी पड़ गया हो। मंत्रीगण हाथ जोड़कर विनय करते हैं कि राजन्! आप करोड़ों वर्ष जिएं। हे नाथ, आपने जगत् को मोद-मंगल देने का उत्तम विचार किया है। अब देर नहीं लगाइये। मंत्रियों की सुन्दर वाणी सुनकर राजा ऐसे प्रसन्न हुए मानों बढ़ती हुई बेल सुन्दर डाली का सहारा पा गई हो।

बड़ी प्रसन्नता के साथ राजा ने कहामुनि वशिष्ठ जी जो-जो भी आदेश देते हैं राम के राज तिलक के लिये शीघ्रता से वैसा ही करो।

मुनि वशिष्ठ जी ने जिसको जिस कार्य के लिए आज्ञा दी मानो उसने वह कार्य पहले ही कर रखा हो। साधु मुनि एवं ब्राह्मणों की राजा पूजा करते हैं और राम के राजतिलक के लिये मंगल कार्य करते हैं। तब राजा दशरथ ने मुनि जी को बुलाकर यह शुभ संदेश देने के लिये भगवान राम के भवन में भेजा। वशिष्ठ जी का आगमन सुनते ही राम ने द्वार पर आकर उनके चरणों में मस्तक नवाया।

राम के गुण, शील और स्वभाव का वर्णन करते हुये मुनि प्रेम भरी गद्-गद् वाणी बोलेराजा ने राज्याभिषेक के सभी साज सजाए हैं वे आपको युवराज पद देना चाहते हैं। मुनि ऐसा कहकर राजा के पास गये किंतु राम को यह आश्चर्य हुआ कि इस पवित्र हंस वंश में यह एक बड़ा ही अनुचित हो रहा है कि भाइयों की अनुपस्थिति में राज्याभिषेक मनाया जा रहा है।

उसी समय प्रेम और आनन्द में मग्न होकर लक्ष्मण जी आए। रघुकुल के शिरोमणि आनंदकंद भगवान ने प्रिय वचन कहकर सम्मान किया।

कैकेयी की कूबरी दासी-मंथरा का त्रिया चरित्र

कैकेयी की कूबर दासी मंथरा जो सुंदर वाचाल होने से कैकेयी को प्यारी लगती थी। उसने सब देखा कि नगर सजाया जा रहा है तो पूछा कि क्या उत्सव है? तो यह सुनकर कि कल राम को राजतिलक होगा तो मंथरा का हृदय जलने लगा। वह दुष्ट बुद्धि की हीन बुरी भाँति की दासी मंथरा विचार करने लगी कि किस प्रकार यह कार्य रात ही रात में बिगड़े। रानी के पास जाकर वह उत्तर नहीं देती है, त्रिया चरित्र के लम्बे-लम्बे स्वांस भरकर आँसू ढरका रही है।

दासी की ऐसी दशा देखकर भयभीत हो रानी कैकेयी ने पूछा-अरी बोली क्यों नहीं? तुझे क्या हो गया? महाराज, राम, भरत और लक्ष्मण शत्रुघ्न कुशल से तो हैं? यह सुनकर कूबड़ी के हृदय में बड़ा दुःख हुआ। उसे दुखी देख और उत्तर न पाकर कैकेयी बोली काने, लंगड़े, लूले और कुबड़े ये खोटे स्वभाव के और टेढ़े चलने वाले टेढ़ी बातें करने वाले होते हैं इस पर भी तूँ चेरी है, तेरा स्वभाव भी अच्छी स्त्रियों जैसा नहीं है। इतना कहकर कैकेयी मुसकराई और फिर बोली

"यह सब कुछ जानते हुए भी कैकेयी कूबड़ी होने पर दया और वाचाल होने पर प्रेम करती थी यह रानी का स्वाभाविक गुण था।"

हे प्रिय बोलने वाली मेरी प्यारी सखी! तू बुरा न मानना। यह तो मैंने तुमसे हंसी में कहा है, मेरा तुझ पर स्वप्न में भी क्रोध नहीं है। तब मंथरा बोलीराम को छोड़कर आज कुशल किसकी है? जिन्हें राजा युवराज पद दे रहे हैं। राम के राज तिलक की बात सुनकर कैकेयी बोलीअय सखी! यदि सचमुच ही कल राम को राज तिलक है तो जो तुझे अच्छा लगे वह मांगले! मैं तुझे वही दूंगी, तू चिंता न कर।

राम को तो सभी माताएं कौशल्या के समान ही स्वभाव से प्यारी हैं। वे मुझ पर तो सबसे अधिक प्रेम करते हैं, मैंने उनके प्रेम की परीक्षा करके देख ली। यदि विधाता कृपा करके जनम दे तो राम जैसा पुत्र और सीता जैसी पुत्रवधू हो। राम तो मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं। उनके तिलक का तुझे दुःख क्यों हुआ?

तुझे भरत की सौगंध, तू छल कपटको त्यागकर सत्य कहतुझे क्या दुःख है? मंगल के समय दुःखी होने का क्या कारण है? मुझे सुना।

कुसंगति के प्रभाव से रानी की बुद्धि भ्रमित

रानी के पूछने पर मंथरा बोली कि विधाता ने मुझे कुरूप बनाकर पराधीन कर दिया है। जो बोया है वहीं काटना है और जो दिया है वही लेना है। कोई भी राजा होवे हमें उससे हानि भी क्या है? मैं दासी होकर अब रानी तो हो नहीं जाउँगी। किंतु जलाने योग्य मेरा स्वभाव ही ऐसा है जो तुम्हारा बुरा होते देखा नहीं जाता। अतः समयानुसार मैंने कुछ कह दिया, यह मेरी बड़ी भूल हुई, हे देवी मुझे क्षमा करो!

शबरी के गाने से जैसे मृगी मोहित हो जाती है, वैसे ही कैकेयी मंथरा की बातों से मोहित होकर उससे आदर सहित बार-बार पूछती है। होनहार वश रानी की मति फिर गई। मंथरा जो घात लगाए हुए थी उसकी सफलता देखकर दासी बोलीतुम पूछती हो पर मैं कहते हुये डरती हूं, उखाड़ना चाहती है उसे तुम उपाय करके दबाओ और पानी से सींचो।

राजा को अपने वंश जानकर सुहाग बल तुम्हें तनिक भी सोच नहीं है किंतु राजा का मुँह मीठा और मन मलीन है और तुम्हारा स्वभाव सरल है।

राम की माता बड़ी चतुर और गम्भीर है उसने समय पाकर अपना काम बना लिया। राजा ने भरत जी को ननिहाल जो भेजा है इसमें आप राम की माता कौशल्या का ही मत समझो! राजा का तुम पर विशेष प्रेम है, सौत के स्वभाव से कौशल्या इसे देख नहीं सकती। इसलिए उसने जाल रचकर राजा को अपने वश में करके राम के राजतिलक की लगन निश्चय कराई है।

होनहार वश कैकेयी के मन में विश्वास हो गया और सौगंध दिलाकर पूछा तो मंथरा बोलीतुम क्या पूछती हो? तुमने अभी तक नहीं जाना? अपना हित अनहित तो पशु भी जानते हैं। रानी ने अनेक प्रकार से दीन वचन कहे जिन्हें सुनकर कूबरी-मंथरा ने अपनी माया फैलाकर कहा कि यदि कल राम को राज तिलक हो गया तो समझो विधाता ने तुम्हारे लिए विपत्ति का बीज बो दिया। तब कैकेयी बोली

अपने चलते तो मैंने आज तक किसी को भी दुःख नहीं दिया और न किसी का बुरा ही किया है, पता नहीं विधाता ने किस पाप के कारण मुझे यह दारुण दुःख दिया है।

मंथरा ने कहा हे रानी! तुम अपने मन में दुःख मानकर ऐसा क्यों कह रही हो? तुम्हारा सुख और सुहाग तो दिन-दिन दूना होगा। जिसने तुम्हारा बहुत ही बुरा सोचा है वही इसका फल भली-भाँति पाएगी। मैंने जब से उसके यह बुरे विचार सुने तो हे स्वामिन तब से मुझे दिन में भूख नहीं लगती और रात में नींद नहीं आती। हे स्वामिन! यदि करो तो एक उपाय बताऊं? राजा तुम्हारी सेवा के वश में हैं।

तुम्हारे दो बरदान राजा के पास धरोहर हैं, आज उन्हें मांगकर अपनी भभकती हुई छाती ठण्डी करो। भरत के लिए राज लो और राम को बनवास दो तब सब कौशल्या का आनंद जो उसका हौसला था वह तुम प्राप्त करोगी। किंतु एक बात याद रखना कि जब राजा राम की शपथ ग्रहण करे तब वर मांगना, जिससे राजा अपने वचन से न टल सके। यह सब कार्य रात में ही करना! नहीं तो रात बीतने पर सारा काम बिगड़ जायेगा। मेरी यह बात तुम अपने जी में सत्य मानना।

कैकेयी ने कहामैं तेरे कहने से कुएं में गिर सकती ह ूँ, पूत और पति को भी त्याग सकती हूँ। तूँ मेरे हित की कहती है तो उसे क्यों न करूँगी?

पापि मंथरा ने बड़ी बुरी घात लगाकर कहा कि कोप भवन में जाओ! सब काम बड़ी सावधानी से करनादेखना! विश्वास भूलकर भी मत रखना।

रानी ने मंथरा को प्राणों के समान प्यारी जानकर बारंबार उसकी बुद्धि की सराहना की। कैकेयी बोलीहे मंथरा तेरे समान हितैषी मेरा इस संसार में कोई नहीं है। त ूँ बहते हुए को पार लगाने के लिए आधार बनी है। हे सखी! यदि मेरा यह मनोरथ विधाता ने पूरा कर दिया तो मैं तुझे अपनी आँखों की पुतली बना लूंगी। इस प्रकार भाँति-भाँति से मंथरा को आदर देकर कैकेयी कोप भवन में गई।

क्रोध का सारा साज सजाकर कोप भवन में जाकर सो गई। राज भवन एवं नगर में उत्सव मनाया जा रहा था, इस कुचाल को कोई भी नहीं जानता था। रानी शील स्वाभाव की थी परन्तु दुष्ट की संगति से उसकी बुद्धि भरमा गई। राज करते हुए कैकेयी की बुद्धि मंथरा ने शोक सागर में डुबा दी। कुसंगति पाकर किसका नाश नहीं हुआ? नीचों की संगत से, जब उनके मन से चलते हैं तो बुद्धिमानों की चतुराई भी नहीं रहती।

संध्या समय राजा दशरथ आनंद सहित कैकेयी के घर गये मानो प्रेम और निर्दयता ने एक साथ देह धारण की हो।

रानी को कोप भवन में सुनकर राजा सकुचाए, भय वश उनका पांव आगे नहीं पड़ता। भय से व्याकुल होकर राजा रानी के पास गये और दशा देखकर उन्हें बहुत बड़ा दुःख हुआ। मोटे पुराने कपड़े पहनकर तथा बदन के भाँति-भाँति के आभूषणों को गिराकर रानी भूमि में पड़ी है। रानी के पास जाकर राजा बड़े प्यार से बोलेहे प्राणों से भी अधिक मेरी प्यारी! क्या कारण है जो तुम इतना दुःखी होकर क्रोध में भरी हो?

हे प्यारी! मेरा प्राण, पुत्र, सर्वस्व, सारा परिवार और प्रजा सब तेरे वश में हैं। तूँ प्रसन्न होकर जो अच्छा लगे मांग ले और यह भूषण तेरे मनोहर बदन पर सजते हैं इन्हें पहन ले। मैं जो भी कह रहा हूं यदि कपट से कह रहा हूँ तो मुझे सौ बार राम की शपथ है। हे प्यारी! तू समय को देखकर, हृदय में विचार कर और अपने इस कुवेष को त्याग कर दे।

राजा की बहुत बड़ी शपथ को सुनकर कैकेयी उठी और भूषणवस्त्र पहनकर राजा को देखने लगी जैसे किरातनी फंदे में फांस कर देखती है।

फिर कपट का सनेह बढ़ाकर नेत्र और मुंह मटकाकर बोलीहे परम प्यारे प्राण प्रिय! जो मेरे मन को अच्छा लगता है वह मैं मांगती हूँ मुझे दीजिए! एक बर तो यह दो कि भरत को राजतिलक हो! दूसरा वर हाथ जोड़कर मैं यह मांगती हूँ कि तपस्वी के वेश में राम चौदह वर्ष तक बन में निवास करें। हे नाथ! मेरा मनोरथ पूरा करो।

कैकेयी के वचन सुनकर राजा के हृदय में ऐसा सोच हुआ जैसे चन्द्रमा की किरणों के गिरने से चकवा विकल हो जाता है। राजा से कुछ कहते नहीं बना, वे ऐसे सहम गये मानो बाज चिड़ियों पर झपटा हो। राजा दशरथ दोनों नेत्र बंद करके माथे पर हाथ रख कर ऐसे सोचने लगे मानो सोच ही देह धारण कर सोच रहा हो। मेरे मनोरथ रूपी कल्पवृक्ष को फलते फूलते देखकर इस हथिनी ने जड़ से ही उखाड़ दिया।

किस महान शुभ अवसर पर क्या हो गया.... मैंने प्रेम वश स्त्री पर विश्वास किया, जैसे योग साधना की सफलता का फल पाते समय यति को विवेकहीन विद्या नष्ट कर देती है।

राजा को चिंतित देख कैकेयी बोलीआपने सत्य की सराहना करके वर देने को कहा, समझते थे कि यह चबेना मांग लेगी। यदि अब वर नहीं देंगे

तो सत्य को तजकर जगत में अपयश लेंगे। कैकेयी ने बहुत ही कटु वचन कहे मानो जले हुए पर नमक लगा रही हो। राजा दशरथ ने छाती कठिन करके कैकेयी को सुहाती वाणी बोले

हे प्यारी! नीति, विश्वास और प्रीति की रीत को नष्ट करके बुरी तरह से ऐसे बोल क्यों बोल रही हो? मेरे तो भरत और राम दो आँखें हैं यह मैं शंकर जी की साक्षी दे कर कहता हूँ। मैं अवश्य ही सबेरे दूत भेजकर भरत को बुलाऊंगा, वे दोनों भाई तुरंत आएंगे। शुभ दिन-शुभमुहूर्त दिखाकर, सब तैयारी करके बड़े उत्साह के साथ गा-बजाकर भरत को राज्य दे दूँगा।

राम को राज्य का लोभ नहीं है, भरत पर उनका बहुत प्रेम है। मैं ही बड़े-छोटे का विचार करके राज नियम का पालन कर रहा था।

तेरी एक ही बात का मुझे बहुत दुःख हुआ है कि जो तुमने दूसरा वर मांगा, वह बड़ा ही अनुचित है। तू क्रोध को त्यागकर राम का अपराध तो बता? सब कोई यही कहते हैं कि राम बड़े अच्छे साधु हैं और सात्विक वृत्ति के हैं। तूँ भी उनकी सराहना करती थी, उनसे बड़ा प्यार करती थी। किंतु अब तेरी बात सुनकर मुझे बड़ा सन्देह हो रहा है। मैं स्वभाव से ही कहता हूँ, मन में कपट रखकर नहीं, मेरा जीवन राम के बिना नहीं है।

हे प्यारी! तुम चतुर हो! विचार कर देखो! मेरा जीवन तो राम के दर्शनों के ही आधीन है। कैकेयी कहती हैं कि आप करोड़ों उपाय क्यों न करें यहां आपकी चालाकी नहीं चलेगी। या तो मैंने जो मांगा है वह दीजिए नहीं तो मना करके अपयश लीजिए। यह प्रपंच मुझे अच्छा नहीं लगता। रघुकुल की यह रीति सदा से चली आई है कि प्राण भले ही चले जायं किन्तु वे अपने वचनों से नहीं हटते।

यदि प्रातः होते ही मुनि के वेष में राम वन को नहीं गये तो हे राजन्। मन में निश्चय करके जान लीजिए मेरा मरण होगा और आपका अपयश।

तूँ मेरा मस्तक मांग ले मैं तुझे अभी दे दूंगा पर राम के वियोग में मुझे मत मार! जिस किसी भी प्रकार से हो राम को रख ले नहीं तो जन्मभर तेरी छाती जलेगी। तेरा कलंक और मेरा पछतावा मरने पर भी नहीं मिटेगा और न कभी जाएगा। मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि जब तक मैं जिन्दा रहूँ तब तक मुझसे कुछ नहीं कहना।

हे अभागिन! तूँ अंत में बहुत ही पछताएगी, जो तूँ बिना आँख खुले शेर के बच्चे के लिए गाय को मार रही है। राजा दशरथ अपने हृदय में मानते हैं कि सवेरा न हो और राम से कोई जाने के लिए न कहे। उस रात्रि में किसी को भी नींद नहीं आई, सब राम के दर्शनों के लिये ही लालायित थे। राम राज्याभिषेक के उत्साह में अनेक प्रकार के मनोरथ करते बीत गई। प्रातःकाल जब सवेरा हुआ तो ज्ञानी मुनि वशिष्ठ जी जागे।

द्वार पर भीड़ लगी हैं, सेवकगण और मंत्रीगण सूर्य को देखकर कहने लगे कि क्या कारण है जो राजा अभी तक नहीं जागे। लगता है कि कोई विशेष ही कारण है।

सब संशय में पड़कर कहने लगे कि सूर्य उदय होने से एक पहर पहले ही राजा नित्य प्रतिदिन जाग जाते थे किन्तु आज तो हमें बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है। हे सुमन्त जी! आप जाओ और राजा को जगाओं! जैसी उनकी आज्ञा हो करो। पूछने पर कोई भी उत्तर नहीं देता है तब सुमंत वहां गये जिस घर में राजा और कैकेयी थे। चिंता से विकल होकर राजा का शरीर पृथ्वी पर पड़ा है मानो कमल अपना मूल छोड़कर गिर पड़ा हो।

मंत्री-सुमंत राजा को देखकर भयभीत हो गये, वे पूछ न सके, कैकेयी ने स्वयं ही सुंदर मुंह से अशुभ बचन बोलीआप राम को शीघ्र ही बुलाकर लाइए तब समाचार पूछना। राम ने जब सुमंत को आते देखा तो पिता के समान आदर किया। राम को सुमंत के साथ बुरी तरह जाते देखकर जहाँ-तहाँ लोग बेचैन होकर दुःखी होने लगे।

राजा को मूर्छित देखकर राम का कैकेयी से पूछना

राम ने जाकर देखा कि राजा बहुत ही बुरी दशा में बुरी तरह से पृथ्वी पर पड़े हैं। मानो बूढ़ा हाथी सिंहनी को देखकर सहम कर गिर पड़ा हो।

राजा की ऐसी दशा देखकर, धीरज धारण कर और समय विचार कर राम ने मधुर शब्दों में कैकेयी से पूछाहे माता! पिता जी के दुःख का कारण क्या है? मुझे बता? वह यत्न किया जाय जिससे दुःख निवारण हो। कैकेयी बोलीराजा ने मुझे दो वरदान दिये हैं सौ मैंने जो चाहा सो मांग लिया। राम को वृत्तान्त सुनाकर कैकेयी ऐसी बैठी थी मानों निष्ठुरता ने देह धारण की हो।

रघुकुल के सूर्य भगवान राम जो निधान और सहज स्वरूप हैं वे मन में मुस्काकर मधुर, निर्मल वाणी के भूषण एवं सभी दूषणों से रहित सुन्दर वचन बोलेहे माता, सुनो! वही पुत्र भाग्यशाली है जो माता-पिता के वचनों में प्रेम रखता है। माता-पिता पुत्र का पालन करते हैं, इस संसार में माता बड़ी दुर्लभ है। माता भग्यवान को ही मिलती है।

इसमें मेरा सभी तरह से हित हैएक तो विशेषकर वन में ऋषि-मुनियों का मिलना, दूसरे पिता जी की आज्ञा और हे माता तुम्हारी इसमें सम्मति भी है तो इससे बढ़कर लाभ और क्या हो सकता है?

प्राणों से भी अधिक प्यारे-मेरे भाई भरत राज पाएंगे विधाता सभी प्रकार से मेरे अनुकूल है। यदि ऐसे शुभ कार्य के लिए भी मैं वन को न जाऊँ तो प्रथम यह समाज ही मुझे मूढ़ कहेगा। किन्तु हे माता! राजा की बहुत ही बुरी दशा देखकर मुझे अति ही दुःख हो रहा है, इसमें मुझे सन्देह है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि इस थोड़ी-सी बात के लिए राजा की यह दशा हो?

कैकेयी बोली कि मुझे तुम्हारी सौगंध और भरत की आन है, मैं सत्य कहती हूँ कि मुझे दूसरे किसी भी कारण का ज्ञान नहीं है। राम को माता कैकेयी के वचन अच्छे लगे जैसे गंगा में जल शोभायमान लगता है। राम ने प्रसन्न होकर कहाकि मैं माता से विदा मांग कर आता हूँ तब प्रणाम करके वन को जाउंगा। राम का मुख प्रसन्न है और हृदय में चौगुणा चाव है। राजा रख न लें यह चिंता मिट गई।

राम का माता कौशल्या से विदा मांगना

ऐसी कौन-सी वस्तु है जिसे अग्नि जला न सके, जो समुंद्र में समा न सके और ऐसा कौन-सा कार्य है जिसे प्रबल स्त्री कर न सके? कौन ऐसा व्यक्ति है जिसे काल न खा सके।

राम ने दोनों हाथ जोड़कर प्रसन्न मन से माता के चरणों में सिर नवाया। माता ने आशीर्वाद देकर राम को हृदय से लगाया और भूषण वसन निछावर किये। प्रभु का सुंदर बदन देखकर माता आदर सहित बोलीहे तात! मैं बलिहारी जाऊं, शीघ्र ही स्नान करके जो तुम्हारे मन को भाए वह मधुर फल खाओ।

धर्म की गति को जानने वाले धर्म में प्रवीण राम बड़े मधुर वचन बोले-कि हे माता। पिता जी ने मुझे वन का राज्य दिया है, जहाँ मेरा सब प्रकार से बहुत ही बड़ा काम है। हे माता। प्रसन्न मन से मुझे आज्ञा दीजिए जिससे वन में जाते समय मोद और मंगल हो। कहीं प्यार के वश होकर डरना नहीं। आपकी दया से हे माता! मुझे सभी जगह आनन्द है।

चौदह वर्ष वन में रहकर पिता जी के वचनों को पूरा करके मैं लौटकर आपके चरण कमलों का दर्शन करूँगा। मन में किसी प्रकार का दुःख न मानना।

राम की माता सरल स्वभाव से धीरज धर कर बोली-हे तात! मैं बलिहारी जाऊं-तुमने बहुत ही अच्छा किया! क्योंकि पिता की आज्ञा का पालन करना ही धर्म का टीका है जहाँ से मानव धर्म के मार्ग पर चलता है। परन्तु हे तात! यदि केवल पिता की आज्ञा है तो मुझे बड़ी माता जानकर वन को मत जाओ और यदि माता-पिता दोनों की आज्ञा है तो वन का राज्य तुम्हारे लिये सैंकड़ों अयोध्या समान है। "क्योंकि कौशल्या कौशल प्रदेश की महारानी थी"

राजा के लिए अंत में वनवास उचित ही है किन्तु तुम्हारी यह अवस्था देखकर हृदय में खेद होता है। मैं बलिहारी जाऊं, तुम सेवकों, परिवार को और नगर भर

को अनाथ करके सुखपूर्वक वन को जाओ। अपने को अभागिन जान माता प्रभु के चरणों में लिपट गई। तब राम ने उठाकर माता को हृदय से लगाकर सुन्दर मीठे-मीठे वचन कहकर भाँति-भाँति से बहुत समझाया।

राम का सीता जी को समझाना

उसी समय यह समाचार सुनकर सीता जी अकुलाई और कौशल्या जी के पास जाकर उनके चरण कमलों में प्रणाम करके बैठ गई।

कौशल्या जी ने कोमल वाणी द्वारा आशीर्वाद दिया। वे सीता जी को अति सुकुमारी जानकर व्याकुल हो उठीं। सीता जी विचार करती हैं कि मेरे जीवन नाथ वन को जाना चाहते हैं, पता नहीं कौन-से शुभ कर्मो के फल से साथ होगा। विधाता की करनी का कुछ पता नहीं लगता। क्या पता प्राण और शरीर दोनों जाएंगे या केवल प्राण। यह विचार करते हुए श्री सीता जी अपनी आँखों के आसूँ पोंछ रही हैं यह देखकर राम की माता कौशल्या बोली

हे तात! हे दीनों के नाथ सुनो! श्री सीता जी अपने सास, स्वसुर और सारे परिवार को अति ही प्यारी एवं सुकुमारी हैं। मैंने भी गुण और शील में शोभायमान, रूप की निधान परम प्यारी पुत्रवधु पाई है। श्री सीता जी आपके साथ ही वन में जाना चाहती हैं, कहिए आपकी क्या आज्ञा है? माता के शील और स्नेह में सने हुए परम प्यारे वचन सुनकर

राम ने प्यारे, मीठे और विवेक युक्त वचन कहकर माता को संतुष्ट किया और वन के गुण और दोष बताकर सीता जी को समझाने लगे।

माता के सामने सीता जी से कहने में सकुचाते हैं परन्तु फिर भी समयानुसार कुछ समझकर राम बोले-हे राजकुमारी! मेरी सिखावन सुनो! मन में कुछ और न समझना! तुम वन में जाने के योग्य नहीं हो, लोग मुझे दोष देंगे और भला कहीं मानसरोवर के अमृत के समान जल में पली हुई हंसिनी खारे समुद्र के जल में जी सकती है?

हे चन्द्रवदनी! ऐसा विचार कर घर में ही रहो! वन में बड़ा कष्ट हैं। राम के मधुर वचनों को सुनकर सीता जी के नेत्रों में जलभर आया और बोली-हे नाथ! आपने मेरे हित की बात कही है पर मेरे विचार से पति के वियोग के समान कोई दुःख नहीं है।

हे दया के निधान प्राणनाथ! सुखदाता, रघुकुल रूपी कमल को खिलाने वाले चन्द्रमा! आपके बिना मेरे लिए स्वर्ग भी नरक के समान है।

माता-पिता, भाई-बहिन, प्यारा परिवार, जितने भी हितैषी और मित्रों का समुदाय। सास, ससुर, गुरु आदि सज्जन जो जीवन के सहायक हैं, सुन्दर सुशील पुत्र भी सुखदायक हों और तन, धन, गृह, पृथ्वी, नगर, राज्य भी सभी प्रभु के बिना शोक के समाज हैं। हे प्राण नाथ! आपके बिना मेरे लिये सुख को देने वाला कहीं भी कुछ भी नहीं है।

जैसे जीव के बिना देह और जल के बिना नदी सूख ही जाती है, वैसे ही नाथ! पुरुष के बिना स्त्री मुर्दे के समान है। हे नाथ! सरद ऋतु के चन्द्रमा के समान निर्मल आपका बदन देखकर सभी सुख आपके साथ हैं मैं आपसे अधिक विनती क्या करुं, आप तो हे स्वामी! दया के सागर और सबके हृदय में रमण करने वाले हैं, सबके हृदय की जानते हैं। मैं तो सुकुमारी हूँ और आप वन के योग्य हैं? आपके लिये तप और मेरे लिये भोग?

ऐसे कठोर वचन सुनकर भी यदि हृदय नहीं फटा तो हे प्रभु! ये डरपोक प्राण आपके वियोग का दुःख विष के समान सहन करेंगे।

ऐसा कहकर सीता जी बहुत ही व्याकुल हो गई, वे वचन के वियोग को भी सहन न कर सकीं। सीता जी की दशा को देखकर राम ने हृदय में जान लिया कि यदि हठ कर के घर में रख भी लिया तो यह प्राण नहीं रखेगी। तब सूर्य कुल के स्वामी भगवान राम ने श्री सीता जी से कहा कि चिन्ता को त्यागकर वन को शीघ्र चलो! अब यह समय दुःखी होने का नहीं है। यह हमारे लिये बड़ी प्रसन्नता का समय है, जो माँ ने वन का राज्य दिया है। अतः शीघ्र ही तैयारी करो।

तब सीता जी ने माता कौशल्या के चरणों में प्रणाम किया और बोलीं-कि हे माता! मैं परम अभागिनि हूँ जो सेवा के समय विधाता ने वन देकर मेरा मनोरथ सफल नहीं किया। सीता जी के प्यारे वचन सुनकर माता कौशल्या अकुलाई, उनकी दशा कैसे वर्णन की जाय। माता ने बार-बार सीता जी को छातीसे लगा कर, धीरज धारण कर आशीष दी।

कौशल्या सीता जी को अनेकों प्रकार से आशीष एवं शिक्षायें दी। सीता जी प्रेम सहित चरणों में बार-बार प्रणाम करके चली।

लक्ष्मण की प्रभु से नम्रतापूर्वक बाल विनय

वन जाने का शुभ समाचार पाकर लक्ष्मण जी बिलखते हुये से व्याकुल होकर दौड़े। उनका शरीर कांप रहा है और पुलकायमान भी हो रहा है। वे नेत्रों में जल भरे हुये प्रेम में अधीर हो कर प्रभु के चरणों में गिरे। वे सोच रहे हैं कि प्रभु क्या कहेंगे घर में रखेंगे या साथ ले चलेंगे। नीति में निपुण, शील, सनेह, सरलता और सुख के समुद्र प्रभु लक्ष्मण को देखकर बोले-इस अवस्था में यदि मैं तुम्हें साथ लेकर जाता हूं तो अयोध्या सब भाँति अनाथ हो जाएगी। माता-पिता, परिवार, मुनि और प्रजा इन सब पर असहनीय दुःख का भार आ पड़ेगा। जिसके राज्य में प्यारी प्रजा दुःखी रहती है वह राजा अवश्य ही नरक का अधिकारी होता है। सो हे तात! ऐसी नीति विचार कर तुम घर पर ही रहो। यह सुनते ही लक्ष्मण जी बहुत ही व्याकुल हो उठे।

प्रभु के सामने प्रेमवश लक्ष्मण जी कुछ कह नहीं सके और अकुलाकर चरणों में गिर पड़े। वे गद्-गद् कण्ठ से बोले-हे नाथ! आप मेरे स्वामी हैं, मैं आपका दास हूँ। यदि छोड़ दोगे तो मेरा क्या वश है।

लक्ष्मण ने कहा-हे प्रभु! आपने मुझे अच्छी शिक्षा दी है किन्तु मुझे अपनी ही कमी के कारण कठिन जान पड़ती है। शास्त्रों की नीति के तो वही अधिकारी हैं जो धीर धर्म की धुरी को धारण करने में निपुण हैं। मैं तो प्रभुके चरणों में स्नेह से पला छोटा सा बच्चा हूँ। कहीं हंस भी मंदराचल पर्वत को उठा सकता है? हे नाथ! स्वभाव से कहता हूँ, विश्वास कीजिए। मैं आपके सिवा-मुनि, पिता, माता किसी को भी नहीं जानता।

संसार में जहाँ तक स्नेह का सम्बंध है, प्रेम और विश्वास है जिनको आपने स्वयं और वेद ने भी कहा है वह सब तो मेरे लिए एक आप ही हो। हे दीन बंधु! हृदय को जानने वाले प्रभु! धर्म और नीति का उपदेश तो उसे ही दीजिए जिसे कीर्ति, ऐश्वर्य, शुभगति अच्छी लगती हो। जो मन, कर्म और वचन से आपके श्रीचरण कमलों का प्रेमी हो हे कृपा सिंधु आनंद कंद प्रभु! क्या वह त्यागने योग्य है?

दया के सागर प्रभु ने उत्तम भ्राता लक्ष्मण के प्यारे नम्र वचन सुनकर उसे प्रेम के कारण भयभीत जान समझाकर अपने हृदय से लगा लिया और कहा ।।दो॰३२।।

लक्ष्मण का माता सुमित्रा से विदा माँगना

हे भाई! जाकर शीघ्र ही माता से विदा मांगकर वन को चलो। प्रभु के वचन सुनकर लक्ष्मण जी अति प्रसन्न हुए। जीवन का जो सबसे बड़ा लाभ था प्रभु का साथ वह मिल गया और सबसे बड़ी भारी हानि भी मिट गई। वे प्रसन्न होकर माता के पास आए मानों अंधे को आंख मिल गई हो। लक्ष्मण जी ने माता के चरणों में सिर नवाया किन्तु मन प्रभु के चरणों में था।

लक्ष्मण जी का मन उदास एवं दुःखी देखकर माता सुमित्रा ने पूछा तो लक्ष्मण ने सारी कथा कह सुनाई। माता बोली-हे तात! सीता जी तुम्हारी माता हैं और सभी प्रकार से प्यार करने वाले राम तुम्हारे पिता हैं। परम प्यारे पूजनीय जो भी जहाँ तक भी हैं वे सबके सब राम के नाते से ही माने जाते हैं। ऐसा हृदय में जान कर हे तात! उनके साथ वन में जाओ और जगत में जीवन का लाभ प्राप्त करो।

हे तात! यह बड़े सौभाग्य की बड़ी सुन्दर बात है जो तुम प्रभु के प्रेम पात्र बने हो। मैं अपने को बहुत ही भाग्यशाली समझते हुए बलिहारी जाती हूँ यदि तुमने छल छोड़कर सच्चे हृदय से प्रेम पूर्वक प्रभु के चरणों में मन लगाया है। ।।दो॰३३।।
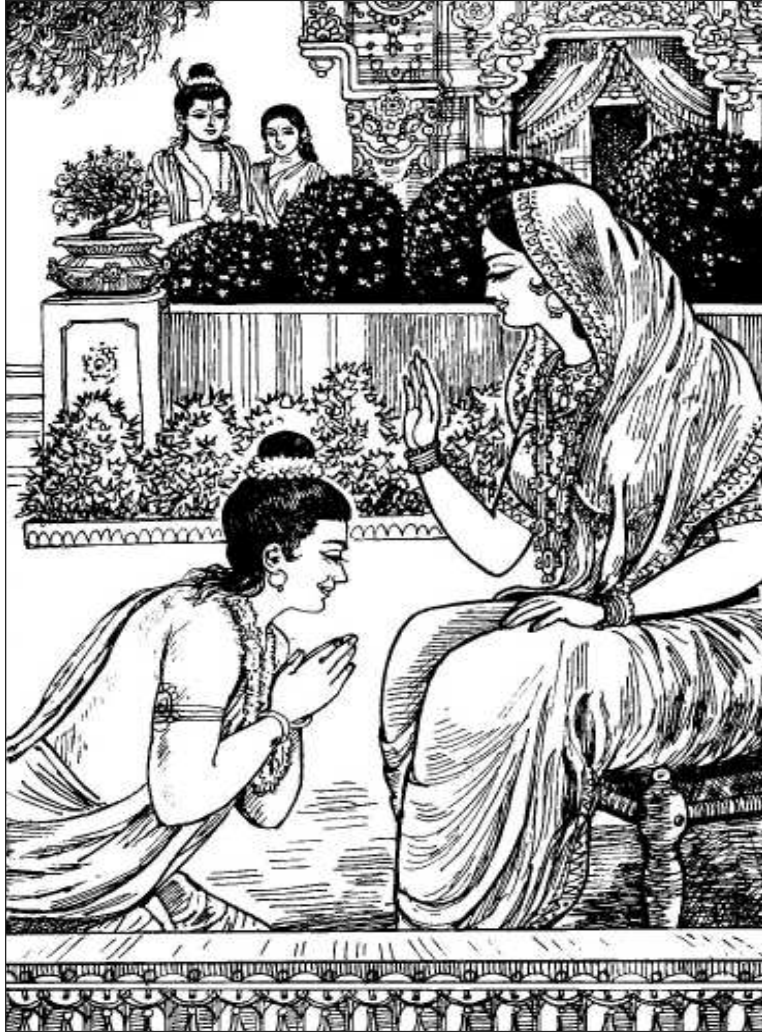
वन गमन हेतु माँ सुमित्रा से आज्ञा लेते हुए श्री लक्ष्मण जी

जगत् में वही स्त्री पुत्रवती है जिसका पुत्र प्रभु का भक्त हो। नहीं तो वह बांझ ही भली है। पशु की भाँति ब्याने से कोई लाभ नहीं है क्योंकि जो पुत्र राम से विमुख हैं उनसे हित की हानि ही होती है। हे तात! तुम्हारे ही भाग्य से राम वन को जा रहे हैं दूसरा कोई कारण नहीं है। हे पुत्र! सम्पूर्ण सतकर्मों फल यही है कि सीता व राम के चरण कमलों में प्रेम हो।

राग-किसी से प्रेम करना, रोष किसी से क्रोध करना, ईर्ष्या किसी से द्वेष करना, अभिमान के कारण अपने पन को भूल जाना तथा मोहित होकर भ्रमित होना इन सब के वश में कभी भी मत होना। इन सभी प्रकार के विकारों को त्यागकर मन, कर्म और वचन से सेवा करना! जिसके साथ राम जैसे पिता और सीता जैसी माँ हो तो तुम्हारे लिए तो सभी तरह से वन यात्रा सुखदाई है। वही वन तीर्थ है जहाँ प्रभु का निवास हो। हे पुत्र! तुम वही करना जिससे राम को वन में कोई क्लेश न हो! यही मेरा उपदेश है।

माता के चरणों में सिर नवाकर और यह सोचते हुए कि कहीं राम चले न जायं। लक्ष्मण जी ऐसे तेजी से चले जैसे भाग्यवश मृग फंदे को तुड़ाकर भाग जाता हो। ।।दो॰३४।।

कैकेयी से मुनि वस्त्र लेकर राम का वन गमन

लक्ष्मण जी भगवान राम के पास पहुंचे और प्यारा साथ पाकर अति प्रसन्न हुये। मंत्री एवं मुनि की पत्नी ने स्नेह सहित वचन बोले- तुम्हें तो वनवास नहीं दिया है, तुम वही करो जो तुम्हारे सास ससुर कहें किंतु उनकी बातों का सीता जी ने कोई उत्तर नहीं दिया तब सुनकर कैकेयी तमक उठी।

मुनी-वस्त्र, भूषण और पात्र लेकर प्रभु के सामने रखे कैकेयी रोष में आ कर बोली-चाहे शुभ कर्म, सुयश और परलोक का नाश भी हो जाय परन्तु तुम्हें वन जाने के लिए कोई नहीं कहेगा। ऐसा विचार कर जो आपको अच्छा लगे वही करो। कैकेयी की बात सुनकर राम मुनि वेष धारण कर सिर नवा कर चले।

मुनि का सारा साज सजा कर राम सीता और लक्ष्मण सहित विप्र, मुनि एवं प्रभु के चरण कमलों की वंदना करके तथा सबको अचेत करके चले। हे माता! मेरे विरह में किसी प्रकार भी कोई दीन और दुःखी न हो ऐसा उपाय तुम और नगर के सब बुद्धिमान सज्जन मिलकर करना।

राजा दशरथ मूर्छित हैं, सभी शोक से व्याकुल हैं, किसी को कुछ भी नहीं सूझता कि क्या करें। तब प्रभु ने प्यारे वचन कहकर सभी को समझाया और साधुगणों को बुलाया। प्रभु हाथ जोड़ कर सबसे मीठे वचन बोले-प्रभु ने सभी को इस प्रकार भली भाँति समझाया। तब प्रभु ने अति प्रसन्न होकर सदगुरु देव के श्री चरण कमलों में सिर नवाया। सद्गुरुदेव भगवान शंकर की कृपा से यात्रा में कोई बाधक नहीं बना।

मुनि वशिष्ठ जी निकलकर जब द्वार पर खड़े हुए तो देखा कि लोग विरह की अग्नि में जल रहे हैं। राम के जाते ही उन्हे बड़ा भारी दुःख हुआ, उनके दुःख भरे शब्द सुने नहीं जाते। यह विधाता ने प्रभु का वियोग करना ही था तो बिना मांगे मौत क्यों नहीं दी। उनका कठिन वियोग कहा नहीं जाता, वे सब नगरवासी एवं सभी परिजन इस आशा से जीवित रहे कि अवधि बीतने पर फिर प्रभु के दर्शन होंगे।

नगर निवासी प्रभु के लिये नेम ब्रत करने लगे। उनकी ऐसी दशा हो गई जैसे चकवा, चकवी और कमल सूर्य के बिना दीन-दुःखी हो जाते हैं।

राम की सखा निषादराज गुह्य से भेंट

रघुकुल की ध्वजा-शुद्ध सच्चिदानंद मय प्रभु जन्म-मरण के दुःख रूपी समुद्र से पार करने के लिये जिनका हंस नाम पुल है वे विभु मनुष्य रूप में लीला करते हैं।

लक्ष्मण और सीता सहित भगवान राम श्रृंगवेर पुर पहुंचे। प्रभु के आने का समाचार जब निषादों के राजा गुह्य ने पाया तो बड़े ही प्रसन्न होकर अपने प्रेमी बंधुओं को बुलाया। कंद, मूल, फल और फूलों के थार भर-भर कर प्रभु की भेंट के लिए लेकर चले और अति प्रसन्न होकर प्रभु के आगे भेंट रखकर दण्डवत प्रणाम करने लगे। वे सब प्रभु के दर्शन करके अति ही प्रसन्न हुए।

श्री लक्ष्मण जी द्वारा निषादराज को उपदेश

स्वाभाविक ही स्नेह वश राम ने उसे अपने पास बैठाकर कुशल मंगल पूछी। निषादराज गुह्य ने कहा-हे नाथ! आपके चरण कमलों के दर्शन पाते ही कुशल है। आज मैं भाग्यवान भक्तों की गिनती में आ गया। हे प्रभु कृपा करके नगर में चरण रखिये और वहां रहकर भक्तों को भाग्यशाली बनाइए ! प्रभु बोले-हे सखा! तुम सत्य कहते हो परन्तु मुझे पिता जी ने और ही आज्ञा दी है।

चौदह वर्ष तक मुनियों का वेष, ब्रत धारण करके मुनियों जैसा आहार करते हुए वन में रहना है। ग्राम में बसना उचित न जानकर गुह्य को बड़ा भारी दुःख हुआ।

भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के रुप को देखकर गाँव के स्त्री-पुरुष आपस में प्रेम सहित कहते हैं कि-हे सखी! कहो तो वे माता-पिता कैसे होंगे जिन्होंने ऐसे बालकों को वन में भेज दिया है। एक ने कहा-कि राजाने अच्छा ही किया इसी बहाने हमें भी विधाता ने नेत्रों का लाभ दिया। नगर वासी भेंट-पूजा तथा प्रणाम कर-करके अपने-अपने घर लौटे तब प्रभु संध्या करने गये।

तब निषादराज ने हृदय में विचार किया कि अशोक के वृक्ष अति मनोहर और सुन्दर हैं। गुह्य ने वहाँ सुन्दर साथरी संवारकर बिछाई जो कुश और कोमल पत्तों से शोभायमान थी। तब गुह्य ने सुन्दर मधुर और स्वादिष्ट फल-मूल उत्तम, जानकर भर-भर कर दोने रख दिये।

लक्ष्मण निषादराज संवाद

भगवान राम ने भाई लक्ष्मण और सीता सहित कंद मूल, फल खाकर शयन किया। लक्ष्मण जी प्रभु के चरण दबा रहे हैं। ।।दो॰४०।।

प्रभु को सोते जानकर लक्ष्मण जी उठे और मधुर वचन बोले-कि हे सखा सो जाओ! और कुछ दूर पर धनुष वाण ले वीरासन से बैठकर पहरा देने लगे। गुह्य ने बड़े प्यार से विश्वास पात्र पहरेदारों को बुलाकर जगह-जगह पहरा देने के लिए रखा और स्वंय कमर में तरकस बांध कर धनुष बाण चढ़ाकर लक्ष्मण जी के पास बैठ गये।

प्रभु को पृथ्वी पर सोते देखकर प्रेमवश निषादराज के हृदय में विषाद उत्पन्न हो गया। "जो वन तीर्थो में रहने वाले सदा कंद मूल फल खाकर भजन में सुखी रहते हैं वे भी प्रभु को देखकर निषाद सुख से विषाद दुःख को प्राप्त हो गये। निषाद राज का तन पुलकायमान है और नेत्रों में प्रेम के आँसू बह रहे हैं। वह प्रेम सहित लक्ष्मण से कहते हैं-जिनके पिता जनक और ससुर दशरथ राजा हैं, तथा पति भगवान राम हैं वह सीता जी पृथ्वी पर सो रही हैं, विधाता किसके विपरीत नहीं होता।

माता, पिता, कुटुम्बी, पुरवासी, शील-सुभाव के सखा एवं दास- दासियाँ सब जिनको प्राणों के समान देखभाल करते थे, वे राम आज पृथ्वी पर सो रहे हैं। श्री सीता जी और श्री रामचन्द्र जी थके हुये बिना वस्त्र के साथरी पर सो रहे हैं। यह देखा नहीं जाता। राम और सीता क्या वनवास के योग्य हैं? लोग सत्य कहते हैं कि कर्म प्रधान है।

कैकेयी ने यह बड़ा ही कठिन और कुटिल प्रण किया जो वह सूर्यकुल रूपी वृक्ष के पालन एवं रक्षा करने वाले राम और जानकी को सुख के समय कठिन दुःख दिया। ।।दो॰९४१।।

कैकेयी, सूर्यकुल के वृक्ष के लिए कुठार बन गई, उस दुर्मति ने सारा विश्व ही दुःखी कर दिया। राम और सीता जी को पृथ्वी पर सोते देखकर निषादों के राजा गुह्य को विषाद हो गया। तब लक्ष्मण जी ज्ञान, वैराज्ञ और भक्ति रस में सने सुन्दर मीठे वचन बोले-हे सखा! कोई किसी को न सुख का दाता है और न दुःख का ही दाता है। सब अपने-अपने किये हुए कर्मो का फल ही भोगते हैं। कर्मो का फल देने वाला तो एक आनंदकंद भगवान विष्णु ही है।

योग-मिलना, वियोग-बिछुडना, भोग-प्राप्त होना-भला और बुरा, हित और अनहित-ये सब भ्रम और फंदे के कारण हैं जिनसे सभी जीव बंधे हैं। ऐसे ही जन्म-मरण का जितना भी जगत का जाल बिछा है और सम्पत्ति-विपत्ति, कर्म और समय, पृथ्वी घर, धन, नगर-परिवार, स्वर्ग - नर्क ये जहां तक भी व्यवहार में आने वाले हैं। ये सब परमार्थ नहीं हैं बल्कि अनर्थ का मूल है। जिनसे सभी जीव भरमते रहते हैं। जीवन का परम अर्थ तो इनसे मुक्ति पाना है।

जैसे कोई राजा सपने में भिखारी हो जाय और कंगाल देवलोक का राजा इन्द्र बन जाय परन्तु जागने पर राजा को न हानि है और न कंगाल को कुछ लाभ ही है। हृदय में विचार कर देखो तो यह सब प्रपंच ही है। ।।दो॰४२।।

हे सखा! यह विचार कर क्रोध न कीजिए और व्यर्थ ही किसी को दोष न दीजिये। संसार में जितने भी जीव हैं सब मोह रूपी रात्रि में सोये हुए हैं और जिस कार्य में जो लगा है वह स्वप्न देख रहा है। इस जगतरूपी रात्रि से योगी जन जागते हैं जो परमार्थी हैं और प्रपंच को त्याग दिया है। जीव को जागा हुआ तभी जानिए जब उसकी विषय भोगों से उपरामता हो।

ज्ञान हो जाने पर जब ऐसा विवेक हो जाता है तब मोह और भ्रम सब भाग जाते हैं तभी प्रभु के चरणों में प्रेम उत्पन्न होता है। हे सखा! मन से , कर्म से और वचन से प्रभु के चरणों में प्रेम होना ही परम परमार्थ है। राम परम ब्रह्म है। परमार्थ के स्वरूप है। कल्पान्त में भी उनका अन्त नहीं होता,उस विश्व रूप का दर्शन इन आँखों से नहीं होता है इसलिए अलख कहा है। वह अनादि और अनुपम है वह सभी विकारों से रहित है, उसमें कोई भेद नहीं है जिसे वेद नित्य और अनन्त कहते हैं। उसका कोई अन्त नहीं होता। भौतिक देह विकारों से उत्पन्न होती हे या माया से परन्तु वह विस्वव्यापी रूप जो प्रकाश में निवास करता है विकार रहित है।

पूरण ब्रह्म परम ईश्वर अपने भक्तों, पृथ्वी, साधु, गऊ और देवताओं के हित के लिए मनुष्य तन धारण करके पवित्र चरित्र करता है। उस विभु की गुणमयी लीलाओं को एवं उसके प्रवचनों को सुनते ही जगत के जंजाल मिट जाते हैं । "पाप घटें हरि के गुण गाए"। ।।दो॰४३।।

सो हे सखा! ऐसा समझकर ,मोह त्याग कर परम प्रभु श्री रामचद्र और श्री सीता जी के चरण कमलों में प्रेम करो। इस प्रकार प्रभु के गुण गाते हुए भोर हो गई और आनंदकंद सच्चिदानन्द प्रभु सर्व मंगलो के दाता, जगत को सुख देने वाले जागे।

केवट गुह्य का गुह्य प्रेम

प्रभु ने नाव मंगाई किंतु केवट नाव नहीं ला रहा है, कहता है कि-हे प्रभु! आपका मर्म मैंने लक्ष्मण जी से जान लिया है। आप के श्रीचरण कमलों की रज दानव से मानव बनाने की बूटी है, ऐसा सब कहते हैं । सो हे प्रभु! यदि आप रुकना नहीं चाहते और अवश्य ही जाना चाहते हैं तो मुझे चरण धोने की आज्ञा दीजिये! प्रभु ने कहाशीघ्र ही चरण धोकर पार उतारो! देर हो रही है।

जिस प्रभु का नाम एक बार सुमिरण करते ही मनुष्य अपार संसार सागर से पार हो जाता है उसी प्रभु की आज्ञा पाकर केवट कठौता में पानी भरकर ले आया और आनन्द में मग्न होकर चरण धोने लगे भक्त निषाद गण प्रसन्न होकर केवट गुह्य की प्रसंसा करने लगे-कि इनके समान भाग्यशाली कोई नहीं है।

प्रेम से लिपटे हुए अटपटे केवट के वचन सुनकर प्रभु श्री सीता जी और लक्ष्मण को देखकर हंसे। प्रभु के चरण धोकर चरणामृत लेकर स्वयं और परिवार सहित पित्रों को पार करके तब आंनन्दकंद भगवान को पार ले गया।

भगवान राम और सीता लक्ष्मण एवं गुह्य केवट सहित नाव से उतर कर गंगा जी के किनारे खड़े हो गये। केवट ने उतर कर दण्डवत प्रणाम किया तब प्रभु ने सोचा कि इसको कुछ नहीं दिया। पति के हृदय को जानने वाली श्री सीता जी ने प्रसन्न होकर मणि जड़ित अंगूठी अपनी उंगली से निकाल कर प्रभु को दी। प्रभु ने केवट से कहा-कि तुम उतराई ले लो। तब केवट प्रेम से गद्-गद् होकर प्रभु के चरणों में प्रणाम किया और कहा-

हे नाथ! आज मैंनें क्या नहीं पाया? मेरे सारे पाप, दुःख और संताप धुल गये। मैंने अनेकों जन्मों में जो मजूरी की थी वह सब आज विधाता ने सब पूरी कर दी। अब मेरी सभी कामनाएं पूरी हो गई है, मुझे अब कुछ नहीं चाहिये। हे दीनों पर दया करने वाले प्रभु! आपके अनुग्रह से वापसी में जब आप आओगे उस समय जो कुछ भी प्रसाद आप देंगे वह मैं अपने सिर पर धारण करके लूंगा।

भगवान राम और लक्ष्मण ने बड़ा प्रयत्न किया किन्तु केवट ने अंगूठी नहीं ली। तब दयासागर राम ने उसके अपनी भक्ति का वर देकर विदा किया।

तपस्वी से भेंट

तब प्रभु ने केवट-गुह्यसे कहा-हे सखा! अब तुम घर को लौट जाओ। प्रभु के वचन सुनते ही गुह्य का मुख सूख गया और हृदयमें बड़ा दुःख माना। उसने हाथ जोड़कर बड़े दीन भावसे प्रार्थना की कि-हे प्रभु! मेरी विनय सुनिए-हे नाथ! मैं आपके साथ रहकर वन का मार्ग दिखाते हुए कुछ दिन चरण सेवा करूंगा। जिस वन में आप जाकर विश्राम करेंगे वहां मैं सुन्दर पर्ण कुटी बनाउंगा।

तब आप मुझे जो कुछ भी आज्ञा देंगे मैं वैसा ही करूंगा। इसके लिए मैं बार-बार दोहाई देकर कहता हूँ कि हे प्रभु! मुझ पर दया कीजिये। सखा का स्वाभाविक प्रेम देखकर प्रभु ने उसे अपने संग कर लिया। गुह्य के हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई। उसी समय एक तपस्वी आया जो अति ही तेज पुंज सुन्दर और छोटी अवस्थाका था उसकी गति और वेष वैरागी जैसा था, वह कवि था, परन्तु उसने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा था। वह भुसुण्डि मन, कर्म और वचन से राम का प्रेमी था।

उसने अपने इष्टदेव को पहचानकर आँखों में आँसू भरकर पुलकायमान हो प्रभु के चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। उसकी दशा कही नहीं जाती।

राम ने उसे प्रेमपूर्वक हृदय से लगा लिया, जैसे किसी परम दरिद्र को पारस मिल गया हो। वे दोंनों ऐसे मिले जैसे प्रेम और परमार्थ दोनों देह धारण की हो। जब वह तपस्वी लक्ष्मण जी के चरणों में गिरा तो लक्ष्मण जी ने उसे प्रेमपूर्वक उठा लिया। तत्पश्चात उसने श्री सीता जी के चरणों की धूलि सिर पर रखी तब माता ने उसे बालक जानकर आशीष दिया।

उस तपस्वी को निषाद राज ने दण्डवत प्रणाम किया और प्रभु का प्रेमी जानकर बड़े प्यार से मिला। वह तपस्वी प्रभु के रूपामृत को अपने नेत्रों से पान करने लगा और ऐसा आनंदित हुआ मानो कोई भूखा सुन्दर भोजन पाकर आनंदित हुआ हो। आगे-आगे राम और पीछे लक्ष्मण तपस्वियों जैसे वेष बनाए हुये है, उनके बीच में श्री सीता जी वैसी ही शोभायमान हैं जैसे ब्रह्म और जीव के बीच में माया सुशोभित होती है।

उनके सिर पर जटा और मुकुट शोभायमान है। हृदय, भुजा और नेत्र विशाल है, शरद पूर्णिमा के पर्व शोभायमान पूर्ण चन्द्र जैसे चमकते हुए मुख पर पसीने की बूंद का जल अति सुन्दर सज रहा था, जैसे मणियों के स्वेत कण चमक रहे हों।

सीता और लक्ष्मण सहित प्रभु जब गाँव से निकलते हैं तो सुन कर सब बालक, वृद्ध, स्त्री-पुरूष सब गृह कार्य विसार कर दर्शन के लिए चले देते हैं। और फिरती समय सब पछताकर कहते हैं कि विधाता के सभी कार्य उलटे हैं। इस प्रकार विधाता को अपने मन में दोष देकर दुःखी होकर आपस में सब कहते हैं।

जब इन्हें वनवास ही देना था तो विधाता ने भोग विलास ही क्यों रचे। जब ये पैदल ही चलते हैं तो विधाता ने सवारी क्यों बनाई । ये रात्रि को भूमि पर घास पत्ते बिछाकर सोते हैं तो विधाता ने सुन्दर सेज ही क्यों बनाई? यदि विधाता ने इन्हें वृक्षों के नीचे ही रखना था तो सुन्दर घर रचकर परिश्रम ही क्यों किया ।

जब ये सुन्दर सुहावने राजकुमार मुनियों के जटिल वस्त्र धारण करते हैं तो भाँति-भाँति के वस्त्र भूषण करतार ने व्यर्थ ही बनाए ।

यदि ये कंद मूल फल ही खाते हैं तो अमृत आदि भोजन जगत में व्यर्थ ही हैं। एक कहती है हे सखी! ये सहज ही सुहावने अपने आप ही प्रकट हुए हैं, इन्हें विधाता ने नहीं बनाया। जहाँ तक भी वेद ने विधाता की करनी बताई है वह सुनकर देखकर ही वर्णन की है। चाहे चौदहों भुवन में खोजकर देखो पर ऐसा पुरुष और ऐसी स्त्री कहाँ है?

इन्हें देखकर विधाता को इनमें बड़ा प्रेम हो गया। तब इनके जैसा बनाने लगा। उसनें बड़ा प्रयत्न किया किंतु नहीं बना पाया, उसी ईर्ष्या के कारण इन्हें वन में छिपा दिया। एक दूसरी ने कहा-कि हम बहुत नहीं जानते , हम तो अपने को परम भाग्यशाली मानते हैं यदि विधाता हमें मुँह मांगा वर दे तो इन्हें हम अपनी आँखों में रख ले।

आज भी जिसके हृदय में स्वप्न में भी राम लखन और सीता जी बसती हैं तो वह भी प्रभु के परम धाम के उस मार्ग को पाता है जिसे कभी विरले मुनि ही पाते हैं।

प्यारे पथिक सीता जी सहित दोनों भाइयों को जिन-जिन लोंगों ने देखा है उन्होंने भवसागर का अगम मार्ग बिना ही परिश्रम के आंनद के साथ तय कर लिया।

राम बाल्मीकि संवाद

तब प्रभु ने सखा निषाद राज-गुह्य का बहुत प्रकार से समझाकर कहा-तब उसने प्रभु की आज्ञा पाकर घर को प्रस्थान किया।

श्री सीता जी प्रभु के चरण चिन्हों के बीच-बीच में चरण रखती हुई चल रही है। लक्ष्मण जी प्रभु के चरण चिन्हों को दाहिने रखते हुए चलते हैं। जब प्रभु ने सीता जी को थकी हुई जाना तब समीप बटवृक्ष और शीतल जल देखकर, कंद मूल फल खाकर विश्राम किया। प्रातः स्नान करके चले

अति सुन्दर वन, पर्वत, सरोवर देखते हुए प्रभु बाल्मीकि के आश्रम में आए। राम ने मुनि का आश्रम देखा जो अति सुहावना पवित्र जल, वन, पर्वत है। सरोवरों में कमल खिले हैं, वृक्षों पर फूल फलों की बहार है, मस्त होकर भौरे गंजार रहे हैं और मृग, पक्षियों के झुण्ड बैर त्यागकर मुदित मन से खेल रहे हैं।

अति सुन्दर आश्रम देख प्रभु प्रसन्न हुए, प्रभु का आगमन सुनकर मुनी बाल्मीकि अति आदर सहित प्रभु को लेने आए।

महामुनि बाल्मीकि को स्वागत के लिये आते देख राम ने मुनि को प्रणाम किया तब मुनि ने आशीर्वाद दिया। प्रभु की छवि को देखकर के नेत्र समाधिस्त हो गये। प्रभु का सम्मान करके आश्रम में लाए। मुनि ने प्राण प्यारे अतिथि पाकर मीठे-मीठे कंदमूल फल-मंगवाए। लक्ष्मण सीता सहित राम ने मधुर फल खाये। तब मुनि ने उन्हें सुन्दर सुहावने आसन विश्राम के लिये दिये।

प्रभु की मंगलमयी मधुर छवि को देखकर महामुनि बाल्मीकि के मन में बहुत ही आनंद हो रहा है। तब आनंदकन्द प्रभु दोनों कर कमलों को जोड़कर प्रिय लगने वाले वचन बोले-हे मुनिराज ! आप तीनों कालों की जानने वाले हैं यह सारा विश्व बेर की गुठली के समान आपके हाथों में हैं। ऐसा कह कर प्रभु ने सब कथा सुनाई कि जिस भांति रानी कैकेयी ने बनवास दिया।

पिता जी की आज्ञा का पालन, माता कैकेयी का हित और भरत जैसे भाई का राजा होना , यह सब मेरे पुण्यों का प्रभाव है। जिससे मुझे आपके दर्शन हुये।

प्रभु किसके हृदय में निवास करते हैं

हे मुनिराज! आपके चरणों का दर्शन करने से आज हमारे शुभ कर्म सफल हो गये। अब जहाँ आपका आदेश हो वहाँ हम रहें, जहां हम से कोई भी मुनि को किसी प्रकार का कष्ट न हो। क्योंकि जिनसे मुनि और तापस दुःख पाते हैं। वे राजा बिना अग्नि के ही जलकर नष्ट हो जाते हैं। साधु जनों को संतुष्ट करना ही सब मंगलों का मूल है क्योकि साधु जनों के रोष से करोड़ों कुल भस्म हो जाते हैं।

ऐसा विचार कर हमें वह स्थान बताइए जहाँ- मै, लक्ष्मण और सीता जी सहित जाऊं और वहाँ घास-पत्तोंकी सुन्दर पर्णशाला बनाकर निवास करूं। प्रभु के स्वभाविक-सरल वचन सुनकर ज्ञानी मुनि-बाल्मीकि ने प्रभु की साधु-साधु कह कर प्रशंसा की। हे रघुकुल के ध्वजा स्वरुप प्रभु! आप ऐसा क्यों न कहें-आप सदैव ही सन्तों का पालन करने वाले, ज्ञान रूपी पुल से भवपार करते हो।

हे प्रभु! आपका स्वरुप-वाणी, इन्द्रियों एवं बुद्धि का विषय नहीं हैं अकथनीय और अपार है तथा कल्पान्त में भी जिसका अंत नहीं है-ऐसा वेद वक्ता कहते है।
।।दो॰५४।।

प्रभु के उस अविगत अव्यक्त स्वरूप का वर्णन करते हुए मुनि कहते है कि-हे विभु! आपका यह जगत् देखने योग्य है और आप ही इसे देखते हो। इस जगत के नचाने वाले-विधाता, शिव और विष्णु हैं परन्तु वे भी तुम्हारा मर्म नहीं जानते तो और कौन है जो तुम्हें जानता है। हे विभु! आपको वही जान सकता है जिसे आप जना दें। जो आपको जान लेता है वह आपको प्राप्त हो जाता है। भक्त आपको हृदय के प्रकाश में देखते हैं।

हे प्रभु! आपकी देह विकार रहित चैतन्य प्रकाशमय है, जिसके प्रकाश से सारा विश्व चेतना को पाकर उत्पन्न होता है, जिसे आपके अधिकारी भक्त ही जानते हैं। आप जो देह धारण करते हो वह ऋषि-मुनियों एवं संतों के हित के लिए ही करते हो। किन्तु आप जो कहते हो और करते हो जैसा कि कोई सांसारिक राजा करता हो। हे राम! आपकी लीलाओं को देखकर सुनकर भक्त सुखी होते हैं और बुद्धिहीन भ्रमित होते हैं। आप जो कहते हो वह सत्य करके दिखाते हो। जैसा आप नचाते हो वैसा ही सब नाचते हैं।

महर्षि बाल्मीकि, भगवान राम, लक्ष्मण एवं सीता को निवास हेतु
स्थान बताते हुए

आपने पूछा कि मैं कहाँ रहूँ मैं पूछने में सकुचाता हूँ। आप कहाँ नहीं हैं? जहाँ न हों मैं वहाँ बताऊं कि आप यहाँ रहें। ॥दो॰५५॥

तब बाल्मीकि जी ने हंसकर कहाहे प्रभु! अब मैं वह जगह बताता हूँ जहाँ आप श्री सीता जी और लक्ष्मण जी के साथ निवास करें। समुद्र में नदियों की भाँति आपकी सुन्दर कथा जिनके कान रूपी समुद्र में निरन्तर भरते रहने पर भी उनके कान तृप्त नहीं होते। उनके हृदय आपके रहने के लिये अच्छे घर हैं।

जिसने नदी, सरोवर और समुद्र का निरादर कर आपके सुंदर मनोहर वन यात्रा के समय के रूप के जल की पसीने की बूंद के दर्शन से आनन्द मग्न होकर नेत्रों को चातक बनाया है और दर्शनों के लिये सदैव लालायित रहते हैं। उनके हृदय रूपी भवन आपके रहने के लिए सुखदायक हैं। आप बंधुलक्ष्मण और सीता सहित वहां निवास करें। बाल्मीकि जी के मधुर मनोहर वचनों को सुनकर प्रभु मन में सकुचाकर मुसकाने लगे।

आपके यशरूपी मान सरोवर में जिनकी जिभ्या हंसनी बन कर आपके गुण समूह नाम के मोती चुगती है आपके उसके हृदय में निवास करें। ॥दो॰५६॥

जो नित प्रतिदिन आपके हृदय स्थिति नाम का जाप करते हैं और परिवार सहित आपकी पूजा करते हैं। आपके सुंदर और स्वादिष्ट प्रसाद की सुगंध जिसकी नासिका ग्रहण करती है, जो आपको निवेदन करके भोजन करते हैं और आपके प्रसाद रूप दिये गये वस्त्रों को धारण करते हैं। आपके सिवा दूसरे किसी की भी जिसे आशा न होहे प्रभु! उसी के हृदय में आप निवास करें।

आनंदकंद सद्गुरुदेव भगवान विष्णु एवं उनके दास संत जनों को देखकर श्रद्धा पूर्वक विशेष प्रेम से और विनय के साथ सिर नवाते हैं वे मन कर्म और वचनों से आपके शिष्य हैं। हे राम! आप उनके हृदय में घर करें। जिनके हाथ प्रभु के चरणों की सेवा करते हों और आपके सिवाय दूसरे का भरोसा न हो तथा जिसके चरण आपके दर्शनों के लिये सतसंग रूपी तीरथ में चले जाते हों, आप उन्हीं के हृदय में निवास करें।

जो भी शुभ कर्मों का फल एक यही चाहते हों कि प्रभु के चरण कमलों में प्रेम हो, उनके मन मन्दिर में आप दोनों सीता सहित निवास करें। ।।दो.१५७।।

जो दूसरों की सम्पत्ति को देखकर प्रसन्न और विपत्तियों को देखकर बहुत दुःखी होते हें जो सबका हित करने वाले सबके प्यारे हैं। जो सुख-दुःख, प्रशंसा गारी में समान भाव रखते हों, जिन्हें न तो काम-क्रोध, मद-मान और मोह ही हो और लोभ, क्षोभ, राग द्वेष भी न हो। जिनके कपट, दम्भ और माया भी न हो तिनके हृदय में हे प्रभु! आप निवास कीजिये।

जो भाँति-भाँति से आत्मा की तृप्ति के लिये योग यज्ञ करते हैं, साधु जनों को भोजन कराकर दान देते हैं पर सबसे आदि सद्गुरु को अपने हृदय में जानकर सभी तरह श्रद्धा भाव से सम्मान करके सेवा करते हैं। जो विचार कर सत्य और प्रिय बोलते हैं तथा सोते जागते आपकी शरण हैं। जिन्हें आप प्राणों से अधिक प्यारे हैं उनके मन आपके लिये पवित्र सुन्दर घर हैं।

हे नाथ! जिनके माता-पिता, गुरु स्वामी और सखा सब आप ही हैं उनके मन मन्दिर में सीता सहित दोनों भ्राता निवास करें। ।।दो.५८।।

जो अवगुणों को त्यागकर सबके गुण ग्रहण करते हैं और साधु-संतों एवं गऊ के लिये संकट सहन करते हैं। जो नीति में निपुण हैं, जिनका यश जगत में फैला हुआ है उनका मन आपके लिये अच्छा घर है। जो गुण तो आपके और अवगुण अपने समझते, हैं सब प्रकार आपका ही भरोसा है। जिन्हें रामभक्त प्यारे लगते हैं उनके हृदय में सीता सहित निवास करें।

जो दूसरों के सुख को देखकर सुखी होते हैं और अपने दुःख से दूसरों का दुःख अधिक देखते हैं। जो दूसरों की स्त्री को अपनी माता के समान जानते हैं और दूसरों के धन को विष से भी अधिक विष मानते हैं। जाति के भेद भाव को त्यागकर, धन, धर्म, बड़ाई, परिवार तथा सुख देने वाला घर सबको छोड़ एक मात्र आपका ही होकर रहता है और हृदय में ध्यान स्मरण करता है उसके हृदय में हे प्रभु! आप निवास करें। जिसको कभी कुछ नहीं चाहिये, आप में स्वभाविक प्रेम है। आप उसके हृदय में निवास करें। वह आपका अपना घर है। ।।दो.५९।।

चित्रकूट निवास एवं मुनियों के दर्शन

इस प्रकार मुनि बाल्मीकि ने प्रभु के लिये भवन दिखाए। मुनि के वचनों को सुनकर राम अति प्रसन्न हुए। तब मुनि ने कहाहे सूर्य कुल के स्वामी! अब मैं समयानुसार सुखदायक आश्रम कहता हूँ मंदाकिनी (गंगा) के किनारे, जो पापों को नष्ट करने वाली है, जहां सुहावने पर्वत पर वन बड़ा ही सुन्दर और सुहावना लगता है, वहां हाथी, बाघ, मृग और पक्षी आपस में खेलते हैं।

सो हे प्रभु! आप उस चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिए। वहाँ आपके लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ हैं। जहां अत्रि आदि श्रेष्ठ मुनि रहते हैं जो आपके दर्शनों के लिए जप योग आदि तप करके तन को पवित्र करते हैं। चलिए वहाँ रहकर उन्हें दर्शन देकर उनके जीवन सफल कीजिए! हे राम! इस चित्रकूट पर्वत को पवित्र कीजिए। तब प्रभु ने कहालक्ष्मण! यह घाट बहुत अच्छा है, यहीं रहने का जुगाड़ करो।

सीता और लक्ष्मण सहित चित्रकूट आश्रम में प्रभु ऐसे शोभायमान हुए मानो, साक्षात् कामनाओं के उत्पन्न करने वाली शक्ति के देने वाले काम देव मुनि के वेष में प्रेम सहित ॠतुओं के राजा के साथ रहते हों।

उस आश्रम में रहने वाले मुनियों के समाज ने प्रभु पर पुष्प बरसाए और प्रार्थना की कि हे नाथ! आपका दर्शन कर हम सनाथ हो गये। अनेक प्रकार से विनती कर अपने कष्ट सुना कर प्रसन्न हो अपने-अपने डेरों में चले गये। चित्रकूट में प्रभु विराजमान हैं यह सुनकर बहुत से मुनि आए वे सीता जी, लक्ष्मण जी और रामचंद्र जी के दर्शन कर अति प्रसन्न हुए और अपने साधन सफल समझे।

प्रभु ने सब मुनियों को प्रेम में मग्न जानकर प्रिय वचन कहे और सब का सम्मान किया। सब मुनि बारम्बार प्रभु को प्रणाम कर विनय सुनाते हैं। उनमें से जो-जो भी दर्शन करके गए तो रास्ते में उनसे पूछा कि तुम्हें प्रभु के दर्शन हुए? इसी तरह प्रभु के गुणों का वर्णन करते हुए आए और प्रभु के दर्शन किए।

हे नाथ! हम सब आपके दर्शनों के बिना अनाथ थे अब आपके श्रीचरण कमलों का दर्शन पाकर सनाथ हो गये। हे प्रभु! कौशल प्रदेश राजा राम! आप हमारे ही भाग्य से दर्शन देने के लिए यहाँ पधारे हैं।

कोल-किरात जो प्रभु के भक्त थे, उन्होंने जब सुना कि प्रभु आए हैं तो इतने प्रसन्न हुए मानो नौ निधियां उनके घर पर ही आ गई हों। वे कंदमूल फल प्रेम से दोने भर-भर कर ऐसे चले मानो दरिद्र सोना लूटने चला हो। वे भेंट प्रभु के चरणों के आगे रखकर प्रभु को प्रणाम करते हैं और अति प्रेम से मग्न होकर प्रभु के दर्शन करके आनंद में विभोर हो रहे हैं। वे प्रभु की मनमोहनी छवि को देखकर जहाँ-तहाँ ऐसे खड़े हैं जैसे चित्र बने हों। उनके तन पुलकायमान और नेत्रों में प्रेम का जल भरा है।

हे प्रभु! हम सब आपके सेवक हैं आज हम सब परिवार सहित धन्य हैं, जो नेत्र भरकर आपका दर्शन पाया। आपने बड़ी सुन्दर जगह पर विचारकर निवास किया। यहाँ सब ऋतुओं में आप सुखी रहेंगे। हे प्रभु! यहाँ के वन, बीहड़, पहाड़, गुफाएं सब पग-पग हमारे देखे हैं। हम आपके सेवक हैं, हमें आप आज्ञा देते हुए संकोच मत कीजिएगा।

जो प्रभु ज्ञानी मुनियों के मन को एवं वेद वचन को भी दुर्लभ हैं वे प्रभु किरातों के वचन इस प्रकार से सुन रहे हैं जैसे पिता अपने बालक की बातें सुनता है।

हे पार्वती! वनवासी भक्तों को प्रभु ने मधुर वचनों द्वारा प्रेम से संतुष्ट किया। राम को केवल प्रेम ही प्यारा है जो जानने वाले हैं वे जान लें। राम के साथ श्री सीता जी का मन प्रेम पूर्वक प्रभु के चरणों में लगा है और वन सैकड़ों अयोध्याओं से भी सुन्दर लग रहा है। क्षण प्रति क्षण सीता जी प्रभु के वदन को देखकर ऐसे प्रसन्न रहती हैं जैसे चकोर कुमारी चन्द्रमा को देखकर प्रसन्न होती हैं।

परमप्रिय प्राणनाथ प्रभु के साथ श्री सीता जी को पर्णकुटी प्यारी लगती है और रंग बिरंगे मृग एवं पक्षी गण श्री सीता जी को परम प्यारे परिवार के समान लगते हैं। लक्ष्मण और श्री सीता जी का प्रेम अपने चरणों में देखकर तथा उनके भक्ति

भाव को समझकर भक्तों के हृदय में निवास करने वाले परम प्रकाश रूप प्रभु परमधीर कृपालु जिस प्रकार भी वे सुखी रहें वैसा ही कहते और करते हैं। प्रभु अनेकों पुरानी कथाएं एवं कहानियाँ कहते हैं जिन्हें श्री सीता जी और लक्ष्मण जी बड़े मग्न होकर सुनते हैं।

राम लक्ष्मण और सीता जी से चित्रकूट का आश्रम ऐसा शोभा पा रहा है जैसे अमरपुर में इन्द्र-इन्द्रानी और जयन्त शोभा पाते हैं।

राजा के देह त्यागने पर भरत को संदेश

वहाँ बारम्बार राम-राम कहकर राजा दशरथ राम के विरह में देह त्यागकर देव लोक को सिधार गये।

जीने और मरने का फल राजा दशरथ ने पाया जिनका यश अनेक ब्रह्माण्ड़ों में छाया है। जब तक जिये राम के चन्द्रमा के समान सुन्दर बदन का दर्शन करते रहे और अपने जीवन को सुधार लिया अन्त समय तक प्रभु की याद में ही देह का त्याग किया। सभी रानियाँ राजा के रूप, शील, बल और तेज का वर्णन कर-करके बिलख-बिलख कर रोने लगीं। दास और दासियाँ सब बेचैन होकर बिलख रही हैं। घर-घर में सभी पुरवासी रो-रो कर दुःखी हो रहे हैं।

वे रो रो कर अनेक प्रकार से विलाप करके बार बार भूमि पर गिर पड़ते हैं। आज सूर्य कुल का सूर्य छिप गया, जो धर्म की सीमा और गुणों का भण्डार था। सब नगर निवासी कैकेयी को गाली देते हैं, जिसने संसार को नयन विहीन कर दिया। इस प्रकार रोते-रोते सारी रात बीत गई और प्रातः हो गया तब सब ज्ञानी महामुनि आए।

उन्होंने राज दशरथ के शरीर को तेल भरकर नौका में रखा और राजदूत को बुलाया तब फिर ऐसा कहा कि तुम शीघ्र ही भरत के पास जाओ! किन्तु कहीं भी किसी से भी राजा का समाचार न कहना! बस भरत से जाकर इतना ही कहना कि मुनि जी ने दोनों भाइयों को बुलाने भेजा है। मुनि का आदेश सुनकर दूत इतने वेग से चले कि जिन्हें देखकर घोड़े भी लजाते थे।

जब से अयोध्या में अनर्थ होने लगा तभी से भरत जी को अपसकुन होने लगे। वे रात में भयंकर स्वप्न देखते हैं और जागने पर बुरी-बुरी कल्पना किया करते हैं। अपसकुनों की शान्ति के लिए प्रति दिन साधु जनों को भोजन कराकर बहुत सा दान देते हैं तथा शिव जी का ध्यान, जप-यज्ञ करके भाँति-भाँति से पूजन करके शिव जी को मनाते हैं। उनसे अपने माता-पिता, परिवार तथा भाइयों की कुशलता मांगते हैं।

भरत जी मन में इस प्रकार सोच ही रहे थे कि दूत आ पहुँचे। मुनि की आज्ञा सुनते ही भरत जी शिव जी को मनाकर चले।

भरत जी का अयोध्या पहुंचना

भरत जी के मन में बड़ी चिंता है, उन्हें कुछ भी नहीं सुहाता और मन में आता है कि उड़कर चला जाऊं। उनका एक निमिष एक वर्ष के समान बीत रहा है। इस प्रकार भरत जी नगर के पास पहुंचे, नगर के सभी स्त्री-पुरुष बहुत ही दुखी हो रहे थे मानों वे सभी सम्पत्ति हार गए हों। भरत ने परिवार को भी दुःखी देखा जैसे कमल के वन को पाला मार गया हो।

कैकेयी इस प्रकार हर्षित हुई जैसे किरातनी वन में आग लगाकर प्रसन्न होती है। कैकेयी भरत जी को चिंता मग्न देखकर पूछती हैकि हमारे नैहर में कुशल तो है? तब भरत जी ने सब कुशलता सुनाकर पूछा कि अपने कुल की प्रसन्नता सुनाओ! पिता जी कहां हैं? सब माताएं कहां हैं? सीता, राम, भाई लक्ष्मण कहां हैं? मुझे बता?

पुत्र के स्नेहमई वचन सुनकर नेत्रों में कपट के आँसू भर पापिनी कैकेयी ऐसे वचन बोली जो भरत जी को शूल के समान चुभने लगे।

हे तात! मैंने सारी बाते बना लीं हैं, बेचारी मंथरा ने मेरी सहायता की परन्तु विधाता ने बीच में कुछ काम बिगाड़ दिया। राजा देवलोक को सिधार गये। यह सुनते ही भरत जी शोक में व्याकुल होकर बड़े दुःखी हुए मानो सिंह की गर्जना से हाथी सहम गया हो। हाय पिता! पुकारते हुए अति ही व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

हे तात! मैं अंत समय आपको देख न सका। आप मुझे राम को सौंप भी नहीं गये। तब भरत जी धीरज धरकर उठे और बोले हे माता! पिता जी के मरने का कारण तो बताओ पुत्र का वचन सुन कर कैकेयी कहने लगी मानों घाव को पोंछकर उसमें विष भर रही हो। कुटिल और कठोर हृदय वाली कैकेयी ने अपनी प्रारम्भ से अन्त तक की सब करतूति प्रसन्न मन से वर्णन कीं।

राम का वन जाना सुनकर भरत जी पिता का मरना भूल गए और सारे अनर्थों का कारण अपने को ही जानकर वे मौन हो करके खड़े के खड़े ही रह गये।

भरत को माता कौशल्या का प्यार

जिनका हंसवंश हो, दशरथ जैसे पिता तथा राम और लक्ष्मण जैसे भाई हों पर हे जननी! मुझे जन्म देने वाली तूँ माता हुई। विधाता से कुछ पार नहीं बसाती।

भरत जी को देखकर माता कौशल्या उठकर दौड़ी और चक्कर खाकर गिर पड़ी। यह देखकर भरत जी बड़े व्याकुल हो गये और देह की सुध भूलकर माता के चरणों में गिर पड़े। भरत जी बोलेहे माता! पिता जी कहाँ हैं? मुझे दिखा दो, सीता जी तथा दोनों मेरे प्यारे भाई कहाँ हैं? कैकयी संसार में क्यों जनमी और यदि उसने जन्म भी लिया तो बांझ क्यों न हुई।

जिस कैकेयी ने कुल का कलंक, अपयश का पात्र और प्रियजनों का द्रोही मुझ जैसा पुत्र जना, तीनों लोकों में मुझ जैसा अभागा कौन है? जिसके कारण हे माता! तेरी यह दशा हुई। पिता जी स्वर्ग में और राम-लक्ष्मण वन में गये। इन सब अनर्थों का कारण केवल मैं ही हूँ। मुझे धिक्कार है, कि मैं बांस के वन में आग उत्पन्न हो गया और असह्य दाह, दुःख और दोषों का भागी बना।

भरत जी के मधुर शब्दों को सुनकर माता कौशल्या जी संभल कर उठीं और भरत को उठाकर छाती से लगा लिया, उनके नेत्रों से आँसू बहने लगे।

सरल स्वभाव वाली माता कौशल्या ने बड़े प्रेम से भरत को छाती से लगाया मानों वन से वापिस आ गये हों। तब लक्ष्मण जी के भ्राता श्री शत्रुघ्ण जी को माता कौशल्या ने हृदय से लगा लिया। माता का ऐसा स्वभाव देखकर सभी कहने लगे कि राम की माता का ऐसा स्वभाव क्यों न हो। माता कौशल्या भरत को गोद में, लेकर, उसके आंसू पोंछ मधुर वचन बोलीं।

हे पुत्र! अब भी तुम धीरज धारण करो। समय को बुरा समझ कर शोक त्याग दो। काल और कर्म की गति को न टलने वाली जानकर मन में ग्लानि और हानि मत मानो। हे तात! किसी को दोष मत दो, विधाता सब प्रकार से मेरे विपरीत हो गया है जो इतने दुःख पर भी मुझे जिंदा रख रहा है। अब भी कौन जानता है, उसे क्या अच्छा लगता है और वह क्या करना चाहता है।

उनका मुख प्रसन्न था, मन में न मोह था और न क्रोध ही था। सबको सब प्रकार से संतोष देकर वन को चले, यह सुनकर श्री सीता जी भी उनके साथ चल दीं। राम के रोकने पर भी वे नहीं रुकीं, राम के चरणों की अनुगमिनी सीता को सभी ने बहुत समझाया पर वे नहीं मानीं। लक्ष्मण भी उनके साथ चल दिए, उन्हें भी रोकने के लिए राम ने बड़े प्रयत्न किये पर वे नहीं रुके। तब राम सबको सिर नवाकर सीता और लक्ष्मण को साथ लेकर वन को चले गए।

राम सीता और लक्ष्मण वन को चले गए पर मैं न तो साथ ही गई और न अपने प्राण ही उनके साथ ही भेजे। यह सब इन्हीं आँखों के आगे हुआ तो भी इस अभागे जीव ने देह नहीं छोड़ी। जीना और मरना तो राजा ने ही जाना, मेरा हृदय तो सैंकड़ों बज्रों के समान कठिन है।

हे पुत्र! पिता की आज्ञा से राम ने भूषण वस्त्र त्यागकर मुनिवस्त्र-धारण किये, उनके हृदय में विषाद हर्ष कुछ भी न था। कौशल्या के वचन सुनकर भरत सहित रनिवास विलाप करने लगा। मानो सारा राजभवन ही शोक का निवास हो।

भरत कौशल्या संवाद

जब भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई व्याकुल होकर विलाप करने लगे तब माता कौशल्या जी ने उन्हें हृदय से लगाकर भाँति-भाँति से समझाया और बहुत सी विवेक युक्त बातें कहकर सुनाईं। भरत जी ने सब माताओं को वेद की पुरानी-पुरानी कथाएं कहकर सुनाईं और दोनों हाथ जोड़कर छल रहित सुंदर सरल वचन बोले

हे माता! जो पाप-मात, पिता और पुत्र के मारने पर होता है, जो पाप गऊशाला, साधु-ब्राह्मण और नगर के जलाने से होता है और जो पाप स्त्री, बालक के वध करने से एवं मित्र और राजा को विष देने से होता है। जो पातक, उपपातक हैं जो कर्म, मन और बचन से होने वाले ज्ञानी जन एवं कवि बताते हैं वे पातक हे माता! विधाता मुझे दे यदि यह मत मेरा हो।

भगवान विष्णु और श्री भोले भंडारी के चरण कमलों के सहारे को छोड़कर भूत एवं देवगणों को पूजते हैं "जो अति घोर भयानक दुःख दाई हैं" उन्हें जो दुर्गति प्राप्त होती है। हे माता! यदि राम के वन जाने में मेरी गति हो तो वह गति विधाता मुझे दे। ।।दो॰७२।।

जो लोग ज्ञान को बेचते हैं, धर्म को दूह लेते हैं अर्थात् ज्ञान से धर्म को निकाल कर धर्म ही ज्ञान को बेचते हैं। वे अज्ञानीकपटी, कुटिल और क्रोधी होते हैं और ज्ञान को दूषित करने वाले, कलह प्रिय, झगड़ालू होते हैं। जो लोभी, लम्पट, गुण्डे और लबार हैं, जो दूसरे के धन व स्त्री की ताक में रहते हैं। इन सबकी जो घोर गति है। हे माता! यदि यह मेरा सम्मत हो तो विधाता वह गति मुझे दे।

जिनको सच्चिदानंद भगवान विष्णु के दास संत जनों से प्रेम नहीं है, वे अभागे परमारथ के पथ से विमुख रहकर प्रभु से द्रोह करते हैं। जो मानव तन पाकर भगवान

विष्णु का भजन नहीं करते उनकी सेवा-भक्ति नहीं करते और जिन्हें भगवान विष्णु एवं भोलेनाथ श्री शिव जी का यश अच्छा नहीं लगतावे वेद मार्ग को त्यागकर उलटे मार्ग पर चलते हैं। ऐसे कपटी लोग यद्यपि साधु समाज से वंचित हैं परन्तु फिर भी साधु का वेष बनाकर जगत को छलते हैं। "ऐसे दुष्टों का संहार करने के लिए ही भोलेनाथ शंभु-शंकर का अवतार होता है।" ऐसे दुष्ट जो बातें उलटी सुलटी बनाकर लोगों को भ्रमित करते हैं। हे माता! ऐसे नीचों की जो गति भगवान शंकर करते हैं वह गति भगवान शंकर जी मेरी करें यदि यह मेरा मत हो कि जो कुछ कैकेयी ने किया। मैं तो इसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता।

माता कौशल्या भरत जी के सच्चे सरल और स्वाभाविक वचनों को सुनकर कहने लगींहे तात! तुम तो तन, मन और वचन से सदा ही राम के प्यारे हो।

॥दो॰७३॥

राम के प्राणों से ही तुम्हारे प्राण हैं, तुम राम को प्राणों से भी अधिक प्यारे हो। भले ही चन्द्रमा से विष चूने लगे, हिमालय से अग्नि निकलने लगे और जलचर जल के त्यागी बन जाएं। ज्ञान होने पर भले ही मोह न मिटे पर तुम राम के प्रतिकूल नहीं हो सकते। जगत में जो कोई भी कहेगा कि यह तुम्हारा मत है तो वह स्वप्न में भी शुभ गति नहीं पा सकेगा।

ऐसा कहकर माता कौशल्या ने भरत को हृदय से लगा लिया, स्तनों से दूध बहने लगा और नेत्रों में प्रेम के आँसू बहने लगे। इसी भाँति विलाप करते हुए सारी रात बैठे-बैठे ही बीत गई। प्रातः काल मुनि वामदेव, मुनि वशिष्ठ जी आए और उन्होंने सब मंत्री गणों को तथा नगर के सेठों को श्रेष्ठ पुरुषों को बुलाया। तब मुनि वशिष्ठ जी ने समयानुकूल परमार्थ युक्त सुन्दर वचन कहे और भरत जी को समझाया।

दशरथ जी की देह का संस्कार एवं राजसभा

हे तात! हृदय में धीरज धारण करके आज जिस कार्य को करना है उसे करो! मुनि वशिष्ठ जी के वचन सुनकर भरत जी उठे और देह संस्कार आदि सब कार्य करने को कहा

राजा के शव को वेद विधि से स्नान कराया और अति सुन्दर विचित्र विमान सजाया। दाह संस्कार के लिए चन्दन के बहुत से भार आए और अनेक प्रकार के सुंगधित पदार्थ भाँति-भाँति की अनेकों प्रकार की सामग्री मंगाईं। सरयू नदी के किनारे चिता बनाई मानो स्वर्ग के लिए सुन्दर सुहावनी पैड़ी बनी हों। इस प्रकार दाह का संस्कार करे विधिवत स्नान किया और तिलांजली दी।

पिता के लिए भरत ने जैसी करनी की वह सहस्रों मुखों से भी वर्णन नहीं की जा सकती। शुभ दिन देखकर सब मुनिवर वहां आए और मंत्री ने सभी श्रेष्ठ पुरुषों एवं नगर के सेठों को बुलाया। सभी सज्जन राजसभा में जाकर बैठे और दोनों भाई-भरत और शत्रुघ्न को बुलाया। मुनि वशिष्ठ जी ने भरत जी को अपने पास बिठाया और नीति युक्त धर्मानुसार वचन सुनाए।

मुनि वशिष्ठ जी दुःखी होकर कहने लगे किहे भरत जी! सुनो! होनी बड़ी बलवान है, जो होना है वही होता है उसे कोई टाल नहीं सकता। हानि, लाभ, जीवन, मरण और यश-अपयश ये सब विधाता के आधीन हैं।

ऐसा विचार कर किसको दोष दिया जाय? और किस पर व्यर्थ ही रोष किया जाय? हे तात! मन में विचारो कि राजा दशरथ जी सोचने योग्य नहीं हैं। सोच तो उस राजा का करना चाहिए जो नीति नहीं जानता हो। जिसे धर्म का ज्ञान न हो और प्रजा प्राणों के समान प्यारी न हो। रघुकुल के राजा दशरथ सोचने योग्य नहीं हैं, जिनका प्रभाव चौदह लोकों में प्रगट है।

यह सुनकर, समझकर सोच त्याग दो और राजा की आज्ञा का पालन करो। राजा ने राजपद आपको दिया है। अतः पिता का वचन सत्य करो। यह वेद में विदित है और इसमें सभी का समान मत है कि पिता जिसको राज दे वही राज पाता है। अतः आप ग्लानि को त्यागकर राज्य करो। मेरे इन वचनों को हितकर मानो।

राज सभा में भरत का प्रस्ताव

धैर्य की धुरी को धारण करने वाले भरत जी धीरज धारण कर अपने करकमलों को जोड़कर अमृतमय वचनों से सबको उचित उत्तर देते हैं।

मेरा हित तो राम की सेवा करने में ही है सो उसे माता की कुटिलता ने छीन लिया। मैंने अपने मन में अनुमान लगाकर देख लिया है कि दूसरे किसी उपाय से मेरा हित नहीं है। भगवान राम, सीता और लक्ष्मण जी के श्रीचरण कमलों के देखे बिन यह शोक का समुदाय, राज्य किस गिनती में है? यह तो ऐसा व्यर्थ है, जैसे वस्त्रों के बिना गहनों को बोझ व्यर्थ है और प्रेम के बिना ब्रह्म का विचार व्यर्थ है या ब्रह्म के विचार के बिना प्रेम व्यर्थ है।

जिस तरह योगी रोगी के लिए बहुत से भोग व्यर्थ हैं उसी तरह प्रभु की भक्ति के बिना सब जप-योग साधन व्यर्थ ही हैं। जिस प्रकार बिना जीवन के सुन्दर देह नष्ट हो जाती है उसी प्रकार प्रभु के बिना मेरा सभी कुछ व्यर्थ है। मुझे आज्ञा दें कि मैं राम के पास जाऊं, एक मात्र इसी में मेरा हित है। आप मुझे राजा बनाकर अपना भला चाहते हो या मेरा हित है। आप मुझे राजा बनाकर अपना भला चाहते हो या मेरा हित यह तो स्नेह और जड़ता के वश कहते हो।

मैं सबको सिर नवाकर अपनी कठिन समस्या कहता हूँ कि राम के चरणों को देखे बिना मेरे ह्दय की जलन नहीं मिट सकती।

मुझे दूसरा कोई उपाये नहीं सूझता। राम के बिना मेरे ह्दय की बात कौन जान सकता है? अतः मेरे मन में एक ही दृढ़ निश्चय यही है कि प्रातः काल राम के पास चलूंगा। यद्यपि मैं बुरा हूँ, अपराधी हूँ जिसके कारण ही यह सब उपद्रव हुआ है। तब भी प्रभु मुझे अपनी शरण में आया देखकर मेरे सब अपराध क्षमा करेंगे। उनकी मुझ पर बहुत बड़ी कृपा है वे अवश्य ही मुझ पर दया करेंगे।

मेरे प्रभुशील, संकोच, अति सरल स्वभाव के एवं कृपा स्नेह के घर हैं। राम ने कभी शत्रु का भी अनिष्ट नहीं किया। मैं यद्यपि विपरीत हुआ हूँ परन्तु हूँ तो उनका छोटा सेवक। अतः आप सब पंच भी इसमें मेरा हित समझकर सुन्दर वाणी द्वारा मुझे आशीर्वाद और आज्ञा प्रदान करें। जिससे मेरी विनती सुनकर, मुझे अपना छोटा सा दास जानकर, मुझे अपनाकर प्रभु अयोध्या में लौट आवें।

भरत जी के वचन सबको प्यारे लगे, मानो वे श्री रामचन्द्र जी के प्रेम रूपी अमृत में पगे हुए थे। राम के वियोग रूपी भीषण विष से सभी लोग जले हुए हैं। वे सब श्री भरत जी के बीजमंत्र के समान वचनों को सुनकर जाग गये। माताएं, मंत्रीगण और नगर के सभी स्त्री-पुरुष स्नेह से अति व्याकुल हो गए। सब भरत जी की सराहना करते हुए कहते हैं कि भरत की देह राम के प्रेम की साक्षात मूर्ति है।

हे तात भरत जी! आप ऐसा क्यों न कहें, आप तो राम को प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। जो नीच अपनी मूर्खता वश आपकी माता की कुटिलता को लेकर आप पर सन्देह करेंगे, वे दुष्ट करोड़ों बुराइयों सहित सौ कल्पतक नरक के घर में निवास करेंगे। मणि सांप के अवगुण ग्रहण नहीं करती, वह विष को हर लेती है एवं दुःख-दरिद्रता को नष्ट करती है।

हे भरत जी! आपने बहुत ही अच्छा मंत्र दिया है। अवश्य ही वन को चलिएजहाँ राम हैं। शोक समुद्र में डूबते हुओं को आपने बहुत बड़ा सहारा दिया है।

वह सम्पत्ति, घर, सुख, मित्र, माता-पिता भाई इन सब में आग लगे जो प्रभु के चरण कमलों में जाते हुए को प्रसन्न होकर के सहयोग न दे और बाधक बने।

ऐसा कहकर सब लोग घर-घर में अनेक प्रकार की सवारियाँ सजाने लगे। हृदय में अति प्रसन्न हैं कि सवेरे चलना है। भरत जी ने घर जाकर विचार किया कि नगर, घोड़े, हाथी, भवन, कोष आदि सारी सम्पत्ति राम की है यदि इसकी सुरक्षा किये बिना ही इसे ऐसे ही छोड़कर चल दूँ तो परिणाम में मेरी भलाई नहीं है क्योंकि स्वामी का द्रोह सब पापों में शिरोमणि है।

सेवक वही है जो स्वामी का हित करे, चाहे कोई करोड़ों दोष क्यों न दें। भरत जी यह विचार कर ऐसे विश्वासी सेवाकों को बुलाकर जो स्वपने में भी अपने धर्म से नहीं डोलें, सारा भेद समझा कर बोले, जो जिस कर्तव्य के योग्य है वह उसमें लगे। इस प्रकार उन सबको धर्म कर्म सब समझाकर जो जिस लायक था उसे वहाँ रखा और सब व्यवस्था करके भरत जी माता कौशल्या के पास गये।

प्रेम स्वरूप उत्तम बुद्धि भरत जी ने सब माताओं को दुःखी जानकर पालकी बनाकर तैयार करने और रथ में सुन्दर सुख देने वाला आसन सजाने के लिए कहा।

सब सारी रात जागते रहे, जब सवेरा हो गया तब भरत जी ने उत्तम बुद्धि वाले मंत्रियों को बुलाया। शीघ्र ही चलो यह सुनकर मंत्रियों ने प्रणाम करके तुरन्त ही रथ घोड़े हाथी सजवा दिये। साधु-मुनियों के समूह जो तपस्या में और तेज के भण्डार थे वे सबके सब अनेकों सवारियों पर चढ़कर चले। माताएं सुन्दर सुहावनी पालकियों पर चढ़कर चलीं, जिनकी शोभा का वर्णन नहीं हो सकता।

नगर के सभी लोगों ने रथों को सजा-सजाकर चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया। राम के दर्शनों के लिए सभी स्त्री-पुरुष ऐसे चले जैसे पानी को देखकर हाथी-हथनी चले हों। मुनि वशिष्ठ जी की वंदना एवं भरत जी को प्रणाम करके, घर से विदा होकर सब चले। सभी लोग भरत के शील स्नेह को सराहते हुए जा रहे हैं। इस जगत् में भरत के जीवन को धन्य है।

सब सेवकों को आदर सहित बुलाकर उन्हें नगर सौंपकर भरत जी एवं शत्रुघ्न दोनों भाई राम और सीता जी के चरण कमलों का सुमिरण करके चले।

प्रथम दिन तमसा नदी के किनारे रहकर दूसरे दिन गोमती नदी के तटपर विश्राम किया और तीसरे दिन सवेरे ही उठकर सब चले तो श्रृंगवेर पुर के पास पहुंचे। जब निषादों ने सुना कि अवधवासी सेना सहित आ रहे हैं तो हृदय में विचार करने लगे कि कारण क्या है? जब निषादराज ने जाना कि भरत जी राम को मनाने जा रहे हैं तो यह सुनकर सब अति प्रसन्न हुए।

दूर से ही आते हुए देखकर गुह्य ने अपना नाम बताकर मुनि वशिष्ठ जी को प्रणाम किया। मुनि ने राम का प्यारा मित्र जानकर आशीर्वाद दिया और भरत को बताया कि राम का मित्र गुह्य निषादों का राजा है। तब भरत मित्र के प्रेम में गद्-गद् होकर, रथ त्यागकर पैदल चले। गुह्य ने नाम लेकर सबको बुलाया और सबने भरत जी को प्रणाम करके भेंट चढ़ाई और अति प्रसन्न हुए।

निषादराज गुह्य को प्रणाम करते देख भरत जी ने उसे अपने हृदय से लगाया। मानो लक्ष्मण जी मिले हों। उनका प्रेम हृदय में समा नहीं रहा है।

भरत जी ने गुह्य को बड़े प्रेम से गले लगाया, भरत जी के प्रेम की रीति को देख सभी सराहना करने लगे। राम के प्यारे सखा को छाती से लगाकर भरत की देह पुलकायमान हो गई। प्रेम सहित मिलकर भरत जी ने कुशल मंगल पूछी तब भरत जी का शील स्वभाव और स्नेह देख निषादराज गुह्य उस समय विदेह हो गया जबकि उसका प्रेम प्रभु के प्रति अति गूढ़ था इस कारण उसे गुह्य कहा जाता था।

उसके मन में संकोच, प्रेम और आनंद इतना बढ़ गया कि वह खड़ा होकर टकटकी लगाए देखता ही रह गया। धीरज धरकर चरणों की वंदना की और हाथ जोड़कर प्रेम सहित विनय पूर्वक बोलाप्रभु के चरण कमलों को देखकर मैं अपने विचार से तीनों कालों में कुशल हूँ। अब हे प्रभु! आपके परम अनुग्रह से करोड़ों परिवार सहित कुशल मंगल हूँ। प्रभु के दर्शन सेवा से एवं उनके कथामृत रूपी सत्संग आज ये वनवासी जो प्रभु का आनंद प्राप्त कर रहे हैं, यह सब आपकी ही कृपा है।

मैं न तो अर्थ-धन ही चाहता हूँ न धर्म की कामना ही है और न मैं निर्वाण गति ही चाहता हूँ। मैं तो एक मात्र यही वरदान मांगता हूँ, दूसरा नहीं कि प्रत्येक जन्म में मेरा प्रभु के चरणों में प्रेम रहे।

इसी भाँति भरत जी रास्ते में चले जा रहे हैं जिनके प्रेम की दशा देखकर सिद्ध मुनि सराहना करते हैं। गुह्य के आग्रह पर उस दिन सबने जमुना किनारे

बास किया, जहाँ समयानुसार सभी को सभी तरह की उत्तम व्यवस्था थीं। रात ही में सब घाटों की नवकाएं आ गई। राम को पार करने का सुअवसर केवट निषादराज को ही मिला था परन्तु श्री भरत जी को पार करने का अवसर सभी निषादों को मिला। जिससे सभी अपनी-अपनी नाव का लेकर रात में ही पहुंच गये और एक ही बार में पार कर दिया। सखा की सेवा से भरत बड़े संतुष्ट हुए।

जहाँ-जहाँ प्रभु ने विश्राम किया वहाँ सभी प्रेम से प्रणाम करते हैं। राम के सखा ने उस समय एक सुन्दर सुहावन पर्वत दिखाया जो सब में श्रेष्ठ था जिसके समीप नदी जल के तट पर सीता सहित राम और लक्ष्मण निवास करते थे। जिसे देखकर सभी ने श्री जय सच्चिदानंद परम धाम कहा और आनंद मग्न होकर प्रणाम किया।

भरत जी का उस समय ऐसा प्रेम था जिसे शेष जी भी इस प्रकार नहीं कह सकते जिस प्रकार अहंकार और ममता के मल में लीन कवि के लिये ब्रह्मज्ञान का आनंद दुर्लभ है।

सभी प्रभु के प्रेम में मग्न हो रहे हैं, दो कोस चलते ही सूर्य छिप जायगा ऐसा जानकर सुन्दर जल-थल देखकर रात्रि बीतने तक रहे। प्रातः होते ही सब प्रभु के प्रेमी चले, उन्हें नदी के किनारे छोड़कर माता, मंत्री एवं मुनि जी से आज्ञा लेकर भरत जी श्री शत्रुघ्न और निषादराज के साथ वहां पहुँचे जहाँ श्री सीता जी और भगवान राम विराजमान थे।

भरत जी माता कैकेयी की करनी समझकर सकुचाते हैं और मन में अनेकों तर्क उठाते हैं। मेरा नाम सुनकर राम लक्ष्मण और सीता जी कहीं उठकर चले न जायँ। हो सकता है मेरा मलीन मन जानकर त्याग दें या सेवक जानकर सम्मान करें, जो भी हो मेरे तो प्रभु के चरणों की चरण पादुका की ही शरण है। वे सच्चे स्वामी हैं, दोष तो मुझ दास का ही है जो चरण सेवा से वंचित हूँ।

मुझे माता के मत में मानकर वे जो कुछ भी करें सो थोड़ा है। परन्तु वे अपने स्वभाव वश मेरे पापों और अवगुणों को क्षमा करके मेरा आदर ही करेंगे।

ऐसा मन में विचार करते हुए भरत जी जा रहे हैं, मन में संकोच है और प्रेम में देह मग्न हो रही है। दोनों भाई प्रणाम करते हुए जा रहे हैं, उनके प्रेम को देखकर शारदा भी सकुचा गईं। भरत जी राम के चरण चिन्ह देखकर ऐसे प्रसन्न होते हैं मानो कंगाल को पारस मिल गया हो। प्रभु के चरण चिन्हों की रज सिर पर धारण कर हृदय और आँखों में लगाते हैं और प्रभु के मिलने के समान सुख पाते हैं।

सखा सहित भरत और शत्रुघ्न दोनों भाइयों की मनोहर जोड़ी को घने वन की ओट के कारण लक्ष्मण नहीं देखा। भरत ने प्रभु का पवित्र आश्रम देखा जो अति सुन्दर स्थान सभी मंगलों का दाता है। आश्रम में प्रवेश करते ही हृदय के दुःख की जो जलन थी वह ऐसे मिट गई मानो योगी ने परमारथ पा लिया हो। भरत ने देखा कि लक्ष्मण जी प्रभु आगे उनके पूछने पर बड़े प्रेम से कुछ प्रसन्न होकर कह रहे हैं।

राम भरत मिलाप

सुन्दर मुनि मण्डली के मध्य में श्री सीता जी और रघुकुल के चन्द्रमा भगवान राम ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो ज्ञान की सभा साक्षात् भक्ति रूपी लक्ष्मी जी और सच्चिदानंद भगवान देह धारण कर सद्गुरु रूप में विराजमान हो।

छोटे भाई शत्रुघ्न एवं सखा सहित भरत जी का मन मग्न हो गया, वे हर्ष-शोक, दुःख-सुख सब भूल गये। हे नाथ! रक्षा करो! रक्षा करो! ऐसा कहकर पृथ्वी पर दण्ड की भाँति गिर पड़े। प्रेम भरे वचनों से दंडवत् प्रणाम करते हुए भरत को पहचानकर लक्ष्मण जी का हृदय उनकी ओर मिलने के लिए उतावला हो गया। परन्तु स्वामी की सेवा के वश हैं।

सिर पर सेवा का भार रखकर रह गये मानो खिलाड़ी चढ़ी पतंग खेंच रहा हो। लक्ष्मण जी ने प्रेम सहित मस्तक नवाकर कहानाथ! भरत जी प्रणाम कर रहे हैं। सुनते ही राम प्रेम से अधीर हो उठे। उनका कही वस्त्र गिरा कहीं तरकस और कहीं धनुष बाण। प्रभु के प्रेम को देखकर सिद्ध मुनिगण आनंद में मग्न हो गये। वे सब प्रभु के सहज स्वभाव और प्रेम को देखकर सराहना करने लगे।

राम, शत्रुघ्न से मिलकर केवट से मिले, भाग्यशाली श्री लक्ष्मण जी को प्रणाम करते देखकर भरत जी बड़े प्रेम से मिले।

प्रभु के मिलने की प्रीति का वर्णन कैसे किया जाय, जो कवियों के कुल के लिए असम्भव हैं। लक्ष्मण जी लिपट कर छोटे भाई शत्रुघ्न से मिले और निषादराज केवट को हृदय से लगा लिया। तब दोनों भाइयों ने मुनियों की वंदना की और इच्छानुसार आशीष पाकर आनंद मग्न हो गये। भरत और शत्रुघ्न ने प्रेम में विभोर होकर सीता जी की चरणरज सिर पर धारण करके प्रणाम किया।

उन्हें बार-बार प्रणाम करते देखकर श्री सीता जी ने उठाकर उनके सिर को अपने कर कमलों से स्पर्श कर बैठाया और मन ही मन आशीर्वाद दिया। वे प्रेम में इतने मग्न हो गये कि उन्हें देह की सुध भी न रही। श्री सीता जी को सब प्रकार से अपने अनुकूल जान कर दोनों भाई चिन्ता रहित हो गये और उनका भय मिट गया। उसी समय निषादराज केवट धीरज धारण कर प्रणाम करके हाथ जोड़कर विनय करने लगा। कि

हे नाथ! महामुनि वशिष्ठ जी के साथ माताएं, सब नगर के लोग, सेवक, सेनापति, मंत्रीगण और राज्य सभा के सभी सदस्यगण आपके वियोग से व्याकुल होकर आए हैं।

तब सभी लोगों ने मंगल मूर्ति भगवान राम के श्रीचरण कमलों में दण्डवत् प्रणाम कर-करके दर्शन किए और अति प्रसन्न हुए। कोल-किरात आदि वनवास भक्त-सुन्दर पवित्र और अमृत जैसे स्वादवाला मधु पत्तों के दोनों में भर भरके ला रहे हैं। कंद, मूल, फल, अंकुर निकली वनस्पतियाँ एवं जड़ी बूटियाँ बड़े नम्र भाव से विनय के साथ प्रणाम कर करके सबको नाम और गुण बताकर दे रहे हैं।

अयोध्यावासी उन्हें बहुत सा मूल्य देते हैं परन्तु वे नहीं लेते। लौटाने में राम की दोहाई देते हैं और प्रेम से मीठी वाणी कहते हैं कि साधु जन प्रेम को पहचान

कर सम्मान करते हैं। हमने आपका दर्शन पाया है जो अति दुर्लभ था, जैसे राजस्थान में देवगंगा। आनंदकंद भगवान राम ने हम निषादों पर बड़ी कृपा की है, हमें राजा भी वैसा ही मिला है जैसा चाहिये था। आप राम के परिवार हैं, प्रजा हैं, आप भी अपने राजा का अनुसरण करें।

ऐसा अपने मन में समझकर संकोच को त्यागकर हम प्रेमियों पर कृपा करके हमें कृतार्थ करने के लिए यह साक फल अंकुर लीजिए।

आप सब प्यारे पाहुने इस वन में पधारे हो, हमारे ऐसे भाग्य कहाँ जो आप सबों की सेवा कर सकें। हे गोस्वामी! हम आपको दे भी क्या सकते हैं? हम किरातों की मित्रता भी ईन्धन और घास पत्तों की है। यहाँ किसी को स्वपन में भी धर्म बुद्धि कहाँ थी, यह तो सब प्रभु के दर्शनों का प्रभाव है। जब से हमने प्रभु के चरण कमलों का दर्शन किया है तब से हमारे सभी कठिन दोष और दुःख मिट गये और दर्शन आपके भी तो हमें प्रभु की कृपा से ही मिलें हैं।

वनवासियों के प्रेम भरे वचन सुनकर अयोध्या के नगर निवासी बड़े प्रसन्न हुये और उनके भाग्य सराहने लगे। ग्राम के सभी प्रेमीगण प्रेम में अति मग्न हो गये, उनके दिन पलक के समान बीतने लगे। संसार में, वेद में यह कहावत विदित है और ज्ञानी कवि भी कहते हैं, कि भगवान से विमुख को नरक से भी अधिक अधोगति मिलती है। यह संशय सबके हृदय में है कि हे विधाता राम अवध को जाएंगे या नहीं।

मुनि वशिष्ठ का सभा में भाषण

आज्ञा पाकर नगर के सभी महाजन, साधु-ऋषि-मुनि, मंत्रीगण एवं सभा के सभी सदस्यगण एकत्रित होकर मुनि के चरण कमलों में प्रणाम कर के बैठे।

मुनि वशिष्ठ जी समयानुसार बचन बोलेहे सभासदो! एवं उत्तम बुद्धि भरत जी! सुनो हंस वंश के सूर्य महाराजा राम धर्म धुरंधर स्वयं ही भगवान हैं। सत्य, प्रतिज्ञा, वेद की मर्यादा के रक्षक और संसार समुद्र से पार जाने के

लिए पुल है। राम का अवतार जगत के कल्याण के लिए हुआ है। ये गुरु, माता-पिता के वचनों के अनुसार दुष्टों के दल को नष्ट करके उन्हें माया-मोह रूपी चक्की में दल के भक्तों एवं साधुजनों का हित करते हैं।

नीति, प्रेम, परमार्थ और सच्चा स्वार्थ राम के समान यथार्थ रूप में कोई भी नहीं जानता। विधाता-जगतमाता, विश्व का पालक हरि और तीनों तापों को हरन करने वाला संहारकारी शिव, चंद्र, सूर्य, दिक्पाल, माया, जीव और कलियुग तथा उसके कर्म सब प्रभु के आधीन हैं। विभु के बिना पाताल, पृथ्वी एवं आकाश के राजा, वेद शास्त्र वर्णित योग, सिद्धि ये सभी सफल नहीं होते। हृदय में विचार कर भलीभाँति देखो! इन सभी के ऊपर राम की आज्ञा ही है। जिसके बिना सभी निष्फल और असमर्थ हैं।

राम का रुख देखकर उनकी आज्ञा पालन करने में ही हम सबकी भलाई है। आप सब समझदार हो, ऐसा समझकर अब सब मिलकर वही करो जिसमें सबका हित हो।

राम के चरण कमलों में प्रेम ही सबके लिए सुखदायक है, मंगल और आनंद का यही एक मार्ग है। प्रभु किस प्रकार अयोध्या चलें यह विचार कर कहो! जिससे वही उपाय किया जाए मुनि की नीति, परमारथ और स्वार्थ में सनी बातें सबने आदर सहित सुनी परंतु किसी के मुख से उत्तर नहीं निकला, सब देखते रह गए। तब हाथ जोड़, सिर नवाकर भरत जी कहते हैं

भरत जी बोलेसूर्यवं   श में एक से एक बढ़कर अनेकों राजा हो गए, इन सभी के जन्म के कारण माता-पिता हैं और जन्म-कर्मों का फल विधाता के ही वश में हैं किंतु हे गोसाई! आपका आशीर्वाद ऐसा है जो सब ही दुखों को नष्ट करके कल्याण करता है, जिसने विधाता की गति को भी रोक दिया। आपने जो बात टेक दी उसे कौन टाल सकता है? ऐसे इतने प्रभावशाली, परम विवेकी और महाज्ञानी?

मुनि वशिष्ठ-भरत-राम संवाद

सूर्य वंशियों के मार्ग दर्शक होकर भी हे मुनिराज! आज आप मुझसे पूछ रहे हैं, यह सब मेरा ही दुर्भाग्य है। भरत जी के प्रेम भरे वचन सुनकर मुनि के हृदय में प्रेम उमड़ आया और बोले ॥दो॰-१६२॥

हे तात! आपकी बात सत्य है परंतु यह सब प्रभु की कृपा से ही होता है क्योंकि राम विमुख को तो स्वप्न में भी सफलता नहीं मिल सकती। मैं एक बात कहने में अत्यंत ही सकुचा रहा हूँ कि बुद्धिमान सर्वस्व जाता देखकर आधा छोड़ देते हैं। अतः तुम दोनों भाई वन को चले जाओ तो राम लक्ष्मण और श्री सीता जी अयोध्या को लौट जाऐंगे। मुनि के ऐसे वचन सुनकर दोनों भाईभरत और शत्रुघ्न बहुत ही प्रसन्न हुए। उनके अंग परमानंद में मग्न हो गए।

उनके मन में प्रसन्नता और तन में तेज छा गया मानो, राजा दशरथ जी उठे हों और राम राजा हो गए हों। इसमें लाभ सबको बहुत है और हानि कम किंतु रानियों को सुख-दुख समान हुआ इसलिए वे रोने लगीं। भरत जी ने कहाहे मुनिराज! आपने जो कहा है उसे करने से संसार के जीवों को इच्छित वस्तु देने का फल होगा। इसलिए मैं जन्म भर वन में ही रहूँगा। इससे अधिक मेरे लिए सुविधा जनक और कुछ भी नहीं है।

राम और सीता जी हृदय की जानते हैं और आप सभी कुछ जानने वाले उत्तम ज्ञानी है। यदि आप सत्य कह रहे हैं तो अपने वचनों को प्रमाणित कीजिए! इन्हें चरितार्थ कीजिए। ॥दो॰१६३॥

भरत जी की बातें सुनकर और उनका प्रेम देखकर सभा सहित वशिष्ठ जी देह की सुध भूल गए। भरत जी की महान महिमा समुद्र के समान है। मुनि की बुद्धि समुद्र के किनारे खड़ी उस बुद्धि के समान है जो पार जाना चाहती है। मुनि ने बड़े प्रयत्न किये पर पार जाने का न तो कोई बेड़ा है न नाव ही दिखाई देती है जिससे पार जा सके। ऐसे भरत जी की बड़ाई कौन कर सकेगा? क्या सरोवर से उत्पन्न हुई सीप में समुद्र समा सकता है?

वशिष्ठ जी के मन में भरत जी बहुत ही अच्छे लगे। वे समाज सहित राम के पास आए। आनंदकंद प्रभु ने मुनि को प्रणाम किया और सुंदर आसन दिया। प्रभु की आज्ञा पाकर सब बैठ गए। तब मुनि वशिष्ठ जी ने देश, समय और स्थिति के अनुसार विचार कर कहाहे सबके हृदय की जानने वाले, पुरुषोत्तम भगवान आप धर्म, नीति ज्ञान और सब गुणों के भंडार हो।

हे प्रभु! आप सबके हृदय में निवास करते हो, सबके भाव-कुभाव को जानते हो। अतः जिसमें पुरवासियों का, माताओं एवं भरत का हित हो वही करो। ॥दो१६४॥

दुःखी कभी विचार कर नहीं कहते, जैसे जुआरी को अपना दाँव ही सूझता है। मुनि के वचन सुनकर प्रभु ने कहाहे मुनिनाथ! उपाय तो आपके ही हाथ है। आपका रुख रखने में, मुदित मन से जो सत्य कहें वह आज्ञा पालन करने में ही सबका हित हैं पहले तो जो आज्ञा मेरे लिए होगी वह मैं अपने माथे पर रखकर पालन करूँगा।

और हे मुनिराज! जिसके लिए आप जैसा कहेंगे वह सब उसी तरह करेंगे। प्रभु के मधुर और नम्र वचनों को सुनकर मुनि ने कहा कि हे प्रभु! आप सत्य कहते हैं परंतु मैं क्या करूँ? भरत के प्रेम ने मेरी बुद्धि भरमा दी। मेरी समझ में तो यही आता है कि भरत की रुचि को रखकर जो काम किया जाएगा वह शुभ ही होगा, शिव जी इसके साक्षी हैं।

भरत जी पर मुनि वशिष्ठ जी का प्रेम देखकर प्रभु के हृदय में अति आनंद हुआ। धर्म की धुरी को धारण करने वाले भरत को तन, मन, वचन से अपना सेवक जानकर प्रभु मुनि के कथनानुसार मनोहर, मधुर, मंगलों के मूल प्यारे वचन बोलेहे मुनिनाथ! मैं आपकी शपथ एवं पिता जी के चरणों की दुहाई देकर कहता हूँ कि भरत के समान संसार में कोई भाई नहीं हुआ।

जो सद्गुरू के चरण कमलों का भक्त है वह लोक, वेद और ज्ञानियों की दृष्टि में बहुत ही बड़ा भाग्यशाली है। जब भरत पर आपका इतना प्रेम है तो भरत के भाग्य का वर्णन कौन कर सकता है? भरत को देखकर उसके सामने बड़ाई करने में मुझे संकोच हो रहा है। भरत जैसे कहे वैसा ही करने में भलाई है। ऐसा कहकर भगवान राम चुप रहे।

तब मुनि वशिष्ठ जी ने भरत से कहाहे तात! तुम सब संकोच को त्यागकर अपने प्यारे भाई आनंदकंद कृपासिंधु से अपने हृदय की बात कहो। ॥दो॰-195॥

भरत जी ने मुनि के वचन सुनकर और अपने प्रभु का रूख देखकर उन्हें अपने अनुकूल भरपूर जाना, पर सबका भार अपने सिर पर जानकर कुछ बोल न सके। भरत जी मन में विचार कर देखने लगे कि अब क्या करूँ? उनके नेत्रों में प्रभु के प्रेम के आँसू बह निकले और शरीर पुलकायमान हो गया। तब सभा में खड़े होकर बोलेमेरा जो कहना था वह मुनिनाथ ने पहले ही कह दिया, अब इससे अधिक मैं और क्या कहूँ।

मैं अपने स्वामी का स्वभाव जानता हूँ जो अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी कृपा सदैव ही विशेष रही है। खेलते समय बचपन में भी मेरे साथ खुन्नस कभी नहीं की, मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा और कभी भी मेरा मन निराश नहीं किया। मैं प्रभु की रीति को और कृपा को हृदय से जानता हूँ, जो मेरे हार जाने पर भी खेल में मुझे जिताते रहे हैं।

मैंने भी प्रेम और संकोच वश कभी सामने मुँह नहीं खोला। प्रेम के प्यासे मेरे नेत्र प्रभु के दर्शनों से आज तक तृप्त नहीं हुए। ॥दो॰१९६॥

साधु मुनियों की सभा में, अपने प्रभु सद्गुरुदेव के निकट इस शुभ स्थान में मैं सच्चे भाव से कहता हूँ यह मेरा प्रेम है या प्रपंच, झूठ है या सत्य इसे मुनि वशिष्ठ जी एवं अंतरयामी प्रभु जानते हैं। ॥दो॰१९७॥

अति व्याकुल भरत जी के दुःख भरे प्रीति विनय और नीतियुक्त सुंदर वचनों को सुनकर सूर्यकुल रूपी कम वन के चंद्रमा भगवान राम उचित वचन बोलेहे तात! जीव की गति को ईश्वर के आधीन जानकर मन में ग्लानि मत करो। हे भरत जी! मैं शिव जी की साक्षी मानकर स्वभाव से ही सत्य कहता हूँ कि यह भूमि तुम्हारे ही बल पर टिकी हुई है।

हे तात! तुम व्यर्थ तर्क मत करो, मन से ग्लानि को त्याग दो। बैर और प्रेम छिपाए नहीं छिपता। देखो! मृग और पक्षी मुनियों के निकट जाते हैं और बधिक को देखकर भाग जाते हैं। हित-अनहित तो पशु-पक्षी भी जानते हैं और यह मनुष्यतन तो गुण और ज्ञान का निधान है। उस पर भी मुनि की मुझे आज्ञा है अतः अवश्य ही जो तुम कहो मैं वही करना चाहता हूँ।

अतः मन में प्रसन्न हो संकोच को त्यागकर कहो! जो तुम कहोगे मैं वही करूँगा। ऐसा सत्य का संग और प्रभु के वचन सुनकर सारा समाज अति प्रसन्न हुआ।

हे कृपा और अमृत के सागर अंतरयामी प्रभु! अब मैं क्या कहूँ और क्या कहलाऊँ? प्रभु की रीति यह कोई नहीं है यह तो लोक और वेद में विदित है, किसी से छिपी नहीं है। हे प्रभु ऐसा जगत में कौन है जिससे जीव का भला हो! एक मात्र आप ही हैं जो सबका भला कर सकते हैं। हे गुरुदेव! आपका स्वभाव ही कल्पवृक्ष की भाँति है, आपका न कोई शत्रु है न मित्र आप सबकी इच्छा पूरी करके भक्तों की रक्षा करते हैं।

हे प्रभु! आपका प्यार देखकर मेरा संकोच और संदेह मिट गया। अब कृपा करके वही कीजिए जिससे सेवक का हित हो और आपके मन में कोई संकोच न हो। जो सेवक अपने स्वामी सद्गुरुदेव को संकोच वश करके अपना हित चाहे वह बुद्धिहीन है। सेवक का हित तो स्वामी की सेवा करने में है जो सभी सुख और लोभ को त्यागकर करें।

हे प्रभु! आप मन में प्रसन्न होकर, संकोच छोड़कर जिसे जो आज्ञा देंगे उसे सभी अपने सिर पर रखकर आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। तब सभी उलझनें अपने आप ही मिट जाऐंगी।

भरत जी के वचनों को सुनकर सभी मुनिगण प्रसन्न हुए और साधुजनों ने भरत जी की सराहना करते हुए पुष्प बरसाए। वन में रहने वाले तपस्वी आनंद में मग्न हो गए परंतु अवधवासी दुविधा में पड़ गए। संकोच वश प्रभु चुप ही रहे, प्रभु की

चुप्पी देखकर सभा के लोग सोच में पड़ गए। उसी समय महाराजा जनक के दूत आ गए। उनका आना सुनकर मुनि वशिष्ठ जी ने शीघ्र ही दूतों को अपने पास बुलाया।

दूतों ने प्रणाम करके जब राम का वेष देखा तो महा दुखी हुए। दूतों से वशिष्ठ जी ने राजा की कुशल पूछी तब दूतों ने पृथ्वी पर सिर टेककर, सकुचाकर, हाथ जोड़कर कहाहे गोसाई कुशल का कारण तो आप ही हैं जो आदर सहित राजा की कुशल पूछ रहे हैं।

राजा जनक का चित्रकूट में शुभागमन

महाराजा जनक का आना सुनकर सभा के सभी लोग प्रेम में मग्न होकर प्रभु के साथ राजा की अगवानी के लिए तुरंत उठ खड़े हुए।

भाइयों, मुनियों मंत्रियों एवं नगर वासियों को साथ ले कर प्रभु आगे चले और भाइयों सहित महाराजा जनक से मिल कर समाज सहित आश्रम में लिवा ले चले। दोनों राज समाज शोक से व्याकुल हैं उन्हें ज्ञान, धीरज, लज्जा भी नहीं रही। तब महामुनि विश्वामित्र जी ने पुरानी कथाएँ कह-कर सब सभाओं को समझाया।

हंस वंश के महामुनि विश्वामित्र जी, महाराजा जनक और उनके कुल पुरोहित सतानंद जी जिन्होंने जगत में परमार्थ की खोज की। समय का विचार करके राजा जनक सब समाज सहित धीरज धारण करके भरत के पास चले। भरत जी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत करके समयानुसार सुंदर आसन दिए। राजा जनक ने कहाहे भरत जी! आपको राम का स्वभाव विदित है।

परम प्रभु राम सत्यव्रत धारी, धर्म रत, सबका शील, स्नेह रखने वाले हैं इसलिए वे संकोच वश संकट सहन कर रहे हैं। अब आप जो आज्ञा दें उनसे कहा जाए।

महाराजा जनक के वचन सुनकर भरत जी की देह पुलकायमान हो उठी, वे नयनों में जल भरकर धीरज धारण करके बोले-मुनि विश्वामित्र जैसे महामुनि का समाज, मंत्रीगण! आप आज सब ज्ञान के समुद्र उपस्थित हैं। मुझे अपना आज्ञाकारी
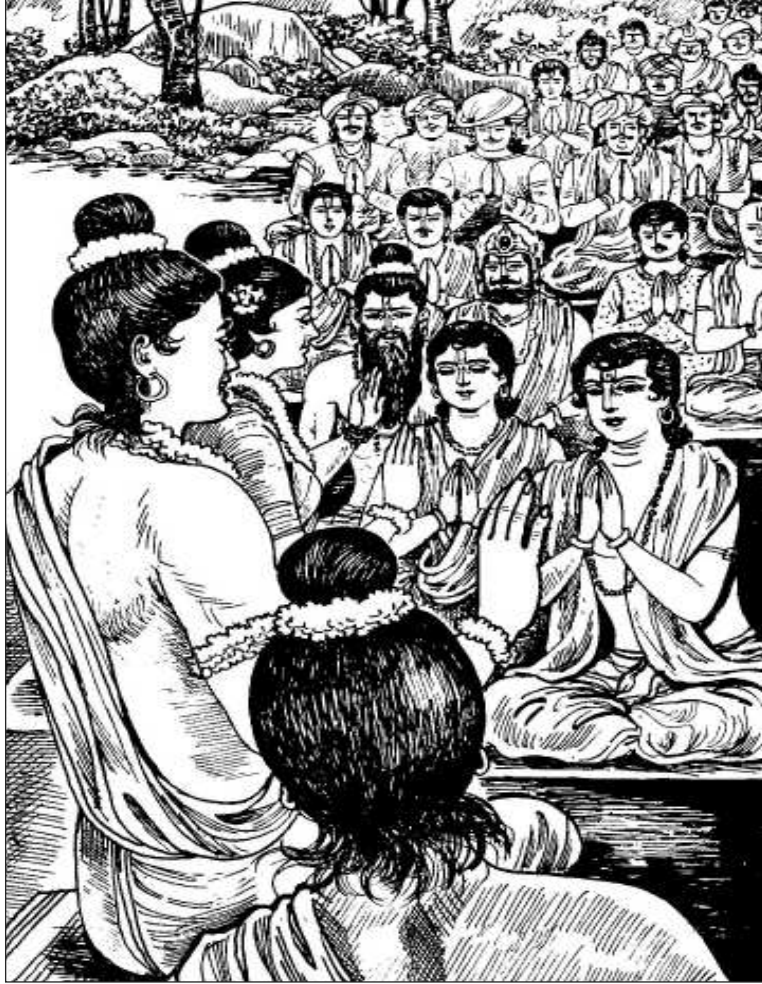
श्री भरत जी, पुरवासियों सहित रामचन्द्र को अयोध्या लौटने की प्रार्थना करते हुए

बच्चा जानकर हे स्वामी! आज्ञा दीजिए। आनंदकंद परम प्रभु राम-मेरे स्वामी सद्गुरुदेव, माता-पिता सर्व हितकारी सबके हितैषी और अन्तरयामी हैं।

प्रभु सर्व समर्थ हैं। शरणागतों के हितकारी, गुणों के ग्राहक और अवगुणों, पापों को नष्ट करते हैं। कोई कैसा भी क्रूर, कुटिल, दुष्ट, दुर्मति,नीच, कलंकी, शीलरहित नास्तिक और संशय युक्त हो। यदि वह सुनकर भी प्रभु की शरण में आ जाए और उत्तम कर्म करके सन्मुख आकर प्रणाम करता है तो उसे प्रभु अपना लेते हैं। उनके दोषों को देखकर भी हृदय में नहीं लाते और उनके गुणों को सुनकर भी साधु समाज में, सत्संग में वर्णन करते हैं।

इसी तरह आप अपने सेवकों को सुधारकर, सम्मान देकर उन्हें सबका सिरमौर-साधु बना देते हो! आप जैसे दीनवंधु कृपासिंधु आनंदकंद प्रभु के बिना दूसरा कौन है? जो अपनी परम्परा के यश का हठपूर्वक पालन करेगा।

हे प्रभु! आपके मंगलमयी चरणों का दर्शन करके यह जाना कि प्रभु मुझ पर स्वभाविक ही अनुकूल हैं। मैं प्रभु के चरणामृत की दुहाई देकर कहता हूँसत्य, कर्म, सुंदर सुख की सीमा आपका सहज स्नेह हैं जो स्वार्थ, छल और चारो फलों के परिणामों की आशा को त्यागकर सद्गुरु की सेवा करे। आज्ञा के समान दूसरी सेवा नहीं है, जिसे वही पाता है जिसे आप दें।

ऐसा कहकर भरत जी प्रेमवश पुलकायमान हो गए। उनके नेत्रों में जल भर आया, व्याकुल होकर चरणों में प्रणाम किया, उनका स्नेह अकथनीय था। कृपासिंधु प्रभु ने उत्तम वाणी से भरत का सम्मान किया और अपने हाथ से उठाकर अपने पास बैठाया। भरत जी की विनय सुनकर, उनके स्वभाव और प्रेम देखकर आनंदकंद प्रभु एवं दोनों राज समाज प्रेम में मग्न हो गए।

ऐसा कहकर भरत जी प्रेमवश पुलकायमान हो गए। उनके नेत्रों में जल भर आया, व्याकुल होकर चरणों में प्रणाम किया, उनका स्नेह अकथनीय था। कृपासिंधु प्रभु ने उत्तम वाणी से भरत का सम्मान किया और अपने हाथ से उठाकर अपने पास बैठाया। भरत जी की विनय सुनकर, उनके स्वभाव और प्रेम देखकर आनंदकंद प्रभु एवं दोनों राज समाज प्रेम में मग्न हो गए।

देश, काल और उपस्थिति समाज को देखकर नीति और प्रीति के पालक, वाणी के सर्वस्वराम, परिणाम में हित करने वाले, सुनने में अमृत के समान वचन बोलेहे तात भरत! तुम्हें सभी के कर्मो का, अपना तथा मेरा हित और धर्म का भलीभाँति पता है। मुझे सब प्रकार से भरोसा है, तब भी मैं समय के अनुसार कुछ कहता हूँ।

हे तात! पिता जी के बिना हमारी बात केवल गुरुदेव की कृपा से ही संभली है, नहीं तो हमारे सहित प्रजा, परिवार और सभी कुटुंब के लोग नष्ट हो जाते। यदि संध्या से पहले ही सूर्य अस्त हो जाय तो उस समय क्या संसार में संकट नहीं छाएगा? यही उत्पात हमारे लिए विधाता ने रचा है परंतु मुनि विश्वामित्र जी तथा महाराजा जनक जी ने सबको बचा लिया।

राज का सारा कार्य, हमारी सब लाज और पत तथा हमारा धर्म, धरनी, धन और घर सभी गुरुदेव के प्रभाव से ही इन सबका पालन हो जाएगा और इसका परिणाम भी अच्छा ही होगा।

राजा जनक को राज्य सौंपकर विदा करना

हे तात! सद्गुरुदेव का कृपा प्रसाद ही घर में तुम्हारा और वन में हमारा तथा सारे समाज का रक्षक है। माता-पिता सद्गुरुदेव की आज्ञा का पालन करना ही सकल धर्म, पृथ्वी एवं जीवन की सफलता है। सो तुम स्वयं करो और मुझसे कराओ जिससे सूर्य वंश के धर्म की रक्षा हो। गुरु की कृपा प्रसाद रूपी आज्ञा ही साधक के लिए सब सिद्धियों की दाता एवं कीर्ति, सद्गति और भाग्य की त्रिवेणी है।

हे तात! तुम्हारी, मेरी और कुटुम्ब तथा वन की चिंता तो मुनि विश्वामित्र जी और राजा जनक को है। हमारे सिर पर श्री गुरुदेव का हाथ है और मुनि विश्वामित्र एवं राजा जनक की छत्र छाया है तो हमें और तुम्हें स्वप्न में भी कलेश नहीं हैं। सो यह सब विचार कर भारी संकटों को सहकर प्रजा और परिवार को सुखी करो। विपदा पड़ने पर अच्छे भाई ही सहायक होते हैं जो तलवार की धार गिरने पर भी अपना हाथ बढ़ा देते हैं

सभी सुमंगलों का मूल-राम-भरत संवाद सुनकर ऋषि, मुनि और भक्तगण सराहना करके दैविक पुष्पों की वर्षा कर नाम के गुण गाने लगे।

प्रातः काल जब समस्त समाज स्नान आदि के एकत्रित हुआ तब भरत जी, मुनिमण्डली एवं राजा जनक जी आए। आज विदा करने का शुभ दिन है यह जानकर भी राम कहने में सकुचा रहे हैं बुद्धिमान भरत जी राम का रुख देखकर प्रेम सहित धीरज धारण कर उठे और प्रभु को दण्डवत प्रणाम करके हाथ जोड़कर नम्रता पूर्वक बोलेहे नाथ! आपने मेरी सभी दुविधाओं को भे ंट कर मेरी अभिलाषाएँ पूरी कीं।

आपने मेरे लिए बहुत प्रकार से कष्ट सहन किया है, अब हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए! जिससे मैं जाकर अवधि बीतने तक अयोध्या की सेवा करूँ। सेवक स्वामी का सुहावना स्वभाव, पवित्र प्रेम और पवित्र नेम से सबको भाया। भरत के प्रेम भरे वचनों को सुनकर राजा जनक, मुनि मंडल एवं सभी सदस्यों को बड़ी प्रसन्नता हुई।

दोनों भाइयों ने प्रणाम करके विदा मांगी तब प्रभु ने उन्हें छाती से लगाकर आशीर्वाद दिया। आशीष पाकर प्रेम से दोनों भाई आज्ञा पाकर चले जो सभी मंगलों की मूल है।

सेवक और मंत्रीगण भरत जी का रुख पाकर अपने-अपने कार्य में जाकर लग गए। प्रभु के चरण कमलों की वंदना करके दोनों भाई प्रभु की आज्ञा सिर पर रखकर चले। मुनि विश्वामित्र, जाबालि, वामदेव एवं नगर वासियों और परिवार के लोगों तथा उत्तम कर्म करने वाले मंत्रीगणों को, सबको यथा योग्य विनय करके राम और लक्ष्मण ने विदा किया।

भाई लक्ष्मण सहित भगवान राम ने महाराजा जनक की बहुत विनय और बड़ाई की। दोनों भाई सासु के निकट गए और चरणों की वंदना करके आशीर्वाद पाकर लौटे। प्रभु ने निषादराज गुह्य को भी विदा किया वह प्रभु के बिछुड़ने के दुख को सहन करता हुआ चला। इस प्रकार भरत जी का और महाराजा जनक जी का सारा दल ऋषि मुनियों सहित हाथी, घोड़े, रथ, भाँति-भाँति की सवारियाँ सजाकर चले।
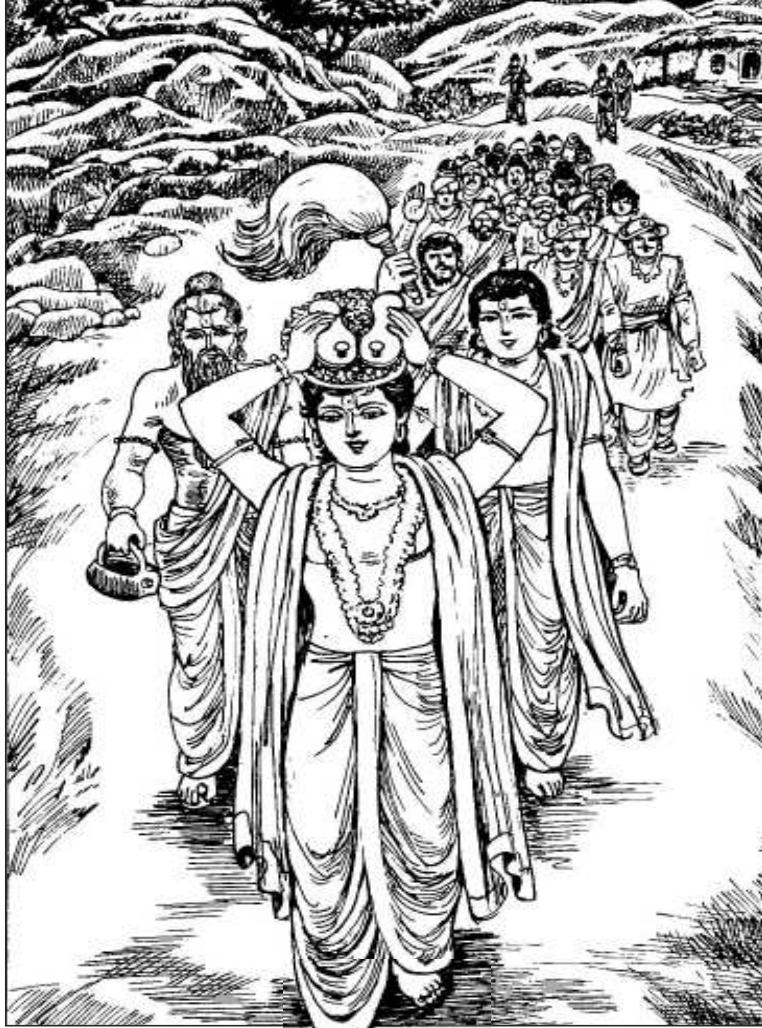
श्री राम की चरण पादुका लेकर भरत जी अयोध्या लौटते हुए।

भाई लक्ष्मण और सीता सहित प्रभु चित्रकूट के पवित्र आश्रम की पर्णकुटीर में विराजमान होकर ऐसे शोभा पा रहे हैं मानों भक्ति ज्ञान और वैराग्य ने शरीर धारण किया हो।

प्रभु के गुण समूहों की चर्चा करते हुए सब लोग मार्ग में चुपचाप बिना हल्ला मचाए जा रहे हैं। रास्ते में यमुना से पार होकर किसी ने उस दिन भोजन नहीं किया। सबके पेट वनवासी भक्तों के फलों से डटाडट भरे थे। गंगा पार करके सब श्रृंगवेर पुर गुह्य की राजधानी में पहुँचे, वहाँ राम के परमसखा गुह्य ने सब भाँति से प्रबंध किया। गंगा गोमती में स्नान करके चौथे दिन अवधपुर की राजधानी अयोध्या में पहुँचे।

जनक जी ने चार दिन अयोध्या में रहकर राज्य का सब कार्य संभाला और मंत्रीसुमंत, मुनि वशिष्ठ एवं भरत को सब राज काज सौंपकर अपने साज समाज सहित जनकपुर को चले गये। तब भरत जी ने मंत्री एवं उत्तम प्रबन्धकों को बुलाकर समझाया। आज्ञा पाकर सब अपने-अपने कार्य में प्रबन्धकों को बुलाकर समझाया। आज्ञा पाकर सब अपने-अपने कार्य में नियुक्त हो गये। शत्रुघ्न को बुलाकर समझाकर सब माताओं की सेवा का भार सौंपा।

सभी नगरवासी प्रभु के दर्शनों के लिए नियम उपवास करने लगे। वे सब आभूषणों, भोगों एवं सुखों को त्यागकर प्रभु के आने की अवधि तक दर्शनों की आशा से जीवित रहे।

भरत जी ने ऋषि मुनियों को बुलाकर हाथ जोड़ विनय पूर्वक प्रणाम करके प्रार्थना की कि यदि आप लोगों को कोई भी ऊंच नीच या बुरा कार्य दिखाई दे तो उसे बताकर आज्ञा देने में संकोच मत कीजियेगा। भगवान राम, लक्ष्मण और श्री सीता जी वन में रहते हैं और यहां घर में रहकर श्री भरत जी नेम ब्रत धारण करके तन को मोह पर विजय प्राप्त करने के लिये कस रहे हैं। वे अपने हृदय में राम

और सीता का ध्यान करके पुलकायमान और प्राणप्रभु का नाम जपने में लीन हो रहे हैं। उनके नेत्र प्रभु के प्रेम में आँसू भर रहे हैं।

जिस प्रकार योग अभ्यास की सफलता के लिए उचित आहार और व्यवहार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार भरत जी शुद्ध आहार करते हुए, शुद्ध वस्त्र धारण कर नियम पूर्वक ब्रह्म के आचरण का व्रत धारण करके रहते हुए प्रेम सहित कठिनता से ऋषियों के धर्म का पालन करते हैं। भरत जी का आचरण परम-पवित्र है एवं मधुर सुन्दर आनंद-मंगलों का दाता और कलियुग के पाप एवं कष्टों का नष्ट करता है, वह महान मोह रूपी रात्रि को नष्ट करने के लिये सूर्य के समान है। वह साधना कलियुग में हरि भक्तों को सुख देने वाली, भवसागर के भार को सिर से पटक कर फोड़ने वाली एवं आनंदकंद सद्गुरु देव भगवान विष्णु के प्रेमरूपी अमृत की सार है।

हे उमा! राम के गुण अति गूढ हैं, जिन्हें सुनकर या पढ़कर और सुन्दर मीठी वाणी से गाकर जो मुनिसंतजन पण्डित अर्थात् परम विवेकी हैं वे आनंदकंद प्रभु के चरणों का प्रेम पाते हैं किंतु जो मुनि या संतजन मूढ़ हैं जिनका सच्चिदानंद भगवान विष्णु के चरणों में अटल प्रेम नहीं है, उनसे जो विमुख हैं और जिनको धर्म में लगन नहीं है वे मोह को पाकर भ्रमित हो जाते हैं।

इस भरत चरित-राम और भरत के सम्वाद को जो नित्य नियम से आदर सहित सुनेंगे या अध्ययन करेंगे, उनका अवश्य ही आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान के श्री चरणकमलों में प्रेम होगा। उनको संसार के विषय रस से उपरामता होकर वह वैराग्य होगा जिससे मानव सभी शुभ कर्म धर्म करता हुआ भी परम आनंद और सुख भोगता है जिसे विदेह गति या गुह्यप्रेम कहते हैं।

अरण्यकाण्ड

प्रभु का अत्रिमुनि के आश्रम में शुभागमन

राम ने चित्रकूट में रहकर भाँति-भाँति की लीलाएं कीं, उनके गुण एवं प्रवचन सुनने में अमृत के समान थे। भगवान राम ने मन में अनुमान किया कि अब यहां भीड़ अधिक हो जायेगी क्योंकि सब मुझे जान गये हैं। सभी मुनियों से विदा करा कर सीता सहित दोनों भाई अत्रिमुनि के आश्रम में गये। प्रभु का आना सुनते ही महामुनि अत्रि अति प्रसन्न हुए।

प्रेम में पुलकायमान होकर मुनि दौड़े। उन्हें अपनी ओर आते देखकर प्रभु आगे बढ़े और दण्डवत् प्रणाम करते ही मुनि को प्रभु ने हृदय से लगा लिया। दोनों प्रेम के जल में नहा गये। प्रभु के रूप को देखकर मुनि की टक-टकी लग गई और आदर सहित आश्रम में ले गये। सुन्दर शब्दों में वंदना-पूजा करके कंद मूल फल जो प्रभु को अच्छे लगे दिये।

सुन्दर आसन पर विराजमान प्रभु की मुस्कान एवं शोभा को देखकर और अपने नेत्रों में भरकर परम बुद्धिमान चतुर मुनि हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे।

परम प्रभु विभु की स्तुति

छं नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं,
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं।
निकाम श्याम सुंदरं भवाम्बु नाथ मंदरं,
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनम्।।

हे भक्तों पर कृपा करने वाले विभु! आपके चरण कमलों का मैं ध्यान करता हूं, जो निष्काम भक्तों को परम धाम देने वाले हैं। हे नाथ! आप नील-कमल के समान उज्जवल सुंदरता के घर एवं कामनाओं से रहित हैं। हे खिले हुए कमल के समान नेत्रों वाले विभु! आप मोह और मद आदि दोषों से मुक्त करने वाले हैं।

छं त्वमेकमद्भुतं, प्रभुं, निरीहमीश्वरं विभुं,
जगद्गुरुं च शास्वतं, तुरीयमेव केवलं।
भजामि भाव वल्लभं, कुयोगिनां सुदुर्लभं,
स्वभक्त कल्प पादपं, समं सुसेव्यमनवहम।।

केवल आप ही एक अद्भूत प्रभु, इच्छारहित, सर्वव्यापक, परम ईश्वर और सम्पूर्ण जगत के सनातन गुरु हो! आपही केवल तुरिया अवस्था में दिखाई देते हो। हे परम-ईश्वर विभु। मैं आपका प्रेम भाव से भजन करता हूं। आप कुयोगियों के लिए अत्यन्त ही दुर्लभ हैं। आपके चरण कमल अपने निज भक्तों के लिए एवं उत्तम सेवा करने वालों के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं।

छं मनोज वैरि वंदितं अज्ञादि देव सेवितं,
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहं।
नमामि इन्दिरा पति सुखाकरं सतां गतिं,
भजे सशक्ति सानुजं, शची पति प्रियानुजम्।।

कामदेव के शत्रुशिव जी आपकी वंदना करते हैं और ब्रह्मादि देव की आपकी सेवा करते हैं। विशुद्ध ज्ञानमयी आपकी देह विज्ञान स्वरूप है, आप समस्त दोषों को नष्ट करते हैं। हे विभु! आप सब सुखों के दाता-संतों की परमगति हो। आप शचीपति इन्द्र, शक्तिपति-शिव और लक्ष्मीपति-विष्णु के परम प्यारे हो! आपको सब भजते हैं। हे विभु! मैं आपके चरण कमलों में प्रणाम करता हूं।

छं त्वंदघ्रि मूल ए नरा, भजंति हीन मत्सराः,
पतंति नो भवार्णवे, वितर्क बीचि संकुले।
विविक्त बासनाः सदा भजन्ति मुक्तिदं मुदा,
निरस्य ईन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम्।।

जो मानव ईर्ष्या रहित होकर आपके चरण कमलों का ध्यान करते हैं वे तर्क-वितर्क रूपी लहरों से परिपूर्ण संसार सागर में नहीं गिरते। एकांत वासी साधुजन मुक्ति के लिए सांसारिक विषयों से विरक्त होकर-इन्द्रिय निग्रह करके आनंदपूर्वक नित्य आपका ध्यान करके आपके परम धाम को पाकर सेवा-भक्ति में लग जाते हैं। उन सब अपने निज भक्तों को आप मुक्ति एवं परम गति प्रदान करते हो।

छं प्रलम्ब बाहु विक्रमं प्रभो प्रमेय वैभवं,
निषंग चाप सायकं, धरं त्रिलोक नायकं।
दिनेश वंश मंडनं, महेश चाप खण्डनं,
मुनिन्द्र संत रंजनं सुरारि वृन्द भंजनम।।

हे विभु! आपकी लम्बी भुजाओं का पराक्रम और ऐश्वर्य असीम है। आपने ही निशाचरों का वध करने के लिए तरकस धनुष, बाण धारण किये हैं तीनों लोकों हे स्वामी! आपने ही सूर्य वंश की रक्षा की है। हे विभु! आपने शिव जी के मोह रूपी धनुष को तोड़ कर महामुनियों, साधु-सन्तों की सभा को आनंद देने वाला तथा असुरों के समूह का नाश करने वाला रूप धारण किया है।

छं अनूप रूप भूपंति, नतोहमुर्विजा पतिं,
प्रसीद में नममितें पदाब्ज भक्ति देहि मे।
पठन्ति ये स्तवं इदं, नरादरेण ते पदम्,
ब्रजंति नात्र संशयं, त्वदीय भक्ति संयुताः।।

हे प्रभु। आपका रूप उपमा रहित है। हे विश्वपति विभु! आप विश्व को उत्पन्न करने वाली पृथ्वी पति हैं। आप मेरी रक्षा कीजिए! अपने चरण कमलों की भक्ति दीजिए! मै। आपको प्रणाम करता हूं। भगवान शंकर जी कहते हैंहे भवानी! महामुनि अत्रि जी की गाई हुई यह स्तुति जो मान पढ़ेंगे, सुनेंगे और गायेंगे वे प्रभु की भक्ति को पाकर परम पद को प्राप्त करेंगे, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।

दे बिनती करि मुनि नाइ सिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरण सरोरूह नाथ जनि, कबहु न तजै मति मोरि ॥२११॥

इस प्रकारमहामुनि अत्रि जी ने विनती करके, सिर नवाकर हाथ जोड़ के कहाहे नाथ! मेरी बुद्धि आपके चरण कमलों को कभी भी न भूले।

"अत्रिमुनि यह जानते हुए भी कि भगवान राम विष्णु के अवतार हैं, माता कौशल्या को भी राम ने जब जन्म लिया तो विष्णु के रूप में ही दर्शन दिये किंतु फिर भी मुनि ने राम की वंदना स्तुति करते समय राम को विभु रूप में कैसे देखा?"

विभु स्वरूप परम प्रकाश में सदैव ही विराजमान हैं, नित्य अविनाशी हैं उसका अंत विश्व के अंत होने पर भी नहीं होता, वही सर्व प्रथम स्वयंभू 'शंभु' रूप से बिना माता-पिता के प्रगट हुआ और फिर वही विभु स्वयंभु की प्रार्थना पर हंस नाम से प्रगट हुआ। परम प्रभु का रूप विभु और नाम हंस है इस तरह विष्णु रूप और शिव नाम है।"

कृपा के आधार राम ने अत्रि से कहा कि आपकी आज्ञा हो तो मैं अन्य वन में जाऊं। धर्म की धुरी को धारण करने वाले प्रभु की ऐसी वाणी को सुनकर मुनि प्रेम सहित बोलेब्रह्मादि शिव और सनक आदि संत जो परमार्थ के वक्ता हैं वे भी जिसकी कृपा चाहते हैंहे राम! आप वही परम प्यारे विभु निष्काम, दीनबंधु भगवान हो जो अपने भक्तों से ऐसे मधुर वचन कहते हो।

अब मैं आपका मर्म समझ गया जिससे सब देवताओं को छोड़ कर सब संतजन आपको ही भजते हैं। जिसके समान संसार में कोई महान नहीं है उसका शील स्वभाव ऐसा क्यों न हो। हे प्रभु! आप ही बताइए कि मैं किस प्रकार कहूँ कि आप जाइए! हे नाथ! आप अन्तरयामी हैं ऐसा कहकर परम धीर मुनि ने प्रभु को देखा तो उनके नेत्रों में जल भर आया और शरीर पुलकायमान हो गया।

मुनिराज अत्रि ने प्रभु के श्रीचरण कमलों में सिर नवाकर प्रणाम किया। देवों के देव विभु, मनुष्यों में पुरुषोत्तम राम और मुनि संतों के ईश्वर भगवान विष्णु स्वरूप राम लक्ष्मण सीता जी बन को चले। आगे राम, पीछे लक्ष्मण और बीच में सीता जी कैसी शोभायमान हैं जैसे जीव और ब्रह्म के बीच में माया। अपने स्वामी को पहचान कर नदी, वन, पर्वत और विकट घाटियां सुन्दर मार्ग देते हैं।

प्रभु की पदयात्रा में बादल जिस प्रकार छाया करते हैं, उसी प्रकार राम जहाँ-जहाँ जाते हैं वे छाया करते हैं। प्रभु ने सुंदर आश्रमों को देखा जिनके

समान देवताओं के घर भी नहीं थे। जहाँ अनेक प्रकार के बाग एवं बगीचे पहाड़ की चोटियों पर मुनियों ने लगाए हैं जैसे जगत् माता ने आश्रम सजाए हैं। उन दिव्य वृक्षों पर चारों ओर सुन्दर-सुन्दर मीठे फल लगे हैं जिन्हें खाना और देखना तो दूर रहा केवल सुनने से ही मन मोहित और मुंह में लार टपकने लग जाती है। जिस प्रकार सुनयना जी के अतिमग्न होने पर आँखें चमकने लगती हैं।

अपने-अपने आश्रमों में वेदिका बनाई हैं जहाँ तुलसी भी विराजमान हैं वहाँ उन सब आश्रमों में श्री सीता जी, लक्ष्मण और राम विराजे।

मुनियों ने अपने-अपने आश्रमों में लाकर प्रभु को सुन्दर आसन पर बैठाकर उनका स्वागत करके पूजा वंदना की और अमृत के समान सुन्दर मधुर-कंद मूल फल का राम को भोजन दिया।

प्रभु ने भाई लक्ष्मण और सीता सहित भोजन किया। जिस मुनि की जो इच्छा थी उसे वह वर दिया। उन दिनों में प्रभु ने उन आश्रमों में निवास किया और सभी मुनियों ने मिलकर आवश्यकतानुसार प्रभु की सेवा की। विराध नाम का एक निशाचर जो विराग को त्यागकर विराध बना था वह घोर गर्जना करते हुए जा रहा था। उसने जब देखा कि यहाँ मुनियों का समाज एकत्रित है तो क्रोधित होकर बड़ी तीव्रता से सर्प की भांति ऐसा दौड़ा जैसे काल हो।

उसका तेज वायु के समान था, वृक्ष टूट रहे थे और पत्थर उड़ रहे थे। प्रभु ने उसे सर्प के समान सात बाण मारे तो उसने अपना सुन्दर रूप पाया। बहुत दुःखी देखकर प्रभु ने उसे अपने परमधाम को भेज दिया। तत्पश्चात प्रभु लक्ष्मण और श्री सीता जी सहित वहाँ आए जहाँ अति ही सुन्दर आश्रम में मुनि सरभंग था।

महामुनि सरभंग ने जब प्रभु को आते देखा तो प्रभु के खिले हुए कमल के समान सुन्दर रूप को देखकर मुनि के नेत्र रूपी भौंरे रूपामृत का पान करने लगे। धन्य है सरभंग के जन्म को।

मुनि सरभंग बोलेहे कृपासागर आनंदकंद भगवान आप शंकर जी के मन रूपी मानसरोवर में रहने वाले हंस हो। जब मैं विरंचि के लोक को जा रहा था तब मैंने सुना कि वन में राम आएंगे, तो तभी से मैं दिन रात आपके आने की बाट जोहता रहा। अब प्रभु को देखकर मेरी छाती ठंडी हो गई। हे विभु! आप मुझ दीन के लिये तब तक मेरे सम्मुख रहिये जब तक देह त्यागकर मैं आपसे न मिल जाऊं।

ऐसा कहकर मुनि सरभंग जी योग की ब्रह्मरूपी अग्नि में समा गये। जब प्रभु की कृपा से बैकुण्ड को प्राप्त हो गये तब प्रभु आगे चले। मुनियों के अनेकों दल प्रभु के साथ चले, रास्ते में हड्डियों का ढेर देख प्रभु ने पूछा तो मुनियों ने कहा कि राक्षसों ने मुनियों को मारा है, ये उनकी हड्डियां हैं। यह सुनकर प्रभु के नेत्रों में जल भर आया।

प्रभु की शपथ एवं सुतीक्षण का प्रेम

प्रभु ने भुजा उठाकर प्रतिज्ञा की कि मैं पृथ्वी को निशाचरों से रहित कर दूंगा। प्रभु ने सब मुनियों के आश्रम में जा-जाकर सुख दिया और सबको कृतार्थ किया। प्रभु के दर्शन पाकर मुनियों के समूह दर्शन करके प्रभुकी स्तुति करते हैं कि हे शरणागतों के रक्षक! हे दया के सागर आपकी जय हो! जय हो! आपकी जय हो! मुनि अगस्त्य के एक बुद्धिमान शिष्य मुनि सुतीक्षण थे, उनकी प्रभु में बहुत ही प्रीति थी और मन कर्म वचन से प्रभु के चरणों के सेवक थे। वे स्वप्न में भी दूसरे देवताओं का भरोसा नहीं रखते थे। सुतीक्षण ने जैसे ही प्रभु के आगमन का संदेश सुना तो मन में विचार करते हुए उठकर दौड़े।

हे विधाता! क्या दीनबंधु राम मुझ पर कृपा करेंगे? क्या मुझे अपना सेवक जान कर लक्ष्मण सहित दर्शन देकर मिलेंगे? मुझे न तो संतो का संग ही मिलता है और

न योग साधन जप यज्ञ ही होता है तथा न चरण कमलों में दृढ़ प्रेम ही है। हाँ दया सागर आनन्दकंद प्रभु का एक यह स्वभाव है कि जिसे अपने प्रभु के सिवाय किसी दूसरे का भरोसा नहीं है उसे प्यार कर अपना लेते हैं।

हे पार्वती! ऐसे परम प्रभु विभु! जो सभी अवगुणों के घर इस कठिन कलिकाल में जहाँ न धर्म है, न ज्ञान है, न योगसाधन ही है और प्रभु आनन्दकंद भगवान की भाँति तप भी कोई नहीं कर पाता है फिर भी उसे अपना सेवक जानकर अपना लेते हैं। ऐसे प्रभु को जो भजते हैं वे चतुर हैं।

हे पार्वती! प्रभु के प्रेम में परिपूर्ण निमग्न ज्ञानी मुनि सुतीक्षण की दशा का वर्णन कैसे किया जाय? उसे दिशा और मार्ग कुछ भी नहीं सूझ रहा है, मैं कौन हूँ? कहां जा रहा हूँ यह भी नहीं समझ रहा है। वह कभी तो पीछे फिर कर दौड़ने लगता है, कभी नाचने लगता है और कभी प्रभु के गुण गाने लगता है। आज मेरे नेत्र सफल होंगे, प्रभु के उस भवसागर पार उतारने वाले रूप को देखकर जिनके चरण कमलों का ध्यान कर पार उतरते हैं। ऐसा कहकर ध्यान में मस्त हो गया।

सुतीक्षण, प्रभु की भक्ति पाकर प्रेम में मस्त हो गया तब प्रभु वृक्ष की आड़ में छिपकर देखने लगे। प्रेम देखकर भव बंधन से मुक्त करने वाले विभु उसके हृदय में प्रगट हो गये। हृदयाकाश में दर्शन करके मुनि का तन ऐसे पुलकायमान हो गया जैसे कटहल का फल। मुनि की ध्यान में स्थिरता देखकर प्रभु निकट ही आ गए और उसकी दशा देखकर मन में अति प्रसन्न हुए।

सेवकों के सब दुःख एवं दरिद्रता नष्ट करने वाले सहज शील और कोमल स्वभाव के प्रभु मुनि के पास आकर बोलेउठो! हे मेरे प्राणों के समान प्यारे द्विज, तीक्ष्ण बुद्धि वाले सुतीक्षण, उठो!

राम ने मुनि को बहुत भांति से जगाया परन्तु उसे ध्यान में प्रगट होने वाले विभु के दर्शनों का आनंद मिल रहा था। जब राम ने अपने विभु स्वरूप को छिपाया और चतुर्भुज विष्णु रूप दिखाया तो वह ऐसे व्याकुल हो उठा जैसे मणीहीन सर्प। तब अपने आगे परमप्रभु को राम सीता और लक्ष्मण के रूप में देखकर प्रेम में मग्न भाग्यशाली सुतीक्षण डण्डे की भाँति गिरा और प्रभु के चरण पकड़े कहीं चले न जायें। तब प्रभु ने अपनी विशाल भुजाओं से पकड़कर उसे उठाया और बड़े प्यार से अपनी छाती से लगाया। मुनि से मिलते समय प्रभु ऐसे शोभायमान थे मानों सोने के वृक्ष से ताम्रवृक्ष लिपट कर मिल रहा हो। प्रभु के बदन को देखकर मुनि खड़ा का खड़ा ही रह गया, जैसे कोई चित्र लिखकर बनाया हो।

तब हृदय में धीरज धारण करके सुतीक्षण बार-बार चरणों में प्रणाम करके प्रभु को आश्रम में लाया और भाँति-भाँति से पूजा की।

महामुनि सुतीक्षण ने विचार कर कहा कि हे प्रभु! मेरी विनय सुनिएमैं आपकी स्तुति किस प्रकार करूं! आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि बहुत छोटी है, जैसे सूर्य के सामने जुगनु का प्रकाश। हे प्रभु! आप अजन्मा, व्यापक, अविनाशी और सबके हृदय में निवास करते हैं किंतु मेरे हृदय से ऐसा अभिमान भूलकर भी न आ जाय किहंस वंश के सूर्य, रघुकुल के पति मेरे पति हैं और मैं उनका दास हूँ।

मुनि के वचन सुनकर राम अति प्रसन्न हुए और हर्षित होकर मुनि को अपने हृदय से लगाकर बोलेहे मुनि! मुझे अतिशय परम प्रसन्न जानकर जो तुम मांगोगे मैं वही तुम्हें दूँगा। सुतीक्षण बोलाहे प्रभु! दास के कल्याण के लिए जो आपको अच्छा लगे वही वर दीजिए! प्रभु ने कहासुतीक्षण! तुम्हारी भक्ति अखण्ड हो, विज्ञान में प्रेम हो और सकल गुणों से निपुण, ज्ञान के भण्डार हो।

मुनि अगस्त्य मिलन, पंचवटी निवास

प्रभु का आना सुनकर मुनि अगस्त्य जी तुरंत उठकर दौड़े और लक्ष्मीपति आनंदकंद भगवान विष्णु को देखकर उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आए। आश्रम में जितने भी मुनि थे सब प्रभु के दर्शन करके अति प्रसन्न हुए। मुनि अगस्त्य जी ने प्रभु को आदर सहित आश्रम में लाकर सुन्दर आसन पर बैठाया और कुशल पूछकर बहुत प्रकार से पूजा की। हे प्रभु! आज मेरे समान भग्यशाली और दूसरा कोई नहीं है।

हे कृपा सिंधु प्रभु! मैं आपसे यह वर मांगता हूँआप सीता और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास करें। मुझे अविरल भक्ति दें, मेरा संतों के संग में प्रेम हो और आपके चरण कमलों की अटल भक्ति का प्रेम हो। यद्यपि ब्रह्म अखण्ड और अनन्त है, उसका कल्पान्त में भी अंत नहीं है, वह विश्व व्यापक विभु अनुभव गम्य है, ध्यान में जाना जाता है जिसे संतजन भजते हैं। उस विभु स्वरूप को मैं जानता हूँ, वर्णन करता हूँ किन्तु फिर भी आपके सगुण रूप में प्रेम और विश्वास करता हूँ।

प्रभु मुनि समूह में सबके सामने बैठे हैं, पूर्ण चंद्रमा के समान चमकते तेजयुक्त बदन को देखकर मुनिगण चकोर की भाँति लुभा रहे हैं।

तब प्रभु ने अगस्त्य जी से कहाहे मुनिराज! आपसे मेरा कुछ भी छिपाव नहीं है, आप जानते हो कि मैं किस कारण से यहाँ आया हूँ। हे तात! इसलिए आपसे कुछ समझाकर नहीं कहा, अब मुझे वह मंत्र दीजिए कि जिससे मैं मुनि द्रोहियों को मारने में सफल हो सकूं। प्रभु के विनम्र वचन सुनकर मुनि बोलेहे प्रभु! आप सदैव अपने दासों को बड़ाई देते हो इसलिये ही आपने मुझसे विचार पूछा है।

हे प्रभु! एक परम मनोहर, अति सुंदर स्थान है जिसका नाम पंचवटी आश्रम है। हे रघुकुल के स्वामी- सूर्यवंश के रक्षक प्रभु! आप वहाँ निवास कीजिए और सब मुनियों पर दया कीजिए। मुनि का आदेश पाकर राम चले और तुरंत ही पंचवटी के निकट पहुँच गए। जब से प्रभु से उस पंचवटी आश्रम में निवास किया तब से मुनि सुखी हो गए और भय मिट गया।

अगस्त्य मुनि द्वारा भगवान श्रीराम, माता सीता जी एवं लक्ष्मण जी का स्वागत

वहाँ सखा गिद्धराज जटायु से भेंट हुई, पुरानी प्रीति को बहुत प्रकार से दृढ़ करके प्रभु गोदावरी नदी के पास बंगला बनाकर रहे।

राम-लक्ष्मण-संवाद

एक बार प्रभु सुखपूर्वक विराजमान थे, लक्ष्मण ने छलहीन वचन कहेहे नाथ! आप देव, मनुष्य, मुनि और विश्व के परमेश्वर हो! मैं अपना स्वामी जानकर पूछता हूँ। हे गुरुदेव! मुझे समझाकर वही कहिए जिससे अवगुण तजकर आपके चरणों की सेवा करता रहूँ। हे प्रभु! ज्ञान-वैराग्य, माया और भक्ति के स्वरूप का वर्णन कीजिए। जिससे आप भक्तों पर दया करते हों।

हे प्रभु! ईश्वर और जीव का जो भेद है वह भी समझाकर कहिए जिससे शोक, मोह, भ्रम सब दूर हो जाए और आपके चरणों में प्रेम हो।

हे तात! मैं थोड़े ही में समझाकर कहता हूँमन, बुद्धि और चित लगाकर सुनो! मैं और मेरा तूँ और तेरा यह माया है, जिसके वश में होकर मानव मानवता को छोड़ बैठा है। इंद्रियों के विषयों में जहाँ तक भी मन जाता है उसे तुम माया जानो। और भाई! उस माया का जो भेद है वह भी सुनो! एक तो अविद्या-अज्ञान है और दूसरी विद्या-ज्ञान है।

एक माया तो अज्ञानी है जो अति दुष्ट है, दुःखों की स्वरूप है जिसके वश हुआ प्राणी भव बंधन के कुएँ में गिर कर महान दुःख भोगता है। दूसरी माया ज्ञानी है जिसके वश में गुण हैं जो नाम के ज्ञान से विश्व की रचना करती है किंतु प्रभु के बल से अपने बल से नहीं। ज्ञान वह है जिसमें किसी प्रकार का भी मान और अभिमान न हो और सबके हृदय में ब्रह्म के स्वरूप को देखता है। हे तात! उसे परम वैरागी-कहना चाहिए जिसने सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग दिया हो।

जो माया के स्वरूपों को, अपने रूप को और ईश्वर के स्वरूप को नहीं जानता वह जीव है। जो जीव को बंधन और मुक्ति का दाता है और जो सर्वोत्तम है, जो माया को रचने की प्रेरणा देता है, वह माया पति परमेश्वर ही सबका स्वामी है। वह सभी ईश्वरों का ईश्वर है और सभी देवी-देवताओं का स्वामी है।

भगवान श्रीराम द्वारा श्री लक्ष्मण जी को ज्ञान का उपदेश

मानव मात्र का धर्म है ईश्वर को हृदय में जानकर प्राप्त करना और उसे पहचानकर सेवा करना। प्रभु की सेवा-भक्ति ही एक ऐसा कर्तव्य धर्म है जिससे प्रभु के चरण कमलों में प्रेम उत्पन्न होता है। प्रेम से ही मन प्रभु के ध्यान में लगता है जिसे योग कहते हैं और उस योग साधन से ही प्रभु के वास्तविक स्वरूप का यथा अर्थ ज्ञान होता है जो मोक्ष का दाता है। जैसा कि वेद में वर्णन किया है। किंतु हे भाई, लक्ष्मण! जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ वह भक्तों की सुख दाता मेरी निष्काम भक्ति है जो स्वतंत्र है और ज्ञान-विज्ञान भी उसी के अधीन है क्योंकि बिना सेवा भक्ति के काम, क्रोध, मद, लोभ और मोह ज्ञानियों के लिए भी बाधक बन जाते हैं। अतः हे तात! भक्ति ही सर्व सुखों की मूल एवं अनुपम है किंतु वह भक्ति तब मिलती है जब संत अनुकूल हों संत जन ही प्रभु की सेवा-भक्ति का शुभ अवसर प्रदान करते हैं। संत वही है जो ज्ञान देकर भगवान की भक्ति में लगावे और जो ज्ञान देकर भी माया की भक्ति में ही लगाते हैं वह असंत हैं जो प्रभु को छोड़कर माया के परिवार लोभ, मद, मोह, काम क्रोध आदि के बस में रहते हैं।

हे लक्ष्मण! अब मैं भक्ति के साधनों का वर्णन करता हूँ जिससे सुगमता पूर्वक प्राणी मुझे पा सके। पहले तो धर्म के अनुसार जो अपना-अपना कर्तव्य है उससे मेरे साधु जनों के चरणों में प्रेम रखेउनकी सेवा सत्कार करें जो ज्ञान के नियम हैं। इसका फल है विषयों से वैरागतब मेरे चरण कमलों में प्रेम उत्पन्न होता है। क्योंकि जिन्हें विषयों से प्रेम है वे प्रभु को भूलकर दूसरों से प्रेम करने लगते हैं। इसलिए संतों से मेरी कथा सुनने में प्रेम, मान मद को त्यागकर मेरी सेवा करना, गुण गाकर भजन अभ्यास करना, धर्म, नीति एवं संत जनों के अनुसार कर्तव्य में दृढ़ रहना, मुझसे भी अधिक संत का सत्कार करना आदि नवधाभक्ति में दृढ़ रहकर मेरी लीलाओं में प्रेम रखे।

इस प्रकार संतों के चरणों में प्रेम करता हुआ मन से कर्म से और वचन से तथा दृढ़ता पूर्वक नित्य नियम से इन माता-पिता बंधु, पति और देवताओं को मुझे ही जानकर मेरी ही दृढ़ता से सेवा करता हो। जो मेरे गुण गाता हो,

शरीर पुलकायमान होकर वाणी गदगद हो जाती हो और नेत्रों में प्रेम के आँसू बहने लगते हों तथा जिसकों काम आदि मद और दंभ न हो। हे तात! मैं सदैव उसी के वश में रहता हूँ।

जो वचन से मेरे ही गुण गाता हो, प्यारे मधुर वचनों द्वारा मेरी ही भक्ति का प्रचार करता हो, निष्काम भाव से मेरा ही भजन करता हो मेरे लिए ही कर्म करता हो और मन से सदैव मेरा ही चिंतन करता हो, मैं उसी के हृदय में विश्राम करता हूँ।

भक्ति योग के ऐसे सुंदर साधनों को सुनकर लक्ष्मण जी ने अति ही सुख पाया और सच्चिदानंद भगवान के श्री चरण कमलों में प्रणाम किया। इसी प्रकार ज्ञान, भक्ति गुण और नीति की बातें कहते सुनते कुछ दिन बीत गए।

आकाश मण्डल धूरि से छाया देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा कि जानकी जी को लेकर पहाड़ी की कंदरा में चले जाओ। भयंकर निशाचर आ रहे हैं। यह सुनकर लक्ष्मण जी हाथ में धनुष बाण लिए श्री सीता जी को साथ लेकर चले। राम को देखकर निशाचरों का दल चढ़ आया तो राम ने हँसकर कठिन धनुष बाण चढ़ाया।

प्रभु को देखकर निशाचर चकित हो वाण चला न सके तब खर दूषण ने मंत्रियों को बुलाकर कहायह राजकुमार मनुष्यों के भूषण हैं। हमने आज तक जितने भी नाग, असुर, देव, मुनि नर देखे हैं उनमें कितनों को मार दिया पर हे भाइयों! हमने अपने जीवन में ऐसी सुंदरता नहीं देखी।

सेनापति, विरोधी त्रिसिरा ने कहाये भले ही मुनियों के पालक और दानवों के कुल के घातक हैं पर जिनमें इनसे लड़ने की शक्ति न हो वे लौट जाऐं उन्हें मैं नहीं मारूँगा। किंतु रिपु पर कृपा करना कायरता है। त्रिसिरा की यह बात दूतों से सुनकर खर-दूषण को दुःख हुआ और छाती जलने लगी।

देव मुनि एवं भक्तगण डरते हैं कि चौदह सहस्त्रो बड़े-बड़े योद्धा हैं और राम अकेले हैं। परंतु माया ने ऐसा जाल बिछाया कि योद्धा पृथ्वी पर गिरते हैं, उठकर लड़ते हैं और फिर मर जाते हैं। देवता और मुनियों को भयभीत देखकर मायापति प्रभु ने यह बहुत बड़ा कौतुक किया कि शत्रुदल के लोग एक दूसरे को राम कहकर आपस में लड़-लड़ कर मर गए।

वे राम-राम कहकर नाम का स्मरण करके निर्वाण पद पा रहे हैं इस प्रकार ऐसा उपाय किया कि केवल उनकी मुसकराहट को देखकर ही सब ने प्रभु का नाम स्मरण करके देह त्याग दी।

जब प्रभु ने युद्ध में शत्रुओं को जीत लिया, तो देव, मुनि, नर सब के सब भयभीत हो गए। तब लक्ष्मण जी सीता जी को कंदरा से ले आए। प्रभु के चरण कमलों में प्रणाम करते ही लक्ष्मण को प्रभु ने अपनी छाती से लगा लिया। राम की सुंदर देह को देख-देखकर श्री सीता जी प्रेम में विभोर हो रही हैं उनके नेत्र दर्शनों से नहीं अघा रहे हैं। पंचवटी में रहकर राम और श्री सीता जी मुनियों को सुख देने वाले ऐसे अनेकों चरित्र करते हैं।

सूर्पणखा की रावण को चेतावनी

जब खर-दूषण ने सुना और देखा कि त्रिशिरा सबको मार रहा है तो उन्हें अति दुःख हुआ। उन्हें दुखित देखकर सूर्पणखा ने रावण को पुकारा और क्रोधित होकर बोलीअरे रावण! तुझे कुछ चेत भी है? तेरे देश में क्या हो रहा है? तूने देश की और कोष की सुध ही भुला दी। देख! तुझे जिस विद्या का अभिमान है कि मैं चार वेद छः शास्त्र पढ़कर दशकंठ कहलाता हूँ, देवताओं के स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त करके तीनों लोकों का राजा बन गया हूँ और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमर बन गया हूँ यह सब तेरा झूठा अहंकार है। नीति कहती है कि नीति के बिना राज्य धन के बिना धर्म और भगवान विष्णु के अर्पण किये बिना सभी सत्कर्म व्यर्थ हैं। बिना विवेक के विद्या पढ़ने का, सत्य कर्म करने का, राज्य-धन पाने का फल केवल परिश्रम ही हाथ लगता है।

सूर्पणखा की रावण को चेतावनी

संगत से यती, कुमंत्रणा से राज्य, मान से ज्ञान, मद्यपान से लाज और बिना नम्र भाव के प्रीति नष्ट हो जाती है ऐसी नीति मैंने सुनी है। दो पुरुष सिंह वन में खेलने आए हैं। वे दशरथ के पुत्र हैं उनका नाम शोभा का धाम 'राम' ऐसा है उनके साथ एक अति सुंदर स्त्री है।

वह अति ही सुकुमारी और प्यारी है जिसकी तुलना का संसार में कोई भी नहीं है। मैंने विचार कर देखा है। वह जहाँ भी रहे उसके समान जगत में दूसरा कोई नहीं हैं।

वह रूप की दाता, रूप की भंडार है, विधाता ने उसे भाँति-भाँति से संवार कर रचा है और इतना सुंदर बनाया है जो सैंकड़ों रती भी उसके बलिहारी जाती हैं। अरे रावण! सुन! जिसकी ऐसी स्त्री हो उसके वश में सभी जीवन मुक्तों के लोक हैं। मेरी समझ में ऐसा आता है कि वे इस पृथ्वी को निशाचरों से रहित कर देंगे। हे अहंकारी रावण! जिनकी भुजाओं का बल पाकर मुनिजन निर्भय हो गए हैं।

वे देखने में तो बालक लगते हैं पर हैं काल के समान बलवान। वे बड़े धीर, वीर, धनुर्धर और अनेकों गुणों से युक्त सर्वगुण निधान हैं। उन दोनों भाइयों का बल तोला नहीं जा सकता, वे बड़े प्रतापी हैं और दुष्ट निशाचरों के वध करने में प्रयत्नशील हैं। वे देव, मुनियों के सुखदाता हैं। हे रावण! तुम उन्हें जब देखोगे तो देखते ही उनके वश में हो जाओगे। जब रावण ने सुना कि खर-दूषण त्रिशिरा के घाती हैं तो वह बहुत दुःखी हुआ और उसका बदन जलने लगा कि अब मैं क्या करूँ।

बल पूर्वक धीरज धरकर सूर्पणखा को बहुत प्रकार से समझाया और चिंता करते हुए घर गया, उसे रात भर नींद नहीं आई।

रावण के विचार-मारीच संवाद

रावण विचार करने लगा कि देवता, मनुष्य, निशाचर, नाग और पक्षियों में मेरे समान अनुभवी कोई नहीं है। खर-दूषण ये भी मेरे समान ही बलवान थे उन्हें भगवान के सिवाय कोई नहीं जीत सकता। यदि विष्णु ने अपने भक्तों को सुख देने और पृथ्वी का भार उतारने के लिए राम का अवतार लिया है तो मैं उनसे हठपूर्वक बैर करूँगा और उनके हाथों प्राण त्यागकर भवसागर से तर जाऊँगा।

निशाचरों का राजा होने के कारण इस तामसिक देह से मैं राम का भजन-भक्ति नहीं कर सकता। अब तो मेरा मन, कर्म और वचन से एक यही विचार दृढ़ है कि युद्ध हो। तब रावण ने एक युक्ति बनाई। हे पार्वती! वह सुंदर सुहावनी कथा मन लगाकर सुनो। रावण अकेला ही विमान पर चढ़कर वहाँ गया जहाँ समुद्र के किनारे महाऋषि मारीच ऋषियों के साथ रहता था। स्वार्थ में लीन अहंकारी रावण ने जाकर मारीच को अपना मस्तक नवाया।

मारीच ने आदर सहित पूजा-सत्कार कर के पूछा कि हे तात! क्या कारण है जो व्याकुल होकर अति शीघ्र अकेले ही यहाँ आए हो? ॥दो॰-२२८॥

अभागे रावण ने अभिमान सहित सारी बातें मारीच के आगे कहीं और बोला कि तुम छल करने वाला कपट मृग बनो! जिससे मैं उस राजा की नारी को ले आऊँ। तब मारीच ने कहा हे रावण! सुनो! वे विश्व के ईश्वर के रूप में हरि हैं, उनसे वैर मत करो! उनके मारे मरो और जिआने पर जीवो, जैसा वे चाहें वैसा करो। वे जीवन और मुक्ति के दाता हैं।

ये राजकुमार मुनि विश्वामित्र के ज्ञान-यज्ञ की रक्षा करने गए थे तो वहाँ मुझे बिना फरका बाण मारा था जिससे मैं यहाँ सौ योजन क्षण भर में आ गया। तब से मेरी दशा भृंगि द्वारा पकड़े गए कीड़े की भाँति हो गई है। अब मैं जहाँ-तहाँ उन दोनों भाइयों को ही देखा करता हूँ। अतः उनसे वैर करना अच्छा नहीं है। हे तात! यदि वे मनुष्य हैं तब भी बड़े वीर है उनसे बैर करने में पूरा नहीं पड़ेगा। विचार दोनों के एक होते हुए भी मिल नहीं रहे हैं क्योंकि यह बड़े गुप्त रहस्य की बात है खोले नहीं बनता।

जिसने ताड़िका, सुबाहु को मारकर शिव जी के मोह दण्ड को तोड़ दिया और खरदूषण तथा त्रिसिरा का वध किया। हे रावण! विचार कर देख, ऐसे महान वीर पुरुष भी क्या मनुष्य हैं? ॥दो॰-२२६॥

अतः हे रावण! अपने कुल की कुशल विचार कर घर को चलो। ऐसा सुनते ही रावण क्रोधाग्नि में जल उठा और कटुवचन बोलाअरे मूर्ख! तू गुरु की भाँति मुझे ज्ञान देने लगा है? बता तो सही मेरे समान संसार में कौन योद्धा है। हे पार्वती! दुष्टों की प्रिय वाणी भी भयानक होती है, और संतों की भयानक वाणी हितकर होती हैं जिस प्रकार बिना समय के मौले हुए पुष्प। मारीच ने हृदय में विचार किया कि इन नौ व्यक्तियों से विरोध करने में भलाई नहीं हैशस्त्र धारी से, भेदी से, स्वामी से, मूर्ख से, धनी से, वैद्य से ग्वाल-बाल एवं रसोइए से।

दोनों ओर से अपनी मौत देखकर मारीच ने प्रभु की शरण में जाना ही भला समझा। उसने सोचा कि यह अभागा उत्तर देते ही मुझे मारेगा, ऐसी ही दशा में क्यों न प्रभु की शरण में जाकर उनके वाण से मरूँ। हृदय में यह विचार कर मारीच रावण के साथ चला। उसके हृदय में प्रभु के चरणों का अतिशय प्रेम था, हृदय में हर्ष था कि अपने प्रभु को आज नयन भर देखूँगा।

आनंदकंद प्रभु को धनुष बाण लिए जब मैं अपने पीछे आते देखूँगा तो बार-बार पीछे फिर कर दर्शन करूँगा। उस समय मेरे समान भाग्यशाली कौन होगा? ॥दो२३०॥

मुनियों के सुख दाता राम-सीता और लक्ष्मण सहित जिस वन में निवास करते हैं उसी वन के निकट रावण गया तब मारीच कपट का मृग बना। प्रभु ने लक्ष्मण जी को समझाकर कहा कि हे भाई! बहुत से निशाचर वन में फिर रहे हैं, तुम सीता जी की समय विचार करके बुद्धि विवेक और बल से रखवाली करो।

प्रभु को देखकर वह मृग भाग चला तब राम धनुष बाण लेकर उसके पीछे दौड़े। तब प्रभु ने ताक कर कठिन बाण मारा जिससे वह कपटी मृग वेष धारी मारीच घोर पुकार करके पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसने मरते समय पहले तो हा लक्ष्मण कहकर
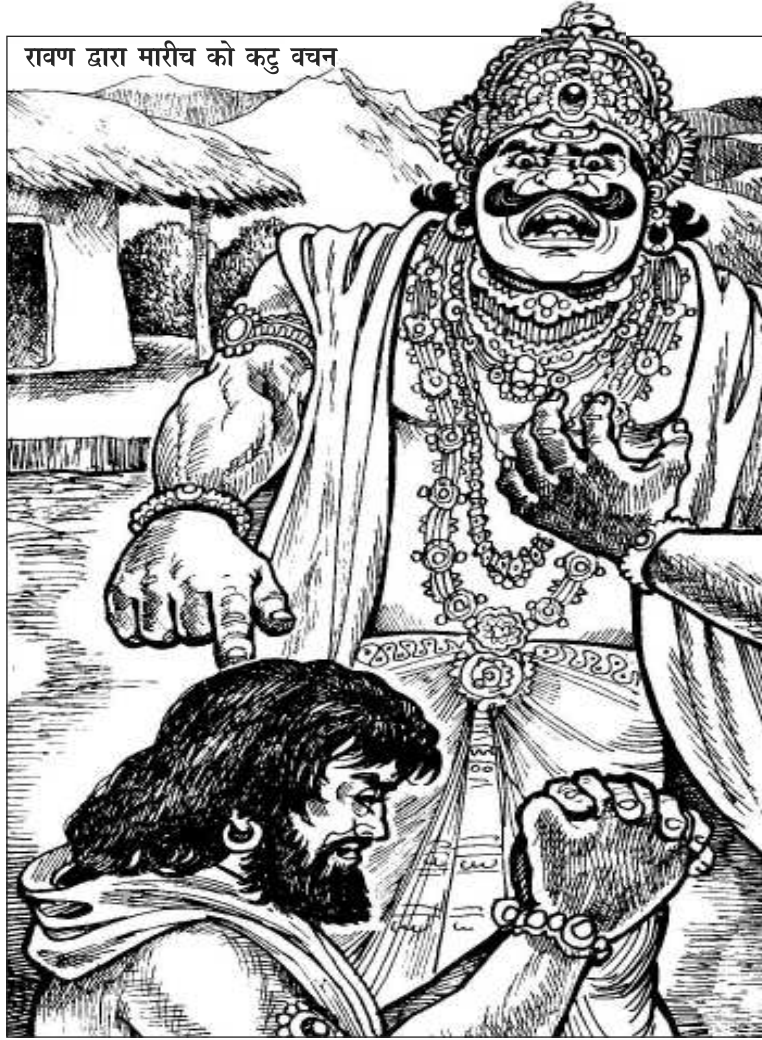
मेरे समान संसार में कौन योद्धा है?'' रावण क्रोधग्नि में जल उठा -''मूर्ख! मुझे उपदेश देता है?

लक्ष्मण का नाम पुकारा और अंत समय प्रभु के पावन नाम का मन में सुमिरण करके देह त्याग दी। प्रभु ने उसके हृदय का प्रेम देखकर जो गति मुनियों को भी दुर्लभ है वही गति मारीच को दे दी।

प्रभु की इस अद्भुत लीला को देखकर देवगण बहुत से पुष्प बरसा रहे हैं। और प्रभु के सुंदर यश गा रहे हैं। आनंदकंद भगवान ने असुर भक्तों को अपना परम धाम दिया।

लक्ष्मण की रेखा एवं सीता हरण

सीता जी ने जब आरत वाणी सुनी तो भयभीत होकर लक्ष्मण जी से कहा कि तुम शीघ्र जाओ! तुम्हारे भ्राता पर संकट पड़ा है। तब लक्ष्मण जी ने अति नम्रता से कहाहे माता! जिनकी एक मात्र भृकुटी से ही सृष्टि का नाश हो जाता है उन्हें स्वप्न में भी कभी क्या संकट पड़ सकता है? प्रभु मुझे रखवाली के लिए छोड़े गए हैं। अब यदि मैं जाता हूँ तो मेरे हृदय में संतोष नहीं होगा।

ऐसा हृदय में जानकर हे माता! मेरी विनय सुनो! प्रभु जब पूछेंगे तो मैं क्या कहूँगा।? जब श्री सीता जी ने लक्ष्मण से मार्मिक वचन बोले तो प्रभु की प्रेरणा से लक्ष्मण जी की मति स्थिर न रही। लक्ष्मण जी चारों ओर से रेखा खींचकर और बार-बार चरणों में सिर नवाकर चले। जाते समय सीता जी को पीछे फिर फिर कर ऐसे देखते हैं जैसे अपनी माँ को छोड़कर बछड़ा देखता है।

लक्ष्मण जी एक तो राम के डर से डर रहे हैं दूसरे सीता जी अकेली हैं। उस समय लक्ष्मण जी चिंता से उदास होकर इस तरह सूख रहे थे कि मानों अग्नि से बेल जलकर सूख जाती है।

जब रावण ने देखा कि सीता जी आश्रम में अकेली हैं तो साधु का वेष बनाकर निकट आया। अपनी चतुराई से रावण ने भाँति-भाँति से छल करके भिक्षा माँगी कि माँ भिक्षा दे। तब श्री सीता जी अतिथि जानकर कंद मूल फल देने चलीं। किंतु उसने फिर भी छल किया और कहा कि माता मेरा यह नियम है कि मैं बंधी भिक्षा नहीं लेता हूँ।

विधाता की विपरीत गति और समय की कठिनाई को देख सीता जी रेखा को लांघ कर बाहर आ गईं। रावण ने कथाएँ सुनाई और सुनाते-सुनाते विमान में जा बैठा और उड़ा तो सीता जी ने कहा कि अरे यती! तूँ गोस्वामी होकर बोल तो साधु की भाँति रहा है और अब मुझे कहाँ ले जा रहा है? सीता जी के वचन सुनकर रावण लजाया और मन में श्री सीता जी के चरणों की वंदना करके प्रसन्न हुआ।

सीता जी को रथ में बैठाकर लज्जित हो दिखावटी क्रोध में भर गया और जैसी ही आकाश मार्ग से चला तो भय के कारण विमान चलाया नहीं गया।

जटायु को आता देख रावण सोचने लगा कि यह बूढ़ा जटायु मेरी भुजाओं के वल को नहीं जानता और तपस्वियों की सहायता के लिये आ रहा है। यदि यह मुझसे लड़ेगा तो मैं इसे मार दूंगा फिर यह जिंदा आ नहीं जाएगा।

रावण को जाते देख जटायु क्रोध करके दौड़ा ओर बोलाअरे रावण! तूँ मेरी बात सुन! जानकी जी को छोड़कर तूँ कुशलपूर्वक घर को जा नहीं तो ऐसा युद्ध होगा कि राम की क्रोधाग्नि में तेरा सारा कुल भस्म हो जाएगा। जब रावण ने उत्तर नहीं दिया तब गिद्धराज जटायु क्रोधित होकर दौड़ा।

जटायु ने रावण की जटा पकड़कर उसे रथ से नीचे गिरा दिया और सीता जी को रखकर फिर वापस गया। रावण ने उठकर फिर धनुष बाण संभाला तब गिद्धराज ने आकर उसके धनुष बाण काट दिये। जब रावण ने बहुत युद्ध किया तो वृद्ध होने के कारण जटायु थक गया। जटायु ने मन में अतिशय सुख माना कि मेरे प्राण प्रभु के काम में लग गए।

जिस रावण ने सिद्ध, मुनि और देवताओं को अपने वश में कर लिया, उसी रावण से जटायु ने महान युद्ध किया। ऐसे धीर, बीर, गृद्धराज को धन्य है।

तब फिर सीता जी को विमान में बिठाकर भयभीत हुआ रावण उतावला होकर चला। आकाश में विलाप करती हुई सीता जी इस प्रकार जा रही हैं जैसे व्याध के

वश में होकर मृगी भयभीत होती है। जब सीता जी ने पर्वत पर बैठे वानरों को देखा तो प्रभु का नाम कहकर वस्त्र गिरा दिया। इस प्रकार सीता जी को रावण ले गया और अशोक वाटिका में जाकर रखा।

जिस प्रकार भगवान राम कपटी मृग के पीछे दौड़े हुए गए थे वही छवि अपने हृदय में रखकर सीता जी हरि नाम का सुमिरण करने लगीं।

श्री सीता जी ने प्रभु को जैसा छोड़ा था वही रूप हृदय में धारण करना स्वाभाविक ही था उस समय की याद करते हुए श्री सीता जी हृदयस्थिति नाम का सुमिरण करके एवं कंद मूल फल खाकर सतरूपता की भाँति समय बिताने लगीं।

लक्ष्मण को आते देखकर राम ने दिखावटी चिंता व्यक्त की कि निशाचरों का दल वन में फिर रहा है मेरे मन में ऐसा है कि सीता आश्रम में नहीं हैं। लक्ष्मण ने चरण कमलों को पकड़कर हाथ जोड़कर कहा कि हे नाथ! मेरा कोई दोष नहीं है। तब लक्ष्मण सहित प्रभु आश्रम में आए।

आश्रम को सीता जी के बिना सूना देख संसारिक दीन पुरुष की भाँति व्याकुल हो गए। हागुणों की खान सीता! रूप, शील, गुण और नियम व्रत में पवित्र सीता! तुम कहाँ हो! इस प्रकार सब सुखों के भण्डार राम जो पूरण काम हैं, कामनारहित और अविनाशी हैं वे मनुष्यों जैसे चरित्र कर रहे हैं। आगे चलकर देखा कि गिद्धराज जटायु पड़ा है और नाम का सुमिरण कर रहा है। उसका प्रभु के चरणों में प्रेम है। उनके आने की वाट देख रहा है।

कृपासिंधु भगवान राम ने उसके शिर पर अपना हाथ रखा तो सुंदरता के धाम प्रभु के मुख कमल को देखकर जटायु के तन की पीड़ा जाती रही, उसके सब दुःख मिट गए।

तब जटायु ने धीरज धारण करके कहाहे प्रभु! रावण ने मेरी यह गति की है, उसी दुष्ट ने श्री सीता जी का हरण किया है। हे प्रभु! आपके दर्शनों के लिए ही ये प्राण रखें हैं। हे नाथ! अब ये प्राण चलना चाहते हैं राम ने कहा हे तात! तुम शरीर रखो! तब मुस्कराकर बोला

हे प्रभु! वेद ऐसा कहते हैं कि जिस विभु का नाम मरते समय याद आ जाता है तो अधम भी मुक्त हो जाता है। वही प्रभु आज मेरे सामने हैं तो हे नाथ! मैं इस देह को किसलिए रखूँ? प्रभु ने कहा हे सखा! जिनके मन में दूसरों का हित रहता है उनके लिए जगत में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। हे तात! तुम देह त्यागकर मेरे परम धाम को जाओ। तुम्हें मैं क्या दूँ तुम तो पूरण काम हो, तुम निष्काम हो तुम्हारी कोई इच्छा ही नहीं है।

तब जटायु ने अविरल भक्ति जो सदा रहती है कभी भी नहीं भुलाती प्रभु से मांगकर विष्णु लोक को गया। तब प्रभु ने अपने परम सखा जटायु की क्रिया कर्म अपने हाथ से स्वयं करके सखा के प्रेम को निभाया।

नवधा भक्ति

हे पार्वती! सुनो! ऐसे प्रभु को छोड़कर जो विषयों के कारण दूसरों से प्रेम करते है वे बड़े ही अभागी हैं। सखा जटायु की क्रिया कर्म करके दोनों भाई सीता जी को खोजते हुए, वन की सुंदरता देखते हुए चले। रास्ते में आते हुए कबंध को मारा तब उसने शाप की बात कही कि किस प्रकार पम्पा सरोवर में कीड़े पड़े और बाली को शाप दिया तब ऋषियों की प्रार्थना पर मुनि मतंग ने कहा जब इस आश्रम में प्रभु का सच्चा भक्त होगा तब उसके चरण छूने से जल पवित्र होगा। सो हे प्रभु! अपने परम भक्त शबरी को दर्शन दीजिए। तब प्रभु उसे सद्गति देकर शबरी के आश्रम पर गए।

उस आश्रम में मुनि मतंग की बड़ी भारी महिमा है कि चर-अचर सभी जीव सुखी रहते हैं। कोई किसी से बैर नहीं करता। जिसका जिससे बैर होता है वह भी उससे प्रेम करता है। जब शबरी ने देखा कि राम आश्रम में आ रहे हैं तो मुनि मतंग के वचन याद करके हृदय में बड़ी प्रसन्न हुई। श्याम एवं गौर वर्ण के दोनों भाइयों के चरण कमलों में गिर पड़ी।

शबरी ने प्रभु को सुंदर रसयुक्त मीठे फल लाकर दिये। प्रभु ने स्वाद वर्णन करते हुए खाए। जिनकी चर्चा है कि भिलनी के मीठे बेर।

शबरी प्रेम में ऐसी मग्न हो गई कि मुँह से वचन भी नहीं निकला और बार-बार चरणों में प्रणाम करने लगी। प्रभु को सुंदर आसन पर बैठाकर आदर सहित चरण धोकर चरणामृत लिया और हाथ जोड़कर प्रभु के आगे खड़ी रही। उसका प्रेम प्रभु को देखकर उमड़ आया और बोलीहे प्रभु! मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ। एक तो मैं स्त्री की जाति दूसरे मेरी बुद्धि नाटी है। आपके सामने मेरा मुँह भी नहीं खुलता।

भगवान राम कहते हैं कि हे शबरी! मेरी बात सुन! मैं तो एकमात्र भक्ति का नाता मानता हूँ। मनुष्य सेवा भक्ति के बिना कैसा दिखाई देता है जैसे बिना जल का बादल दीखता है। मैं तुझसे नवधा भक्ति कहता हूँ, तूँ सावधान होकर सुन और उन नवों साधनों को अपने हृदय में धारण कर। सर्व प्रथम-भक्ति है संतों का संग करना, दूसरेमेरी कथाओं में प्रेम का होना-प्रसंगों को ध्यान देकर सुनना।

तीसरी भक्तिमान अहंकार को त्यागकर गुरु के चरणों की सेवा करना और चौथेमेरे गुण-गणों को कपट तजकर गाना।

पाँचवाभजन जो ज्ञान का प्रकाश है उस मंत्र को दृढ़ विश्वास से जपे, जिससे हृदय में प्रकाश होता है। छठेइंद्रियों को विषयों से दमन करके शील स्वभाव से रहे और निरंतर सज्जनों के कर्मों में लगा रहे जो सेवा भक्ति कर्म सेवक का धर्म है। सातवेंसारे जगत में मुझे व्यापक देखे और उस व्यापक रूप से उसके ज्ञान कराने वाले संत को अधिक समझे। आठवेंजो प्राप्त हो उसी में संतोष करे अत्यधिक की आशा न रखे और स्वप्न में भी दूसरे के दोषों को न देखें।

नौवेंसरल स्वभाव से रहे, किसी से छल न करे, मेरे भरोसे रहकर हृदय में हर्ष या दीनता प्रगट न करे। इन नवों साधनों में से जिसके एक भी साधन हो- वह स्त्री हो या पुरुष, वह मुझे अति ही प्यारा है। हे शबरी! तुझमें तो भक्ति के सभी साधन दृढ़ हैं। जो गति योगियों को भी दुर्लभ है वह आज तुझे सुलभ है।

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानहुं एक भक्तिकर नाता।
भक्ति हीन नर सोहै कैसे। बिनुजल बादल देखिय जैसे।।

हे शबरी! मेरे दर्शनों का फल अति ही पवित्र और अनुपम है जिससे जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त होता है। शबरी ने विनय की हे प्रभु! आप पंपा सरोवर में जाइए जहाँ अनेकों मुनिवर रहते हैं उनके आश्रमों को सफल बनाइए। वहाँ आपकी अपने सखा सुग्रीव से भेंट होगी। शबरी ने बार-बार चरणों में सिर नवाकर प्रेम सहित सब कथाएँ सुनाईं। बाली को शाप की, सरोवर में कीड़े पड़ने की, सुग्रीव के सरोवर के ऊपर पहाड़ी में रहने की और हनुमान जी की सारी कथाएँ सुनाईं।

हे उमा! राम तीनों गुणों से परे सारे-चर अचर विश्व के स्वामी हैं, वे सबके अन्तरयामी हैं। हे उमा! मैं अपना अनुभव कहता हूँ, भगवान विष्णु का भजन ही सत्य है बाकी सब स्वप्न है। शबरी की विनय सुनकर प्रभु सरोवर के तट पर गए, वह पंपा नाम का सरोवर अति सुंदर और गंभीर है। उसके समीप मुनियों ने आश्रम बनाकर चारों ओर बागों में सुंदर वृक्ष लगाए हैं।

सुंदर पुष्पों एवं फलों के भार से भाँति-भाँति के वृक्ष इस प्रकार झुक रहे हैं जैसे उत्तम संपत्ति पाकर परोपकारी मनुष्य झुककर कहते हैं कि कृपया ग्रहण कीजिए। ।।दो२४२।।

नारद की विनय

प्रभु का आगमन सुनकर वहाँ सभी ऋषि-मुनि आए और प्रभु की स्तुति करके अपने-अपने आश्रम में चले गए। भिलनी के चरण स्पर्श से तालाब पवित्र होने पर अति सुंदर देखकर प्रभु ने स्नान किया और अति सुख पाया। सुंदर वृक्ष की छाया देखकर प्रभु लक्ष्मण सहित बैठ गए। वहाँ बैठकर प्रभु अति प्रसन्न हुए और लक्ष्मण को सुंदर कथा सुनाने लगे।

समय विचार कर नारद हाथ में वीणा लिए वहाँ गए जहाँ प्रभु सुख पूर्वक विराजमान थे। दण्डवत् प्रणाम करते देख नारद को प्रभु ने उठाकर बहुत देर तक हृदय से लगाया। नारद ने प्रेम सहित भाँति-भाँति से प्रभु के गुण गाने लगे तब प्रभु ने कुशल पूछ कर नारद को अपने पास बैठाया। तब लक्ष्मण ने आदर सहित प्रभु के चरण धोए और चरणामृत लिया।

प्रभु को प्रसन्न जान नारद ने विनय की और हाथ जोड़कर बोले हे परम उदार प्रभु! आप सुंदर अगम और सुगम वर के दाता हैं, मुझे यह वर दीजिए! मैं जो माँगता हूँ। यद्यपि आप अन्तरयामी सब कुछ जानते हैं। तब प्रभु ने कहाहे मुनि! तुम मेरे स्वभाव को जानते हो, मैं अपने भक्तों से कभी भी कुछ नहीं छिपाता। ऐसी कौन-सी वस्तु मुझे प्यारी है जो तुम नहीं माँग सकते?

हे नारद! ऐसा विश्वास तुम भूल कर भी मत छोड़ना कि भक्त के लिए कोई भी वस्तु अदेय नहीं है। तब नारद जी प्रसन्न होकर बोलेहे प्रभु! मेरी ढिठाई क्षमा करना । मैं ऐसा वर माँगता हूँ। यद्यपि प्रभु के अनेकों नाम हैं, वेद कहते हैं कि एक से एक बढ़कर हैं किंतु हे राम! पाप रूपी पक्षियों को जो पाप का पक्ष लेते हैं उन्हें वध करने वाला हंस सबसे अधिक है उस हंस नाम से प्रगट होइए।

हे प्रभु! आपकी भक्ति पूर्णिमा की रात्रि के समान है उसमें जो तारे हैं वे सब दूसरे नामों के समान हें और राम का नाम चंद्रमा के समान है। जिस नाम से भक्तों के हृदय में निवास करते हो वही हंस नाम से प्रगट होइए। राम ने कहा हे नारद ऐसा ही होगा। तब नारद ने अति प्रसन्न होकर आनंदकंद प्रभु के चरण कमलों में माथा नवाकर प्रणाम किया।

प्रभु को अति प्रसन्न जानकर नारद जी मीठी वाणी बोले हे नाथ! आपने ही अपनी माया को प्रेरणा दी और आपने ही हे प्रभु सुनो! मुझे मोहित भी किया था। हे मुनिराज! मैं क्रोधरहित होकर कहता हूँ सुनो! जो भक्त मुझे जगत में सभी के भरोंसों को छोड़कर भजते हैं, मैं सदा उनकी रखवाली करता हूँ, जैसे माता अपने बच्चे को रखती है।

किंतु जब वह बच्चा बड़ा हो जाता है तो माता पहले की भाँति प्यार नहीं करती। इसी तरह मेरे लिये भी ज्ञानी जवान बालक की भाँति है और जो दास मान रहित हैं वे छोटे से बालक की भाँति हैं। जिन्हें मेरा बल नहीं अपने ज्ञान का बल है उनके लिए

काम और क्रोध शत्रु हैं। यह विचार कर ज्ञानी बुद्धिमान भक्त भी मुझे भजते हैं वे बहुत बड़े ज्ञानी हो जाने पर भी मेरी सेवा-भक्ति को नहीं त्यागते।

वैसे तो काम, क्रोध, लोभ आदि मद ये सब ही प्रबल मोह की धार हैं किंतु इन सब में अति दारुण दुख की दाता माया रूपी स्त्री हैं माया से मोहित होकर ही मानव मानवता को छोड़ बैठता है।

हे तात! काम, क्रोध और लोभये तीनों दुष्ट बड़े ही प्रबल हैं। ये उन मुनियों के मन में भी उत्तेजना उत्पन्न कर देते हैं जो विज्ञान के भंडार हैं। कामना चाहे धन की हो, देह संबंधी, अन्न-वस्त्र, रूप-रंग, खान-पान, रहन-सहन, स्त्री, पुत्र, परिवार या मान-प्रतिष्ठा की हो सभी दुख दाई हैं। मनुष्य की कामना के विरुद्ध यदि कोई कितने ही भले की, ज्ञान की और ध्यान की भी बात क्यों न कहे उसे क्रोध उत्पन्न हो जाता है। अतः जीव का महान शत्रु काम ही है।

क्रोध से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मानव अंधा बनकर बिना विचार करे जो कुछ कार्य करता है अंत में पछताना पड़ता है।

लोभ सब पापों का मूल है। लोभ के कारण ही मानव-मानव का, अपने मानव धर्म का स्वजातीय कुटुंब परिवार का शत्रु बन जाता है। ये तीनों बड़े-बड़े ज्ञानी मुनियों के मन में भी क्षोभ उत्पन्न करते हैं। लोभ का बल इच्छा और दंभ है, काम का बल नारी है और क्रोध का बल कटु वचन हैं। ऐसा मुनि जन विचार कर कहते हैं। मिथ्या बोलना भी क्रोध बढ़ाता है।

सर्व अवगुणों का मूल और सभी प्रकार के दुख देने वाला मद, अहंकार और अभिमान है। अहंकार के कारण अभिमान बस मानव मद में आकर मतवाला हो जाता है फिर उसे चेत नहीं रहता कि मैं क्या कर रहा हूँ। हे मुनि! यह विचार कर मैंने इसलिए ही निवारण किया। मद ज्ञान का भी बुरा है। वह बड़े-बड़े ज्ञान में निपुण विज्ञानियों की बुद्धि में भी भ्रम उत्पन्न कर देता है फिर उसे भला-बुरा, अपना-पराया, धर्म-अधर्म नहीं सूझता।

संतों के लक्षण

हे पार्वती! प्रभु के सुहावने वचनों को सुन मुनि नारद जी का तन पुलकायमान हो गया और नेत्रों में प्रेम के आँसू भर आए। कहो! ऐसी सुंदर रीति किस प्रभु की है। जो सेवक पर ममता और इतना प्रेम रखता हो? जो ऐसे प्रभु को भ्रम त्यागकर नहीं भजते वे तो ज्ञान के कंगाल, मंद मति और भाग्यहीन हैं। नारद जी आदर सहित बोलेहे विज्ञान के विशेष ज्ञाता प्रभु! मेरी विनती सुनिए।

हे नाथ! संसार के दुखों को नष्ट करने वाले संतों के लक्षण कहिए! प्रभु बोलेहे मुनि सुनो! मैं संतों के उन गुणों को कहता हूँ जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ। परम विवेकी, इच्छा रहित, स्वभाव से मधुर भोजन, सत्य वक्ता, विज्ञानी योगी हो और सावधान हुआ मान देकर स्वयं मान रहित हो। ऐसा धीर बुद्धि एवं धर्म की गति में परम प्रवीण हो। जो गुणों के घर हैं, संसार के दुखों एवं संदेह से रहित हैं। जिनको मेरे चरणों के सिवाय न देह में और न घर में ही प्यार है। जो गुणों को सुनकर सकुचाते हैं, दूसरों के गुणों को सुनते ही अति प्रसन्न होते हैं। शीतल एवं समान भाव से रहकर कभी नीति नहीं त्यागते, जो सरल स्वभाव के सभी से प्रेम करते हैं। नाम का जप, सेवा-व्रत, संयम एवं नियम से मन को विषयों से दमन करके सद्गुरुदेव भगवान के, साधु-संतों के चरणों में प्रेम रखते हैं, जो श्रद्धावान है, क्षमा, मित्रता, दया करके प्रसन्न मन से मेरे चरणों में प्रेम करते है, माया रहित हैं।

विरति, विवेक, विनय, विज्ञान एवं वेद पुराणों का यथार्थ बोध हो। किसी से मान के कारण दंभ नहीं करते, कुमार्ग पर पाँव नहीं रखते। सदा मेरी लीलाओं को गाते, सुनते हैं, स्वार्थ रहित, पर हित करने में प्रयत्नशील हैं। हे मुनि सुनो! संतों के जितने गुण हैं, वेद शारदा भी नहीं कह सकते।

संतों के गुण शारदा, शेष नहीं गा सके सुनकर नारद प्रसन्न होकर प्रभु के चरणों में गिर पड़े। प्रभु ने संतों के गुण स्वयं कहे। नारद जी बार-बार चरणों में सिर नवाकर भगवान विष्णु के लोक को गए।

किष्किंधा काण्ड

राम की हनुमान जी से भेंट

भगवान राम आगे चले और ऋृषयमूक पर्वत पर पहुँचे। वहाँ मंत्री सहित सुग्रीव रहते थे। अनुपम शक्तिशाली दोनों वीरों को आते देख सुग्रीव ने भयभीत होकर हनुमान जी से कहाये दोनों पुरुष बल और रूप में निधान हैं। तब हनुमान जी अपने साधु वेष में वहाँ गए और सिर नवाकर इस प्रकार पूछने लगे।

हे वीर पुरुषों! सुंदर श्याम-गौर वदन के क्षत्रिय रूप में तुम कौन हो! जो वन में फिरते हो। कठिन भूमि पर कोमल चरणों से चलने वाले पदयात्री आपके बदन मनोहर और सुंदर हैं। आप इस कठिन वन की धूप और वायु को क्यों सहन कर रहे हैं? क्या तुम तीनों देवों में से कोई हो? या तपस्वी नर और नारायण हो? जो इतनी कठिन तपस्या कर रहे हो?

क्या आप दोनों भवसागर में डूबते हुए इस जगत को पार उतारने और पृथ्वी का भार उतारने के लिए प्रगट हुए हो? या इस अखिल विश्व के स्वामी हो? जो तुमने मनुष्य रूप में अवतार लिया है।

हनुमान जी के भाव भरे वचनों को सुनकर प्रभु बोलेकि हम कौशल प्रदेश के राजा और राजा दशरथ के पुत्र हैं। हम पिता की आज्ञा मानकर वन में आए हैं। राम और लक्ष्मण हमारा नाम है, हमारे साथ में सुकुमारी स्त्री थी जिसे निशाचर ने हर लिया। उसी को खोजते हुए हम वन मे फिर रहे हैं। हमने अपनी बात तो सुना दी अब हे विप्र! अपनी कथा समझाकर कहो!

अपने प्रभु को पहचानकर हनुमान जी चरणों में गिर पड़े। हे पार्वती! वह सुख जो हनुमान जी को हुआ वह कहा नहीं जाता। तब प्रभु ने हनुमान जी को उठाकर अपनी छाती से लगाया और अपने नेत्रों के पवित्र जल से सींचकर हृदय में शांति दी। प्रभु ने कहाहे हनुमान जी तुम अपने मन में ग्लानि मत मानना, तुम मुझे लक्ष्मण से भी दूने प्यारे हो! मुझे सभी समदर्शी कहते हैं परंतु फिर भी मुझे वह सेवक प्यारा है जिसे एकमात्र मेरा ही भरोसा है।

वही सेवक अनन्य है जिसके ऐसे विचार नहीं बदलते कि मैं सेवक हूँ और मेरा स्वामीविश्व को उत्पन्न करने वाला रूप की राशि विश्वपति है।

स्वामी को अपने अनुकूल देख हनुमान जी के हृदय में अति प्रसन्नता हुई और भय का दुख मिट गया। हे नाथ! इस पर्वत पर आपका दास सुग्रीव रहता है। वह सीता जी की खोज कराएगा और जहाँ-तहाँ करोड़ों वानरों को भेजेगा। राम को देख सुग्रीव ने अपना जन्म धन्य जाना।

सुग्रीव आदर सहित प्रभु के चरणों में प्रणाम करके मिला और श्रद्धा भक्ति से राम और लक्ष्मण को भेंट देकर आँखों में आँसू भरकर बोलाहे नाथ! जानकी जी अवश्य ही मिलेंगी। एक बार मैं यहाँ बैठकर मंत्रियों सहित विचार कर रहा था तो आकाश मार्ग से देखा कि कोई बिलखते हुए जा रही है।

राम-हा राम! कहते हुए मेरी ओर देखकर वस्त्र गिराया। प्रभु ने माँगा तो सुग्रीव ने तुरंत लाकर दिया। उस वस्त्र को हृदय से लगाकर प्रभु सोचने लगे तब सुग्रीव ने कहाहे नाथ! आप चिंता त्यागकर धीरज धारण करें। मैं सभी प्रकार से सेवा करूँगा, जैसे भी सीता जी आकर मिलेंगी।

सखा सुग्रीव के वचनों को सुनकर अनंत बलशाली कृपासिंधु प्रभु बड़े प्रसन्न हुए और बोलेहे सुग्रीव! क्या कारण है जो तुम वन में पर्वत पर रहते हो? मुझसे कहो!

हे नाथ! मैं और बालीहम दोनों भाइयों में ऐसी प्रीति थी कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। मयदानव का पुत्र मायावी हमारे नगर में रात्रि में आकर द्वार पर पुकारा। बाली उसकी पुकार को सहन न कर सका और दौड़ा। बाली को देखकर वह भागा तब मैं भी बाली के पीछे साथ-साथ गया।

वह निशाचर एक पर्वत की गुफा में अंदर चला गया तब बाली ने मुझे समझाकर कहा कि पंद्रह दिन तक मेरी बाट देखना, यदि तब तक न आऊँ तो मुझे मरा समझ लेना। हे प्रभु! मैं वहाँ एक महीना तक रहा जब गुफा से रक्त की धार निकली तो मैंने सोचा कि बाली को मारकर दैत्य अब आकर मुझे मारेगा अतः मैं गुफा पर पत्थर रखकर भाग आया।

हे प्रभु बाली अति ही महान बलवान है जिसे आज तक किसी ने भी नहीं जीता। मैंने सोचा कि जब निशाचर ने बाली को मार दिया तो अब वह आकर मुझे मारेगा

चिंता में अधीर होकर मैं घर गया और पूछने पर बाली जैसे मारा गया मैंने कहा। सुनकर पंपापुर के लोग उस समय बड़े व्याकुल हो गए तो मंत्रियों ने नगर को बिना राजा का देख मुझे बल पूर्वक राज्य दे दिया। जब बाली उसे मारकर घर आया तो मुझे देखकर उसके मन में भेद भाव उत्पन्न हो गया।

सुग्रीव कहता है हे प्रभु! सुनिए! बाली महान् बलवान और बड़ा रणधीर है उसके भय से कृपालु प्रभु! मैं सारे देशों में घूमता फिरा। सेवक के दुख सुनकर दीनों पर दया करने वाले प्रभु की दोनों भुजा फड़कने लगीं। प्रभु बोलेहे सखा! अब तुम मेरे बल पर चिंता छोड़ दो! मैं सभी तरह से तेरे काम आऊँगा और तेरी रक्षा करूँगा।

प्रभु को अपने ऊपर अति ही कृपालु जानकर कपिराज सुग्रीव के मन में अति हर्ष हुआ। वह प्रभु के चरण कमलों में बारंबार सिर नवाते हैं। प्रभु को सर्व समर्थ जानकर सुग्रीव को जब कर्ता और अकर्ता का ज्ञान हो गया तो वह बोलाहे नाथ! आपकी कृपा से अब मेरा मन चिंता रहित स्थिर हो गया है।

हे प्रभु! सुख संपत्ति और परिवार की बड़ाई इन सबको त्यागकर आपकी सेवा करूँगा। ये सब प्रभु की भक्ति के बाधक हैं ऐसा आपके चरण कमलों की आराध ाना करने वाले संत जन कहते हैं। शत्रु, मित्र, सुख, दुख जितने भी जगत में हैं सब माया से उत्पन्न होते हैं इनमें कभी परमार्थ नहीं हैं। बाली मेरा परम हितैषी है उसकी कृपा से आप मुझे मिले हो।

स्वप्न में यदि किसी से लड़ाई हो जाती है तो जागने पर बुद्धि से विचार कर मन में संकोच और पछतावा होता है। अतः हे प्रभु! ऐसी कृपा कीजिए जो सब त्यागकर दिनरात भजन करूँ। प्रभु हँसकर बोलेजो तुमने कहा वह सत्य है पर मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा।

सुग्रीव का बाली के प्रति प्रेम और वैराग्य देखकर उसे बाली के पास भेजा तब बाली के निकट जाकर सुग्रीव बोला कि मुझे प्रभु की शरणागति मिल गई है उन्हीं के बल पर मैं यहाँ आया हूँ। यह सुनते ही बाली क्रोधित होकर उसे मारने दौड़ा तो बाली की स्त्री तारा ने चरण पकड.कर समझाया कि हे पतिदेव! सुनो! सुग्रीव जिन्हें मिला है वे दोनों भाई अत्यंत बलवान और महान तेजस्वी हैं। सो तुम उन श्री रघुनाथ जी को अपने हृदय में लाकर क्रोध त्यागकर मेरा कहना मानो।

बाली ने कहाहे स्वभाव से ही डरपोक प्यारी सुनो! राम समदर्शी हैं, पहले तो उसका पक्ष नहीं लेंगे और यदि वे मुझे मार भी देंगे तब भी मैं सनाथ हो जाऊँगा।

ऐसा कहकर महा अभिमानी बाली सुग्रीव को तिनके के समान जानकर चला। बाली तेजी में आकर सुग्रीव से भिड़ा और बड़े जोर से घूँसा मारकर गरजा। तब सुग्रीव व्याकुल होकर भागा, उसे बाली का घूँसा बज्र के समान लगा। वह बोला हे कृपालु प्रभु! मैंने कहा था न कि यह मेरा भाई नहीं काल है।

प्रभु ने सुग्रीव के बदन पर हाथ फेरा तो उसकी सब पीड़ा मिट गई और देह बज्र के समान हो गई। तब सुग्रीव के गले में पुष्पों की माला पहना कर विशाल बल देकर भेजा। सुग्रीव से लड़ते ही बाली सिर के बल पृथ्वी पर पड़ा और सिर में लगने से विकल हो गया। बाली जब उठा तो प्रभु को आगे देखा। बाली ने बार-बार प्रभु के चरणों में चित लगाया और प्रभु को पहचानकर जीवन सफल माना।

बाली के हृदय में प्रेम है परंतु फिर भी मुख से कठोर वचन राम की ओर देखकर बोलामैं आपका शत्रु और यह सुग्रीव आपका प्यारा भक्त है? क्या कारण है जो इसे इतना बल देकर मुझे मारा है? मैंने आपका क्या बिगाड़ा है। तब प्रभु बोलेअरे मूढ़! तुझे बड़ा अभिमान है तूने बिना सोचे बिना विचारे अपने प्यारे भाई को मारा। तेरी पत्नी ने तुझे बड़ी नम्रता के साथ शिक्षा दी किंतु तूने उसकी भी लाज नहीं रखी। अरे अधम, अभिमानी! तू यह जानकर भी कि सुग्रीव मेरी शरण में है और फिर भी मेरी शरणागत आए हुए को मारना चाहता है अरे दुष्ट! तेरे समान पापी, अधम और कौन होगा? यह सब तेरे अभिमान का कारण है।

हे मेरे सच्चे स्वामी प्रभु! सुनिए! मैं आपसे क्या कहूँ? आपके सामने कोई चतुराई नहीं चलेगी पर क्या में अब भी पापी हूँ जो अंत समय आपके चरणों में पड़ा हूँ आपके सिवाय मेरी कोई गति नहीं।

बाली की नम्र वाणी सुनकर प्रभु ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा कि मैं तेरा शरीर अमर करता हूँ तूँ प्राण रख ले। तब बाली ने कहाहे कृपा निधान! अनेक जन्म-जन्मांतरों तक प्रयत्न करने पर भी मुनिजन आपके बिना अंत समय में नाम का उच्चारण भी नहीं कर सकते, जिस नाम के बल से भगवान शंकर जी सबको समान गति देते हैं।

हे प्रभु! आपका वही विभु स्वरूप मेरे नेत्रों के सामने हैं, ऐसा शुभ अवसर क्या फिर बनाने से बन सकता है? जो मैं इन प्राणों को रखूँ। राम ने बाली को अपने परम धाम में भेज दिया। बाली का परलोक गमन सुनकर नगर के सभी लोग व्याकुल होकर दौड़े आए। बाली की स्त्री तारा के केश बिखर गए, देह की सुध न रही। तारा को व्याकुल देखकर प्रभु ने उसे समझाया और उसका मायावी मोह हर लिया।

इस प्रकार प्रभु के चरणों में मन को स्थिर करके बाली ने देह त्याग दी, जिस प्रकार गले से पुष्पों की माला गिरते समय नाग को पता नहीं लगता।

प्रभु ने तारा को समझाकर कहाकि यह अधम शरीर जो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है वह सुंदर शरीर प्रत्यक्ष ही तेरे सामने सोया है और जीव अविनाशी है तो बताओ तुम किसके लिए रोती हो? ऐसा ज्ञान जब उसके हृदय में आया तब तारा ने प्रसन्न होकर प्रभु के चरणों में प्रणाम कर परम भक्ति का वरदान माँगा। हे पार्वती! राम सबको कठपुतली की भाँति नचाते हैं।

भगवान राम ने सुग्रीव को आज्ञा दी तब उसने बाली की देह का क्रिया कर्म किया। प्रभु ने सुग्रीव से कहा कि मैं चौदह वर्ष तक नगर में नहीं रहूँगा। राम ने लक्ष्मण को समझाकर भेजा और कहा कि जाकर सुग्रीव को राज्य दे दो। प्रभु के चरण कमलों में सिर नवाकर उनकी प्रेरणा से आज्ञा पाकर सभी चले।

सुग्रीव को राज और अंगद को युवराज पद

लक्ष्मण जी ने तुरंत उसी समय नगरवासी, साधु-मुनियों और सारे राज समाज को बुलाकर सुग्रीव को राजा और अंगद को युवराज पद दिया।

हे पार्वती! राम के समान हितैषी जगत में गुरु, माता-पिता और बंधु कोई भी नहीं है। देवता, मनुष्य, मुनि और सभी की यह रीति है कि वे सब स्वारथ के लिए ही प्रीति करते हैं। जो ऐसे प्रभु को छोड़कर विषयों में भरमाते हैं वे नर विपत्ति जाल में क्यों नहीं पड़ेंगे। प्रभु ने सुग्रीव को बुलाकर राज की नीति की शिक्षा दी।

प्रभु बोलेहे सुग्रीव! अब ग्रीष्म ऋतु बीत गई है और वर्षा ऋतु आ गई है। तुम अंगद सहित राज्य करो, अपने हृदय में सदैव ही मेरी याद रखना और मेरे लिए कार्य करते रहना। तब सुग्रीव घर को वापिस आ गए और भगवान राम प्रवर्षण पर्वत पर ही रहे। उस पर जितने भी वन थे वे सब तब से मंगलमयी हो गए जब से आनंदकंद प्रभु वहाँ पर रहने लगे।

उस पर्वत पर ऋषि-मुनि और देवताओं ने पहले ही सुंदर गुफाएँ बना रखीं थीं कि कृपासिंधु भगवान राम यहाँ कुछ दिन निवास करेंगे।

वह सुंदर वन पुष्पों से लदा हुआ अति शोभा पा रहा था और भौंरे पराग के लोभ से गूँज रहे थे। जब से प्रभु वहाँ आए तब से अनेकों प्रकार के कंदमूल फल लगने लगे और पत्र-पुष्पों की शोभा बढ़ गई। देवता भाँति-भाँति के मनुष्य, वानर आदि की देह धारण करके और सिद्ध मुनिगण परम प्रभु की सेवा करने लगे। वर्षा के समय आकाश में बादल छाए हुए हैं और गरजते हुए बड़े शोभायमान लग रहे हैं।

उन वन वाटिकाओं की सुंदरता एवं शोभा को देखते हुए प्रभु श्री रामचंद्र जी लक्ष्मण जी को भक्ति, प्रेम, ज्ञान और नीति की कथाएँ सुनाते हैं। हे लक्ष्मण! बादल भूमि के निकट आकर वर्षा करते हैं जैसे बुद्धिमान विद्या पढ़कर झुक जाते हैं बूँदों की चोट पर्वत कैसे सहन करते हैं जैसे दुष्ट के वचन संत सहते हैं। बादलों में बिजली की चमक नहीं ठहरती जैसे दुष्टों की प्रीति स्थिर नहीं रहती।

वर्षा ऋतु में नीति और गुण के उदाहरण

हे लक्ष्मण, देखो! बादलों को देखकर वर्षा की आशा से मोर नाच रहे हैं जैसे कोई प्रभु के प्रेम में मग्न गृहस्थी प्रभु के दर्शनों की आशा से आनंदकंद भगवान विष्णु के भक्त को देखकर प्रसन्न होते हैं। ॥दो॰-261॥

वर्षा के जल से छोटी-छोटी नदियाँ भी उछल-उछल कर चलती हैं जैसे दुष्टजन थोड़ा-सा धन पाकर इतराने लगते हैं। वर्षा का जल पृथ्वी पर गिरते ही ऐसा गंदला हो जाता है जैसे मानव माया में लिपट कर गंदा हो जाता है। वर्षा का जल सिमट-सिमट कर तालाब में भर जाता है जैसे सद्गुण नम्र हृदय वाले संतजनों के हृदय में आते हैं फिर उनके हृदय के विचारों में गोता लगाकर कितने ही तीरथ यात्री पवित्र बन जाते हैं। नदियों का जल समुद्र में जाकर ऐसे अचल हो जाता है जैसे भक्त भगवान को पाकर।

मेढ़कों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है जैसे वेद पाठी ब्राह्मणों की वेद ध्वनि। वृक्षों में नए पत्ते उपजते हैं जैसे साधक के मन में विवेक उत्पन्न होता है। किंतु अर्क, जवास के पत्ते गिर जाते हैं जैसे दुष्टों के उधम मचाने पर अपने राज्य के उत्तम गुण नष्ट हो जाते हैं कहीं भी खोजने पर धूर नहीं मिलती जैसे क्रोध में धर्म दिखाई नहीं देता।

घास बढ़ जाने के कारण मार्ग नहीं दीखता जैसे पाखंडियों के विवाद से सद्ग्रंथों में सद्मार्ग नहीं दीखता और संतों के लगाए हुए बगीचों में उत्तम फलों के वृक्ष भी छिप जाते हैं। ॥दो॰-262॥

देखो लक्ष्मण! धान्य संपन्न भूमि कैसी शोभायमान है जैसी परोपकारी की संपत्ति शोभा पाती है। बादलों के अंधकार से रात्रि में जुगनू ऐसे चमचमा रहे हैं जैसे मानो दंभियों की सभा जुड़ी हो। अत्यधिक वर्षा होने के कारण खेतों की क्यारियाँ टूटकर पानी बह निकला है जैसे आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता मिलने पर स्त्रियाँ लोभ वश बिगड़ जाती हैं। चतुर किसान खेती को संभाल कर निराते हैं जैसे बुद्धिमान पुरुष मद, मोह और मान को तजकर ज्ञान की रक्षा करते हैं।

चक्रवाक पक्षी नहीं दीखते जैसे कलि में धर्म दिखाई नहीं देता। ऊसर भूमि में घास नहीं जमती जैसे प्रभु भक्तों के हृदय में काम उत्पन्न नहीं होता। भाँति-भाँति के जीव बढ़ गये जैसे उत्तम राजा पाकर प्रजा बढ़ती है। पथिकगण थके हुए जहाँ-तहाँ बैठे हैं, जैसे ज्ञान होने पर इंद्रियाँ थक जाती हैं।

बादलों में कभी तो सूर्य छिप जाता है और कभी प्रगट हो जाता है जैसे सत्संग से ज्ञान उत्पन्न होता है और कुसंग से छिप जाता है। कभी तीव्र वायु के उत्पन्न होने से बादल जहाँ-तहाँ छिप जाते हैं। जिस प्रकार कुपुत्र के उत्पन्न होने पर कुल और सत्य-धर्म नष्ट हो जाते हैं। ।।दो२६३-२६४।।

कमलों के फूलने से सरोवर कैसे सुंदर लगता है जिस प्रकार निर्गुण ब्रह्म के सगुण रूप में प्रगट हो जाने पर भक्तों का हृदय खिल उठता है और फिर यह संसार सुंदर सुहावना लगने लग जाता है। तालाब में नीर अगाध होने पर मछलियाँ बहुत सुखी हैं। जैसे सगुण ब्रह्म-भगवान विष्णु के शरण में रहने पर भक्त सभी बाधाओं से मुक्त होकर सुखी रहता है। हे लक्ष्मण, देखो! वर्षा ऋतु बीतने पर कैसी सुंदर शरद ऋतु आई है, यह परम शोभायमान है। अगस्त्य ने उदय होकर मार्गों का जल सोख लिया है जैसे लाभ को संतोष सोख लेता है। जिससे सभी जीव सुखी हो जाते है, लोभ ही सब पापों का और सब दुखों का मूल है।

नदियों एवं तालाबों का जल निर्मल और ऐसा शोभायमान है जैसे मद और मोह रहित होकर संतों का हृदय निर्मल होता है। नदी और तालाबों का पानी धीरे-धीरे रिसकर सूख जाता है जैसे ज्ञानी भक्त जनों की धीरे-धीरे ममता नष्ट हो जाती है। कहीं-कहीं पर वर्षा है और कहीं-कहीं थोड़ी सर्दी है। जिस प्रकार कोई एक ही भक्त मेरी भक्ति पाता है। कीचड़ और धूल से रहित भूमि ऐसी सुंदर लगती है जैसे नीति निपुण राजा की करनी शोभा पाती हें

चकोरें चंद्रमा को ऐसे देख रही हैं जैसे भक्तगण भगवान विष्णु को पाकर गतचित होकर देखते हैं। डांस-मच्छर शीत के भय से नष्ट हो गए जैसे श्री सद्गुरू के सेवक से द्रोह करने पर कुल का नाश हो जाता है। जल के अभाव में मछली

ऐसे व्याकुल हैं। जैसे अविवेकी कुटुंबी धन के बिना दुखी होता है। बिना बादल के आकाश ऐसा शोभा पा रहा है जैसे विष्णु भक्त आशाओं को त्यागकर शोभा पाता है।

प्रसन्न होकर राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी नगर को छोड़कर चले जैसे आनंदकंद भगवान विष्णु की भक्ति पाकर मानव चारों आश्रमों को त्यागकर प्रभु की सेवा भक्ति में लग जाते हैं। वर्षा ऋतु के कारण बढ़े हुए जीव शरद ऋतु पाकर ऐसे चले गए जैसे सद्गुरू मिलने पर सभी संशय और भ्रम चले जाते हैं।

हे तात! वर्षा ऋतु बीत गई और निर्मल ऋतु आ गई किंतु अभी तक सीता जी की कोई सुध नहीं मिली। तब हनुमान जी ने दूतों को बुलाकर और उनका बहुत सम्मान करके कहा कि सबसे कहना जो पंद्रह दिन में नहीं आएगा वह मेरे हाथ से मारा जाएगा। हनुमान जी ने प्रभु को सारी बातें बताईं जिस प्रकार दूतों के समुदाय को भेजा गया।

प्रभु की आज्ञा पाकर हनुमान जी चरण कमलों में सिर नवाकर छलाँग मारकर पूर्व दिशा में आए। हनुमान जी का आना सुनकर सब वानरों के राजाओं ने मस्तक नवाकर परम हितकारी वचन कहे कि आप किष्किंधानाथ सुग्रीव के अधिकारी हैं क्या कारण है जो आपने स्वयं परिश्रम किया? तब हनुमान जी ने सब समाचार सुनाए। सुनते ही प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा से सब चल दिए।

प्रभु का कार्य करके हनुमान जी सुग्रीव के पास आए, सुग्रीव ने बड़ी प्रशंसा करके कहा कि हे हनुमान जी! आपको धन्य है और आपकी भक्ति के बल को धन्य है। ॥दो.२६७॥

हे पार्वती! वह वानर दल मैंने देखा है, वह मूर्ख है जो उनको समझना चाहे। सभी ने आकर राम के चरणों में प्रणाम किया और दर्शन पूजा करके सनाथ हो गए। ऐसा वानर सेना में एक भी नहीं था जिससे प्रभु ने कुशल न पूछी हो। इसमें प्रभु की कोई विशेष युक्ति नहीं है, प्रभु विश्वरूप विभु सर्व व्यापक हैं वे सबको जानते हैं इसलिए सबसे एक ही बार में पूछ लिया कि सब कुशल है?

सभी वानर प्रभु की आज्ञा पाकर जहाँ तहाँ खड़े रहे तब सुग्रीव ने सबको समाचार कहा कि यह प्रभु की सेवा है और मेरा निहोरा है कि आप सब चारों ओर जाओ और श्री सीता जी की खोज करो। सभी प्रेमी भाई एक महीने में आ जाना यह बात सभी ने एक दूसरे से कही और सभी ने हनुमान जी के चरणों में शीस नवाकर प्रणाम किया।

सुग्रीव के वचन सुनकर एवं हनुमान जी को प्रणाम करके वानरों का दल जहाँ-तहाँ चला तब सुग्रीव ने अंगद आदि सब योद्धाओं को हनुमान जी सहित बुलाया।

मुद्रिका देकर हनुमान जी को भेजना

हे हनुमान जी! तुम, अंगद, नल, नील और जामवंत सब धीर बुद्धि और ज्ञानी- समझदार हो। आप सब योद्धा मिलकर दक्षिण दिशा को जाओ और सब किसी से श्री सीता जी का पता पूछना। मन कर्म और वचन से यत्न पूर्वक विचार करके प्रभु के कार्य को संभालना। पीठ को सूर्य से और छाती को आग से सेंकना चाहिए किंतु स्वामी की सेवा सरल स्वभाव से छल त्यागकर करनी चाहिए।

माया के मोह को तजकर परलोक के लिए सेवा कीजिए जिससे जन्म मरण से उत्पन्न होने वाले सभी शोक मिट जाऐं। इस मानव देह के धारण करने का एकमात्र यही फल है कि सभी कामनाओं को त्याग कर प्रभु की सेवा-भक्ति की जाय। वह ही गुणवान ज्ञानी और बड़ा ही भाग्यशाली है जो प्रभु के चरणों का प्रेमी है। सब प्रभु से आज्ञा लेकर चरण कमलों में प्रणाम करके प्रसन्न होकर प्रभु का सुमिरन करते हुए चले।

वे सभी वन को खोजते, नदी पर्वत और गुफाओं को देखते हुए चले। उनका मन प्रभु के कार्य में ऐसा लीन था जो देह की सुध भी भूल गए।

चलते समय जैसे ही प्रभु को हनुमान जी ने प्रणाम किया तो कार्य का विचार कर निकट बुलाया। अपना सेवक जान उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते

हुए अपने हाथ की मुद्रिका दी। प्रभु ने कहा कि सीता जी को बहुत प्रकार की सेना का बल और मेरे विरह की सब बातें समझा कर शीघ्र ही आना। हनुमान जी ने अपना जन्म सफल माना और परमप्रभु को अपने हृदय में धारण करके चले।

सब मिलकर समुद्र के किनारे घास बिछाकर बैठे और जय-जयकार के शब्द करते हुए प्रभु के गुण गाने लगे। हनुमान जी को सबने हृदय से लगाया, जामवंत ने कहाहे तात्! तुम राम को मनुष्य मत समझो, ये निर्गुण ब्रह्म ही अजन्मा और सगुण हैं। हम सब सेवक अति ही भाग्यशाली हैं जो प्रभु के सगुण रूप के प्रेमी हैं।

प्रभु अपनी इच्छा से देवता, पृथ्वी, गौ और निज भक्तों के लिए देह धारण किये हैं। प्रभु के साथ उनके सगुण उपासक मोक्ष परम धाम के सुख को त्यागकर रहते हैं और सेवा भक्ति का परम आनंद प्राप्त करते हैं।

महामंत्री जामवंत इस प्रकार कथा कह ही रहे थे कि पर्वत की कंदरा में सम्पाती ने सुना। जब वह आया तो उसे देखकर सब बानर उठे। जामवंत के मन में बड़ी चिन्ता थी तब अंगद ने विचार कर कहा कि धन्य है जटायु उसके समान भाग्यशाली दूसरा कौन होगा? जिसने प्रभु के कार्य में देह त्याग दी और भगवान विष्णु के परमधाम को चला गयावह बड़ा ही भाग्यशाली था।

हर्ष और शोकायुक्त वचन सुनकर पक्षिराज-सम्पाती वानरों के पास आया। उसे देखकर वानर भाग चले, तब उसने सपथ दिवा कर सबको खड़ा किया। उनका भय दूर करके सम्पाती ने पूछा तो वानरों ने जटायु की सब कथा कह सुनाई। भाई की करनी सुनकर सम्पाती ने राम की बहुत प्रकार से महिमा वर्णन की।

वानरों से सम्पाती ने कहा-कि आप लोग मुझे समुंद्र तट पर ले चलो। मैं भाई जटायु को तिलांजलि देकर तुम्हारी अपने वचन से सहायता करूंगा। जिसे तुम खोज रहे हो उसे तुम अवश्य ही पाओगे।

गिद्धराज सम्पाती ने अपने भाई जटायु की समुद्र के तट पर क्रिया कर्म करके अपनी कथा कहकर कहा कि हे वीर वानरों सुनो! आज मुनि नारद की वाणी सत्य हो गई। आप लोग मेरी बात सुनकर प्रभु की सेवा करो। मुनि ने मुझे बहुत सी ज्ञान की बात सुनाकर मेरा देह से उत्पन्न होने वाला अभिमान छुड़ा दिया। मुनि ने कहा कि त्रेता युग में प्रभु मनुष्य तन धारण करेंगे, उनकी स्त्री को निशाचरों का राजा रावण हरेगा।

उसकी खोज में प्रभु अपना दूत भेजेंगे, उनसे मिलने पर तुम पवित्र हो जाआगे। तुम चिंता मत करना, तुम्हें संत मिल जाएंगे उन्हें तुम सीता दिखा देना। सो त्रिकूट पर्वत के ऊपर लंका बसी हुई है जहाँ रावण स्वभाव से ही निडर होकर रहता है। वहाँ एक अशोक वन है जहाँ श्री सीता जी रहती हैंवे दिन रात प्रभु की चिन्ता में लीन रहती हैं।

सीता जी को मैं यहाँ से ही देखता हूँ क्योंकि मेरी दृष्टि अपार है किन्तु तुम नहीं देखते। मैं बूढ़ा हो गया नहीं तो कुछ सहायता अवश्य करता।

हे पार्वती! ऐसा कहकर संपाती जब चला गया तो उसे देखकर सब के मनमें बड़ा आश्चर्य हुआ। जामवंत ने कहा-हे हनुमान जी सुनो! आप चुपचाप क्यों बैठे हैं? कौन ऐसा कार्य जगत में है जिसे आप नहीं कर सकते? जो आपके लिए कठिन है। आपका अवतार ही राम के कार्यों के लिए हुआ है। यह सुनते ही हनुमान जी पर्वताकार होकर बोलेहे महामंत्री जामवंत! मैं तुमसे पूछता हूँ, जो उचित हो वह मुझे बताओ! मैं क्या करूँ? तब जामवंत बोला-हे तात! तुम जाकर इतना ही करो कि सीता जी को देखकर उनकी सुध आकर कहो। यही आपको प्रभु की आज्ञा है, इससे अधिक कुछ नहीं। हे तात! इस आज्ञा को मन में धरकर शीघ्र ही पालन करो। तत्पश्चात् राजीव के नेत्र आनंदकंद प्रभु अपने भुजबल से खेल के लिए वानर सेना लेंगे। "मुनियों के बनमें खेलने वाले प्रभु अहंकार रूप रावण का बध करके अपनी भक्त मण्डली को सुख देंगे।"

वानरों की सेना को साथ लेकर निशाचरों का नाश करके प्रभु सीता जी को लाएंगे। तब तीनों लोकों को पावन करने वाले प्रभु सुयश के सुन्दर यश नारदादि मुनि व्याख्या सहित वर्णन करेंगे। जिन यशों को सुनकर गाकर और समझकर मानव परम पद पाएंगे। यह तुलसीदास भी प्रभु के श्री चरण कमलों का पराग चरणामृत पानकर भौंरे की भाँति मतवाला होकर प्रभु के गुण गाएगा।

नीलकमल के समान गौर वर्ण-उज्ज्वल श्याम बदन है और जिसकी शोभा करोड़ों कामदेवों से भी अधिक है। जो दुष्ट हैं, पाप का पक्ष लेते हैं उन पक्षियों को वध करने के लिए जिसका नाम नरसिंह के समान है और कलियुग को नष्ट करके अपने स्वयश का वे स्वयं ही विस्तार करेंगे।

जन्म मरण के दुःख को दूर करने वाले महाराजा रघु के स्वामी हंस वंश के सूर्य और सूर्य वंशियों के रक्षक प्रभु के यश जो नर और नारी सुनेंगे उनके सभी मनोरथ शिव जी पूरा करेंगे।

सुन्दर काण्ड

हनुमान जी की लंका में विभीषण से भेंट

जामवंत के वचन अति ही सुन्दर और सुहावने थे। जिन्हें सुनकर हनुमान जी अति प्रसन्न हुए उनको जामवंत के वचन बहुत ही अच्छे लगे। हनुमान जी ने सबसे कहा कि हे भाइयों! आप सब लोग तब तक मेरी बाट देखना और कष्ट सहन करके, कंद मूल, फल खाकर रहना जब तक मैं लंका से श्री सीता जी को देखकर वापिस न आ जाऊँ। मुझे पूरा विश्वास है कि कार्य अवश्य ही होगा क्योंकि मेरे मन में अति प्रसन्नता है, मुझे माता श्री सीता जी के दर्शन अवश्य ही होंगे। ऐसा कहकर अति प्रेम सहित सभी को मस्तक नवाकर अपने इष्टदेव भगवान रामचन्द्र जी को हृदय में धारण करके नाम का स्मरण करते हुए बड़े प्रसन्न होकर चले।

लंका में श्री हनुमान जी की विभीषण से भेंट

सामने एक विशाल पर्वत देखकर उस पर भय त्याग कर चढ़ गये। हे पार्वती! इसमें हनुमान जी की अपनी निजी कोई विशेषता नहीं है, उनका प्रभु पर विश्वास और प्रेम इतना दृढ़ था कि प्रभु के प्रताप से तो सारे जग को खाने वाले काल को भी खा सकता है। हनुमान जी ने पर्वत पर चढ़ कर लंका को देखा जिसकी विशेषता का वर्णन नहीं हो सकता। वहाँ पर हनुमान जी को एक सुन्दर सुहावना भवन दिखाई दिया जिसके निकट भगवान विष्णु का मन्दिर बना हुआ था।

वह मन्दिर राम के नाम से अंकित था जिसकी शोभा अकथनीय थी। वहाँ नवीन तुलसी के वृक्षों को देखकर हनुमान जी अति प्रसन्न हुए।

लंका तो राक्षसों के समूहों का निवास स्थान है। यहाँ संत जनों का निवास कहाँ? ऐसा तर्क मन में उठ ही रहा था कि उसी समय विभीषण जागे और राम के नाम का सुमिरन करने लगे। हनुमान जी उसे पहचानकर हृदय में अति प्रसन्न हुए और यह विचार करने लगे कि साधु के मिलने से कोई हानि नहीं होती। मैं इससे अवश्य ही परिचय करुँगा।

हनुमान जी ने साधु का वेष धारण करके साधु विभीषण को प्रभु के नाम गुण सुनाए। सुनते ही विभीषण उठकर वहाँ आए और प्रणाम करके कुशल पूछी। हे विप्र! अपनी कथा समझाकर कहो! मेरे मन में आपको देखकर ऐसा विश्वास हो रहा है कि तुम मुझे भाग्यशाली बनाने आये हो।

तब हनुमान जी ने भगवान राम की सारी कथा कहकर अपना नाम बताया तो सुनते ही दोनों के शरीर पुलकायमान हो गए और प्रभु के नाम के गुण गणों को स्मरण कर दोनों आनंद में मग्न हो गये।

विभीषण ने कहाहनुमान जी सुनो! हमारी रहनी यहाँ पर ऐसी है जैसे दांतों में जीभ। हे तात! क्या प्रभु मुझ अनाथ पर कभी कृपा करेंगे? इस तामसिक देह से कुछ साधन तो होता नहीं है और न मेरा प्रभु के चरण कमलों में प्रेम ही है जिससे कुछ साधन बनता। अब मुझे भरोसा हो गया है क्योंकि प्रभु की कृपा के बिना संत नहीं मिलते।

हे तात! मेरे बड़े पुण्य हैं, मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ जो प्रभु के दूत को अपने नेत्रों से देख रहा हूँ। जब प्रभु ने कृपा की तभी तो आपने ये सुंदर दर्शन दिये। ऐसे भावपूर्ण वचनों को सुनकर हनुमान जी बोलेहे विभीषण! प्रभु का यह नियम है कि वे सदा सेवक पर प्रीति करते हैं जो यह जानते हुए भी प्रभु को भूलकर विषयों के प्रेमी बनकर भटकते फिरते हैं वे दुःखी क्यों न हों।

हे तात! सत्संग की तुलना में यदि सारे स्वर्ग और अपवर्ग का सुख रखा जाय तो वह भी नहीं तुल सकता जो सुख लवमात्र के सत्संग से होता है।

इस प्रकार राम के गुणों का वर्णन किया जो केवल श्रवण मात्र से सुख और शान्ति के दाता हैं। तत्पश्चात् विभीषण सब कथाएं कहता है, जिस प्रकार जहाँ श्री सीता जी रहती हैं। तब हनुमान जी ने कहाहे भाई! विभीषण! मैं श्री सीता जी को देखना चाहता हूँ। जब विभीषण ने वहाँ पहुँचने की सभी युक्तियाँ बताई तो हनुमान जी विदा लेकर चले।

विदा करते समय विभीषण ने कहाहे हनुमान जी! आप नगर में प्रवेश करते समय हृदय में कौशलपति राम को धारण करके सभी कार्य करें। तब उसी साधु के वेष में वहां गए जहाँ अशोक वन में श्री सीता जी रहती हैं। सीता जी को देखकर मन ही मन में प्रणाम करके मस्तक नवाया। सीता जी को बैठे रात बीत जाती है, उनका तन दुबला है, सिर पर जटा संवारकर एक वेणी बनाकर शिव जी की भाँति आसन लगाकर प्रभु का नाम जपती हैं।

नाम के दो अक्षर प्रभु के दो पद हैं जिन्हें भवानी-शंकर और सीता-राम कहा गया है। सीता जी ने अपने नयन और मन अपने पद में देकर प्रभु के पद में लीन किये हुए हैं। श्री सीता जी के इस दीन भाव को देखकर हनुमान जी अति दुःखी हुए।

हनुमान जी वृक्ष के पत्तों की आड़ में विचार करने लगे कि क्या करुँ। वहां त्रिजटा नाम की एक राक्षसी थी जो ज्ञान में निपुण थी और प्रभु के चरणों में अटल प्रेम था। उसने सबको बुलाकर अपने स्वप्न की बात सुनाई और कहा कि तुम सब सीता जी की सेवा करके अपना कल्याण करो। स्वप्न में एक वानर ने लंका जला दी और सारे निशाचरों की सेना को मार दिया।

सारे नगर में राम की दुहाई फिरी और राम ने सीता जी को बुलाया। मैं सबको पुकार कर कहती हूँ यह स्वप्न चार दिन में सत्य होगा। श्री सीता जी हाथ जोड़कर त्रिजटा से बोलींहे माता! त ूँ ही मेरे जीवन की साथी है। ऐसा सुनकर त्रिजटा ने श्री सीता जी के चरण कमलों को पकड़कर राम का बल, प्रताप और स्वयश सुनाकर समझाया।

तब हनुमान जी ने अपने हृदय में विचार कर श्री सीता जी के सामने मुद्रिका डाल दी। उसमें ऐसी चमक थी मानो अशोक वृक्ष से एक आग का अंगार गिरा हो। सीता जी ने प्रसन्न होकर अंगूठी को हाथ में उठा लिया।

तब सीता जी ने उस मनोहर अंगूठी में राम का नाम अंकित देखकर एवं पहचान कर चकित होकर देखा और हर्ष एवं विषाद के कारण हृदय में व्याकुल हो गईं। राम अजेय हैं, उन्हें कोई जीत तो सकता नहीं और माया से ऐसी बन नहीं सकती। इस प्रकार मन में विचार कर ही रही थीं कि हनुमान जी मधुर वचन बोले

हनुमान जी राम के गुण वर्णन करने लगे जिनके सुनने से श्री सीता जी का दुःख भाग गया और बोलींहे भाई! जिसने ऐसे अमृतमय वचन सुनाए हैं तो प्रगट क्यों नहीं होते? तब हनुमान जी बोलेमां! मैं राम का दास उनका भेजा हुआ दूत हूँ मैं करुणानिधान की शपथ पूर्वक सत्य कहता हूँयह मुद्रिका मैं लाया हूँ। प्रभु ने मुझे यह आप के पहचान के लिये दी है।

हनुमान जी के सप्रेमयुक्त वचन सुनकर श्री सीता जी के मन में विश्वास हो गया और मन कर्म वचन से कृपासिंधु भगवान का दास जाना।

सीता जी ने कहाहे तात! विरह सागर में डूबती हुई मुझको बचाने के लिए आप नवका हुए। मैं बलिहारी जाऊँ, अब लक्ष्मण सहित भगवान राम की कुशल मंगल कहो! सेवक को सुख देना जिनका सहज स्वभाव है वे प्रभु क्या कभी मेरी याद करते हैं? हे तात! क्या कभी उनके कोमल सांवले वदन को देखकर मेरे नेत्र शीतल हो जाएंगे?

हा नाथ! आप मुझे क्या नितांत ही भूल गयेइतना कहकर श्री सीता जी चुप हो गई, उनके मुंह से वचन नहीं निकला और आंखों में आंसू बह निकले। सीता जी को विरह में व्याकुल देखकर हनुमान जी कोमल और विनय युक्त वचन बोलेहे माता! कृपासागर प्रभु भाई लक्ष्मण सहित कुशल हैं परन्तु आपके दुःख से दुःखी हैं। हे माता! आप मन में ग्लानि मत मानोप्रभु के हृदय में आप से दूना प्रेम है।

हे माता! अब धीरज धरकर प्रभु के संदेश सुनिये! ऐसा कह कर नेत्रों में प्रेम के आंसू भरकर गदगद हो बोलेहे माता! राम ने कहा है कि तुम्हारे वियोग से आज मेरे लिए सभी विपरीत हो गए हैं। जो मेरे भक्त मेरा हित करने वाले थे वही अब पीड़ा देने लगे हैं। मेरे लिए तीनों प्रकार की सुखदाई वायु भी सांप के स्वांस के समान हो गई हैं। जो रक्षक थे वे सब भक्षक बनते जा रहे हैं। हे प्रिया! मेरे और तेरे प्रेम का तत्त्व एक मन ही जानता है जो सदा तुम्हारे ही पास रहता है। बस इतना ही प्रेम का रस और प्रीति का रहस्य जानना।

कहने से दुःख घट जाते हैं पर किस से कहूँ यह कोई नहीं जानता प्रभु का संदेश सुनते ही श्री सीता जी प्रेम में मग्न होकर तन की सुध भी भूल गईं। हनुमान जी ने कहाहे माता! हृदय में धैर्य धारण करो, सेवकों के सुखदाता प्रभु का सुमिरण करो। हे मात! प्रभु की प्रभुता को हृदय में विचार मेरे वचन सुनकर दुःखी मत होवो।

निशाचरों के समूह जुगनू के समान और राम के वाण अग्नि के समान हैं। हे माता हृदय में धैर्य धारण करो! इन निशाचरों को तो आप जला ही समझो।

भक्ति, प्रताप, तेज और बल से सनी हुई हनुमान जी की प्यारी वाणी सुनकर सीता जी के मन में संतोष हुआ। हनुमान जी को राम का प्यारा जानकर आशीर्वाद दिया कि हे तात! तुम बल और शील के निधान, अजर, अमर और गुणों के भण्डार होवो। हे पुत्र! प्रभु तुम पर सदा ही कृपा करें। ऐसा आशीर्वाद कानों से सुनकर हनुमान जी प्रेम में मग्न होकर बोले

हे माता! अब मैं कृतार्थ हो गया हूँ, आपका आशीर्वाद अमोघ है, यह सब जगत में विख्यात है। हे माता! सुन्दर फलों से लदे वृक्षों को देखकर मुझे बड़ी भूख लगी है। तब श्री सीता जी ने कहाहे पुत्र! इस वन में बड़े-बड़े राक्षस रखवाली करते हैं। तब हनुमान जी बोलेहे माता! यदि आप सुखमानों तो मुझे उनका भय तनिक भी नहीं है।

हनुमान जी को बुद्धि और बल में निपुण देखकर सीता जी बोलीहे तात! जाओ, प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करके मीठे फल खाओ।

हनुमान जी माता सीता जी को सिर नवाकर अशोक वाटिका में चले गये और फल खाकर वृक्षों को तोड़ने लगे। वहाँ पर बहुत से योद्धा रखवाले थे, उनमें से कुछ तो मार गिराये और कुछ भागकर रावण के पास जा पुकारे। उनकी पुकार सुनकर रावण ने अक्षय कुमार को भेजा तो वह बलवान योद्धाओं को साथ लेकर चला। उसे आता देखकर हनुमान जी ने एक वृक्ष हाथ में लेकर ललकार कर उसे मारा और मारकर बड़ी भारी गर्जना की।

पुत्र का वध सुन रावण ने मेघनाद को भेजा और कहाहे पुत्र! उसे मारना नहीं, बांधकर ले आना, देखना है वह कपि कहाँ का है। इन्द्रजीत (मेघनाद) चला और भाई अक्षय कुमार को मरा सुनकर अति क्रोधित हुआ हनुमान जी ने देखा कि एक भयानक योद्धा आ रहा है तो कटकटा कर गर्जे और दौड़े।

हनुमान रावण संवाद

हनुमान जी को भयंकर रूप में आते देख मेघनाद ने ब्रह्म फांस के अस्त्र का साधन किया। हनुमान जी ने मन में विचारा कि मैं यदि इस ब्रह्म अस्त्र को नहीं मानता हूँ तो इसकी अपार महिमा मिट जायेगी।

मेघनाद ने हनुमान जी को ब्रह्म फांस से बांध गिराया और हनुमान जी ने गिरते-गिरते सारी सेना मार गिराई। जब उसने देखाहनुमान जी मूर्छित हो गये हैं तो बांधकर रावण के पास ले गया। हे पार्वती! जिनका नाम जपकर ज्ञानी मनुष्य संसार के बंधन को काट देते हैं, उनका दूत क्या कभी बंधन में आ सकता है? यह तो प्रभु के कार्य के लिए हनुमान जी अपने आप स्वयं बंधन में आए।

हनुमान जी का बंधा जाना सुनकर निशाचर देखने के लिये दौड़े हुए सभा में आए। हनुमान जी ने रावण की सभा देखी, उसकी प्रभुता की नहीं जाती। देवता और दिखावों के रक्षक हाथ जोड़े खड़े हैं, वे रावण की भौंहें देखकर भयभीत हो जाते हैं। उसका प्रताप देखकर भी हनुमान जी नहीं डरे, वे ऐसे खड़े रहे जैसे सर्पों के समूह में गरुड़ निःशंक होकर रहता है।

हनुमान जी को देखकर दुर्वचन कहता हुआ अहंकारी रावण हँसा किंतु जब पुत्र के मरने की याद आई तो मन में बड़ा दुःखी हुआ।

लंकापति रावण ने कहारे वानर तू कौन है? किसके बल पर तूने वन को विध्वंस किया? क्या तूने अभी तक मेरे प्रभाव को नहीं सुना? मैं तुझे बड़ा निशंक और कठोर देख रहा हूँ। तूने किस अपराध से इन निशाचरों को मारा? अरे हठी बता! क्या तुझे मरने का डर नहीं है? तब हनुमान जी बोलेहे रावण! सुन! जिनका बल पाकर माया सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों की रचना करती है, और जिनके बल से ब्रह्मा और भगवान शिव सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करते हैं। हे रावण! जिनके बल से सहस्रों सिर वाले शेष जी पर्वत और वन सहित समस्त ब्रह्माण्डों को सिर पर धारण करते हैं। जो देवताओं की रक्षा करने के लिए भाँति-भाँति की देह धारण करके तुझ जैसे अहंकारी दुष्ट को भी शिक्षा देते हैं जिसने शिव जी के मोहरूपी कठोर दण्ड को तोड़कर तुझ समेत राजा वाणासुर का मान तोड़ा।

हे अभिमानी रावण! जिसकी भक्ति के बल पर तूँ ने शिव जी से वरदान पाकर सब चर अचर, देव-मुनियों को जीता है। मैं उसी भगवान राम का दूत हूँ, जिसकी प्यारी पत्नी को तूँ हर लाया है।

अरे रावण! तूँ मुझे भूल गया? मैं तुम्हारी प्रभुता को भली-भाँति जानता हूँ, सहस्त्र बाहु से तुम लड़े थे, बाली से लड़कर यश पाया। ऐसे मर्म भेदी वचन सुनकर रावण अपना मन बहलाने के लिए हंस दिया। हनुमान जी ने कहा कि मैंने भी उन्हें मारा। इस पर तुम्हारे पुत्र ने मुझे ब्रह्मपास में बांधा किन्तु मुझे अपने बंधने की कुछ भी चिंता नहीं है। मैं तो अपने प्रभु का कार्य करना चाहता हूँ।

तुम अपने हृदय में विचारो और भ्रम त्यागकर भक्तों के भय को दूर करने वाले प्रभु को भजो। जिसके डर से सुर और असुर चराचर सबको खाने वाला काल भी डरता है। अय रावण! मैं विनती करता हूँ, हाथ जोड़ता हूँ, तुम मान त्यागकर मेरी बात सुनो! तुम प्रभु से बैर न करके मेरे कहने से श्री सीता जी को दे दो।

प्रभु शरणागतों के रक्षक हैं, दया के सागर हैं पापों को हरण करने वाले हैं। उनकी शरण में जाने पर वे तुम्हारा अपराध भुलाकर तुम्हें अपनी शरण में रख लेंगे।

तुम प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करो। लंका के राज को अचल करो। ऋषि पुलस्त जी का सुन्दर यश चन्द्रमा के समान है उसमें तुम कलंक न बनो। जो राम के विमुख हैं उनकी प्रभुताई और सम्पत्ति व्यर्थ ही चली जाती है, उसका पाना न पाना बराबर है। प्रभु के नाम का सुमिरण एवं गुण गाये बिना वाणी शोभा नहीं पाती। अतः हे रावण! तूँ मद और मोह को त्यागकर विचार करके देख।

सुन रावण! मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँजो राम से विमुख हैं उनकी रक्षा करने वाला जगत में कोई नहीं है। जिस नदी का मूल स्रोत नहीं है वह वर्षा बीतने पर सूख जाती है। इसी तरह प्रभु की भक्ति के बिना तेरा सर्वस्व नष्ट हो जायेगा। अतः मोह सब दुःखों का कारण है, तुम मान-अपमान को त्याग कर राम का भजन करो। ये राम आनंदकंद कृपासिंधु भगवान विष्णु हैं।

यद्यपि हनुमान जी ने भक्ति, ज्ञान, वैराज्ञ और नीति की विवेक पूर्ण बहुत ही हितकारी बातें कहीं परन्तु हनुमान जी के परम हितकर वचन सुनकर भी रावण क्रोधित होकर बोलाअरे, इस मूढ़ का प्राण शीघ्र ही क्यों नहीं हर लेते। सुनते ही निशाचर मारने दौड़े तो उसी समय मंत्रियों सहित विभीषण भी आ पहुँचा। विभीषण ने सिर नवाकर विनय सहित कहा कि दूत को मत मारिए यह नीति के विरूद्ध है।

विभीषण की नीति की बातें सुनते ही रावण हंसकर बोला कि देखो! जिसका गुरु बहुत बड़ा ज्ञानी वानर है वह ऐसा अधम मुझे नीति सिखाने लगा है। रे दुष्ट! क्या तेरी मृत्यु निकट आ गई है? इतने में हनुमान जी ने कहीं अग्नि जलते देखा तो छोटा रूप बनाकर शीघ्रता से कूदकर एक सोने की अटारी पर जा चढ़े। हनुमान जी को देखकर रावण की स्त्रियां भयभीत होकर रोने-चिल्लाने लगीं।

प्रभु की प्रेरणा से उनचासों पवन अति तीव्र गति से चली जिसे देखकर हनुमान जी आहा-हा कहकर गर्जे तब आग बढ़कर आकाश से जा लगी।

हनुमान जी की देह बड़ी विशाल, हलकी और फुर्तीली थी। वे दौड़कर एक महल से दूसरे महल पर चढ़कर गर्जना करते चले, जिसे सुनकर निशाचरियों के गर्भ गिर गए। नगर जल रहा है, लोग व्याकुल हो रहे हैं और यही शब्द सुनाई पड़ रहा है कि हे तात! हाय माँ! इस समय हमें कौन बचाएगा? आग की लपटें झपटकर करोड़ों गुणा विकराल बनी हैं।

हमने तो पहले ही कहा था कि यह वानर नहीं कोई मानव ही वानर का रूप धारण किए हैं। साधु के अपमान का यह फल है कि नगर आग में अनाथ की नगरी की भाँति जल रहा है। एक ही क्षण में सारा नगर जल गया परन्तु एक विभीषण का घर नहीं जला। हे पार्वती! जिसने अग्नि उत्पन्न की है उसी के दूत हनुमान जी हैं, इसलिये हनुमान जी के सत्संग के कारण प्रभु के भक्त विभीषण का घर नहीं जला।

हनुमान जी ने सीता जी को सारी बातें बताकर, बहुत प्रकार से धीरज देकर चरण कमलों में सिर नवाया। माता की आज्ञा पाकर राम के पास चले।

समुद्र को लांघकर हनुमान जी इस पार आए उन्हें देखकर वानरों ने किल किला कर स्वागत कियाजय-जय कारके नारे लगाए और अति प्रसन्न हुए। हनुमान जी का मुख प्रसन्न है और बदन में तेज शोभायमान है, ये प्रभु का कार्य करके आए हैं ऐसा जानकर सबने अपना जन्म सफल समझा। सब मिलकर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे तड़पती हुई मछली को जल मिल गया हो।

राम हनुमान संवाद

राम ने सब वानरों को आते देखा-सब अति प्रसन्न मन से कार्य करके चले आ रहे हैं। सब ने आकर प्रभु के चरणों में प्रणाम किया। वानरराज-सुग्रीव सभी से प्रेम पूर्वक मिले और प्रभु से कहाहे नाथ! हनुमान जी ने कार्य करके सब वानरों के प्राण बचा लिए। दोनों भाई राम और लक्ष्मण सुन्दर शिला पर बैठे हैं और सभी वानर आ-आकर चरणों में प्रणाम कर रहे हैं।

दया के सागर आनंदकंद कृपासिंधु प्रभु ने सबसे प्रेम सहित मिलकर कुशल पूछी। तब सब ने प्रार्थना की कि हे नाथ आपके चरण कमलों के दर्शन से अब सब कुशल हैं।

जामवंत ने कहासुनिये हे प्रभु! आप जिस पर दया करते हैं, उसका कल्याण और निरन्तर कुशल है। हे नाथ! उसी पर देव, मुनि और मनुष्य सब प्रसन्न रहते हैं, वही विनययुक्त, विजयी और गुणों का सागर बन जाता है, उसी का सुन्दर यश तीनों लोकों में प्रकाशित होता है। हे प्रभु! आपकी कृपा से सब कार्य सफल हुए जिससे हमारे जीवन भी सफल हो गये।

हे नाथ! हनुमान जी ने जो करनी की है उसका सहस्रों मुखों से भी वर्णन नहीं हो सकता। जामवंत ने हनुमान जी के सभी सुंदर चरित्र प्रभु को सुनाए। जिन्हें सुनते ही प्रभु अति प्रसन्न हुए और हनुमान जी को छाती से लगा लिया। प्रभु ने पूछाहे तात! कहो, जानकी जी किस प्रकार रहती हैं और अपने प्राणों की रक्षा कैसे करती हैं। तब हनुमान जी बोले

हे नाथ! आपके नाम का दिन रात पहरा है, आपका ध्यान ही कपाट है और लोचन अपने चरणों में ऐसे लगे हैं जैसे ताले लगे हों तो प्राण जाये तो किस मार्ग से जाये।

हे नाथ! दोनों नेत्रों में जल भरकर सीता जी ने कुछ वचन मुझ से कहे हैं। छोटे भाई लक्ष्मण सहित प्रभु के चरण पकड़ कर कहना कि आप दीनबंधु हैं और

शरणागतों के दुःखों को हरने वाले हैं। हे प्रभु! किस अपराध से आपने मुझे त्यागा है? मैं तो कर्म, वचन और मन से आपकी अनुरागिनी हूँ। हाँ-एक अपराध मैं अपना अवश्य ही मानती हूँ कि आपके वियोग में मेरे प्राण नहीं निकले।

हे नाथ! यह भी नेत्रों का अपराध है, ये प्राण निकलते समय आपको देखने के लिए हठपूर्वक बाधा करते हैं। आपकी वियोग अग्नि इस तन रूपी रुई को स्वांस रूपी वायु से क्षण में जला देती पर ये दोनों नेत्र नित्य जल बहाते रहते हैं, कहीं यह देह विरह की अग्नि में जल न जाय। सो हे दीनानाथ! सीता जी की विशाल विपत्तियों का वर्णन न करना ही अच्छा है।

हे प्रभु! सीता जी का एक-एक पल कल्प के समान बीत रहा है। अतः हे प्रभु! शीघ्र ही चलिए और अपने भुजबल से निशाचरों के दल को जीतकर श्री सीता जी को ले आइए।

श्री सीता जी के दुःख की बात सुनकर सुख के धाम प्रभु के नेत्रों में जल भर आया और उनके प्रेम में मग्न होकर बोलेतन मन वचन से जिसे मेरा ध्यान है तो क्या उसे स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है? हनुमान जी ने कहाहे प्रभु! विपत्ति तभी है जब आपका सुमिरन, भजन-ध्यान न हो। हे प्रभु! इन निशाचरों की बात ही कितनी है। इन्हें जीतकर श्री जानकी जी को ले आएंगे। हनुमान जी की बातें सुनकर

प्रभु बोलेहे हनुमान जी! सुनिए! तुम्हारे समान उपकारी देव, मुनि एवं नर कोई भी तन धारी नहीं है। मैं तुम्हारा प्रति उपकार तो क्या करूं। मेरा मन भी तुम्हारे सामने नहीं पड़ता। हे पुत्र! मैंने मन में विचार कर देख लिया है कि मैं तुमसे उरिन नहीं हूँ। इतना कहकर भक्तों के रक्षक प्रभु! हनुमान जी को कृपा दृष्टि से बार-बार देखते हैं। उनके नेत्रों में प्रेम के जल भर आए और तन अति पुलकायमान हो गया।

प्रभु के वचन सुनकर एवं उनके मुख कमल की प्रसन्नता से पुलकायमान बदन को देखकर हनुमान जी अति प्रसन्न होकर पुलकायमान बदन से बोलेहे प्रभु! रक्षा करो! रक्षा करो! मुझे अपनी माया से बचा लो।

प्रभु बार-बार हनुमान जी को उठाना चाहते हैं परन्तु प्रेम में मग्न हुए हनुमान जी चरणों से उठना नहीं चाहते। प्रभु के कर कमल उनके शिर पर हैं ऐसे दृश्य के याद आते ही शिव जी प्रेम में मग्न हो गये, हनुमान जी शिव जी के ही प्रेम पुष्प थे। प्रभु धीरज धर कर सावधान हो फिर सुन्दर कथा सुनाने लगे। आनंदकंद प्रभु ने हनुमान जी को उठाकर हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अपने अति निकट बैठाया।

हे पार्वती! जिसने राम का स्वभाव जान लिया है उसे भजन के सिवा दूसरी बात ही नहीं सुहाती। यह स्वामी सेवक का संवाद जिसके हृदय में आ गया वही प्रभु के चरण कमलों की भक्ति का प्रेमी बन गया। प्रभु के इस सम्वाद को सुनकर सभी वानरों के दल आनंदकंद भगवान की जय जयकार करने लगे। हे प्रभु! अब आप वानरों को शीघ्र ही आज्ञा दीजिए। अब विलम्ब क्यों किया जाय।

वानर राज सुग्रीव ने शीघ्र ही वानरों को बुलाया तब भाँति-भाँति के अत्यन्त बलवान वानरों के दल सेनापतियों के समूह आ गए।

वे प्रभु के चरण कमलों में सिर नवाकर प्रणाम करते हैं और महान बलवान रीछ, वानर सभी गर्जते हैं। प्रभु ने वानरों की सेना को देखकर उनपर कृपा दृष्टि की। प्रभु की कृपा दृष्टि देखकर एवं बल पाकर सेना आनंद में विभोर होकर ऐसे उछलने लगी मानों पंखवाले पर्वत उमर पड़े हों। प्रभु ने प्रसन्न होकर लंका के लिए प्रस्थान किया तब अनेकों शगुन होने लगे।

प्रभु लंका की ओर आ रहे हैं यह श्री सीता जी जान गईं। उनके बाएं अंग फड़क कर कह रहे हैं कि प्रभु आ रहे हैं। जो-जो सकुन श्री सीता जी को होते हैं वही रावण के लिए अपशगुन हैं। सेनाएं ऐसे चलीं जिनका वर्णन कौन करे। भालू और वानर अपार गर्जना करते हैं, उनके नख, वृक्ष और पर्वत ही अस्त्र हैं वे अपनी इच्छा से पृथ्वी और आकाश मार्ग से पैदल और विमान द्वारा चलते हैं।

इस प्रकार आनंदकंद प्रभु उस पार सागर के किनारे जा उत्तरे। अनेकों वीर वानर भालू वहां पहुँच कर जहाँ तहाँ फल खाने लगे, जो ऋषि-मुनियों एवं मारीच महामुनि ने लगाए थे।

मन्दोदरी का रावण को समझाना

दूतियों से नगर वासियों का समाचार सुनकर मंदोदरी बहुत ही व्याकुल हो गई। सब अपने-अपने घर में विचार करते हैं कि अब निशाचरों के कुल की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। जिसके दूत का बल भी वर्णन नहीं किया जाता तो स्वयं आकर नगर पर चढ़ाई करने से नगर की कौन सी भलाई है? मन्दोदरी हाथ जोड़कर रावण के चरणों में गिरी और नीति रस में पगे हुए वचन बोली

हे प्रियतम! प्रभु से विरोध करना छोड़ दीजिए, मेरे कहने को हितकारी जानकर हृदय में धारण कीजिए। प्रभु के जिस दूत की करनी को याद कर निशाचरों की पत्नियों के गर्भ गिर जाते हैं। हे स्वामी! यदि आप अपना भला चाहते हैं तो अपने मंत्रियों को बुलाकर सीता जी को भेज दीजिये। हे नाथ सीता जी को भेजे बिना तुम्हारा भगवान शंकर और ब्रह्मा भी भला नहीं कर सकते।

राम के बाण सर्पों के समान हैं और नगर के निशाचरों के समूह मेढकों के समान हैं। जब तक वे इन्हें ग्रस नहीं लेते तब तक अपना हठ त्यागकर यह उपाय करो।

जगत प्रसिद्ध अभिमानी रावण कानों से मंदोदरी की बातों को सुनकर बहुत हंसा और बोलास्त्रियों का स्वभाव सचमुच ही बहुत कोमल होता है, ये मंगल कार्यो में भी भयभीत हो जाती है यदि वानरों का दल आ भी गया तो बेचारे ये निशाचर उन्हें खाकर जी तो लेंगे या वे इन्हें खाकर जी लेंगे इनके सिवाय उनके जीने का साधन और है ही क्या? अरी डरपोक! जिसके बल से लोकपाल काँपते हैं उस रावण की स्त्री होकर तूँ डरती है? यह तो बड़ी हंसी की बात है।

ऐसा कहकर रावण ने मंदोदरी को गले से लगा लिया और ममता बढ़ाकर सभा में चला गया। जैसे ही सभा में जाकर बैठा कि सूचना मिली, सेना समुद्र उस पार आ गई है। उसने मंत्रियों से पूछा कि जो उचित विचार हो वह कहो! सब हंसकर बोले कि चुप रहिए! आपने तो देवताओं को और निशाचरों को सबको जीत लिया है तो ये वानर और नर किस गिनती में हैं?

यदि मंत्री, वैद्य, कुल गुरु ये तीनों भय के कारण या किसी स्वार्थ की आशा से प्रिय बोलते हैं या झूठे ही हाँ में हाँ मिलाते हैं तो मंत्री से राज का, वैद्य से देह का और गुरु से धर्म का नाश होता है।

वही तीनों की कुसंगति आज रावण के लिये बनी है, मंत्री सुना सुनाकर रावण की स्तुति करते हैं। अवसर जानकर विभीषण जी आए और रावण के चरणों में सिर नवाकर अपने आसन पर बैठ गये। आदेश पाकर बोले कि हे कृपालु! यदि आप मुझ से पूछें तो हे तात! मैं अपनी मति अनुसार आपके हित की बात कहता हूँ।

हे तात! आप यदि अपना कल्याण, जगत में उत्तम यश, उत्तम बुद्धि, शुभ गति और सुख चाहते हैं। तो हे नाथ! प्रभु को जानकी जी दे दीजिए और बिना स्वार्थ के स्नेह करने वाले राम को भजिए! हे तात! राम-मनुष्य या राजा ही नहीं हैं। ये सारे विश्व के ईश्वर और कालों के भी महाकाल हैं। जिनका नाम आत्मा, देह और मन से उत्पन्न होने वाले तीनों तापों को नष्ट करने वाला है। वही परम प्रभु विभु विष्णु रूप धारी राम प्रगट हुए हैं। हे रावण! तू अपने मन में समझ कर देख!

हे रावण! मैं बार-बार तेरे चरणों में पड़कर विनय करता हूँ तूँ मान, मोह और अहंकार को त्यागकर प्रभु का भजन कर।

हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ ये सब पाप के मूल और नरक के मार्ग हैं, इन सबको त्यागकर प्रभु को भजो जिसे सब संत भजते हैं।

हे तात! मुनि पुलस्तय जी ने अपने शिष्य से तुरंत ही यह कहलाकर भेजा है वह सब मैं तुमसे कहता हूँ सुनो!

वे पूरण ब्रह्म सनातनपरमेश्वर, निर्लेप, अजन्मा, व्यापक अजेय, अनादि और अनंत हैं जिनका कल्पांत में भी नाश नहीं होता, जो सदा परम प्रकाश में विराजमान हैं, वह सर्वव्यापक विभुगो, पृथ्वी, संत, ऋषि-मुनि आदि देवताओं के हित के लिये कृपा सिंधु आनंद कंद सच्चिदानंद प्रभु देह धारण करते हैं। तुम बैर भाव त्याग कर जाकर उनके चरणों में प्रणाम करो! वे शरणागतों के दुःखों को मिटाते हैं। उनकी शरण में जाने पर वे

तुम्हें नहीं त्यागेंगे। वे दयालु प्रभुआनन्दकंद भगवान विष्णु उन्हें भी शरण में आने पर नहीं त्यागते जिन्हें विश्व से द्रोह करने का पाप लगा हो। वे रघुकुल के स्वामी भगवान रामशरण में जाने पर तुम्हें भी नहीं त्यागेंगे।

विभीषण के विचार एवं मुनि पुलस्तय के संदेश सर्व श्रेष्ठ-बुद्धि मान मंत्री-माल्यवंत को अति सुन्दर लगे। वह प्रसन्न होकर बोलाहे तात! आपके छोटे भाई विभीषण नीति में बड़े ही निपुण हैं, इनकी बातों को हृदय में धारण करो। इतना सुनकर रावण बोलाकि ये दोनों दुष्ट मेरे शत्रु के पक्ष में हैं, यहाँ कोई ऐसा है जो उनको मेरी आँखों के सामने से दूर कर दे? अब माल्यवंत तो अपने घर को चला गया और विभीषण हाथ जोड़कर फिर बोला

हे तात! वेद और पुराण ऐसा कहते हैं कि सबके हृदय में सुमति और कुमति दोनों रहती हैं। जिसके हृदय में श्रेष्ठमति होती है वहां सभी प्रकार की सुख-सम्पत्तियां होती हैं और जहाँ दुष्ट बुद्धि होती है वहाँ अनेक प्रकार के विघ्न उत्पन्न होते हैं। आपके हृदय में भी कुमति बसी है, जो उल्टे विचार उत्पन्न कर रही है। जिससे मित्र को शत्रु और शत्रु को मित्र मान रहे हो। इस प्रकार विभीषण ने वेद, पुराण एवं बुद्धिमानों की नीति कही।

हे तात! मैं चरण पकड़कर यह मांगता हूँ कि आप मेरा प्यार और दुलार रखिए। आप श्री सीता जी भगवान राम को सौंप दें जिससे आपका अनहित न हो।

विभीषण की विनय सुनते ही रावण क्रोधित होकर बोलाअरे दुष्ट, तेरी मृत्यु अब निकट आ गई है। तूँ मेरे जिन्दा रखने पर जीता है तब भी तुझे मेरे शत्रु का पक्ष अच्छा लगता है? बता! कौन ऐसा दुष्ट है जगत में, जिसे मैंने अपनी भुजाओं के बल पर न जीता हो? तूँ मेरे नगर में रहकर तपस्वियों से प्रेम करता है? रे दुष्ट यह नीति कहती है कि तूँ जिनसे प्रेम करता है तो जा! उन्हीं से मिल।

ऐसी नीति की बात कह कर भी रावण ने विभीषण को लात मारी। विभीषण ने बार-बार चरण पकड़ कर कहा कि तुम मेरे पिता के समान हो भले ही तुमने मुझे मारा किंतु हे नाथ! आपका भला तो राम के भजने में ही है। हे पार्वती! संत की यही बड़ाई है कि वह बुरा करने पर भी भला ही करता है। इतना कहकर विभीषण अपने मंत्रियों को साथ लेकर आकाश मार्ग से विमान द्वारा सबको यह सुनाता हुआ चला।

राम सत्य, दृढ़ संकल्प, सर्व समर्थ प्रभु हैं, तेरी सभा काल वश है अतः अब मैं प्रभु की शरण में जा रहा हूं, मुझे दोष न देना।

विभीषण का प्रभु की शरण में आना

ऐसा कहकर विभीषण जब चला उसी समय सब निशाचर आयु हीन हो गये। हे पार्वती! साधु का अपमान करना तुरंत ही सम्पूर्ण कल्याणों की हानि कर देता है। रावण ने जब विभीषण को त्यागा तब वह अभागा रावण उसी समय से वैभव हीन हो गया। विभीषण प्रसन्न होकर मन में अनेकों मनोरथ करते हुये प्रभु के पास चले।

सुग्रीव ने कहा हे प्रभु! रावण का भाई मिलने आया है। ऐसा जान पड़ता है कि यह हमारा भेद लेने आया है, मेरी समझ से इसे बांधकर रखा जाय। जब प्रभु ने कहाहे सखा! नीति तो तुमने ठीक ही विचारी है किंतु मेरा प्रण है शरण में आए हुए का भय और दुःख दूर करना। प्रभु के वचन सुनकर हनुमान जी अति ही प्रसन्न हुए और मन ही मन प्रसन्न होकर प्रेम में मग्न हो कहने लगे कि प्रभु शरण में आए हुए को पिता की भाँति प्रेम करते हैं।

जो मानव अपने अहित का अनुमान लगाकर शरणागत को त्याग देते हैं वे पामर हैं उन्हें देखने में भी हानि है।

जिसे करोड़ों साधुओं की हत्या का पाप लगा हो, शरण में आने पर मैं उसे भी नहीं त्यागता। जीव ज्यों ही मेरे सम्मुख होता है त्योंही उसके मैं करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट कर देता हूँ। पापी का यह सहज स्वभाव होता है कि उसे मेरा भजन ध्यान अच्छा नहीं लगता। यदि वह दुष्ट हृदय का होता तो क्या-वह मेरे सामने आता? उसके पाप कभी भी आने नहीं देते।

जो मनुष्य निर्मल मन का होता है वही मुझे पाता है। मुझे कपट, छल और चतुराई नहीं सुहाती। यदि उसे रावण ने भेद लेने भेजा है तो भी हमें कोई हानि और भय नहीं है। क्योंकि हे सखा! जगत में जितने भी निशाचर हैं उन्हें लक्ष्मण क्षण भर में मार सकते हैं। यदि वह भयभीत होकर मेरी शरण में आया है तो मैं उसे प्राणों की भाँति रखूँगा।

विभीषण का प्रभु की शरण में आना

कृपासिंधु प्रभु ने हंसकर कहा कि दोनों प्रकार से जैसा भी हो उसे ले आओ। तब अंगद आदि हनुमान जी को साथ लेकर सभी वानर आनंदकंद कृपालु प्रभु की जय हो कहते हुए चले।

वानरगण विभीषण को आदर सहित आगे करके दया के सागर राम के पास आए। नयनों के आनंद दाता दोनों भ्राताओं को दूर ही से देखा और शोभा के धाम प्रभु को मुनि वेष में देखकर चकित रह गया और टक-टकी लगाए देखता ही रह गया। प्रभु की विशाल भुजाएँ, लाल कमल के समान नेत्र और श्यामकमल के समान उज्ज्वल बदन जो शरणागतों के भय को मिटाते हैं।

सिंह जैसे कंधे, सुन्दर चौड़ी छाती, जिनका मुख कमल अनेकों कामदेवों के मन को मोहित करने वाला है। ऐसे प्रभु के दर्शन करके विभीषण के नेत्रों में प्रेम के आँसू भर आए और देह पुलकायमान हो गई। मन में धीरज धारण कर विभीषण ने कहाहे नाथ! मैं रावण का भाई हूँहे देवताओं के रक्षक! मैं निशाचरों के कुल में रहता हूं जिनकी देह तामस है, जिन्हें पाप प्यारा है और उल्लू की भाँति अंधकार पर प्रेम है।

हे प्रभु! जन्म मरण के भय को नष्ट करने वाले, आपका सुन्दर यश हनुमान जी से सुनकर आया हूँ। हे प्रभु! आप शरणागतों की रक्षा करके सुख के दाता हो! मेरी रक्षा कीजिए! रक्षा कीजिए!

विनय करके दण्डवत प्रणाम करते जब प्रभु ने देखा तो तुरन्त उठे और मन में अति प्रसन्न हुए। अपने प्यारे सखा विभीषण के दीन वचन प्रभु को बहुत ही अच्छे लगे। अपनी लम्बी भुजाओं से उठाकर विभीषण को प्रभु ने अपने हृदय से लगाया और लक्ष्मण सहित मिलकर उसे अपने पास बैठाया। भक्तों के भय को दूर करने वाले, प्रभु बोलेकहो लंकापति विभीषण! तुम्हारा बास तो कुठौर है पर अपने परिवार सहित कुशल तो हो?

बाल्य अवस्था की बातें यादकर प्रभु बोलेसखा! तुम इन दुष्टों की मंडली में रहकर दिन रात अपने धर्म-भजन भक्ति को कैसे निबाहते हो? मैं तुम्हारी नीति और नियम को भली-भाँति जानता हूँ। तुम नीति में अति निपुण हो, तुम्हें अनीति तनिक भी

नहीं सुहाती। हे तात! भले ही नरक में बास हो पर विधाता इन दुष्ट कसाई निशाचरों का साथ न दे। तब विभीषण ने कहाहे प्रभु! आपके चरण कमलों के दर्शनों से अब सभी प्रकार से कुशल है जो आपने मुझ दीन को अपना भक्त जानकर दया की है।

तब तक जीव को कुशल और स्वप्न में भी शान्ति नहीं है जब तक वह शोक के घर विषयों की कामना को त्यागकर आपका भजन न करें। ।।दो.३०७।।

विभीषण को प्रेम से समझाकर राज तिलक देना

हे प्रभु! आप कृपा और सुख के घर हैं, मेरा यह अति ही महान सौभाग्य है जो मैंने ब्रह्मा और शिव जी द्वारा सोवित युगल चरण कमलों के दर्शन पाए ।।दो.३०८।।

हे प्रभु! आपके चरण कमलों के दर्शन करके अब मैं कुशल हूं, मेरे सारे दुःख-संकट और भय मिट गये। प्रभु ने कहाहे सख ा! सुनो! मैं अपना स्वभाव कहता हूँ। जिसे महामुनि भुसुण्डि जी, शिव जी और श्री पार्वती जी भी जानती हैं। यदि कोई मानव सारे जगत का द्रोही हो और भयभीत होकर मेरी शरण का आसरा लेकर आ जाय तथा भाँति-भाँति के छल-कपट और मोह, मान, मद को त्याग दे तो उसे शीघ्र ही साधु के समान बना देता हूँ। जिससे उसका जीवन सफल हो जाता है।

माता, पिता, भाई, स्त्री, तन, धन, धाम, मित्र और प्यारा परिवार इन सबकी ममता रूपी तागों की डोरी बनाकर अपने मन में दृढ़ता से बांधकर उस मन को मेरे चरणों में बांध देता है। अपने पराये का भेद भाव को त्यागकर सबको मेरे अर्पण करके सबको समान भाव से देखता है और इच्छा, हर्ष, शोक और भय नहीं है जिसे, वह सज्जन मेरे हृदय में ऐसे बसता है जैसे लोभी के हृदय में धन बसता है। हर समय उसका ध्यान रखता हूँ।

जो भक्तजन ध्यान सुमिरण करते हुए मुझ सगुण रूप की उपासना करते हैं, दूसरों के हित में लगे रहते हैं, नीति-नियम में दृढ़ हैं और साधु संतों के चरणों में जिनका प्रेम है वे मानव मुझे प्राणों के समान प्यारे हैं। ।।दो.३०९।।

हे सखा! तुम्हारे जैसे संत ही मुझे प्यारे हैं, मैं और किसी के कहने से या निहोरा करने से भी देह धारण नहीं करता। हे लंकापति सुनो! तुम्हारे अन्दर सभी गुण हैं इसी से तुम मुझे अतिशय प्यारे हो। प्रभु के अमृतमय वचनों को सुनकर विभीषण प्रेम हृदय में नहीं समा रहा है। प्रभु के वचनों को अमृतमय जानकर विभीषण अघाता नहीं है। वह बार बार चरणों में प्रणाम करता है।

अब हे कृपालु प्रभु! अपनी निज भक्ति जो भगवान शंकर के हृदय कमल में हंस रूप से निवास करती है कृपा करके मुझे दीजिए। प्रभु ने ऐसा ही हो कहकर उसी समय समुद्र का जल मंगाकर कहा कि हे सखा! यद्यपि तुम्हें इच्छा नहीं है किंतु मेरे दर्शनों का फल अति अपार है। ऐसा कहकर प्रभु ने उसके माथे पर तिलक लगाया तब सब ने प्रसन्न होकर आकाश से फूल बरसाए।

रावण की क्रोधाग्नि द्वारा जलते हुए विभीषण को उसकी प्राणवायु के पश्चाताप रूपी प्रचन्डता से अपनी शरण देकर प्रभु ने बचा लिया और लंका का अखण्ड राज्य दे दिया। ॥दो॰१०॥

हे पार्वती! जो ऐसे प्रभु को छोड़कर दूसरों को भजता है वह मानव बिना पूंछ का और बिना सींग का पशु है। प्रभु ने विभीषण को अपना भक्त जानकर अपनाया, प्रभु का ऐसा स्वभाव सब वानरों को बहुत ही अच्छा लगा। मानव मात्र के हितैषी, दानव कुल के घातक, नीति के प्रतीक, भक्तों के रक्षक प्रभु बोलेहे सखा! सुग्रीव एवं विभीषण सुनो! इस गम्भीर सागर को कैसे पार किया जाय?

हे नाथ! नल और नील वानर ये दोनों भाई हैं, बचपन में इन्होंने ऋषि से आशीर्वाद प्राप्त किया है। आपके कृपा प्रताप से इनके हाथों बड़े-बड़े पर्वत समुद्र में बिछ जाएंगे। मैं भी आपके कृपा प्रताप से इनको यथा शक्ति सहयोग दूँगा। तब सब पार हो जाएंगे। इस प्रकार हे नाथ! समुद्र में पुल बंधने पर आपके सुयश की तीनों लोक महिमा गाएंगे। जब विभीषण प्रभु की शरण में आए तब पीछे से रावण ने दूत भेजा। वह प्रगट में राम के स्वभाव का वर्णन करने लगा तो उसका प्रभु के प्रति प्रेम बढ़वाया और कपट भूल गया। वानरों ने जब जाना कि यह रावण का दूत

है तो पकड़कर सुग्रीव के पास ले गए। लक्ष्मण जी ने जब सुना तो उसे अपने निकट बुलाया और दया करके छुड़वा दिया। वह दूत राम का यश वर्णन करते हुए लंका आया और रावण के चरणों में सिर नवाया। रावण ने हंसकर पूछाअरे सुक! तूँ अपनी कुशल तो कह? विभीषण की कुशलता भी बता जिसकी मौत निकट आई है फिर उन तपस्वियों की बात भी बता जिनके हृदय में मेरा डर हमेशा बना रहता है।

बता! उनसे भेंट हुई या नहीं! या वे मेरा यश सुनकर वापिस चले गये? क्यों नहीं कहता है? शत्रु के दल का वर्णन क्यों नहीं करता? कितना बल और तेज है। तेरा चित्त बहुत ही चकित सा हो रहा है, तूँ बताता क्यों नहीं?

हे नाथ! आपने कृपा करके जैसे पूछा है वैसे ही क्रोध तजकर मेरे वचनों को मानो! तुम्हारा छोटा भाई विभीषण जब वहां जाकर उनसे मिला तो जाते ही राम ने उसे राज दे दिया। हे नाथ! उनके दल में ऐसा कोई भी वानर नहीं है जो रण में तुम्हें जीत न सके। सब बड़े क्रोधित होकर हाथों को ऐसे मसल रहें हैं कि तुम्हें मसल दें पर सब इसी आशा में हैं कि कब हमें श्री रघुनाथ जी आज्ञा देते हैं।

राम के तेज, बल और बुद्धि की महानता तो सौ सहस्रों शेष भी नहीं गा सकते। सुक ने कहा कि हे नाथ! यह सब बातें सत्य हैं। आप अपने हठ और अभिमान को त्यागकर समझो और हे नाथ! क्रोध को त्याग कर मेरे वचनों को सुनो। राम सर्वशक्तिमान हैं, उनसे विरोध करना तज दो और इतना कहना मेरा मान लो कि श्री सीता जी को राम को दे दो।

जब सुक ने सीता जी को देने के लिये कहा तो दुष्ट रावण ने दूत को चरण प्रहार किया। तब दूत रावण को सिर नवाकर वहाँ गया जहाँ प्रभु विराजमान थे। सुक ने प्रभु को प्रणाम करके सारी कथा सुनाई तब प्रभु की कृपा से उसने अपनी पहली गति पाई। हे पार्वती! वह दूत सुक पहले ज्ञानी मुनि था किन्तु मुनि अगस्त्य के शाप से निशाचर हो गया था।

वह प्रभु के मन को अच्छा लगा, प्रभु की कृपा से मुनि देह पाकर अपने आश्रम को चला गया।

लंका काण्ड

प्रभु का नाम ही भवसागर से पार जाने का सेतु है

तीनों लोकों में विख्यात और परम पूजनीय सेतु वंदन ऐसा दिखाई देता है, यह तीर्थों का सागर महान् आत्माओं का परम पवित्र महान् है, प्रभु का नाम ही सेतु है एवं वन्दना के योग्य है। यह नामरूपी सेतु ही एक ऐसा तीनों लोकों में विख्यात एवं पूजनींय है। यह नाम परम पवित्र है और महान पातकों को नष्ट करता है। जिसे प्रथम श्री विभु जी के प्रसाद से भगवान शंभु ने उत्पन्न किया। वह नाम ही सेतु है, वही महामंत्र है जिसे स्मरण करके भक्तजन भवसागर से पार उतरा करते है।

जो संत जनों को कैवल्य दुर्लभ मुक्ति के दाता हैं और दुर्जनों को दण्ड देते हैं ऐसे महान प्रभु श्री शंकर विश्वनाथ ही मेरे कल्याण का विस्तार करें।

जामवंत ने हाथ जोड़कर कहाहे सूर्यकुल के ध्वजा राम, सुनिये! आपका नाम ही एक ऐसा सेतु है जिससे मानव भवसागर से पार हो जाया करते हैं। उसी नाम रूपी सेतु की स्थापना कीजिए!

जामवंत ने नल और नील दोनों भाईयों को बुलाया और उनकी कथा सुनकर कहा कि प्रभु के प्रताप और नाम का स्मरण करके तुम पुल तैयार करो इसमें कुछ भी श्रम नहीं है। विधाता ने आज तुम्हें बहुत बड़ा यश दिया है जो शिल्पी कार्य के लिये तुम्हें परम चतुर जाना है। तुमने बचपन में जो मुनि की आशिष पाई थी वह आज सुन्दर सुहावने अवसर पर सफल हुई है।

प्रभु के चरणकमलों को हृदय में धारण करके यह उद्यम करो कि सब जाओ और वृक्षों, पहाड़ों को ले आओ। ऐसा सुनकर वानर-भालू प्रसन्न होकर प्रभु की जय जयकार करते हुए चले। आनंदकंद सच्चिदानन्द भगवान की जय-जय कार के नारे लगाते हुए प्रभु की कृपा से वानरों का समूह विशाल पर्वत एवं वृक्ष लाकर दे रहे थे। नल और नील उन्हें झाड़ियों की भाँति लपक कर ले-लेकर पुल बना रहे थे।

भगवान श्री राम जी को विभीषण समुद्र पर पुल बाँधने का उपाय बताते हुए

वे ऊंचे-ऊंचे पर्वत एवं पहाड़ियों को खेल ही में उठा लेते हैं और लाकर नल-नील को देते हैं। तब वे उनकी रचना करते सेतु बनाते हैं।

पुल की सुन्दर रचना को देखकर प्रभु हंसकर यह वचन बोलेयह धरती परम पवित्र है, इसकी महिमा अनन्त है जिसका वर्णन करना कठिन है। यह महिमा समुद्र की नहीं, न पत्थरों की है और न ही यह वानरों की करनी ही है। मैं यहाँ स्वयंभु (शंभु) का ध्यान करुँगा मेरा हृदय ही उनका स्थान है।

यह सुनकर सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे, वे सब जाकर मारीच के स्थान में रहने वाले मुनियों को एवं आस-पास के सभी मुनियों को बुला लाये। अपने हृदय में शिव जी के ज्योतिर्मयी लिंग की स्थापना करके प्रभु ने पूजा की और बोलेहे मुनियों! शिव जी के समान प्यारा मुझे और कोई नहीं है। जो शिव जी या उनके हंस नाम से द्रोह करता है और मेरा भक्त कहाता है वह ध्यान में तो क्या स्वप्न में भी मुझे नहीं पा सकता। जो शंकर के हंस नाम से विमुख रहकर मेरी भक्ति चाहता है वह मूढ़ है, बुद्धिहीन और नीच है।

जो शंकर का प्यारा और मेरा द्रोही या शिव जी का द्रोही और मेरा दास है वह नर कल्पभर-उन्नतीस करोड़ बीस लाख युगों तक नरक में बास करता है ॥दो३१5॥

जो प्राण रूपी गंगा से अमृत रूपी जल लेकर नाम रूपी शिवलिंग पर चढ़ाता है, वह सायुज्य मुक्ति पाता है। वह अमृत शिव नाम द्वारा प्राणों की समानता से मिलता है। इसलिये जो निष्काम भाव से सेवा करता है उसे शिव जी मेरी भक्ति देते हैं। जो मेरे उत्पन्न किये गये शिव नाम रूपी सेतु के दर्शन करेगा वह बिना परिश्रम ही भवसागर से पार हो जाएगा। प्रभ ुके ऐसे रहस्यमयी वचन सुनकर सभी मुनि प्रसन्न हो अपने-अपने आश्रम में चले गये।

हे पार्वती! प्रभु की यही रीति है कि वे शरणागतों पर प्रेम करते हैं। प्रभु की कृपा से नल और नील ने पुल बांधा और उनका यश चारों ओर फैल गया। जो पत्थर स्वयं डूब जाते हैं और दूसरों को भी डुबो देते हैं, वही पत्थर नौका के समान हो गये। सब वानरों ने पुल बांधकर इतना सुदृढ़ बना दिया कि जिसे देखकर आनंदकंद प्रभु बड़े प्रसन्न हुए।

"प्रभु बोलेहे हनुमान जी! मैं जिन पत्थरों को समुद्र में छोड़ देता हूं, वे सब डूब जाते हैं इसका कारण क्या है? तब हनुमान जी बोलेहे प्रभु! आप जिन जड़ बुद्धि पत्थरों को छोड़ दोगे तो इस भवसागर में वे डूबेंगे ही। तैरेंगे तो वही जिन्हें आप अपने हाथों से, कृपा की दया दृष्टि से उठा लोगे और डूबते हुए को उठाकर बचा लोगे।"

सेतु बंध कर चढ़कर समुद्र की प्रबलता को देखने लगे। प्रभु को देखने के लिए जल में रहने वाले जीव ऊपर आए। जिनमें कुछ ऐसे भी थे जो एक दूसरे को खा जायं और कुछ ऐसे भी थे जिनसे वे डरते थे। मगरमच्छ, नाकें और भाँति-भाँति की मछलियां तथा सर्प बड़े विशाल जन्तु सौ योजन तक समुद्र में फैले थे।

प्रभु को देखकर सभी जलचर अति प्रसन्न हुए और वे इतने मस्त हो गये थे कि हटाने पर भी नहीं हटते थे। वे प्रभु के रूप को देखकर आनन्द में मग्न हो रहे थे। प्रभु की आज्ञा पाकर सेनाओं का कटक चला जिनका वर्णन कौन कर सकता है? वह सेना इस प्रकार चली कि कुछ कहा नहीं जाता। सब योद्धाओं का समुदाय गर्जना करते हुए चला जा रहा और भाँति-भाँति के नारे लगा रहा है।

पुल पर भीड़ हो गई, जिनके पास विमान थे वे आकाश मार्ग से उड़कर चले, पानी की सेना पानी पर और कुछ ऐसे भी थे जो जल में रहने वालों पर चढ़कर चले और बिना ही परिश्रम के पार हो गये।

समुद्र के जलचरों का दृश्य एवं जम्बू दीप वानर देश की सेनाओं को देखकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए। कृपालु प्रभु हंसते हुए सेना के साथ चले और समुद्र से पार हो गये। सेना को दलों की भीड़ अकथनीय थी। सब ने प्रभु के साथ जाकर डेरा लगाया तब प्रभु ने सबको आज्ञा दी कि सब जाकर सुन्दर सुहाने फल, मधुर मूल-कन्द खाओ। प्रभु की आज्ञा पाकर सभी वानर एवं भालू जहाँ तहाँ गये।

प्रभु की सेवा के लिए सभी वृक्ष ऋतु और बिना ऋतु के समय का विचार त्याग कर फले थे। वे मधुर फल खाकर, वृक्षों को हिलाते थे और उनकी चोटी लंका की ओर झुकाते थे। यदि वहाँ घूमता हुआ निशाचर मिलता था तो उसे बहुत नाच नचाते

थे। जब रावण ने सुना कि समुद्र में बांध लगाकर पुल बना लिया है। व्याकुल होकर और घबड़ा कर इस प्रकार बोला

क्या सचमुच ही राम ने, वन निधि को, नीर निधि को, जल निधि को, वर्षा के स्वामी को, समुद्र को, तोय निधि, पंक निधि, उदधि, पयोधि एवं नदियों के स्वामी को बांध दिया?

मन्दोदरी की रावण से विनय

अपने मन की व्याकुलता को देखकर रावण हंसा और भय को भुलाकर घर गया। मन्दोदरी ने जब सुना कि प्रभु खेल ही में समुद्र बांधकर यहाँ आ गए हैं तो हाथ पकड़ कर रावण को अपने घर में ले गई। उसने रावण के चरणों में अपना अंचल रखकर सिर नवाया और मधुर वचन बोलीहे पतिदेव! आप क्रोध को छोड़कर मेरी विनय सुनो।

हे नाथ! बैर उसी से करना चाहिए कि जिसको बुद्धि और बल से जीता जा सके। तुम में और राम में कितना अंतर है जितना कि एक छोटे से जुगनू और सूर्य में। हे नाथ! आप उनसे विरोध मत कीजिए। जिनके हाथ में काल और कर्म की गति है, जिसने बलि को बांधकर सहस्रबाहु को मारा वही प्रभु अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारने आए हैं।

आप सीता जी, राम को सौंप दीजिए और उनके चरण कमलों में तुम अपना माथा नवाकर, पुत्र को राज दे वन में जाकर प्रभु का भजन करो।

हे नाथ! राम दीनों पर दया करते हैं, दीन भाव से तो बाघ के सम्मुख जाने पर भी वह नहीं खाता। आपको जो भी करना था सो सब तो आप कर चुके। आपने देव, दैत्य, चर-अचर सभी को जीत लिया, पर अब इस मन को भी जीतो। संतजन ऐसी नीति का वर्णन करते हैं कि चौथे पन में राजा को चाहिये कि वन में जाकर प्रभु को भजे। सो हे नाथ! तुम प्रभु का भजन करो जो पैदा, पालन और संहार करता है।

ये राम वही हैं जो शरण में आये पर दया करते हैं हे नाथ! तुम ममता और मद को त्याग कर उन्हें भजो। जिनको प्राप्त करने के लिए मुनिजन यतन करते हैं और राजा राज्य त्यागकर बैरागी होते हैं। ये कौशल प्रदेश के राजा राम जो राज

तजकर आए हैं, ये तुम्हारे ऊपर दया करने आए हैं। यदि आप मेरी मान लें तो तीनों लोकों में यश फैल जायेगा।

ऐसा कहकर मन्दोदरी आँखों में आँसू भरकर कांपती हुई पैरों में पड़कर बोलीहे नाथ! आप राम का भजन करो तो मेरा सुहाग बना रहेगा।

तब रावण ने मन्दोदरी को उठाया और अपनी प्रभुताई कहने लगाहे प्रिया, सुन! तूँ वृथा भय मत मान, देव, दनुज, नर सब मेरे वश में हैं, तुझे किस कारण से भय उत्पन्न हुआ है? बता मेरे समान कौन योद्धा है? तब मन्दोदरी ने हृदय में जाना कि मृत्यु के वश में आकर इसे अभिमान हो गया है।

भाँति-भाँति से मंदोदरी को समझा-बुझाकर रावण फिर सभा में जाकर बैठा और सब मंत्रियों से पूछा कि अब विचार करके बताओ कि शत्रु से किस प्रकार युद्ध किया जाय? तब मंत्रिगण कहते हैंकि हे रावण! सुना! आप हमसे बार-बार क्या पूछते हो! बताओं हमें भय भी क्या है? जिस पर हम विचार करें। ये नर वानर और भालू तो हमारा आहार ही हैं।

सबके वचनों को सुनकर प्रहस्त बोलाकि हे प्रभु! नीति का विरोध मत करो! प्रभु से मत लड़ो! इन मंत्रियों की बुद्धि अति ही थोड़ी है और नीच बुद्धि है।

ये दुष्ट मंत्री सब ठकुर सुहाती कहते हैं, हे नाथ! इन बातों से पूरा नहीं पड़ता! देखो! समुद्र को लांघकर एक वानर आया जिसका गुण सब गाते हैं। इन्होंने नगर जलते देखा तब क्या इन्हें भूख नहीं थी? तब पकड़कर क्यों नहीं खाया? जिसने सहज ही पुल बांधा और सेना सहित पार उतर आए।

ऐसे मीठे वचन से सुनते हैं और कहते हैं वे मनुष्य व्यर्थ ही जगत में जीते हैं। सुनने में भले ही कठोर क्यों न हों परन्तु परम हितकारी जो वचन हैं उन्हें कहने वाले जगत में थोड़े ही होते हैं। हे प्रभु! पहले दूत भेजिए यह नीति है फिर सीता जी को देकर उनसे प्रीति बढ़ाइए। रावण क्रोधित होकर बोलाअरे पुत्र, सुन! तूँ बड़ा दुष्ट है तुझे यह बुद्धि किसने सिखाई है?

पिता के कठोर वचनों को सुनकर प्रहस्त यह कहता हुआ चला कि तुझे हित की बात ऐसे अच्छी नहीं लगती है जैसे मौत के वश औषध अच्छी नहीं लगती। लंका की पहाड़ी के ऊपर एक बहुत बड़ा अखाड़ा है वहाँ मन्दिर में जाकर रावण बैठा, उसके गुणगान किन्नर गाने लगे।

रावण का मान हनन

यहाँ पर प्रभु बहुत बड़ी सेना की भीड़ के साथ जब उतरे तो सुवेल पर्वत की एक बहुत ही सुन्दर चोटी पर जो सबसे ऊंची और समतल थी। उस पर मृगछाला बिछाकर सुन्दर पुष्पों से आसन सजाया गया था, उस पर प्रभु विराज मान थे। अंगद और हनुमान जी दोनों बड़े भाग्यशाली हैं जो प्रभु के चरणों की सेवा बड़े प्रेम से कर रहे हैं।

इस प्रकार सर्व गुणों के धाम-आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान विष्णु श्री रामचन्द्र जी के रूप में सुख पूर्वक विराजमान हैं। वे मानव भाग्यशाली हैं जो ऐसे प्रभु के ध्यान में सदा लवलीन रहते हैं।

आनंदकंद प्रभु आकाश की ओर देखकर बोलेहे विभीषण! दक्षिण की ओर देखो! बादल कैसे उमड़ रहे हैं, बिजली भी चमक रही है और बादल मीठी-मीठी गर्जना कर रहे हैं। कहीं ओलों की वर्षा तो नहीं होगी? तब विभीषण बोलाहे प्रभु! यह बादलों की गर्जना नहीं है और न बिजली ही चमक रही है, यह तो लंका के एक शिखर पर रावण का बहुत बड़ा अखाड़ा है।

उनके सिर के ऊपर जो छत्र है वह बादल की श्याम घटा है और मन्दोदरी के कानों के कुण्डल ही बिजली की तरह चमक रहे हैं। वहाँ भाँति-भाँति के ताल मृदंग आदि बाजे बजते हैं जिनकी अनुपम ध्वनि मेघ के गर्जन के समान है। ऐसा सुनकर प्रभु मुस्कराए और रावण को अभिमानी समझकर उसे चुनौती देने कि लिये एक बाण छोड़ा।

उस एक ही बाण से छत्र, मुकुट और कुण्डल, सबके देखते-देखते ही पृथ्वी पर गिर पड़े परन्तु कैसे गिरे पर मर्म किसी ने भी नहीं जाना। ऐसी करनी करके बाण वापिस तरकस में आ गया।

सब सोचने लगेन तो भूचाल ही आया और न आंधी ही आई। कोई अस्त्र-शस्त्र भी आँखों से दिखाई नहीं पड़ा, यह तो बड़ा भारी कोई अपशकुन है। रावण ने जब देखा कि सभा भयभीत हो रही है तो बात बनाकर कहने लगा किजिसके सिर कटकर गिरने पर भी शुभ ही हुआ है तो अब उस रावण का मुकुट गिरना अशुकन कैसे हो सकता है?

रावण ने सभासदों से कहा कि जाओ? अपने-अपने घर चले जाओ और शयन करो! तब सभी सदस्य सिर नवाकर अपने-अपने घर चले गये। किन्तु जब से कर्णफूल पृथ्वी पर गिरे तब से मन्दोदरी के हृदय चिन्ता बस गई। वह दोनों हाथ जोड़कर आँखों से आँसू भरकर कहने लगीकि हे प्राणनाथ! प्राणपति! मेरी विनती सुनो! हे नाथ! आप राम से विरोध करना छोड़ दो!

रघुकुल के स्वामी राम विश्वरूप हैंवे विभु विश्वव्यापी हैं। मेरी बात पर आप विश्वास करो। उनके वदन के प्रत्येक अंग में सभी ब्रह्माण्डों का निवास है, ऐसी वेद की कल्पना है।

जिनके पद से पाताल, शीश से ब्रह्मलोक और प्रत्येक अंग से अन्य सभी लोक, भृकुटि से भयंकर काल, नयन से सूर्य और चन्द्र। केश के बादल नासिकों से दोनों अश्विनी कुमार और पलकों से दिन और रात! कानों से दशों दिशाएं, स्वांस से पवन और वाणी से वेद उत्पन्न होता है। उसकी वाणी का वचन ही वेद हैं। यह सारा विश्व प्रकाश में स्थित विभु के विश्व रूप ही उत्पन्न हुआ है। ऐसे ही

जिनके ओंठ से लोभ, दांतों से विकराल काल, हंसने से माया बाहु से दिक्पाल, मुंह से अग्नि, जीभ से वरुण और उद्यम से पालन, उत्पत्ति एवं प्रलय होती हैं। जिनकी रोमावली से अष्टभार वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं, नसों से नदियां, हड्डियों से पर्वत पेट से समुद्र और कण्ठ से नीचे की इन्द्रियों से यम यातनाअधोगति उत्पन्न होती हैं। विश्वपति विभु की कल्पना से ही यह विश्व उत्पन्न होता है।

जिनका "ऽहं" भाव की शिव है, बुद्धि अजन्मा विधाता और मन चन्द्रमा तथा चित्त ही चैतन्य सूर्य की सदृश्य प्रकाश है। यह सब चर और अचर विश्व के उत्पत्ति का कारण मनुष्य रूप है। उनकों उत्पन्न करने वाला विभु का विश्व रूप ही है जो कल्पान्त में भी परम प्रकाश में रहता है। जो ऐसा विचार कर हे प्राणपति! तुम प्रभु से बैर न करो, उनसे प्रेम करो! जिससे मेरा सुहाग समाप्त न हो।

मन्दोदरी के समझाने का असर रावण पर नहीं हुआ। जैसे भले ही बादल अमृत की वर्षा क्यों न करें पर बेंत में फूल फल नहीं लगते। ऐसे ही मूर्ख का हृदय नहीं चेतता भले ही ब्रह्मा, शिव गुरु क्यों न मिले।

यहाँ प्रातः काल जब प्रभु जागे तब सब मंत्रियों को बुला कर पूछा कि कहो! क्या उपाय करना चाहिए? जब जम्बू प्रदेश का राजा एवं भगवान राम का मंत्री जामवंत सिर झुका कर बोला कि आप सबके हृदय की जानने वाले हैंहे प्रभु! आप बल, बुद्धि, तेज, धर्म एवं सर्व गुणों से उत्पन्न करने वाले हो! मैं अपनी बुद्धि से एक मंत्र कहता हूँ कि आप अंगद को दूत बनाकर भेजें।

यह मंत्र सभी ने अच्छा माना। भगवान राम ने अंगद से कहाहे बाली के पुत्र अंगद! तुम बल, बुद्धि और गुणों के घर हो। हे तात! तुम लंका में जाओ, यह मेरा काम है, मैं तुम से अधिक क्या कहूँ, मैं जानता हूँ तुम परम चतुर हो। तुम रावण से ऐसी बात करना जिससे हमारा काम हो जाये और उसका भला हो।

हे नाथ! आपके सभी कार्य स्वयं ही सिद्ध हैं परन्तु आपने अपने स्वभाव के कारण मुझे इतना आदर किया है कि जितना अपने भक्तों को देते हो। अंगद जी अपने ऊपर प्रभु की अति दया देखकर अति प्रसन्न हो पुलकायमान हो गये।

प्रभु की आज्ञा सिर पर रखकर, अंगद चरणों में प्रणाम करके उठे और बोले हे प्रभु! वही गुणों का समुद्र है प्रभु जिस पर आप कृपा करते हो।

प्रभु के चरणों की वंदना करके, उनकी कृपा को अपने हृदय में धारण करके तथा सभी को सिर नवाकर अंगद जी चले। अंगद स्वभाव से ही निडर, योद्धा, साहसी

है। उसने नगर में प्रवेश करते ही एक निशाचर को भेजकर रावण को सूचना दी। रावण सुनकर बोला-कि ले आओ! मैं देखूँ वह कहां का वानर है।

रावण की आज्ञा पाकर बहुत से दूत डरते-डरते चले और हाथी के समान पर्वताकार बलशाली अंगद को बुलाकर ले आए। अंगद ने रावण को कैसा देखा जैसा काला पर्वत हो। रावण को देखकर युद्ध में शिरोमणि महान योद्धा बाली का पुत्र अंगद मन में निःशंक होकर सभा में चला गया। अंगद को देखकर सभी राज्य सभा के सदस्य स्वागत के लिए उठे। यह देखकर रावण को बहुत ही क्रोध हुआउसे वह स्वागत बुरा लगा।

अंगद रावण संवाद

सभा के स्वागत करने पर अंगद सिर नवाकर प्रभु के नाम का सुमिरण कर सभा में इस प्रकार बैठ गया जैसे मतवाले हाथियों के दल में शेर चला जाता है।

रावण ने पूछा कि तुम कहाँ के दूत हो? तब अंगद जी बोले किहे रावण! मैं राम का दूत हूँसुनो! मेरे पिता की और तुम्हारी बड़ी मित्रता थी अतः तुम्हारे हित के लिए मैं यहां आया हूँ! तुम्हारा उत्तम कुल है और तुम मुनि पुलस्त्य के नाती हो तुमने शिव जी एवं विधाता की बहुत प्रकार से सेवा की, जिससे तुमने वरदान पाकर सब कार्य किए। सब लोकपालों को और देवलोक के राजा इन्द्र को जीता।

किंतु हे रावण! राज्य के अभिमान या मोह के कारण जगत् माता को तुम ले लाए। अब तुम मेरा उत्तम कहना मानो! तुम्हारे सब अपराध प्रभु क्षमा करेंगे। तुम दांतों में घास दबाकर, कंठ में कुल्हाड़ी रखकर, परिवार एवं रानी सहित श्री सीता जी को आदर पूर्वक आगे करके इस प्रकार भय त्याग कर चलो और कहना कि

हे शरणगतों के रक्षकप्रभु! अब मेरी रक्षा करो! रक्षा करो! ऐसे दीन वचन सुनकर दीनों पर दया करने वाले प्रभु तुम्हें क्षमा करेंगे।

हे अंगद! तूँ मुझे यह तो बता कि तेरे दल में ऐसा कौन-सा योद्धा है जो मुझसे लड़ सके। तुम और सुग्रीव दोनों ऐसे हो जैसे पानी के किनारों के वृक्ष। अब रहा

हमारा भाई सो बड़ा डरपोक है, तुम्हारा मंत्री जामवंत भी अति बूढ़ा है, वह लड़ाई नहीं जानते राजगीरी जानते हैं। हाँ, एक वानर तुम्हारे कटक में अति बलवान है, महाबीर बुद्धिमान है और शील स्वभाव का है।

जो प्रथम बार आया और नगर को जलाया। ऐसा सुन कर के बाली पुत्र हंस कर बोलाअय रावण! झूठ मत बोल! क्या यह सत्य हो सकता है? कि एक वानर तुम्हारा नगर जला जाय? ऐसा कभी नहीं हो सकता। कौन इसे सत्य मानेगा कि एक वानर तुम्हारा नगर जला दे? हे रावण! तुमने जितनी इतनी सराहना की है वह तो सुग्रीव का एक दूत है।

हे रावण! तू सत्य कहता है, तेरी यह बात मुझे बुरी नहीं लगी क्योंकि सचमुच ही हमारे कटक में ऐसा कोई है ही नहीं जो तुम जैसे नीच से लड़ते शोभा पाए।

अंगद के प्रति उत्तर सुनकर रावण बोलाअंगद! तुम्हारी जाति ही स्वामीभक्त होती है, स्वामी की भक्ति करना, उनके गुण गाना तुम्हारा जातीय गुण है तो इस प्रकार प्रभु के गुण क्यों नहीं गाओगे। मैं गुणों का ग्राहक परम चतुर हूँ इसलिये तुम्हारे कटु वचनों पर ध्यान नहीं देता हूँ। तब अंगद ने कहातेरी गुण ग्राहकता तो सच्ची है इसमें मुझे कुछ सन्देह नहीं है। हनुमान जी ने जैसा बताया अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया, तुम्हें न लाज है न क्रोध है और न मोह ही है।

रावण! तूँ बड़ा सहनशील है, हनुमान जी ने तेरा वन विध्वंस किया, तेरे पुत्र को मारा, सारा नगर जलाया तब भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ा। तेरी प्रकृति बड़ी शोभायमान है। मैं कितना बलवान हूँ शिव जी और कैलाश जानते हैं मेरी भुजाओं के बल को। मैंने सिर काट-काटकर उनकी पूजा की है।

अपने हाथ से सिर काट कर पूजा करने वाले रावण को छोटा कहता है और मनुष्य का गुण गाता है। अरे छोटे से वानर, अब मैंने तेरा ज्ञान जान लिया।

रावण की अटपटी वाणी सुनकर अंगद ने रोष में आकर कहारे अधम! अभिमानी! मुँह सम्भाल कर बोल! जिसका फरसा सहस्रबाहु, की अपार गहन भुजाओं के बल को जलाने के लिए अग्नि के समान है, जिसके फरसे की गहन धार में अनेकों

राजा डूब गये, ऐसे परशुराम का अहंकार भी जिस राम को देखते ही भाग गया, अरे अभागे रावण! वह राम क्या साधारण मनुष्य हैं?

अरे दुष्ट! राम मनुष्य कैसे हैं? क्या कामदेव देहधारी हैं? क्या गंगा नदी है? कामधेनु क्या पशु है? कल्पवृक्ष क्या वृक्ष है? अन्न खिलाना क्या दान है? अमृत क्या रस है? ऐसे ही क्या वेनतेय वाहन चालक क्या पक्षी है? सहस्रआनन क्या सर्प है? चिंतामणि क्या पत्थर है? अरे मतिमंद रावण! सुन! वैकुण्ठ कोई लोक नहीं है और राम भक्ति के समान कोई लाभ नहीं है।

अंगद द्वारा रावण का मान मर्दन

सेना सहित तेरा मान मर्दन करके, वन उजाड़कर, नगर जलाकर और तेरे पुत्र को मारकर चला गया वह हनुमान जी क्या एक बंदर हैं?

रे रावण! तू चतुराई को छोड़कर राम का भजन क्यों नहीं करता? रे दुष्ट! क्यों तू राम का शत्रु बना है? देख! जिनकी सेवा भक्ति से तूने वरदान पाये वे शिव और ब्रह्मा भी राम से विमुख होने पर तेरी सहायता नहीं करेंगे। रे मूढ़ रावण! तूँ वृथा गाल मत बजा! राम से बैर करने पर तेरी ऐसी दशा होगी कि राम के बाण लगते ही तेरा सिर कट कर वानरों के आगे गिरेगा।

क्या मरते समय भी तेरी गाल बजाई की चतुराई चलेगी? ऐसा विचार कर राम का भजन कर! ऐसे हितकारी वचन सुनकर भी रावण क्रोध से भड़कने लगा। मानों आग में घी पड़ा हो। रावण बोलारे बंदर! तूँ अब मरना चाहता है जो छोटे मुँह बड़ी बात कहता है, तूँ जिसके बल पर कटु कल्पना करता है बड़ी ढींग मारता है उसके बुद्धि, बल तेज और प्रताप कुछ भी नहीं हो, वह इन सबसे परे है।

वह राम तो निर्गुण है और उसमें मान भी नहीं है ऐसा जानकर उसके पिता ने वनवास दिया है। एक तो यह दुःख, दूसरा स्त्री का विरह और फिर दिन रात मेरा भय रहता है।

जब रावण ने राम की निंदा की तो अंगद ने क्रोधित हो दोनों हाथ पटक कर पृथ्वी पर दे मारे जिससे पृथ्वी डोल उठी, सभा सदस्य गिर पड़े। वे भागना चाहते थे पर आंधी के भय से वह भाग न सके। रावण भी पृथ्वी पर गिर पड़ा और संभल कर उठा किन्तु उसके अति सुन्दर मुकुट पृथ्वी पर गिर पड़े।

कुछ को तो रावण ने उठा कर अपने सिरों पर संवार कर रख लिये और कुछ अंगद ने प्रभु के पास भेज दिये। उनको आते देख वानर डर कर भागे और सोचने लगे कि हे विधाता! क्या ये दिन में ही तारे टूटने लगे! तब भगवान राम ने हंस कर कहातुम हृदय में डरो मत, यह तारे, वज्र, राहु और केतु नहीं हैं। यह तो रावण के मुकुट हैं जो उसके सिर के शिरोमणि हैं। ये सब अंगद की प्रेरणा से यहीं आ रहें हैं।

तब अंगद क्रोध में भरकर बोला कि अरे रावण! तुझे गाल बजाते लज्जा नहीं आती? मैं तेरे दांतों को तोड़ देता परन्तु प्रभु ने मुझे आज्ञा नहीं दी। मुझे ऐसा जोश उठ रहा है कि मैं तेरे दशों मुखों को तोड़ दूँ और लंका को समूद्र में डुबों दूँ। अंगद का ऐसा बल देखकर सभी योद्धा अपने हृदय में हार गये। अंगद के ललकार ने पर रावण स्वयं ही उठ कर चल दिया।

रावण तेज हीन हो गया और उसकी शोभा ऐसे जाती रही जैसे दिन में चन्द्रमा की। राम सब के प्राणपति और सारे जगत के आधार हैं, उनसे विमुख होकर कोई कैसे विश्राम पर सकता है? हे पार्वती! राम के भृकुटी में निवास करने पर ही सारे विश्व की उत्पत्ति होती है और फिर विनाश भी हो जाता है। जो प्रभु तिनके को बज्र और बज्र को तिनका बना देते हैं, उनके दूत को कोई कैसे जीत सकता है?

रावण के बल को विध्वंस करके अंगद जी प्रभु की महिमा को याद कर बड़े प्रसन्न हुए और पुलकायमान हो आँखों में प्रेम के आँसू भर कर प्रभु को प्रणाम किया।

अंगद ने जैसे ही सुना कि हनुमान जी लंका के गढ़ पर अकेले ही गये हैं तो खेल ही में कूद कर गढ़ पर जा चढ़ा।

अंगद और हनुमान जी दोनों दौड़कर रावण के भवन पर चढ़ गये। वे दोनों नारे लगा-लगाकर कौशलपति भगवान की दोहाई दे रहे हैं। जब कलश सहित रात महल को ढा दिया तो रावण डर गया। तब दोनों योद्धा शत्रु के दल पर गर्जे और निशाचरों को मारने लगे। किसी को लातों से किसी को चपेटों से मार-मारकर कहा कि तुमने राम को नहीं भजा उसका फल अच्छी तरह ले लो।

जो महान मुखिया निशाचरों को बुलाकर लाते थे लड़ने के लिये उन्हें प्रभु के पास भेज देते थे। उनके नाम विभीषण बताते थे तब वैर भाव से स्मरण करने पर भी प्रभु ने उन्हें अपना स्थान दिया। हे पार्वती! राम का चित्त बड़ा ही कोमल है प्रभु ने उन्हें इसलिये भी परम गति दी कि वे विरोधी दल में रहते हुए भी मेरा सुमिरण करते थे। बताओं भवानी! ऐसा दयालु और कौन होगा?

लक्ष्मण मेघनादयुद्ध, शक्ति प्रहार

मेघनाद ने जब सुना कि गढ़ को आकर फिर घेर लिया तो ऊपर से उतरा और जुझाउ बाजे सहित युद्ध में सम्मुख चला।

लक्ष्मण और मेघनाद दोनों योद्धा बड़े क्रोध में आकर एक दूसरे से भिड.गये। एक दूसरे को जीत नहीं सक रहा था तो मेघनाद छल बल करके बड़ी अनीति करने लगा। तब लक्ष्मण जी क्रोध में भर गये और उसके रथ और सारथी को नष्ट कर दिया। लक्ष्मण के प्रहार से घायल होकर वीर इस प्रकार विराज रहे थे जैसे पुष्पों से लदा हुआ पलास का वृक्ष।

लक्ष्मण जी के भाँति-भाँति के प्रहार से मेघनाद प्राण के अन्तिम छोर तक पहुँचा तो उसने अपने मन में अनुमान लगाया कि अब मैं नहीं बचूँगा मुझ पर भारी संकट है तब ब्रस्मा की दी हुई शक्ति छोड़ी। वह शक्ति लक्ष्मण जी की छाती में जाकर लगी जिससे लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये। तब मेघनाद निडर हो कर निकट आ गया। अब उसका मरने का भय जाता रहा। यह पता न रहा कि इन्हीं के हाथों मरुंगा।"

सुनो, हे पार्वती! जिसकी क्रोधाग्नि के आँसू चौदहों भुवनों को भस्म कर सकते हैं, जिसकी देव, मानव और दानव सभी सेवा करते हैं उसे संग्राम में कौन जीत सकता है? प्रभु की इस लीला को वही जान सकता है जिस पर राम की कृपा होती है। संध्या होने पर दोनों दलों के योद्धा अपनी-अपनी सेना संभालने लगे।

ईशों के ईश व्यापक विभु जो अजेय हैं। वे दया के सागर राम पूछ रहे हैं कि लक्ष्मण कहाँ है? इतने में हनुमान जी ले आए तब लक्ष्मण को देखकर प्रभु ने दुख माना। जामवंत ने कहाकि सुषैन वैद्य लंका में रहता है उसे लेने के लिए किसी को भेजिए! तब हनुमान जी साधारण भेष में गये और तुरन्त उसे घर समेत ले आए।

वैद्यराज सुषैन ने परम प्रभु के श्री चरण कमलों में सिर नवाकर दण्डवत् प्रणाम किया और कहा कि बूटी का नाम सजीवन बूटी है। हे हनुमान जी! आप जाइए और पर्वत से सजीवन बूटी ले आइए।

प्रभु के श्री चरण कमलों को हृदय में धारण करके हनुमान जी प्रभु के गुणों एवं उनकी शक्ति का वर्णन करते हुए चले। वहाँ रावण को एक दूत ने यह भेद बताया तब रावण कालनेमि के घर आया और उसे सब बातें बताईं। कालनेमि सुनकर सिर धुन-धुन कर पछताने लगा और रावण से बोला किहे रावण! तुम्हारे देखते-देखते ही जिसने सारा नगर जला दिया तो बताओ! उसका मार्ग कौन रोक सकेगा?

ऐसा कहकर भय के कारण कालनेमि चला और मार्ग में पर्वत पर सरोवर के पास बाग बनाया। हनुमान जी ने देखा कि मुनि का सुन्दर आश्रम है, बूटी पूछकर जल पीऊं तो परिश्रम दूर हो। मुनि ने कहा कि तुम पहले स्नान करके आओ तो मैं तुम्हें गुरु दीक्षा दूँगा जिससे ज्ञान की प्राप्ति होगी। हनुमान जी समझ गये और कहाकि मुनिराज! पहले आप अपनी गुरु दक्षिणा ले लो तब गुरु मंत्र देना।

ऐसा कहकर एक चपेटा ऐसा मारा कि उसके प्राण निकल गये उसे कपटी साधु जान कर हनुमान जी प्रसन्न होकर चले। पर्वत देखा पर औषध नहीं जान पाये, तब पर्वत ही उठाकर ले चले। वैद्य जी ने तुरंत ही ऐसा उपाय किया कि लक्ष्मण जी प्रसन्न होकर उठ बैठे। तब हनुमान जी ने वैद्य जी को वहाँ पहूँचा दिया जहाँ से लाए थे।

प्रभु जी लक्ष्मण जी को छाती से लगा कर मिले तो सभी भालू और वानरों के दल बड़े प्रसन्न हुए। यह समाचार जब रावण ने सुना तो वह सिर धुन-धुनकर पछताने लगा और व्याकुल हो कर कुम्भकरण के पास आया। समाधि में बैठे कुम्भकर्ण को डरते-डरते बड़े प्रयत्न से जगाया। कुम्भकरण ने रावण से पूछा कि हे भाई! तुम्हारा मुँह क्यों सूखा हुआ है?

तब अहंकारी रावण ने कुम्भकरण से सारी बातें कहींजिस प्रकार श्री सीता जी को हरकर लाया और बताया कि हे तात! अब कपियों ने सब निशाचरों का संहार कर दिया और अतिकाय, अकम्पन जैसे महान योद्धाओं को भी मार दिया। दुर्मुख जो देवताओं का शत्रु था और मनुष्यों का संहार करने वाला था वह मानवता का शत्रु था तथा बड़े-बड़े बुद्धिमान जो वीर थे वे सब अपनी छाती ठोकने वाले सबके सब मारे गये।

रावण के वचन सुनकर कुम्भकरण को बहुत दुःख हुआ और बोला कि अरे दुष्ट! तूँ जगत माता श्री सीता जी को लाकर अपना कल्याण चाहता है?

अरे! निशाचरों के राजा, तूंने यह अच्छा नहीं किया जो अब आकर मुझे भजन से जगाया। हाय रे, भाई! तूंने बहुत ही बुरा काम किया है जो मुझे पहले नहीं बताया। तूंने प्रभु से विरोध किया है। उस परम देव से जिसके शिव, ब्रह्मा और सभी सेवक हैं। मैं तुझे वह ज्ञान की बातें बताता जो ज्ञान मुझे प्रभु का नारद ने दिया था, अब समय बीत गया।

अब भी हे तात! अभिमान को त्यागकर प्रभु को भजेगा तो तेरा कल्याण होगा। रावण! क्या राम मनुष्य हैं? जिनके हनुमान जैसे सेवक हैं जिसने सारे विश्व को प्रभु के ज्ञान से जगाया है। अब तूँ अंतिम बार मुझ से मिल ले, मैं जाकर अपने नेत्रों को सफल करुँगा। श्याम कमल के समान श्यामल और बदन प्रभु को जाकर अपने नेत्रों से देखूँगा। जो तीनों तापों को हरने वाले हरि साक्षात् भगवान विष्णु हैं।

कुम्भकरण को आता देखकर विभीषण आगे आया और चरणों में प्रणाम कर के अपना नाम सुनाया। कुम्भकरण ने भाई विभीषण को राम का भक्त जानकर छाती से लगाया और अति प्रसन्न हुआ। विभीषण ने कहाहे तात! परम हितकारी मंत्रणा देने पर, उत्तम विचार बताने पर रावण ने मुझे मार भगाया है। उसी ग्लानि के कारण मैं प्रभु के पास आया तो दीन जानकर प्रभु ने मुझे अपनी शरण दी।

कुम्भकरण बोलाहे विभीष ाण! तुझे धन्य है, धन्य है, धन्य है! हे तात! तुम ऋषियों के कुल में शिरोमणियों के भी भूषण हो, जो तुमने अपने वंश को उजागर कर दिया, जो प्रभु की सेवा भक्ति में लगे हो। इतना कहकर बलवान कुम्भकरण प्रभु के पास आकर, चरणों में गिरकर बोलाहे कृपानिधान आनंदकंद भगवान! आपकी जये हो! जय हो! जय हो! इतना कहकर उसके प्राण हृदय से तेज लेकर प्रभु के ह्दय में समा गये। यह देखकर देव, नर और मुनियों ने अचम्भा माना।

जो गति निशाचरों को भयंकर और अति दुर्लभ है उस कुम्भकरण को प्रभु ने अपना धाम दिया। हे पार्वती! ऐसे प्रभु को जो नहीं भजते वे अंधे हैं।

मेघनाद का राम को नागपास से बाँधना

कुम्भकरण के अन्तर्ध्यान होने के पश्चात मेघनाद मायावी रथ पर चढ़कर आकाश में गया और प्रलयकाल के मेघ के समान गर्जना की जिससे वानरों का दल भयभीत हो गया।

मेघनादशक्ति, त्रिशूल, बाण, परिध, कृपाण, वज्र आदि भाँति-भाँति के शस्त्रों की वर्षा करने लगा और प्रचन्ड परसे एवं पहाड़ गिराने लगा। फिर वह राम से युद्ध करने लगाजब वह वाण मारता था तो वह नाग बनकर लगते थे। जिनका कल्पान्त में भी अंत नहीं होता, जो अजेय हैं और विकार रहित हैं ऐसे प्रभु भी स्वयं नागपास में बंध गये।

हे पार्वती! जैसे गरुड़ सर्पों से खेलता है ऐसे खेलकर प्रभु जगत को पवित्र करने वाली कीर्ति का विस्तार कर रहे हैं। जिससे मनुष्य प्रभु के गुण गा-गाकर भव से पार उतरें। प्रभु रण की शोभा के लिये स्वयं बंधाए हैं। यह देखकर देवताओं को अति दुःख हुआ तब नारद जी ने गुरुड़ को भेजा, वह शीघ्र ही वहाँ पहुँचा।

गरुड़ ने मायावी नागों को मार भगाया तब प्रभु को देख और माया से मुक्त होकर वानर प्रसन्न हो गये।

हे पार्वती! जिस प्रभु का नाम जपकर मुनिजन भवबंधन काट देते हैं वे विश्व में निवास करने वाले प्रभु क्या बंधन में आ सकते हैं?

हे पार्वती! सुनो! प्रभु के चरित्रों को कोई भी मन, बुद्धि, वाणी एवं तर्क से नहीं जान सकता। ऐसा विचार कर जो परम प्रेमी हैं वे सब तर्क त्याग कर प्रभु का भजन करते हैं। मेघनाद को क्रोध में भरकर आते देखकर लक्ष्मण जी ने बड़े तीक्ष्ण बाण छोड़े। बज्र के समान बाणों को देखकर वह दुष्ट मेघनाद तुरन्त ही बादलों में अंतर्ध्यान हो गया।

बादलों में छिपकर मेघनाद भाँति-भाँति के शस्त्र छोड़ने लगा। वे ऐसे छूटते थे जैसे नाग। हे पार्वती। लक्ष्मण के बाण गरुड़ के समान थे जो सब नागों को खा गये। तब मेघनाद का सारा अभिमान छूट गया। लक्ष्मण ने प्रभु के प्रताप को सुमिरन करके बड़ा तीव्र बाण छोड़ा जो मेघनाद की छाती में जा लगा। उस बाण के लगते ही मरते समय उसने सब कपट त्याग दिया

प्रभु के ध्यान में देह त्यागने पर मेघनाद की महिमा

हे राम! हे लक्ष्मण! यह कहकर प्रभु के नाम का सुमिरण करके उस विजयी मेघनाद ने प्राण त्याग दिये। यह देख कर अंगद और हनुमान जी कहने लगे कि हे इन्द्रजीत! तुझे धन्य है और तेरी माँ को धन्य है जिसने ऐसा धर्म वीर जन्मा।

मेघनाद का मरण सुनकर अपने व अपने विमानों पर चढ़कर सब देव, सिद्ध-मुनि एवं गंधर्व आकाश में आए और स्तुति करने लगे कि हे प्रभु! विश्व के आधार अविनाशी विभु! आपकी जय हो! जय हो! जय हो! आपने सब देव-मुनियों की रक्षा की। इस प्रकार स्तुति करके सब देवता जब चले गये तब लक्ष्मण जी प्रभु के पास आए और चरणों में प्रणाम किया। प्रभु ने अति प्रसन्न हो हृदय से लगाया।

प्रभु ने लक्ष्मण को कृपा दृष्टि से देखा और उनके ऊपर अपना अभय हस्त फेर कर श्रमहीन किया। लक्ष्मण का मुख प्रसन्न देखकर प्रभु ने जब पूछा तो विभीषण ने कहाप्रभु! शत्रु का वध हो गया। तब प्रभु ने अपनी कृपा दष्टि से वानर दल को देखा, वह श्रम रहित हो गये तब प्रभु ने अपने पास ही बैठाया। प्रभु की आज्ञा पाकर जामवंत एवं सुग्रीव ने मेघनाद का सिर ले लिया।

वह सिर लाकर प्रभु के सामने रखा, वानर दल उसे देखने लगे और लीलाधारी प्रभु ने भी सिर को देखकर रखने के लिए कहा। प्रभु ने हनुमान जी से कहा कि इस देह को लंका में पहुँचा आओ तब बिना ही प्रयास के देह उठाकर लंका के द्वार पर रख आए।

प्रभु की आक्षा पाकर सुग्रीव ने मेघनाद के सिर को बड़े यत्न से रखा। वानर दलों के साथ प्रभु और लक्ष्मण अति शोभा पा रहे हैं।

हे पार्वती! सुनो! इस प्रकार प्रभु ने निशाचरों का संहार कर दिया। तब देवता, ऋषि, मुनि और मनुष्य सब ही सुखी हो गये। अब वह कथा सुनो! जो लक्ष्मण जी के बाणों से विंधी हुई रक्त से भरी मेघनाद की भुजा प्रभु की प्रेरणा

से मेघनाद के आंगन में जा गिरी। वहां मेघनाद के सुन्दर महल में सुलोचना कैसी शोभायमान थी। मानों काम देव की रति से रूप और गुणों में बड़ी सुन्दर एवं बुद्धिमत्ता थी।

वह नागराजअहिरावण की पुत्री, अहिराजकुमारी जो रावण की पुत्रबधु और मेघनाद की स्त्री थी। वह रूप की खान बाला, सुलोचना चन्दन के मणि जड़ित सिंहासन पर विराजमान थी। प्रातः, मध्यान्ह, संध्यातीनों समय बड़े-बड़े विद्याधरों की स्त्रियाँ उसकी सेवा, पूजा, वन्दना करती थीं। उसके सुख और आनन्द का वर्णन करके कौन पार पा सकता है? वहाँ आंगन में मेघनाद की भुजा इस तरह गिरी जैसे देवलोक के वृक्ष की तनी कांतीमय चमकती हो।

उस भुजा को सुलोचना की निज दासी ने देखा तो रक्त से भरी देखकर सोचने लगी कि युद्ध आश्चर्य जनक हुआ है जो इस नष्ट न होने वाले मेघनाद के भी टुकड़े-टुकड़े हो गए।

उसे विश्वास नहीं हो रहा है, क्योंकि वह सुन चुकी थी कि जो भोजन, निद्रा और नारी का बारह वर्ष तक सेवन नहीं करेगा उसके हाथ से इसकी मृत्यु होगी। भुजा के रुख को देखकर सखी उठी और दौड़कर खड़ी ले आई। खड़ी हाथ में दी तो वह भुजा मणिमय आंगन में श्री लक्ष्मण जी की सुन्दर कीर्ति की महिमा लिखने लगी।

जो पैदा करने वाले, पालन करने वाले और फिर संहार करने वाले इन तीनों गुणों के स्वरूप तीन मूर्ति धारण करते हैं। जो काल के भी महाकाल हैं ऐसा शेष शारदा और शंकर जी कहते हैं। जिसका महामुनियों के हृदय आकाश में जो सहस्र कमल दल है उसके ऊपर निवास है। जो वचन, विवेक, विचार और बुद्धि से भी जाना नहीं जाता, वह अपने निज सेवकों-भक्तों के कारण लीलामयी देह धारण करता है जिस विभु का हंस नाम भवसागर से पार उतरने के लिये सेतु अर्थात् पुल है। उसी विभु स्वरूप विष्णु के अवतार हैं।

भगवान राम के दर्शनों के लिए मेरा सिर गया है और भुजा तेरे विश्वास के लिये भेजी है। इस प्रकार सारी बातें भुजा ने लिख कर बताईं तब भी सुलोचना रोती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। यद्यपि उसने यह पढ़ लिया कि राम और लक्ष्मण नाम और परमारथ स्वरूप हैं परन्तु फिर भी नारी स्वभाव के कारण सब सखियों के साथ भाँति-भाँति से रोती हैं।

उनमें एक सखी जो बुद्धिमान थी उसने समझाया कि आप तो बुद्धि की घर हैं, शोक छोड़कर पति की आज्ञानुसार कर्म करो।

सखी की बात सुनकर सुलोचना उठी और सासु-मन्दोदरी के पास गई। चरण पकड़ कर रो-रोकर भुजा लिखित सारी बातें कहीं।

सुलोचना की बात सुनकर मंदोदरी दुखित होकर बोलीहे पुत्री! अब तुम सब शोक को त्यागकर अपने पति का अनुसरण करो और अपने परलोक का साधन करो। तुम अपने पति के सिर के लिये राम के पास जाओ, संकोच त्यागकर सिर मांग लाओ। देखो! आज लज्जा का समय नहीं है क्योंकि समय बुरा आने पर गुण और दोष नहीं देखा जाता। जो उचित हो वह करो।

वहाँ तेरा ससुर विभीषण भी है, लक्ष्मण जी को तुम जानती ही हो तुमने उनके सुन्दर यश सुने हैं। जामवंत मंत्री है और सुग्रीव भी वहीं पर है, जिनके बल का अन्त नहीं वे द्विविद और मयन्द भी वहीं हैं। ब्रह्मचारी हनुमान जी को तुम जानती ही हो, वे भय को हरण करने वाले भगवान शंकर के स्वरूप हैं। सब के राजासदा नीति में निपुण भगवान राम हैं , वहाँ जाने में कहो! तुम्हें क्या अड़चन है? वहाँ जाने में तुम्हारे लिए कुछ भी क्लेश नहीं है।

तुम सब जानती हो, तुम्हारे पति की भुजा ने भी लिखा है और मैंने भी राम और लक्ष्मण जी के प्रभाव को मुनि नारद जी के वचनों द्वारा सुना है, अतः अब देर न करो।

सासु के हितकारी वचन सुनते ही राम के पास जाने का निश्चय करके सुलोचना ने बार-बार प्रणाम किया और वहाँ गई जहाँ राम और लक्ष्मण जी विराजमान हैं। यद्यपि वह सबकी जानी पहचानी थी परन्तु फिर भी कटक में प्रवेश करते समय ऐसे सकुचाई जैसे कोई अनजान हो। किन्तु जब उसने आगे बढ़कर प्रभु को देखा जो नीलकमल के समान उज्ज्वल श्याम और गौर वर्ण प्रभु विराजमान थे।

सभा के बीच शोभायमान प्रभु को देखकर सुलोचना ने अपने नेत्र सफल किए। वह पृथ्वी पर सिर टेककर दण्डवत प्रणाम करती है तब विभीषण ने उसके गुणों का वर्णन किया। वह रावण के पुत्र मेघनाद की प्रतिब्रता स्त्री है जानकर प्रभु ने उसे देखा। सुलोचना का प्रभु के प्रति अपार प्रेम है, कम नहीं, वह प्रभु को बार-बार प्रणाम करके अति दीन भाव से हाथ जोड़कर वचन बोली

हे रघुवंशियों के शिरोमणि महाराज प्रभु! मैं आप से याचना करने आई हूँ। पति की भुजा ने आपके दर्शन करने के लिए सब बातें मुझे समझा कर भेजा है।

हे प्रभु! मैं दुखिया आप के पास आई हूँ, मेरे मन में एक मात्र पति के सिर की इच्छा है। हे प्रभु! आप अन्तर्यामी हैं आपका तो न आदि है न मध्य और न अन्त ही है। सुलोचना के दीन वचन सुनकर उसके प्रेम को देख प्रभु के रोम पुलकायमान हो गये। प्रभु बोले कि आज मैं तेरे पति को जिन्दा कर देता हूं तुम जाकर सौ कल्प तक राज्य करो।

हे प्रभु! मैं जानती हूँ आप बड़े उदार चित्त हैं, सब कुछ देने लायक हैं मैंने देखा है आप बड़े दयालु हैं। हे प्रभु! मैंने भी विचार कर देख लिया है कि जीवन से ऐसा मरना अच्छा है। अब मुझे उचित नहीं कि मैं पति को उपहार में ले लूँ। मेरा भाग्य धन्य है, मैं धन्य हूँ जो मुझे आपके दर्शन मिले हैं। मैं भी अब सत साधकर, योग साधन कर आपसे मिलूंगी, जैसे संत-मुनि जन समाधि लगने पर आप से मिलते हैं।

सत के पालन करने वाले प्रभु! अब तो निर्मल गति का अवसर प्राप्त हुआ है, आप में मिल जाने पर इस दुःख सागर में फिर जन्म नहीं होता। जैसे समुद्र और समुद्र का जल।

हे सतदेव प्रभु! आप मन की जानते हैं, मेरी नैय्या को दुःख सागर से पार करो। तब भगवान राम ने सुग्रीव को बुलाकर मेघनाद का सिर मंगवा दिया। सिर पाकर सुलोचना ने अपने को कृतार्थ माना, पति वियोग भवसागर के दुःख के समान है। हे मेरे प्राण! हे सजीवन मूरि कहकर सुलोचना सिर की धूलि पोछती है।

यह सब बातें सुनकर और सिर देखकर सुग्रीव ने संशय किया कि बिना प्राण और देहके भुजा कैसे लिख सकती है? मृतक भुजा ने ऐसा ज्ञान कैसे लिखा जो श्रेष्ठ मुनिजन साधन से भी नहीं पाते हैं। जब यह सिर हंसेगा तब यह बात सत्य होगी, नहीं तो यह निशाचरों की माया है, यह सब झूठ है। तब प्रभु ने कहाहे वानर राज सुग्रीव! तर्क करना उचित नहीं है, यह सिर हंसेगा।

सुलोचना प्रभु की आत्मा को, सबके हृदय में जानकर अपने पति का वास्तविक सरूप केवल देह को न मानकर, प्रभु को ही मानती थी इसलिये कहती है कि हे नाथ! शीघ्र ही हँसो नहीं तो आपकी प्रेरणा से जो हाथ ने लिखा है उसे ये सत्य नहीं मानेंगे।

सुलोचना के वचन सुनकर शीश हँसा तब जामवंत सुग्रीव देखकर चकित हो गये। जिसका एक ही धर्म है। प्रभु को सर्व व्यापक और सब के हृदय में जान कर जो सबसे बरताव करता है। यही नियम है कि प्रभु कीपति के आत्मा-परमात्मा की सेवा पूजा करके चरण कमलों में मन बचन और कर्म से प्रेम करे तो उस पर सभी देवता, मुनि अनुकूल रहते हैं। पतिव्रत धारण करने वाली ऐसी पत्नी जिस के घर में हो उसके लिये यह बड़ी बात नहीं है। पति भी आत्मज्ञानी प्रभु भक्त हो नहीं तो उसकी पत्नी व्यभिचारिणी कहलाती है इसलिए विवाह से पहले ज्ञान का होना बहुत आवश्यक है।”

यह सत के धारण करने वाली है, उसी सत से इन्द्रजीत का सिर हँसा। प्रभु के वचन सुनकर सब ने सुख माना, हनुमान जी ने बार-बार प्रणाम किया। हे पार्वती! प्रभु की प्रभुताई यह है कि ये भक्तों को बड़ाई देते हैं। जिनकी दृष्टिमात्र से विश्व उत्पन्न, पालन और नष्ट होता है उसके लिये यह बड़ी बात नहीं है।

सुलोचना ने पति का सिर पाकर प्रभु के चरण कमलों में प्रणाम किया और बहुत प्रकार से विनती करके प्रार्थना कीहे प्रभु! मेरे हित के लिए आज की लड़ाई बंद रखिये।

सुलोचना ने विभीषण को प्रणाम करके प्रभु के चरण कमलों में ध्यान लगाया। वह विभीषण से बोली कि तुम मेरे पिता के समान और रावण के भाई हो। ऋषिकुल की लाज और बड़ाई तुम्हारे ही हाथ है। आप मुनि पुलस्तय के परिवार के दीपक हो। प्रभु की शरण में आकर आपने अपने को और परिवार को सफल बना लिया। तुम उत्तम कीर्ति वाले कार्य कर्ताओं सहित युग-युग अखंड राज्य करो।

समय और कर्म की गति को समझाकर सुलोचना गुरु आज्ञा पाकर चली। प्रभु को प्रणाम करके, सब भक्तजनों को संतुष्ट करके धीरज धारण कर सतनाम का स्मरण किया। सिर, भुजा रखकर आसन लगाकर बैठी और मन को ध्यानयोग में लगाकर योगसिद्ध की पात्र बन गई। समाधि द्वारा प्रभु में समा गई। सुलोचना का जाना सुनकर मुनि और गंधर्व विमानों में चढ़कर आकाश मार्ग से आए।

रावण का मन्दोदरी को समझाना

रावण ने जब पुत्र का बध सुना तो उसी समय मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके हृदय में बड़ा दुःख हुआ और नेत्रों में जल भर आया, मानो नागराज मणि गवां बैठा हो। रावण विलाप करके पुकारने लगा। हाय पुत्र! तुम सदैव आज्ञा का पालन करते थे। इन्द्र, कुबेर, वरुण एवं पवन भी तुम्हारे सामने रण में धीरज धारण नहीं कर सकते थे।

तुमने इन्द्रआदि सभी देवताओं को जीता, देव, मुनि, नाग सब तुम्हारी सेवा करते थे। स्वर्ग, भूमि और पाताल में भी तुम्हारे बल के सामने कोई ठहर नहीं

सकता था, तुम्हारे प्रताप से सभी तपते थे। नगर के सभी लोग व्याकुल और शोक से चिंतित हैं, सभी कहते हैं कि रावण कायर है। रानी मन्दोदरी भी छाती पीट-पीट कर भाँति-भाँति से पुकार कर रुदन कर रही है।

तब रावण ने मन्दोदरी एवं सब स्त्रियों को भाँति-भाँति से समझाया कि तुम अपने हृदय में विचारो! यह संसार नाशवान है।

पुत्र, धन और स्त्री तथा संसार के सभी सुख कैसे हैं जैसे आकाश में घटा आती है और चली जाती है। जैसे बादलों में बिजली की चमक स्थिर नहीं रहती। हे पार्वती। इस प्रकार रावण उन्हें तो ज्ञान की बातें सुना रहा है, उसकी कथा तो पवित्र है पर आप स्वयं अहंकार के कारण अपने आप ही नीच बना हुआ है। दूसरों को उपदेश देने में तो बहुत से चतुर हैं पर जो स्वयं धर्म का आचरण करें ऐसे बहुत नहीं है।

गंगा और समुद्र के संगम पर समाचार पाकर रावण गया। रावण की आज्ञा पाकर उत्तम सेवकगण दौड़े और चन्दन, अगर सुगंध धूप आदि लाए। चन्दन की संवार कर चिता बनाई मानों स्वर्ग के लिए सीढ़ी लगा दी हो। मेघनाद का क्रिया-कर्म-दाह संस्कार करके निशाचरों का राजा रावण व्याकुल होकर चिन्ता के वश में हो गया।

अग्नि संस्कार करते ही ज्वाला इतनी बढ़ गई कि उसकी लपटें आकाश से जा लगीं। वे जाते हुए दिखाई नहीं पर ब्रह्म लोक में पहुंच गईं।

अहिरावण की कथा

रावण तब विचार करने लगा और अपने मन में अहिरावण को समझकर वहाँ आया जहाँ शिव जी थे। ।दो॰५६॥

शिव मण्डप में जाकर रावण ध्यान करके प्रभु को हाथ जोड़कर प्रसन्न मन से आकर्षण मंत्र जपने लगा। हे पार्वती! वह रावण! प्रभु के चरणों का सेवक और मेरा प्रेमी है इसी से वह इतना भाग्यशाली है कि सारे देवता उसकी सेवा करते हैं।

आकर्षण मंत्र जपते ही अहिरावण का चित्त पाताल लोक के नाग लोक में भी डोल उठा। अहिरावण मन में अनुमान करने लगा कि क्या कारण है कि रावण ने मुझे दुःखी होकर पुकारा है।

जो निशाचरों का राजा है, जिसके सभी लोक वश में हैं और जीतने के लिए भी उसे कोई तैयार नहीं है फिर दुःखी क्यों है। ऐसा चिन्तन करते हुए अहिरावण वहाँ आया जहाँ शिव मण्डप में रावण रहता था। उस मण्डप की शोभा कही नहीं जाती। ऐसा लगता था कि मानों वहां साक्षात विश्वपति भगवान शंकर जी ही आ गये हों। अहिरावण ने रावण को निशाचरपति कह कर सिर नवाया और रावण ने हाथ पकड़कर दिव्यासन पर बैठाया।

तब अहिरावण ने बड़े प्रेम से रावण की कुशल पूछी। प्रथम रावण ने वह कथा सुनाई जो उसकी बहिन सूर्पणखा ने राम की महिमा, गुण और प्रभाव सुनाये थे। तत्पश्चात् वह बोला

हे तात! अब कुशल तो सब बीत गई सारी निशाचरों की सेना का नाश हो गया। जिन्हें मैंने मनुष्य समझा उन राम और लक्ष्मण ने कुम्भकरण और मेघनाद जैसों को भी मार दिया। इतना सुनते ही अहिरावण के मन में बड़ी चिन्ता हुई और सुन्दर-सुहावने, अति पवित्र वचन बोलासुन रावण! जगत में नीति सबको प्यारी है, जो अनीति करता है उसे बड़ा भारी भय रहता है।

तुमने बिना विचारे लड़ाई ठानकर सेना, कुल और सर्वस्व की ही हानि कर दी। सुन रावण! तूने मनुष्य के प्रभाव और प्रताप को नहीं जाना। जो सबसे बड़ा है उस परमेश्वर को छोटा जाना। यद्यपि मेरे लिये यह उचित नहीं कि मैं कपट करूं पर तेरे कारण मैं दोनों भाइयों को ले जाऊंगा। तुम तब समझ लेना कि मैं ले गया जब रात्रि में सूर्य जैसा प्रकाश हो।

ऐसा कह कर रावण को समझाया और सिर नवाकर अहिरावण ने अपने इष्टदेव भगवान शंकर को हृदय में धारण किया, तब भगवान राम के कटक में आया।

॥दो॰३५८॥

कटक को देखकर अहिरावण हार गया। सूर्य के घर में अंधकार प्रवेश कैसे करें? हे पार्वती! अहिरावण के मन में एक भी उपाय नहीं सूझा तब वह विभीषण का वेष बनाकर चला उसकी देह एवं रूप भी विभीषण जैसा ही था। हनुमान जी ने इस मर्म को नहीं जाना। उसने विभीषण की भांति उसकी जैसी बोली में पूछा।

हनुमान जी की स्वीकृति पाकर अहिरावण वहाँ गया जहाँ राम और लक्ष्मण दोनों रहते थे। सुग्रीव, जामवंत, नल, नील, अंगद, सुषेण इन सब योद्धाओं के बीच में रावण रूपी चंद्रमा के लिए राहू राम और लक्ष्मण एक साथ सो रहे थे। राम लक्ष्मण की दाईं ओर और लक्ष्मण जी राम की बाईं ओर ऐसे सो रहे थे जैसे माँ अपने बच्चे पर हाथ रखकर सोती है।

द्विविद मयद और वानर गण तथा गय गवाक्ष आदि वीर विभीषण साथ तथा अनेकों योद्धा सोये हुए थे। ॥दो.-३५६॥

अहिरावण ने प्रभु को प्रणाम किया और चमकते बादल के समान उज्ज्वल सुन्दर प्रभु को देखकर विचार करने लगा कि जिस विभु को ब्रह्मादि भी ध्यान में देख नहीं पाते, जिनकी पूजा करने की इच्छा भगवान शिव एवं श्रेष्ठ मुनिगण भी करते हैं। योगी, वैरागी रात-दिन जागकर जपयोग आदि करते हैं और योगी, वैरागी रात-दिन जागकर जपयोग आदि साधनों द्वारा प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। वही प्रभु विभु को विष्णु रूप में मैंने देखा है वही प्रभु जो कृपा के समुद्र और सेवक के भ्रम को दूर करते हैं वही ये राम हैं।

तब उसने विचार किया कि जो मैंने रावण से कहा उसी के अनुसार कार्य करुं तो अच्छा रहेगा। कुछ प्रभु की माया के गुणानुसार लीला दिखाई दी, कि प्रभु जान बूझकर, आँख और मुख मूंदे हुए हैं परन्तु अब ये जायें तो कैसे जायें। हे पार्वती! यह देख अहिरावण आनंद में उछल पड़ा और प्रभु को ले चला। प्रभु की माया से सब ऐसे सो गये की उन्हें चेत ही नहीं रहा। जब वह प्रभु को लेकर चला तो आकाश मार्ग से तेज प्रकाश होता गया।

अहिरावण, प्रभु को पाताल लोक ले जाते हुए

प्रभु को अपने स्थान में न पाकर सब ने सारा कटक खोजा परन्तु दोनों भाई नहीं मिले। तब सब ऐसे व्याकुल हो गये जेसे जल के बिना मछली।

हनुमान जी ने सब से कहा कि मुझे एक बड़ी दुविधा है कि कोई विभीषण के वेष में आया था और वह प्रभु के पास गया था। मेरे पूछने पर वह विभीषण की भाँति ही बोला, निशाचरों के हृदय का कपट जाना नहीं जाता। इतना सुनते ही विभीषण बोला कि प्रभु को अहिरावण ले गया।

वह अहिरावण नागलोक का राजा है, मेरे वेष और तन का कोई दूसरा नहीं हो सकता। वह महा बलवान है और सब प्रकार की माया जानता है, अवश्य उसे ही रावण ने भेजा होगा। तब जामवंत ने कहासुनो, हनुमान जी! आपको सारा जगत जानता है, हे तात! ऐसा यत्न करो जिससे दोनों भाइयों को शीघ्र ही ले आओ। वे कृपा सिंधु आनन्दकंद भगवान वहाँ नागलोक में अवश्य ही अहिरावण के यहाँ होंगे।

तब सुग्रीव ने व्याकुल होकर कहाहे तात! हनुमान जी! प्रभु के बिना जीवन को धिक्कार है, एक-एक पल युग के समान बीत रहा है। ॥दो.-३६०॥

सुग्रीव के वचन सुनकर हनुमान जी बोले कि चित्त को स्थिर और सेना को अडोल रखो, किसी तरह की चिन्ता न करो। ऐसा कहकर हनुमान जी प्रभु की इस प्रकार सुध पाकर प्रभु का सुमिरण कर तुरंत चल कर दो उड़ान में पाताल पहुंचे। साधु के रूप में हनुमान जी अहिरावण के नगर में एक विशाल ज्ञान मंदिर में गये। उस यज्ञशाला में असंख्यों प्राणी थे जिनकी गिनती करना असम्भव था।

उन्होंने भाँति-भाँति के मेवा पकवान ला-लाकर यज्ञ स्थान में चढ़ाए और हनुमान जी की पूजा करके जो पकवान चढ़ाते थे उनके मुँह में जाता था। जो कुछ भी चढ़ावे में था उसमें से पकवान और मिठाई सब हनुमान जी ने खा लिया। अहिरावण ने जब जाना कि यज्ञ सफल हो गया, हनुमान जी प्रसन्न हैं तो तुरन्त ही जाकर भगवान राम और लक्ष्मण जी को ले आया।

हनुमान जी का नागलोक से प्रभु को लाना

हनुमान जी को पहले ही सत्संग भवन में बैठा देखकर लक्ष्मण जी मुस्कराकर राम को देख रहे हैं और राम तिरछी दृष्टि से हँसते हुए मुस्कराकर अहिरावण को देख रहे हैं। हे पार्वती! मन लगाकर सुनो! ऐसे लीलाधारी-खिलाड़ी प्रभु की लीलाओं के लिए क्या कहा जाय।

जब प्रभु ने हनुमान जी को साधु रूप में देखा तो कृपासिंधु प्रभु हंसे और विचारकर बोले कि सारा जगत हमारा नाम जपता है, हमारा न कोई शत्रु है न मित्र! तब हनुमान जी ने अहिरावण से कहा कि तूंने यह अच्छा काम नहीं किया कपट का वेष बनाकर प्रभु को ले आया। इतना कहकर हनुमान जी प्रभु को साथ लेकर चल दिये और सारा समाज देखता ही रह गया।

तब हनुमान जी प्रभु को लेकर दल में आए। उन्हें देखकर सभी अति प्रसन्न हुए जैसे मृतक शरीर प्राण पाकर, सर्प खोई हुई मणि पाकर और बिछड़े हुए मिलने पर सुखी होते हैं। सुग्रीव और विभीषण आनंदकंद प्रभु के श्रीचरण कमलों में दण्डवत् प्रणाम करके मिले।

जामवंत अंगद सहित सब वानर-भालू मिले तब प्रभु ने सबका प्यारे वचन कहकर सम्मान किया। ॥दो३६३॥

तत्पश्चात सभी ने हनुमान जी से मिलकर कहा कि हे तात! आपने हमारे प्राण रख लिए। ऋषिमुनि-सब देवताओं ने पुष्पों की वृष्टि कर के सम्मान हो कर दुंदुभी बजाई। लक्ष्मण सहित राम प्रसन्न होकर बोलेहे पवन सुत! तुम्हारे समानदेव-मुनि-सिद्ध आदि जितने भी देहधारी हैं ऐसा उपकारी कोई नहीं हो सकता, जो उपकार तुमने किया है।

हे हनुमान जी! तुम्हारा यश तीनों लोकों में छाया हुआ है, जो सारा जगत हमारा नाम जपता है। ऐसा सुन हनुमान जी सिर नवाकर बोलेहे नाथ! जो कुछ करते हो सो आप ही करते हो। मैं किस गिनती में हूँ। नौका अथाह जल देखकर ही चलती

भजन और ध्यान में शिव विष्णु की एकता

है ऐसे ही हे प्रभु! आप के ही प्रताप से सब कुछ होता है। यह सुन कर प्रभु ने श्री हनुमान जी को छाती से लगाया और कटक सहित दोनों भाई अति ही प्रसन्न हुए। हे पार्वती! उस समय के सुख का वर्णन हो नहीं सकता।

हे पार्वती! अंगद और हनुमान के समान कोई भाग्यशाली नहीं है जो प्रभु के चरण कमलों को अपने हाथों में लेकर बड़े प्रेम से सेवा करते हैं। "प्रभु की चरण सेवा बड़े भाग्यशाली को मिलती है।"

लक्ष्मण जी एवं विभीषण ने वानर नारान्तक की करनी सुनाई कि शिव जी के प्रताप से इसका बहुत प्रताप बढ़ गया है यह मरता नहीं है, बहुत दुःख देता है। उनके ऐसे वचन सुनकर प्रभु मुस्कराए और अत्यन्त प्यार से वानर नारान्तक की भक्ति का वर्णन किया और बोलेसब सुनो। मैं और शंकरहम दोनों दो नहीं हैं, दोनों एक ही हैं जिनके मन में भेद है वे अज्ञान के वश में हैं।

जो शिव-भक्ति का सुमिरण करते हैं वे भवानी-शंकर को उन्हें मेरे प्राण जानें। जो शिव को भजते हैं वे मुझे भजते हैं, मुझसे शिव जी न्यारे नहीं हैं। ।।दो३६६।।

जिसके हृदय में शिव-शक्ति नाम के दो अक्षर बसते हैं उसके पास सदैव ही शंख, चक्र, गदा और पद्म- ये चारों पदार्थ रहते हैं। जिन शिव जी ने सदा ही मेरा प्रण निभाया है वे अब भी पूरा करेंगे, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है, वे विजय अवश्य ही देंगे। शंकर के सतनाम के सुमिरन से ही पारिवारिक सुख, विजय और ऐश्वर्य की प्राप्ति निश्चय ही होती है। मेरी भक्ति शंकर भजन के आधीन है जिस प्रकार मछली का जीवन जल के आधीन है।

यदि शिव जी की कृपा से नारान्तक का ऐसा प्रभाव है तो इसमें आश्चर्य क्या है? मुझ पर भी शिव जी का अति ही स्नेह है। तुम सब सदा एक विश्वनाथ का ही सुमिरण करो और कपट त्यागकर श्रद्धा भक्ति से माथा नवाओ। तुम धीरज धरो जीत अवश्य ही होगी और सब सुख का अनुभव करोगे। मेरे दास जो उपासना करते हैं वह शिव जी की ही उपासना है। हे तात! हृदय में निश्चय करो।

हे लक्ष्मण! जो मानव मेरी भक्ति चाहे वह छल कपट त्यागकर शिव-पार्वती के चरणों में दिन रात मन लगाए। ।।दो३६७।।

शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिंकल्प भरि, घोर नरक में बास।।

शिव विष्णु के ध्यान एवं भक्ति से ही सफलता

जिसको मन, कर्म और वचन से शिव जी के चरणों की आशा है उसके ही हृदय में सब सद्गुण बसते हैं। जो निर्भय होकर शिव जी के चरणों में प्रेम करता है, मैं लक्ष्मी सहित उसके हृदय में सदैव ही बसता हूँ। जो बुद्धिमान पुरुष शिव जी की सेवा पूजा करते हैं। वे बिना ही परिश्रम के भवसागर से पार उतरते हैं। भक्तों को पार लगाने वाले गुरु शिव जी कल्याणकारी शंकर हैं। संसार के दुःखों को दूर करने वाला यह मुक्ति का दाता-हितकारी सतोपदेश प्रभु ने अपने भाई लक्ष्मण और सखा सुग्रीव एवं विभीषण को सुनाया।

प्रभु के अमृतमय वचन सुनकर सब ने सुख पाया। लक्ष्मण जी ने आदर सहित प्रभु को सिर नवाया। अंगद, हनुमान, नल, नील, सुग्रीव, जामवंत और विभीषण इन सातों ने बड़े आदर सहित प्रभु के मुख से शिव जी का यश सुनकर एवं राम और शिव में कोई अन्तर न समझ कर एक ही भाव से भय त्याग प्रसन्न होकर नाम का सुमिरण किया।

जो आपका नाम निरंतर जपता है, हे प्रभु! वही आपको जानता है। प्रभु की कथा एवं सुन्दर इतिहास सुनते हुए दो पहर रात्रि बीत गई। ॥दो॰ ६८॥

हे पार्वती! राम का यही स्वभाव है कि वे अपने भक्त का प्रेम कभी नहीं छिपाते। लक्ष्मीपति भगवान विष्णु मुझे अपना ही रूप जानते हैं इसीलिए बार-बार वर्णन करते हैं। प्रभु के ऐसे सुंदर पवित्र वचन सुनकर हनुमान जी के साथ सुग्रीव का पुत्र नारान्तक प्रभु के निकट आया और अति प्रेम भरे भाव से प्रणाम किया। तब दधीबल ने प्रभु को कृपा सिंधु कृपा का घर देखा और अपने भाई को देख अति प्रसन्न हुआ।

प्रभु उन्हें अपने पास बैठाकर बैठे, उसी समय सुग्रीव भी वहाँ आया और पुत्र को प्रभु के पास बैठा देखकर आश्चर्य सहित अति ही प्रसन्न हुआ। पिता-पुत्र के मिलने का जो प्रेम था वह कहा नहीं जाता। नारान्तक ने देखा कि भाई दधिबल जो मेरे गुरुभाई भी हैं यहाँ बैठे हैं तो अति प्रसन्न होकर मिले और एक-दूसरे की कुशल पूछी। दोनों ने अपनी-अपनी दशा की जो महानता थी वह बड़े प्रेम से वर्णन की।

इस प्रकार अंगद, नारान्तक, दधीबल सब परस्पर मिलकर अति प्रसन्न हुए। जब प्रातः हो गया तब स्नान करके सब ने प्रभु को प्रणाम किया ॥दो॰६९॥

अहंकार के कारण नारान्तक का वध

भगवान राम ने कहादधीबल तुझे धन्य है, तेरी भुजाओं को धन्य है त ूँ ने युद्ध में बड़ा पराकर्म दिखाया। वानर की स्तुति सुनकर वानर-नारान्तक क्रोधित हो गया कि मेरी प्रशंसा न करके मेरे सामने इसकी प्रशंसा करते हैं। यह सहन न करके नारान्तक दधीबल को लेकर आकाश में उड़ गया जब सात योजन ऊपर आकाश में पहुँचा तो दधीबल ने प्रभु का हृदय में सुमिरन करके नारान्तक को पृथ्वी पर दे पटका। तब मरते समय नारान्तक ने प्रभु को पुकारा और नाम का सुमिरन करके देह त्याग दी।

नारान्तक को मरा जानकर उसका सिर हाथ में लेकर दधीबल ने रुंड को लंका भेज दिया और वहाँ गये जहां पापों के हरने वाले प्रभु विराजमान थे। जब दधीबल प्रभु के पास आया तब उसको देखकर प्रभु प्रसन्न होकर बड़े प्रेम से मिले। प्रभु परमकृपालु हैं नित्य कृपा करना ही उनकी रीति है।

प्रभु की आज्ञा पा कर, थकान मिटा कर दधिबल ने प्रभु के चरणों में प्रणाम करके नारान्तक का सिर प्रभु के आगे रखा।

प्रभु की आज्ञा पाकर सुग्रीव ने वह सिर यतन पूर्वक रखा, प्रभु को अपने अनुकूल देखकर दधिबल ने अपना जन्म सफल जाना और शोक रहित हो गया। आँखों में भरकर हाथ जोड़कर और भक्ति के रस में सराबोर करके दधिबल वचन बोलाहे विश्वात्मा आपका यह स्वभाव है कि आप सदैव दीनों का सम्मान करते हो।

दधिबल को अभिमान रहित जानकर दीनदयालु प्रभु ने फिर उसका सम्मान करके कहाहे वत्स! तूँ वर मांगले! जो तुझे अच्छा लगे। प्रभु के प्रेम भरे वचन सुनकर दधिबल ने अपनी विनय सुनाई। हे नाथ! तुम्हारा रूप, गुण और नाम निरन्तर मेरे हृदय में रहे। प्रभु ने ऐसा ही हो कहकर कहा कि यह वर तो तुम्हें प्राप्त हुआ परन्तु मेरी इच्छा है कि तुम और भी कुछ लो।

हे तात! तुम विस्वावलपुर का राज्य प्रसन्न मन से करो। जितने भी सब कार्य हैं उन्हें छोड़ करके जगदम्बा माँ पार्वती एवं भगवान शिव जी के चरण कमलों में दृढ़ भक्ति रखो।

विन्दुमति की कहानी

अपनी-अपनी दशा विसारकर विंदुमति आदि नारान्तक की पत्नियां व्याकुल होकर पृथ्वी पर लोट रही हैं।

मन्दोदरी आदि निशाचरियां भी शोक समाज में दुःख से ऐसे भरी हैं जैसे शोक रूपी समुद्र में छोटी सी लंका रूपी नवका में चढ़ी हों उन्हें डूबते हुए जान, कोई उपाय न पाकर मन्दोदरी सबको समझाती है और विंदुमति का हाथ पकड़कर अपने पास बिठाकर सुलोचना की कथा सुनाती है कि वह किस प्रकार अपने पति के लिये प्रभु के पास गई।

मंदोदरी से सुलोचना की उत्तम पवित्र करनी सुनकर नारान्तक की पत्नी विंदुमति धीरज धारण कर सबको समझा बुझाकर मंदोदरी के पांवों में लगी। वह सब धन और धाम को त्यागकर अपने पति के प्रेम में मग्न होकर बोलीहे माता! तुम शीघ्र ही ऐसा प्रयत्न करो जिससे मैं अपने पति के धाम में जाकर मिलूं। मन्दोदरी ने कहाविंदुमति! सुनो! तुम वहाँ जाओं जहाँ प्रभु रामचन्द्र जी विराजमान हैं और कोई उपाय नहीं।

जिस प्रकार सुलोचना प्रभु के पास गई, तूँ भी वहाँ जाकर भय त्यागकर उनके चरणकमलों का दर्शन करके पति का सिर मांग ला।

सास का वचन सुनकर प्रभात हुआ जान विंदुमति अति पुलकायमान होकर उठी और अपना विमान मंगाकर उसमें अपने ही हाथों से पति की देह चढ़ाकर अकेली ही चलने लगी तो उसकी सौत चित्ररेखा भी आ गई। दोनों ने आकर प्रभु से प्रार्थना की। हे प्रभु! हम नारान्तक की पत्नियां हैं, आपकी शरण में आई हैं। हे शरणागतों के भय को दूर करने वाले प्रभु। हमें दर्शन दीजिए।

उनकी विनय को सुनकर प्रभु अपने हृदय में मुस्करा कर सखा सुग्रीव से बोले कि इन्हें वहीं पर रोको। तब विंदुमति और चित्ररेखा दोनों ने कहाहे वानराधीश ! हमारी यह विनती सुनो, आप प्रभु से हमारी विनय सुना कर कहो कि क्या कारण है? जो हम दर्शनों से वंचित हैं। जब उनकी विनय प्रभु से सुनाई तो उनकी करनी को देखकर प्रभु अति प्रसन्न हुए।

हे पार्वती! प्रभु का चित्त बड़ा कोमल है ऐसा संत, ज्ञानी और वेद वक्ता कहते हैं। पर इनको प्रभु दर्शन नहीं दे रहे हैं इसका भेद सुनो!

उनके प्रेम की परीक्षा लेने के लिए प्रभु समरभूमि में भक्तों को सुन्दर सुख देने वाली लीलाएं दिखाकर भक्ति का प्रभाव दिखा रहे हैं। प्रभु ने सखा सुग्रीव को समझाया और फिर उनके पास नल को समझाकर भेजा। नल ने कहाहे नारान्तक की नारियाँ सुनो! प्रभु तुम्हें दर्शन देना नहीं चाहते इसलिए तुम मेरा कहना मानकर अपने घर को चली जाओ। तब वे सयानी, बुद्धि मति रानियाँ अति सुन्दर प्यारे वचन बोलीं

हे नल! हम अबला प्रभु के दर्शनों के लिए आई हैं, अब नयन सफल किये बिना कैसे जायें? हे उमा! यद्यपि नाथ उन्हें दर्शन नहीं दे रहे हैं तब भी निकट जाकर वे विनती करती हैं। हे आरत बंधु! अब विलम्ब न कीजिए। कृपा करके दर्शन दीजिए! आपने गौतम के आश्रम में रहने वाली अहल्या को तारा और शबरी का निस्तार किया।

हे भगवान! आपने ऐसे कितने ही भक्तों को तारा और पार लगाने में आप को बड़ा कष्ट हुआ होगा। ऐसा जानकर ही आप मेरे लिये आना कानी कर रहे हो क्या?

प्रभु मुस्कराकर रह जाते हैं, उत्तर नहीं देते, उनके प्रेम की परीक्षा ले रहे हैं। वे दोनों नारान्तक की स्त्रियाँ विकल होकर बारम्बार विनय करती हैं। हे प्रभु! आपका अवतार धर्म की धुरी को धारण करने के लिए हुआ है और हमारा तो एक मात्र स्वामी की सेवा करना ही धर्म है। हम पति के अंदर परमात्मा को ही जान कर सेवा करती हैं। यदि हम सच्ची हैं और आप सच्चे स्वामी हैं तो हे अन्तरयामी भगवान! हम पर शीघ्र ही दया करो।

हे प्रभु! हमारे पति का प्राण आप में लीन हो गया, हम उनका आधा भाग हैं। अब बताइए। हम कहाँ जायें? इस प्रकार विनय करके प्रीति, सत और धर्म जनाकर प्रेम वश पृथ्वी पर गिर पड़ीं। हे पार्वती! सती विंदुमती की ऐसी निराश, विनययुक्त वाणी सुनकर प्रभु प्रसन्न हो बोलेहे विन्दुमति तूँ परम चतुर, बुद्धिमान है, तेरा प्रेम पति के चरणों में दृढता से समाया हुआ है।

अब तुम धीरज धरो, डरो मत, अपने पति को लो और घर में सुख से रहो। विंदुमती ने कहाहे प्रभु! आपने हमारे लिये अच्छा कहा परन्तु हम भी अब अपने हृदय का भाव कहती हैं। हे नाथ, गिरिजा सहित परम वैरागी भगवान शिव जी आप के दर्शन के प्रेमी हैं। नारद आदि मुनि सनक आदि संत ये सब जितने भी सिद्ध पुरुष हैं, आपके दर्शन के लिये जप ताप ध्यान योग करते हैं।

वे तपधारी भी हमारी तरह नेत्र भरकर आपके चरण कमलों के दर्शन नहीं कर पाते। आप के लवलेश मात्र दर्शन भी हों तो उनके समान सारे नहीं जगत के सुख भी नहीं हो सकते। हे प्रभु! हमारी यही विनय है, पेट भरकर अमृत खाने पर विष कौन खाएगा? सो हमारी तो आपसे यही विनय है। आप पति का सिर शीघ्र मंगा दीजिए! हे दया और शील के सागर, देवताओं के स्वामी! शीघ्र ही दया करें!

तब लक्ष्मीपति सतनारायणसतदेव भगवान विष्णु रूप राम ने नारान्तक का सिर मंगा दिया। सिर पाकर विंदुमती प्रसन्न होकर बोलीहे हृदय के स्वामी!

हे नाथ! हम एक विनती और भी करती हैं। ज्योति के बिना हम कैसे जरेंगी? कैसे आप में लीन होंगी? यह भी दया कीजिए। तब प्रभु ने कहाविभीषण! सुनो! यह बड़ा भारी हितकर उपदेश है तुम इसका हित करने के लिए जहाँ चाहे वहाँ दाह संस्कार का भार लेकर इस के साथ जाओ! विभीषण ने जहाँ सुलोचना ने देह त्याग किया था वहीं पर सुन्दर चिता का निर्माण किया।

रावण स्त्रियों सहित वहाँ गया जहाँ विंदुमति और चित्र रेखा थीं। उन्हें दुःखी देखकर ज्ञान-विज्ञान में निपुण विंदुमति ने सुंदर कथाएं कहकर सबको समझाया और नाम का स्मरण करके प्रभु की ज्योति में समा गईं। उनकी रुचि देखकर दीनों पर दया करने वाले प्रभु ने कहाशिव जी का परम यश गायन करो।

हे पार्वती! यह सुन्दर सुहावना पवित्र चरित्र मैंने प्रभु की कृपा से तुम्हें कह कर सुनाया है। अब दूसरा चरित्र आगे जो हुआ सो सुनो! मैं तुम्हारी प्रीति देखकर कहता हूँ।

राम का रावण से युद्ध एवं विजय रथ

योद्धाओं को बुलाकर रावण ने कहा कि युद्ध में जाकर जिसका मन डोला तो अच्छा है कि वह अभी भाग जाए, युद्ध में जाने पर भागने से भलाई नहीं है। ऐसा कहकर वायु के वेग से चलने वाला रथ सजाया, युद्ध के सभी बाजे बजे। यह समाचार जब सब वानरों को मिला तो प्रभु की दोहाई देकर दौड़े।

दोनों ओर के योद्धा जय-जयकार करके अपनी-अपनी जोड़ी चुन कर इस ओर राम के गुण और उस ओर रावण का बखान करके भिड़ गये।

सभी वीर सिंह जैसी गर्जना कर अपने-अपने बल के पुरुषार्थों का वर्णन करते हैं। रावण अहंकार के रथ पर चढ़ा है जिसमें काम, क्रोध, मद और मोह के घोड़े जुते हैं पर राम के पास कोई मद नहीं यह देखकर विभीषण अधीर हो उठा। प्रीति अधिक होने से मोह के कारण सन्देह हो गया तब चरण वन्दना करके स्नेह से कहाहे नाथ! आपके पास न रथ है न चरणों में पद रक्षक ही हैं तो फिर इस बलवान को बिना किसी मद और पद के कैसे जीतेंगे?

कृपासागर प्रभु ने कहाहे सखा! जिससे जय होती है वह रथ दूसरा ही है। जिस रथ में सहन और धीरज के पहिये हों, सत्य और शील के ध्वजा और पताका हों। जिसमें मनोबल, विवेक, इन्द्रिय दमन और परहित ये चार हों तो समता, क्षमा और कृपा रूपी रस्सी से जुड़े हों। जिसका सारथी बुद्धि हो जो प्रभु भजन में चतुर हो, वैराग्य की ढाल और सन्तोष की तलवार हो।

दान रूपी परसा, ज्ञान रूपी प्रचन्ड शक्ति और विज्ञान रूपी धनुष हो। जिसका निर्मल-अचल मन ही तरकस हो, संयम-नियम आदि अमोघ बाण और साधु तथा गुरु पूजा में अभेद ही कवच हो। इसके समान विजय का दूसरा कोई उपाय नहीं है। हे सखा! ऐसा धर्ममय रथ जिसके पास हो, उसको जीतने के लिये कहीं भी कोई शत्रु है ही नहीं।

हे धीर बुद्धि सखा, सुनो! जिसके काम क्रोध, मद और मोह सेनापति हैं वह संसार अजेय है उसे वही जीत सकता है, वही बड़ा भारी वीर है, जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो।

प्रभु के ऐसे वचन सुनकर विभीषण अति प्रसन्न होकर प्रभु के चरण कमलों में प्रणाम करके बोलाहे प्रभु! इस रथ के बहाने मुझे आपने कृपा करके परम सुखदाई उपदेश दिया है।

क्रोध में आकर अहंकार वश रावण ने प्रिय वचन भी बज्र के समान छोड़े। जो रावण के मुख से स्तुति के रूप में भाँति-भाँति के निकले थे वे सब दिशाओं में, आकाश में छा गये। प्रभु ने अपने स्वभाविक बाणों जो अग्नि के समान थे रावण के पापरूपी बाणों को काट दिया। तब रावण ने खिसिया कर अपनी सारी शक्ति लगाई, किन्तु प्रभु ने अपने स्वभाव के साथ ही सब वापिस भेज दी। "यहाँ वचनों को बाण कहा है जो हृदय में घाव करते हैं और मरहमपट्टी भी कर देते हैं।"

तब रावण ने करोड़ों चक्र चलाए और त्रिशूल जो तीनों प्रकार की वेदना होती हैं पहुंचाई परन्तु प्रभु ने वे सब चक्र और शूल बिना ही प्रयास के काट दिए। जब रावण के मन का रथ-मनोरथ नष्ट हो गया तब रावण बुरी तरह गर्ज कर बबकारने लगा। जब उसके अन्दर का बल थक गया तो अनर्थ करने पर तुल गया और नाना प्रकार के शस्त्रों की उलटी सुलटी बौछार करने लगा।

प्रभु ने ज्ञान रूपी धनुष तानकर कानों तक बड़े कठिन शब्द रूपी बाण छोड़े और वे ऐसे चले जैसे लहराता हुआ सर्प चलता है।

रावण ऐसा अभिमानी था कि उसका अहंकार जैसे-जैसे प्रभु हरते थे वैसे ही उसके अहंकार रूपी सिर बढ़ते जाते थे। जिस प्रकार विषय भोगों के सेवन से नई-नई काम शक्ति उत्पन्न होती हैं। प्रभु ने कान तक धनुष खींचकर एक तीस बाण छोड़े वे ऐसे चले जैसे काल और नाग दौड़ते हैं। रावण की राज्य सभाओं का बल जो बीस भुजा थीं और दश मुख जो चार वेदांग छः शास्त्र कंठस्थ थे, जो ज्ञान का मिथ्या अभिमान था, उसके ज्ञान अमृत रूपी नाभी के कुण्ड को प्रभु ने एक ही वाण में नाभि के अमृत

कुण्ड को सोख लिया और दूसरे बाणों से रावण के अभिमानी सिर और शक्तियाँ रूपी भुजाओं को काट दिया। उसका तेज प्रभु के मुख में समाया देख ब्रह्मा और शिव जी प्रसन्न हुए। सिर और भुजाओं के बिना उसका रुण्ड नाचने लगा। मन्दोदरी के सामने सिर और भुजाएं रखकर सर प्रभु के पास आ गये। उनके उन अद्भुत सिरों को कोई ग्रहण न कर सका।

विभीषण को राजतिलक

पति की गति देखकर मन्दोदरी रोती हुई पुकार-पुकार कर कहती हैहे नाथ! तुम्हारे बल से पृथ्वी डोलती रहती थी, अग्नि और चन्द्रमा की करनी तुम्हारे सामने तेज हीन थी और सारे जगत को तुम्हारी प्रभुताई विदित है। तुम्हारे पुत्र, परिवार के बल का वर्णन नहीं किया जाता फिर भी तुम काल के वश हो गये। हे पतिदेव! तुमने मेरा कहना नहीं माना और सारे जगत के पितापरमेश्वर को मनुष्य समझा।

जो निशिचर रूपी वन को जलाने में अग्नि रूप स्वयं साक्षात भगवान विष्णु हैं उन्हें तुमने मनुष्य जाना! जिन्हें देवता, ब्रह्मादि सभी सिर झुकाते हैं, हे पति देव! तुमने उस प्रभु को नहीं भजा और जीवन भर मुनियों से द्रोह करके घोर पाप में अपने ऋषिकुल को डुबा दिया। तुम्हारे जैसे अर्धम को भी अपना धाम दिया। ऐसे पूरण ब्रह्म को मैं अब प्रणाम करती हूँ। "मैं पाप से नहीं छुटी पर प्रभु ने छुटा दिया।"

अहो हे नाथ! आनंदकंद कृपासिंधु के समान प्रभु कौन होगा, जो गति योगी जनों को भी दुर्लभ है वह गति तुम्हें दे दी।

मन्दोदरी आदि सब नारियाँ रावण को तिलांजलि देकर प्रभु के गुण गणों को गा गाकर मन में वर्णन करती हुई अपने घर को चली गई।

विभीषण ने आकर प्रभु को प्रणाम किया तब राम ने लक्ष्मण को बुलाकर कहाकि तुम, सुग्रीव, अंगद, नल, नील जामवंत और हनुमान जी सब मिलकर विभीषण के साथ जाओ। विभीषण को राजतिलक देना और कहना कि राम की आज्ञा है, मैं पिता जी के वचनानुसार नगर में नहीं आऊंगा। अतः अपने ही समान भाई लक्ष्मण जी को, हनुमान जी को सबके साथ भेज रहा हूँ।

प्रभु की आज्ञा पाकर तुरन्त सभी चले और जाकर तिलक की तैयारी की। आदर सहित विभीषण को सिंहासन पर बैठाकर स्तुति करके नियमानुसार तिलक किया और सभी ने हाथ जोड़कर सिर नवाए। तब विभीषण के साथ प्रभु के पास आए और राम ने मधुर वचन कहकर सबको प्रसन्न किया, सबको बुलाकर आशीर्वाद दिया।

हे पार्वती! भले ही कोई कितना ही योग साधन, नाम का जप, दान, सेवा में तप, भाँति-भाँति के यज्ञ, व्रत और नेम आदि करे परन्तु प्रभु वैसी कृपा उसके ऊपर नहीं करते जैसी निष्काम प्रेमी पर करते हैं।

तब भगवान राम ने अंगद और विभीषण को बुलाकर कहा कि तुम हनुमान जी के साथ जाओ और आदर सहित श्री सीता जी को ले आओ। आज्ञा पाकर सब तुरन्त ही वहां गये जहाँ श्री सीता जी थीं। उनकी सेवा में सब सेविकाएं लगी थीं, उन्होंने बड़े विनय भाव से भाँति-भाँति के भूषण पहिनाए और फिर सुन्दर पालकी सजाकर ले आए।

उस पालकी पर श्री सीता श्री आनंदकंद प्रभु का सुमिरन करके चढ़ीं। श्री सीता जी के दर्शन करने के लिए सभी उमड़ पड़े तब भीड़ पर काबू पाने के लिए रक्षकों ने प्रतिबंध लगा दिया। प्रभु ने हंसकर कहा कि सखा! मेरा कहना मानो! श्री सीता जी को पैदल आने दो जिससे सब अपनी माँ के दर्शन कर सकें। ब्रह्माण्ड नायक श्री रामचन्द्र जी ने यह आज्ञा प्रसन्न होकर आज्ञा दी।

श्री सीता जी के साथ प्रभु की शोभा अति अपार थी, सभी वानरगण दर्शन करके आनंदकंद भगवान की जय-जयकार के नारे लगाकर अति प्रसन्न थे।

प्रभु के प्रेम में पुलकायमान होकर ब्रह्मा ने विनती की। आनंदकंद शोभा के सागर प्रभु का दर्शन करके नेत्र नहीं अघा रहे हैं। भाई लक्ष्मण सहित श्री सीता जी और भगवान राम के दर्शन करके, कौशल प्रदेश के राजा की शोभा को देखकर देवताओं के राजा ने स्तुति की और अति अप्रसन्न हुए।

जब सब देव, मुनि, गंधर्व आदि भक्तगण पुष्प बरसा कर अपने-अपने विमानों पर चढ़कर अपने-अपने स्थानों को चल दिये तब शुभ अवसर देखकर प्रभु के पास भगवान शंकर जी आ गए। उन्होंने कहाहे नाथ! जब कौशल प्रदेश का आपको राजतिलक होगा तब मैं आपकी लीलाओं को देखने के लिए अवध पर में अवश्य ही आऊँगा।

राम का अयोध्या के लिए प्रस्थान

प्रभु की आज्ञा पाकर अनेक प्रकार से विनय करते हुए हर्ष विषाद सहित प्रभु के स्वरूप को हृदय में रखकर चले।

वानर पति सुग्रीव, अंगद, रीछपति, जामवंत, नल-नील और हनुमान सहित विभीषण तथा जो वानर दलों के दलपति-योद्धा थे, सब प्रेम में विभोर होकर कुछ कह नहीं पा रहे हैं। नेत्रों में आँसू भर-भर कर प्रभु के सम्मुख प्रेम से देख रहे हैं, वे नेत्रों की पलकें बन्द करना भी भूल गये।

उन सब के हृदय का प्रेम देखकर प्रभु ने सब को विमान पर चढ़ा लिया तब मन में श्री गुरु चरण कमलों का ध्यान कर सिर नवाकर उत्तर की दिशा को विमान चलाया। तब सबने इतना जय-जयकार मनाया कि नारे आकाश में गूंजने लगे। आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान की जय हो! हंस वंश-सूर्यकुल के वीरों को जय हो! इस प्रकार भाँति-भाँति से जय-जयकार करने लगे। सबसे ऊंचे सिंहासन पर श्री सीता जी सहित आनंदकंद प्रभु विराजमान थे।

अति सुन्दर पुष्पक विमान बड़ी तीव्र गति से चला। देव, मुनि एवं भक्तगण अति प्रसन्न होकर पुष्पों की वर्षा करने लगे। देवगंगा को पारकर विमान जब आया तो प्रभु की आज्ञा पाकर उतरा। प्रभु ने हनुमान जी को समझाया कि तुम साधु रूप में अवधपुर जाकर भरत को हमारी कुशल सुनाओ और समाचार लेकर शीघ्र लौट आओ।

समर में विजय देने वाली लीलाओं को श्रेष्ठ-उत्तम ज्ञानी जन सुनेंगे, उन्हें प्रभु सदा विजय विवेक और विभूति देंगे। यह कलिकाल पाप का भण्डार है, मन में विचार कर देखो! रघुकुल के स्वामी हंस वंश के सूर्य आनंदकंद प्रभु के नाम के बिना कोई और आधार ही नहीं है। जिसने जिस पर भी विजय प्राप्त की है वह एक मात्र नाम के प्रताप से ही है।

उत्तर काण्ड

हनुमान जी द्वारा भरत को राम के आने का संदेश

प्राणों के आधार प्रभु के आने की अवधि का एक ही दिन रह गया है, यह समझकर भरत के मन में अपार दुःख हुआ कि क्या कारण है जो प्रभु नहीं आए। अहालक्ष्मण तुम्हें धन्य है, तुम बड़े भाग्यशाली हो! जो प्रभु चरणों के प्रेमी हो। प्रभु ने मुझे कपटी और कुटिल जानकर भुला दिया। यही कारण है जिससे अपने साथ नहीं लिया।

यदि प्रभु मेरी करनी को समझें तो सौ करोड़ युगों तक भी मेरा निस्तार नहीं हो, किंतु प्रभु सेवक के अवगुणों को नहीं देखते। वे दीन बंधु हैं, अतिशय कोमल उनका स्वभाव है और मुझे भरोसा है कि प्रभु अवश्य ही मिलेंगे। मुझे सकुन भी अच्छे हो रहे हैं। यदि अवधि बीतने पर भी प्रभु नहीं आए और मेरे प्राण रहे तो मेरे समान अधम जगत में दूसरा कौन होगा?

इस प्रकार विचारों के विरह सागर में भरत जी मग्न हो ही रहे थे कि साधु के वेष में हनुमान जी ऐसे आ गए जैसे डूबते हुए को बचाने के लिए नौका मिल जाय।

भरत जी को देखते ही हनुमान जी अति प्रसन्न हुए, उनकी तपस्या को देखकर पुलकायमान हो गये और आँखों में प्रेम के आँसू भर आए। मन में सुख मानकर प्रिय लगने वाले अमृत के समान वचन बोले। हे भरत जी! सूर्यवंश के रक्षक, हंसवंश के सूर्य रघुकुल शिरोमणि प्रभु उत्तम भक्तों को सुख देने वाले, देवता और मुनियों के रक्षक कुशल पूर्वक आ गये। ऐसे वचन सुनते ही भरत के सब दुःख मिट गये जैसे प्यासे को अमृत मिल जाय।

हे हनुमान जी! इस शुभ सन्देश के समान संसार में कुछ भी नहीं है, मैंने यह विचार कर देख लिया। हे तात! मैं तुमसे किसी भी तरह से उऋण नहीं हो सकता। अब मुझे प्रभु की लीला सुनाइए। तब हनुमान जी ने भरत के चरणों में सिर नवाकर प्रभु की सारी गुण गाथा सुनाई। भरत जी ने पूछा कि हे हनुमान जी! कहो कृपालु प्रभु मुझे कभी अपने दास की भाँति याद भी करते हैं?

हे तात! आप राम को प्राणों से भी अधिक प्यारे हो। यह मेरा वचन सत्य है। तब भरत जी से बार-बार मिलते हैं, हनुमान जी का प्रेम हृदय में नहीं समाता।

हनुमान जी तुरंत ही प्रभु के विमान पर चढ़कर राम के पास गये और सब कुशल सुनाई।

भरत जी ने अवधपुर में जाकर मुनि वशिष्ठ जी को समाचार सुनाए और राजभवन में संदेशा भेजा कि राम कुशल सहित आ रहे हैं। सुनते ही माताएं दौड़ी, भरत जी ने सब समाचार सुना कर माताओं को समझाया। जब नगर वासियों ने यह समाचार पाया तो सभी नर-नारी प्रसन्न होकर दौड़े।

प्रभु के स्वागत के लिए दधी-मक्खन और सुन्दर गौरोचन फल फूल एवं नये पत्ते, तुलसी के पत्ते जो मंगलों के मूल हैं। सोने की थालियों में भर-भर कर सुहागिन सिन्दूर गामिनी हाथी की चाल से गाती हुई चलीं। वे एक दूसरे से पूछते हैं कि हे भाई! तुमने कृपालु प्रभु को देखा है? नगर वासियों ने जब जाना कि प्रभु आ रहे हैंसारा नगर ही शोभा का घर बन गया, सारी गलियां, चौक एवं मन्दिर-भवन सजाए गये।

प्रसन्न हो कर भरत जी, मुनि वशिष्ठ, परिवार के लोग, शत्रुघ्न एवं साधु ब्राह्मण सहित बड़े प्रेम से प्रभु के सामने स्वागत के लिए चले।

वामदेव वशिष्ठ जी और मुनियों के नायक श्री विश्वामित्र जी को देखकर प्रभु के पृथ्वीपर धनुष-बाण रखकर दौड़कर मुनि के चरण कमल पकड़े और अति पुलकायमान होकर लक्ष्मण सहित प्रणाम किया। इस प्रकार भेंट कर जब विश्वामित्र ने कुशल पूछी तब प्रभु बोलेआपकी दया से ही हम सब कुशल हैं। धर्मो की धुरी को धारण करने वाले भगवान राम को, सब सेवकों ने मिलकर कर मस्तक नवाया।

जिस प्रभु को देव, मुनि, शिव और ब्रह्मा प्रणाम करते हैं उनके चरण कमलों में दण्डवत् करके भरत जी पृथ्वी पर पड़े हैं। वे उठाने पर भी नहीं उठ रहे हैं तब प्रभु ने बलपूर्वक उठाकर हृदय से लगाया। तब शत्रुघ्न सहित भरत जी लक्ष्मण जी से मिलकर विरह के कठिन दुःखों को मिटाया और श्री सीता जी के चरण कमलों में प्रणाम करके परम सुख पाया।

अयोध्या में प्रभु का स्वागत

कौशल्यादि सब माताएं ऐसी दौड़ीं जैसे बच्चे देखकर गाय दौड़ती है। श्री सीता जी सब सासुओं से मिल अत्यन्त प्रसन्न होकर चरणों में लगीं। सब सासुओं ने कुशल पूछ कर आसीस दी। तुम्हारा सुहाग अचल रहे। सब माताएं मंगल का समय जान प्रेम भरे आँसुओं को रोककर राम के मुख कमल को देख रही हैं।

सब माताएं सोने के थाल के आरती उतार रही हैं और बार-बार प्रभु को देखकर प्रसन्न हो रही हैं। वे भाँति-भाँति से निछावर करती हैं और हृदय में हर्षित होकर परमानंद भरती हैं। प्रभु के दर्शन करके सभी नगरवासी अति प्रसन्न होते हैं, उनका वियोग से उत्पन्न हुआ सब दुःख मिट गया। हे पार्वती! आनंदकंद भगवान क्षण भर में सभी से मिले परन्तु यह मर्म किसी ने भी नहीं जाना।

लक्ष्मण जी और सीता जी सहित प्रभु को देखकर सब माताओं का मन परम आनंद में मग्न होकर उनका तन बार-बार पुलकायमान हो रहा है।

हे पार्वती! प्रभु यह जानकर कि माता कैकयी लज्जित हो रही है तो पहले उसी के घर पर गये और उसे समझा बुझाकर बहुत सुख दिया तब प्रभु अपने महल में गए। तत्पश्चात् प्रभु ने सब सखाओं को बुलाकर समझाया कि मुनि के चरणों में प्रणाम करो। ये हमारे पूजनीय कुल के पुरोहित हैं इनकी ही कृपा से हमने निशाचरों को युद्ध में मारा है।

हे मुनिनाथ! सुनिये! ये सब मेरे सखा हैं जो युद्ध रूपी समुद्र में पार उतरने के लिये नौका बने। इन्होंने मेरे लिये अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया। ये मुझे भरत जी से भी प्राण प्यारे हैं। ये लंका के राजा विभीषण हैं, ये वानर देश के राजा सुग्रीव, नल और नील हैं तथा ये जम्बूदीप के राजा जामवंत, पंपापुर के युवराज अंगद, हनुमान आदि महान वीर सब वानर जो सुन्दर मनोहर मनुष्य देह धारण किये हुए हैं ये वानर देश के नायक हैं।

सब सखाओं ने माता कौशल्या को प्रणाम किया। माता ने आशीर्वाद दिया तुम सब मुझे राम के समान प्यारे हो, चिरंजीव रहो।

राम का राज्याभिषेक

लक्ष्मी स्वरूपा सर्व गुणों की खान सीता जी राम के बाई ओर शोभायमान हैं। प्रभु को देखकर सब माताएं अति प्रसन्न हुई और अपना जीना सफल माना।

आनंदकंद कृपासिंधु प्रभु जब अपने मन्दिर में गये तो उन्हें देखकर नगर के सभी नर-नारी अति प्रसन्न हुए। शुभ समय जान मुनि वशिष्ठ जी ने सब द्विजों को बुलाकर कहा कि आज उत्तम दिन है और सब समुदाय भी एकत्रित है। अतः सब मुनि प्रसन्न होकर यह अनुमति दो कि राम राजसिंहासन पर विराजमान हों। वशिष्ठ जी के ये वचन सभी को बड़े सुन्दर लगे और सभी साधु, समाज सुनकर अति प्रसन्न हुए।

अनेकों ऋषि-मुनि साधुओं ने बड़े मधुर शब्दों में कहा कि राम का राज्याभिषेक सम्पूर्ण संसार को आनंद देने वाला है। अतः हे मुनि श्रेष्ठ वशिष्ठ जी! अब देर न कीजिए और महाराज को तिलक शीघ्र कीजिए। प्रभु को देख मुनि अति प्रसन्न हुए और दिव्य राज सिंहासन मंगवाया। उस सिंहासन का तेज सूर्य के सदृश था, उस प्रकाशमान सिंहासन पर राम विराजे और सब साधु समाज ने सिर नवाया।

तब मुनि वशिष्ठ जी ने महामंत्री सुमंत से कहावे सुनते ही सिर नवाकर चले और तुरन्त ही अनेकों रथ, घोड़े, हाथी सजाए।

अवधपुरी को अति सुन्दर बनाया जिसे देख प्रसन्न होकर देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की। सभी ने अपने-अपने द्वार या सुन्दर कलश सजाकर रखे और मंगल हेतु सारे साज सजाए। नारियाँ न्योछावर करके आशीष देकर मन में बड़ी प्रसन्न होती हैं। सोने की थालियों में भाँति-भाँति से आरती सजाकर अति सुन्दर आरती उतार कर शुभ गीत गाती हैं।

सब से पहले मुनि वशिष्ठ जी ने प्रभु को राजतिलक दिया तब उन्होंने सब साधु सन्तों को तिलक देने की अनुमति दी। नगर की शोभा सम्पति एवं कल्याणकारी राज्य का वर्णन तो हे पार्वती! शेष, शारदा और वेद भी कहने में असमर्थ हैं। प्रभु की यह लीला देखकर तो वे भी ठगे से रह जाते हैं तो मानव कैसे वर्णन कर सकता है? त्रिलोकीनाथ भगवान राम को राज सिंहासन पर विराजमान देखकर सब देवताओं ने दुन्दुभी बजाई।

राम की शिव जी द्वारा स्तुति

दो. वैनतेय सुनु शंभु तब, आए जहं रघुबीर।
विनय करत गद गद गिरा, पूरित पुलक शरीर। ॥४०४॥

हे गरुड़ सुनो! उस समय प्रभु के पास शिव जी आए, वे गद्-गद् वाणी द्वारा पुलकायमान होकर स्तुति गाने लगे।

छं जय राम रमा रमनं समनं भव ताप भयाकुल पाहिजनं।
अवधेश सुरेश रमेश विभु शरणागत मांगत पाहि प्रभु।
दश शीश विनाशन बीस भुजा कृतदूरि महामहि भूरि रुजा,
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, सर पावक तेज प्रचंड दहे॥

हे लक्ष्मीपति राम! आप भवसागर के दुःख से बचाने वाले हो, मैं भय से व्याकुल हूंमेरी रक्षा कीजिए। हे अवध के ईश्वर, आप देवताओं के ईश्वर, लक्ष्मीपति विष्णु हो। हे विभु! मैं आपकी शरण चाहता हूँ, मेरी रक्षा कीजिए। हे प्रभु! दश शीश और बीस भुजाओं को नष्ट करके आपने भूमि का भार उतारा है। इस पृथ्वी पर जो कीट पतंग रूपी निशाचर थे वे आपके प्रचण्ड तेज में जल मरे।

महि मंडल मंडन चारुतरं, घृत सायक चाप निषंग वरं,
मद मोह महा ममता रजनी, तम पुंज दिवाकर तेज अनी।
मनजात किरात निपात किए, मृग लोग कुभोग सरेन हिये,
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे, विषया बन पांवर भूलि परे॥

हे विभु! आप पृथ्वी मंडल के मंडन कर्त्ता सुन्दर भूषण हो। इस भवसागर से पार उतारने के लिए जो मद, मोह और महान ममतारूपी रात्रि के अंधकार में लीन हैं, उनके लिए आपका सूर्य के समान महान तेज धनुष के समान अग्नि और आपका बल बाण के समान घृत है। मन से उत्पन्न होने वाले काम आदि किरात, जो विषय भोग रूपी वन में भूले भटके फिर रहे थे, उन्हें बचाकर आपने पवित्र कर दिया। हे अनाथों के नाथ विभु! मेरी रक्षा करो।

बहु रोग वियोगन्हि लोग हुए,भव दंधि निरादर के फल ए,
भव सिंधु अगाध परे ते, पद पंकज प्रेम न जे करते।
अति दीन मलीन दुःखी नितहीं, जिनके पद पंकज प्रीति नहीं,
अवलम्ब भवंत कथा जिन्हके, प्रिय संत अनंत सदा तिनके॥

हे प्रभु! आपके चरण कमलों में जिनका प्रेम नहीं है वे आपके वियोग में मरे हुये से रोगी होकर भवसागर की अग्नि में जल रहे हैं। ये सब आपके चरणों के निरादर के फल हैं। वे दीन हैं, उनका मन बड़ा मलीन है और सदा दुःखी रहते हैं। जिनको आप के चरणों में प्रेम है और जो आप के प्रेमी हैं, जिन्हें आप की कथा से प्रेम है? कभी देर नहीं करते उन्हें आपके दास-संत अति प्यारे हैं।

नहिं राग न लोभ न मान सदा, तिनके सम वैभव वा विपदा,
एहिते तब सेवक होत मुदा, मुनि त्यागत योग भरोस सदा।
करि प्रेम निरन्तर नेम लिए, पद पंकज सेवत सुद्ध हिए,
सम मानि निरादर आदरहीं, सब संत सुखी विचरंति महीं॥

उनके हृदय में न क्रोध है, न लोभ है और न मान का मद ही है। उनके लिये तो संसार का सभी वैभव और विपदा दोनों बराबर हैं। इसी से आप के सेवक सदा आनन्द में रहते हैं और मुनि लोग योग अभ्यास के भरोसे को त्याग नित्य निरन्तर नियम पूर्वक आप से प्रेम करते हैं। वे शुद्ध हृदय में आप के चरण कमलों की सेवा करते हैं। वे आदर और निरादर को समान मान कर सुख से पृथ्वी पर विचरते हैं।

मुनि मानस पंकज भृंग भजे, रघुवीर महा रणधीर अजे,
तब नाम जपामि नमामि हरि, भव रोग महा पद मान अरि।
गुण शील कृपा परमायतनं, प्रनमाामि निरंतर श्री रमनं,
रघुनंद निकंदय द्वन्द घनं, महिपाल विलोकयं दीन जनम॥

आप को मुनिजन हृदय-कमलों में भौंरे की भाँति भजते हैं। आप अजेय हो! महान मद और मान आदि संसार के भयंकर रोगों के आप शत्रु हो। हे प्रभु! मैं आप

को प्रणाम करता हूँ। आपका नाम जपता हूँ और हे शील स्वभाव, गुण, कृपा और शोभा के घर, आप सब झंझटों से छुड़ाने वाले हो। हे प्रभु! अपने इस दीन भक्तमहिपाल को दयादृष्टि से देखिए।

दो बार-बार वर मांगऊ हर्षि देहु श्री रंग।
पद सरोज अनपायनीं, भक्ति सदा सतसंग। ॥दो-४०५॥

स्तुति गाकर शिव जी ने प्रार्थना की कि हे प्रभु! मैं बार-बार यही वर मांगता हूँआप प्रसन्न होकर दीजिए! आपकी दुर्लभ चरण कमलों की भक्ति और सत्संग सदा मिलता रहे।

उमापति भगवान शंकर राम के गुणों के वर्णन करके प्रसन्न होकर कैलाश को चले गये। तब प्रभु ने सब सखाओं को भाँति-भाँति के सुख देने वाले स्थान दिये। ॥ दो ४०६॥

प्रभु के दर्शन, सत्संग और भजन अभ्यास करते हुए प्रभु के चरण कमलों में प्रीति, बढ़ जाने के सभी सखा एवं योद्धागण ब्रह्म के आनन्द में ऐसे मग्न हो गये कि उन्हें दिन जाते दिखाई नहीं दिये। उन्हें छः महीना बीत गए परन्तु वे प्रेम में विभोर होकर सब कुछ भूल गये। ॥ दो ४०७॥

विभीषण का राम को रत्नमाला अर्पण करना

प्रभु के वचन सुनकर सबके सब प्रेम मग्न हो गये। हम कौन हैं? और कहां है? यह देह की सुध भी भूल गये, वे प्रभु के सामने हाथ जोड़कर टकटकी लगाये देखते ही रह गये। उनका अतिशय प्रेम देख प्रभु के अनेकों ज्ञान की बातें कहीं। अतिशय प्रेमवश कुछ कह नहीं सक रहे हैं। बार-बार प्रभु के चरण कमलों को निहार कर हृदय में बैठा रहे हैं।

तब प्रभु ने भाँति-भाँति के अनुपम सुहावने वस्त्र और आभूषण मंगाये। भरत जी ने उन्हें अपने हाथों से संवार कर पहले सुग्रीव को बड़े प्रेम से पहिनाए। प्रभु की प्रेरणा पाकर लक्ष्मण जी ने आदर सहित लंकापति विभीषण को सुंदर वस्त्र तथा आभूषण पहिनाए जो प्रभु को अति सुन्दर लगे। किन्तु अंगद बैठा ही रह गया वह अपनी जगह से डोला तक नहीं। उसकी प्रीति को देखकर प्रभु भी उससे कुछ नहीं बोले।

तब विभीषण ने प्रसन्न होकर रत्नों की माला हाथ में लेकर प्रभु के गले में पहना दी, जिसे देखकर राम अति ही प्रसन्न हुए। प्रभु ने वही माला श्री सीता जी के गले में पहना दी। उस माला की ज्योति उस समय इतनी विशाल थी कि उसे कोई भी राजा सन्मुख दृष्टि से देख नहीं सका।

उसी समय महारानी श्री सीता जी राजा रामचन्द्र जी के चरण कमलों की ओर देखकर मुस्कराई तब भगवान राम ने कहा कि हे प्रिया! जिसकी जो इच्छा है जिसे देने की वह उसे दे सकता है। प्रभु के ऐसे वचनों को सुनकर श्री सीता जी ने हनुमान जी की ओर देखा। हनुमान जी ने विचार कर देखा कि माता मुझे मुझे कृपा की दृष्टि से निहार रही हैं, उनका मन बड़ा उदार है, मेरे पर उनकी दृष्टि हुई है अतः मुझे उनके पास जाना चाहिए।

"राज्य पाकर विभीषण के हृदय में उद्गार उत्पन्न हुआ कि मैं प्रभु की इस सम्पत्ति को प्रभु के ही अर्पण करके इस माया के बन्धन से मुक्त हो जाऊं। यह सम्पत्ति प्रभु को काम आने पर ही सुख दाई है अन्यथा यह माया रूप धारण करके महान दुःखदाई बन जाती है। प्रभु के यह कहने पर भी यह सब चल अचल सम्पत्ति मेरी ही समझकर राज्य करो। किंतु फिर भी समय का सदुपयोग करने के लिए राम को रत्नमाला अर्पण कर दी। यह है जीवन का सदुपयोग।"

"प्रभु का सर्वव्यापक नाम निर्वचनीय होने से वाणी मुँह से बोला नहीं जाता इसलिये अगले पृष्ठ के शीर्षक में हृदय फाड़कर नाम दिखाना लिखा गया है। हृदय फाड़ने का तात्पर्य यह है कि जो बात अति रहस्य युक्त और अति गुप्त होती है परन्तु फिर भी किसी कारणवश प्रत्यक्षीकरण करने के लिए उसका गुप्त भेद खोलकर समझाया जाता है। हनुमान जी ने उस गुप्त नाम के भेद को अपना हृदय खोलकर सबको दिखा दिया कि वह नाम रोम-रोम में रमा है।"

हनुमान जी का हृदय फाड़कर नाम दिखाना

माँ की कृपा दृष्टि देखकर हनुमान जी ने प्रसन्न होकर माँ के श्री चरण कमलों में दण्डवत प्रणाम किया। श्री सीता जी ने वह रत्नमाला हनुमान जी के गले में पहना दी। ।।दो४०९।।

उस समय हनुमान जी प्रेमरस रूपी समुद्र में आनंद मग्न हो गये उन्होंने सोचा कि इस माला में अवश्य ही कोई बहुत बड़ा गुण होगा। यह विचार कर वे मणियों के दानों को देखने लगे, हो सकता है इसमें कोई सार वस्तु हो, तो हनुमान जी ने एक मोती तोड़ा और उसके भीतर देखने लगे। तब लोग आश्चर्य करने लगे।

इस प्रकार फिर हनुमान जी ने दूसरा मोती तोड़ा और उसको भी बेकार समझ कर फेंक दिया। जब हनुमान जी इसी प्रकार मोती तोड़ने लगे तो देखने वालों के मन में बड़ा दुःख हुआ। वे अपने-अपने मन में कहने लगे कि जो कोई मानव जिस वस्तु का अधिकारी नहीं होता तो उसे वह ऐसी वस्तु कभी भी नहीं देनी चाहिए। नहीं तो देख लीजिए यही दशा होगी, जो इस माला की हो रही है।

तब कोई राजा बोल उठा कि हे हनुमान जी! आप यह क्या कर रहे हो? यह महान सुन्दर रत्नों की माला आप चतुर होकर क्यों तोड़ रहे हो? ।।दो४१०।।

यह वचन सुनते ही हनुमान जी बोलेइसमें सुख देने वाले राम के नाम को देख रहा हूँ परन्तु इसमें चमक के सिवाय और कुछ भी नही है जिसमें भक्तों का मन लगे। इसमें नाम दिखाई नहीं देता इसलिये हे भाई! मैं इसे तोड़कर देख रहा हूँ कि कही इसमें नाम तो नहीं है। हनुमान जी कहते हैं कि जिसमें नाम नहीं है वह तो मेरे लिये किसी भी काम की नहीं है।

श्री हनुमान जी द्वारा हृदय फाड़कर राम के नाम को दिखाना

तब किसी ने कहा कि क्या सभी वस्तुओं में राम नाम है? ऐसा तो कभी सुना ही नहीं। फिर वही हनुमान जी से बोला कि हे बलवान सुनो! क्या तुम्हारे बदन में भी राम का नाम है? तो उसका वचन सुनकर हनुमान जी बोले कि हाँ, इस तन में नाम है। ऐसा कहकर हनुमान जी ने हृदय फाड़कर नाम दिखाया तो सबने देखारोम रोम में नाम का उच्चारण हो रहा है। यह सिद्ध कर दिया कि सब जगह राम का नाम है। सब जगह राम नाम अंकित देखकर सब मन में चकित रह गये। आकाश में जय जयकार करते हुए पुष्पों की वर्षा होने लगी।

अंगद सहित सब वानरों को विदा करना

तब अंगद ने उठ कर सिर नवाया और हाथ जोड़कर नेत्रों में जल भरे हुए अति नम्रता सहित प्रेम के रस में डूबे हुए वचन बोले

हे कृपा सागर आनंदकंद सर्वज्ञ प्रभु! हे दीनों पर दया करने वाले आर्त जनों के रक्षक मेरे नाथ! सुनिए! बाली मरते बार मुझे आपके चरणों में सौंप गया था। अतः हे भक्तों के हितकारी प्रभो! अनाथों के नाथ! मुझ अपने बालक को सम्भालो! मेरे तो हे सद्गुरु, स्वामी, माता-पिता सब कुछ आप ही हो। आपके श्री चरण कमलों को छोड़कर मैं कहाँ जाऊँ?

हे महाराजाधिराज आनंदकंद प्रभु! आप ही विचारिए कि आपको छोड़कर घर में मेरा काम ही क्या है? हे नाथ! मुझे बुद्धि, ज्ञान और बल से हीन जानकर, दीन बालक को अपनी शरण में रखिए! मैं छोटी से छोटी सेवा करूंगा और आपके श्री चरणकमलों के दर्शन कर भवसागर से तर जाऊंगा। ऐसा कहकर अंगद प्रभु के चरणों में गिर पड़ा और बोलाहे प्रभु! अब मुझे घर जाने के लिए मत कहिए।

भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण सहित प्रभु अपने भक्तों के कर्तव्यों को स्मरण करते हुए उन्हें विदा करने चले। अंगद के हृदय में प्रेम थोड़ा नहीं है। वे घूम-घूम कर प्रभु की ओर देख रहे हैं और बार-बार दण्डवत् प्रणाम करते हैं। वे मन में यही सोचते हैं कि प्रभु मुझे रहने के लिए कह दें। वे सब सखा प्रभु की बोली, सुन्दर चाल, हँसना, देखना और मिलने की रीति को याद कर आनंद मग्न होकर हृदय के उद्गारों को रोक न सके, उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आए।

बहुत प्रकार से विनय करके प्रभु का रुख देखकर, प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करके चले। अति आदर सहित सबको पहुंचा कर भाइयों सहित राम लौट आए। सुग्रीव ने कहाहे पवन कुमार! तुम पुण्य पुंज हो! अब जाकर आनंदकंद प्रभु के चरण कमलों की सेवा करो! ऐसा कहकर सुग्रीव चले तब अति आदर सहित दीन भाव से अंगद ने कहाहे हनुमान जी! मैं आपसे हाथ जोड़कर विनय करता हूँ, मेरी ओर से प्रभु को दण्डवत् प्रणाम करके मेरी बार-बार याद दिलाते रहना जिससे कृपा करते रहें।

दयालु प्रभु ने अपने सखा निषादराज गुह्य को बुलाकर वस्त्र, भूषण और प्रसाद देकर कहा कि तुम घर जाओ, मेरा सदा सुमिरन करते रहना और मन, कर्म, वचन से धर्मानुसार सेवा करते रहना। हे सखा! तुम मुझे भरत के समान प्यारे हो! सदा नगर में आते जाते रहना। प्रभु के प्रेम भरे वचन सुनकर गुह्य अति प्रसन्न हुआ और प्रेम के आँसू आँखों में भरकर प्रभु के चरणों में गिर पड़ा।

प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारणकर निषाद राज गुह्य अपने घर आया और प्रभु का स्वभाव परिवार के सभी लोगों को बड़े प्रेम से सुनाया। प्रभु की लीलाओं को सुनकर नगरबासी बार-बार कहते हैं कि धन्य है गुह्य को और आनन्दकंद सुखदाता भगवान को। त्रिलोकीनाथ भगवान राम राजसिंहासन पर बैठे हैं यह देखकर सभी हर्षित हुए और उनके सभी दुःख भाग गए। कोई किसी से बैर नहीं करता, प्रभु की कृपा से सबकी द्वेष भावनाएं जाती रहीं।

राम के राज्य में चन्द्रमा पूरा अमृत पृथ्वी पर वर्षाता है और सूर्य भी कार्यानुसार तपता है और मांगने पर बादल जल वर्षाते हैं।

सभी भाई प्रभु की आज्ञानुकूल रहकर सेवा करते हैं, प्रभु के चरणों में प्रेम अधिक है और इस इच्छा से प्रभु के मुख कमल को देखते रहते हैं कि कृपालु प्रभु कब हमें आज्ञा देने की कृपा करते हैं। राम का सब भाइयों पर बड़ा प्रेम है, उन्हें भाँति-भाँति की नीति सिखाते हैं। श्री सीता जी सदा पति के अनुकूल रहती हैं, जो कि शोभा की खान, गुण, शील और स्वभाव में विनीत हैं।
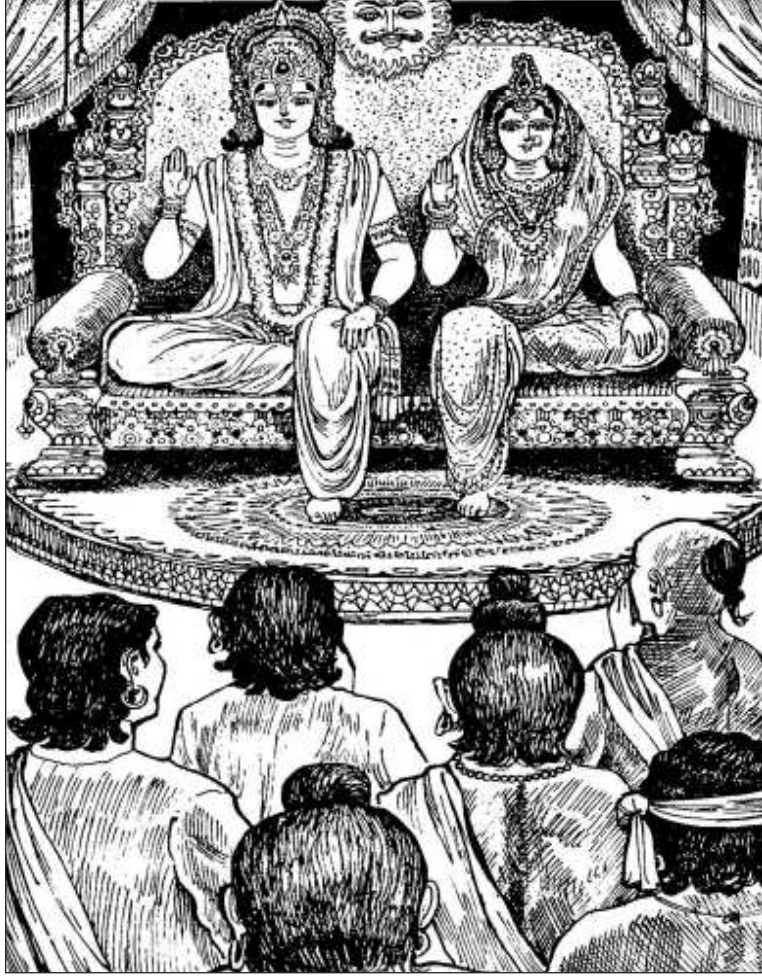
परमानन्द कृपायतन, मन परिपूरण काम।
प्रेम भक्ति अनपायी, देहु हमहि श्रीराम।।

वे कृपासिंधु प्रभु की प्रभुताई को जानती हैं, मन लगाकर चरण कमलों की सेवा करती हैं। राम की आज्ञानुसार गृह के सभी कार्य अपने हाथों से करती हैं, जिस प्रकार भी प्रभु सुख मानें। सीता वही करती हैं और सेवा की विधि को भली भाँति जानती हैं। लक्ष्मी पार्वती और ब्रह्मानी उनकी वंदना करती हैं, वे जगत माताश्री सीता जी सदा आनंद में मग्न रहती हैं।

जिसकी कृपादृष्टि सभी देव चाहते हैं परन्तु वह किसी की ओर देखती भी नहीं हैं। वही श्री सीता जी अपने स्वभाव में भूली हुई सी रहकर प्रभु के चरणों की सेवा करती रहती हैं।

एक बार दयालु भगवान राम भाइयों सहित हनुमान जी को साथ लेकर सुंदर वन-वाटिका देखने गये। सभी वृक्ष फूल, पत्तों एवं फलों से सम्पन्न थे। उत्तम समय जानकर सनक आदि चारों संत आए जो तेज के पुंज सुन्दर गुण एवं शील से युक्त थे। देखने में बालक थे परन्तु बहुत काल से ब्रह्मानंद में लवलीन थे।

ये चारों ऐसे लगते थे मानो ज्ञान ने ही चारों देह धारण की हों, ये ज्ञान स्वरूप और समदर्शी हैं, इनके मन में भेद नहीं है। प्रभु की कथा सुनना ही इनके लिए व्यसन है और यही आशा और वस्त्र हैं। हे पार्वती! ये वहाँ थे जहाँ महामुनि लोमश जी रहते हैं, जहां जीवन मुक्तों के सिवाय कोई नहीं पहुँच सकता। जहाँ लोमश मुनि ने मुनि भुसुण्डि जी के प्रति राम कथा इस प्रकार वर्णन की थी जिस प्रकार योग से ज्ञान और अरनी से अग्नि प्रगट होती है।

उन चारों संतों को आते देखकर प्रभु ने प्रसन्न होकर दण्डवत प्रणाम किया और स्वागत करके बैठने के लिए अपना पीताम्बर (पीला दुपट्टा) बिछा दिया।

हनुमान जी सहित तीनों भाइयों ने अति प्रसन्न होकर दण्डवत् प्रणाम किया। मुनि जन प्रभु की अनुपम छवि को देखकर मग्न हो गए और अपने मन को रोक न सके। जन्म-मरण के भव बन्धन से छुड़ाने वाले प्रभु जो श्यामल-गौर वदन, कमल नयन और सुन्दरता के घर हैं उन्हें देखकर टकटकी लगाए रहे, उनकी पलक नहीं झपकती थी। भगवान श्री रामचन्द्र जी हाथ जोड़ सिर नवाए खड़े हैं।

उन संतों की ऐसी दशा देखकर प्रभु के नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का जल बहने लगा और शरीर पुलकायमान हो गया। प्रभु ने उन्हें हाथ पकड़ के बैठाकर परम मनोहर वचन कहेहे मुनीश्वरो! आज मैं धन्य हूँ, आपके दर्शनों से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। सन्तों का संग बड़े ही भाग्यशाली को प्राप्त होता है, जिससे बिना ही परिश्रम के जन्म मरण का दुःख नष्ट हो जाता है।

सन्तों का संग प्रभु के परम धाम का और कामी का संग जन्म मरण के बन्धन का मार्ग है। संत, कवि और ज्ञानी, विवेकी तथा वेद पुराण आदि सद्ग्रन्थ ऐसा कहते हैं।

प्रभु के वचन सुनकर चारों संत हर्षित होकर पुलकायमान शरीर से स्तुति करने लगे। हे प्रभु! आपकी जय हो! आप अंत रहित, विकार रहित, पाप रहित, अनेक रूपों में प्रगट अद्वितीय और करुणामय हैं। हे निर्गुण! आपकी जय हो! हे गुण के सागर आपकी जय हो! जय हो! आप सुख के धाम, अत्यन्त सुन्दर और अति चतुर हैं। हे लक्ष्मीपति, पृथ्वी के संरक्षक, उपमा रहित, अजन्मे, अनादि और शोभा की खान आप की जय हो!

आप ज्ञान के भंडार मानरहित और दूसरों को मान देने वाले हैं। वेद और पुराण आपका सुन्दर यश गाते हैं। आप को जो तत्व से जानते हैं उनकी सेवा को मानते और अज्ञान का नाश करते हैं। हे निरन्जन! आप का नाम सब नामों से परे निर्वचनीय है। हे मुनियों के मन रूपी मानसरोवर में निरन्तर मनन करने वाले हंस! आपके चरण कमल ब्रह्मा जी और शंकर जी के द्वारा वंदित हैं। शरणागतों की कामनाओं को पूरी करने वाले हे प्रभु! आप कामधेनु और कल्पवृक्ष हो। आप प्रसन्न होकर यह वर दीजिए।

आप परम आनंद स्वरूप कृपा और मन की सभी कामनाओं को परिपूर्ण करने वाले प्रभो! हमें अपनी अविरल प्रेम भक्ति दीजिए!

बार-बार स्तुति करके प्रेम सहित सिर नवाकर औन मनचाहा अत्यन्त दुर्लभ वर पाकर चारों संत ब्रह्म लोक को चले गये। जहाँ महामुनि लोमश जी रहते हैं।

सनक आदि मुनि अपने लोक को चले गये तब सब भाइयों ने राम के चरण कमलों में सिर नवाकर प्रणाम किया। सब भाई प्रभु से पूछते हुए सकुचाते हैं इसलिये हनुमान जी की ओर देख रहे हैं। वे प्रभु के श्रीमुखकमल की वाणी सुनना चाहते हैं जिसे सुनकर सारे भ्रम नष्ट हो जाते हैं। अन्तरयामी प्रभु सब जान गये और पूछने लगेकहो! हनुमान जी क्या बात है?

तब हनुमान जी हाथ जोड़कर बोलेहे दीनबंधु भगवान सुनिए! हे नाथ, भरत जी कुछ पूछना चाहते हैं पर प्रशन करते मन में संकुचा रहे हैं। प्रभु ने कहाहे हनुमान जी! तुम मेरे स्वभाव को जानते हो कि भरत से मेरा कुछ भी छिपाव नहीं है। प्रभु के वचन सुनकर भरत जी राम के चरणों में प्रणाम करके बोलेहे शरणागतों के दुःखों को हरण करने वाले प्रभु सुनिये!

सन्त और असन्तों के लक्षणों का वर्णन

हे नाथ! न तो मुझे कुछ संदेह है और न स्वप्न में भी शोक और मोह ही है। हे आनंदकंद भगवान! यह केवल आप ही की कृपा का फल है। ॥दो.४१६॥

तथापि हे प्रभु! मैं एक ढीठाई करता हूँ। मैं आपका सेवक हूँ और आप भक्तों को सुख देने वाले हैं। हे नाथ! संतों की महिमा वेद पुराणों में बहुत प्रकार से गाई गई है और आपने भी अपने श्री मुख से उनकी बड़ाई की है तथा उन पर आपका प्रेम भी बहुत है। हे शरणागतों को पालन करने वाले प्रभो! संत और असन्तों के भेद पृथक-पृथक करके मुझे समझाकर कहिये!

हे कृपासागर। गुण ज्ञान में प्रवीण प्रभु! मैं उनके लक्षण श्री मुख से सुनना चाहता हूँ प्रभु ने कहा हे भाई! वे और पुराणों में जो संतों के अगनित लक्षण विख्यात हैं वे सुनो! संत और असन्त की करनी ऐसी है जैसे कुल्हाड़ी और चन्दन-वृक्ष का आचरण। हे भाई सुनो! कुल्हाड़ी चन्दन को काटती है परन्तु चन्दन अपना गुण उस कुल्हाड़ी में बसा देता है जिससे कुल्हाड़ी सुगंधित हो जाती है।

चन्दन अपने गुण के अनुसार देवताओं के सिर पर चढ़ता है जो संसार को प्यारा लगता है। कुल्हाड़ी के मुख को यह दण्ड मिलता है कि उसके मुख को अग्नि में तपाकर घन से पीटा जाता है। ॥दो.-४२०॥

संत विषयों में लीन नहीं होते, वे शील और सद्‌गुणों की खान होते हैं। दूसरों के दुःख से दुःखी और सुख देखकर सुखी होते हैं। वे समदर्शी, शत्रु रहित, मदहीन और वैरागी होते हैं। वे लोभ, क्रोध, हर्ष और भय के त्यागी होते हैं। उनका चित्त कोमल होता है, वे दीनों पर लग जाते हैं, माया का मोह त्यागकर मन, वचन और कर्म से भक्ति में लग जाते हैं। संत जन सभी को मान देकर स्वयं अमानी रहते हैं। हे भरत! वे मुझे प्राणों के समान प्यारे होते हैं।

जो निष्काम भाव से कर्म करते हुए नाम का स्मरण करते हैं, शान्त, विरक्त, सरल और मित्रता, संतों के चरणों में प्रेम रखते हैं और धर्म के ज्ञाता हैं। जो सम, दम, नियम और नीति का त्याग नहीं करते किसी से कटु वचन नहीं कहते। यह सब लक्षण जिनके हृदय में रहते हैंहे तात! उन्हें तुम सदैव सच्चे संत जानो।

वे निन्दा-स्तुति को समान समझकर मेरे चरण कमलों में प्रेम रखते हैं, गुणों के धाम और सुखों के भण्डार संत जन मुझे प्राणों के समान प्यारे हैं। ॥दो४२१॥

अब जिनमें संतों के गुण नहीं हैं उन असंतों के स्वभाव सुनो! जो संत भेष में असंत हैं। ऐसे संतों की भूलकर भी संगति नहीं करनी चाहिये। उनका संग महान दुख दाई होता है। जैसे दुधारु गाय को हरिहाई गाय दुख देती है वैसे ही असंत संतों को दुख देते हैं। इन दुष्ट असंतों के हृदय में जलन विशेष होती है, ये दूसरों की सम्पत्ति को देख कर जलते हैं। जहाँ कहीं निन्दा सुनते हैं तो ऐसे प्रसन्न होते हैं मानों पराई सम्पत्ति मिली हो।

वे काम, क्रोध, मद और लोभ के आधीन होकर निर्दयी, कपटी, कुटिल एवं पापों के घर हैं। वे अकारण ही सबसे बैर करते हैं। वे भला करने वालों का भी बुरा करते हैं। वे लेते भी झूठ और देते भी झूठ बोलते हैं। वे झूठा ही खाते हैं और झूठा ही चबाते हैं कभी भगवान का ध्यान नहीं करते। ये मोर की भाँति सर्पों को खाकर बोलते मीठा हैं परन्तु हृदय के बड़े कठोर होते हैं।

ऐसे असन्तगण दूसरों से द्रोह करते हैं और दूसरों की स्त्री एवं सम्पति पर झगड़ा करते हैं। वे नीच, पापी, मानव तन में दानव हैं। ॥दो४२२॥

उनका बिछौना और ओढ़ना भी लोभ ही होता है। वे इन्द्रियों और पेट की पूर्ति में तत्पर रहते हैं, उन्हें यमपुर का भय भी नहीं होता। यदि किसी संत की बड़ाई सुनते हैं। तो ऐसा स्वांस भरते हैं जैसे ज्वर चढ़ आया हो। यदि किसी पर कोई संकट आ जाय तो ऐसे सुखी होते हैं मानों जगत के राजा बने हों। वे अपने स्वार्थ में लीन रहकर दरबार से विरोध करते हैं। लोभ और कामनाओं के कारण लम्पट और अतिशय क्रोधी होते हैं।

वे दुष्ट असंतजन माता, पिता गुरु और साधु सन्तों को नहीं मानते। वे स्वयं तो भगवान से विमुख हैं और अपनी संगति से दूसरों को भी सद्गुरुदेव भगवान के दर्शनों से वंचित रखते हैं। वे मोह वश द्रोह करते हैं, उन्हें भगवान विष्णु की भक्ति अच्छी लगती। वे अवगुण के भण्डार, नीच बुद्धि, कामी, परधन स्वामी, वेदज्ञान को दूषित करते हैं। वे दूसरों से विशेष कर साधुओं से द्रोह करते और साधु वेष में दम्भी कपटी हैं।

संत के वेषमें ऐसे दुष्ट अधम दानव सतयुग और त्रेता में नही होते। द्वापर में बहुत कम हैं, अधिक कलयुग में ही होंगे। "कारण कि कलियुग में पूर्ण ब्रह्म प्रगट होकर ज्ञान गंगा में गोता लगवाकर भक्तों को सेवा भक्ति से पार लगाएंगे। उनसे ये दुष्टजन वंचित रखेंगे।" ॥दो॰४२३॥

हे भाई! दूसरों का हित करने के समान कोई धर्म और अनहित के समान कोई पाप नहीं है। हे तात! जो मैंने तुमसे कहा है, ज्ञानी जन जानते हैं। यह सभी वेद-पुराणों का निर्णय है। मानव तन पाकर भी जो दूसरों को दुःख देते हैं वे महान घोर नरक में संकट सहते हैं। मानव मोह के कारण अनेक पाप करता है और स्वारथ में लीन होकर अपने परलोक को नष्ट करता है।

उनके लिए मैं काल रूप हूँ, उन्हें अच्छे बुरे कर्मों का फल मैं ही देता हूँ। ऐसा विचार कर जो परम चतुर हैं वे जन्म मरण के दुःख को महान जान कर मुझे ही भजते हैं। इसलिए शुभ और अशुभ कर्मों को त्यागकर ऋषि-मुनि एवं भक्तगण मुझे ही भजते हैं। मैंने संत और असंतों के गुण कहे हैं, वे भवसागर में नहीं पड़ेंगे जिन्होंने इन्हें समझ लिया है।

हे तात, सुनो! माया से उत्पन्न होने वाले गुण और दोष अनेकों हैं। गुण यह है जो दोनों को ही न देखे और जो देखते हैं वही अविवेक हैं। "अतः आत्मा से उत्पन्न होने वाले परमात्मा के गुणों को ही देखना चाहिए।" ॥दो॰४२४॥

प्रभु के वचन सुनते ही भरत आदि सब भाई ऐसे प्रसन्न हो गये कि उनका प्रेम हृदय में नहीं समा रहा है। वे बार-बार विनय करते हैं, हनुमान जी के हृदय में अपार प्रेम है। तब प्रभु अपने मन्दिर में गये, इसी प्रकार प्रभु नित्य नये-नये चरित करते हैं। नारद जी बार-बार आते हैं और राम के पवित्र गुणों को गाते हैं।

नारद जी सब नये-नये चरित्र देखकर जाते हैं और ब्रह्मलोक में जाकर सुनाते हैं। ब्रह्मा जी सुनकर अति सुख पाते हैं और बार-बार सुनाने के लिए नारद जी से कहते हैं। सनक आदि संत नारद जी की बड़ी सराहना करते हैं यद्यपि वे चारों ब्रह्म में लीन रहते हैं परन्तु फिर भी नारद जी से प्रभु के गुण गान सुनकर समाधि को भी भुला देते हैं और वे परम अधिकारी संत जन बड़े आदर से सुनते हैं।

मुनि वशिष्ठ जी की प्रभु से विनय

एक बार मुनि वशिष्ठ जी वहाँ आए जहाँ सुन्दर सुख के धाम प्रभु विराजमान थे। मुनि ने प्रभु का ही आदर किया और चरण धोकर चरणोदक लिया। तब मुनि ने हाथ जोड़कर कहा कि हे प्रभु! मेरी एक विनती है आपके आचरण देख-देख कर मेरे हृदय में अतिशय अपार प्रेम उत्पन्न हो रहा है।

हे प्रभु! आपकी महिमा की सीमा नहीं है उसे वेद भी नहीं जानते तो फिर मैं कैसे जानूं। उपरोहित का कर्म अति नीच कर्म है जिसकी वेद, पुराण और स्मृति सभी निंदा करते हैं। जब मैंने इस उपरोहित कर्म करने से इन्कार किया तो ब्रह्मा ने कहाकि हे पुत्र! इससे तुम्हें आगे चलकर बहुत लाभ होगा। स्वयं ब्रह्म परमात्मा परम ईश्वर इस रघुकुल के भूषण-राजा होंगे।

"उपरोहित राज का संरक्षक होने से उसे विशेष अधिकार था किन्तु उस अधिकार का दुरुपयोग करने से उपरोहित कर्म नीच कहा जाने लगा।"

तब मैंने हृदय में विचारा कि जिसके पाने के लिए योग, यज्ञ, व्रत और दान किए जाते हैं उस पूरण ब्रह्म को देखूंगा, इसके समान दूसरा कोई धर्म नहीं। ॥दो४२५॥

जप, तप, नियम, योग, व्रत और धर्म, वेद से उत्पन्न होने वाले जितने भी कर्म हैं और ज्ञान, दया, दम तथा तीर्थों का मज्जन करना ज्ञान महा यज्ञ

नाथ एक वर मांगऊं, राम कृपाकरि देहु।
जन्म-जन्म प्रभु पद कमल, कबहूं न घटै सनेहु॥

आदि जहाँ तक भी धर्म के उपाय सन्तों ने तथा वेद ने बताएं हैं, वेद, शास्त्र, अनेकों सद्ग्रन्थों एवं पुराणों के पढ़ने-सुनने का एवं सब साधनों का सुन्दर फल तो हे प्रभु! एक मात्र आपके श्री चरण कमलों में निरन्तर प्रेम का होना ही है।

क्या कीचड़ से धोने पर कपड़े का मल छूट सकता है? क्या जल के मथने से कोई घी पा सकता है? इसी प्रकार हे नाथ! प्रेम-भक्ति रूपी जल के बिना क्या कभी हृदय का पाप रूपी मल धुल सकता है? वही सर्वज्ञाता, ज्ञानी, पंडित है वही गुणों का जानने वाला और अखण्ड विज्ञानवान है, वही चतुर और सब सुलक्षणों से युक्त है जिसका आपके चरण कमलों में प्रेम है।

मुनि वशिष्ठ जी प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे नाथ! मैं आपसे एक वर मांगता हूँ आप कृपा करके दीजिए। प्रत्येक जन्म में प्रभु के श्री चरण कमलों में प्रेम बढ़ता ही रहे कभी घटे नहीं। ॥ दो. ४२६॥

हे पार्वती! जिसके प्रेम और सेवा-भक्ति का प्रभु ने अपने मुख से वर्णन किया, उस हनुमान जी के समान भाग्यशाली और प्रेमी कोई नहीं है।

मुनि वशिष्ठ जी की प्रभु से विनय

नाथ एक वर मांगऊं, राम कृपाकरि देहु।
जन्म-जन्म प्रभु पद कमल, कबहुं न घटै सनेहु।।

ज्ञान महायज्ञ

एक बार सुख को देने वाले मुनि के आश्रम में प्रभु-मंत्री एवं भाइयों सहित गये। प्रभु ने सिर नवाकर दण्डवत प्रणाम किया, मुनि विश्वामित्र जी आदर सहित बड़ी प्रसन्नता के साथ मिले। मुनि ने प्रभु का मनोहर सुन्दर बदन देखकर कुशल पूछी तब प्रभु ने कहा कुशल तो आपके चरण कमलों के दर्शन से है। मुनि के चरणों में प्रणाम करके मुनि मण्डल को सिर नवाया और आशीर्वाद पाकर बैठ गये।

मुनि विश्वामित्र जी पुराणों और इतिहास की कथाएं सुनाने लगे और आनंदकंद कृपासिंधु प्रभु सुनकर अति प्रसन्न हुए। प्रभु ने उन कथाओं का सार समझाकर सब भाईयों को अति सुख दिया वे सब बड़े प्रसन्न हुए। महामुनि विश्वामित्र जी को अति प्रसन्न देखकर प्रभु दोनों हाथ जोड़कर बड़ी प्रसन्नता के साथ बोले हे नाथ! आपके चरणों के प्रसाद से आपकी कृपा से सारे जगत में मेरी मर्यादा फैल गई है।

अब हे नाथ! मैं एक ऐसा अविनाशी यज्ञ करुँ जो ज्ञान यज्ञ के नाम से सारे विश्व में विख्यात हो। जो कलियुग को, सब पापों को और सब सन्तापों को नष्ट करके जगत को परमसुख देने वाला बने। ॥दो. ४३०॥

प्रभु के प्यारे वचनों को सुनकर मुनि बड़े प्रसन्न होकर बोले कि आप ऐसी सुन्दर और नीति पूर्ण बातें क्यों न कहो। तुम्हारी सभी अभिलाषाएं पूर्ण हो जाएंगी। भरत जी! आप उठो! और सब कार्य संभालो! वन में जाकर मुनियों के आश्रम में सबको न्योता दे आओ। तब अनेक प्रकार से भरत जी चरणसेवा करके मुनियों को साथ लेकर चले।

मुनि के वचन सुनकर भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, मंत्री घर गये और यहां राम ने मुनिवर से पूछा कि आप की जो आज्ञा हो वह सेवा मैं करुँ। प्रभु के मन के विचार जानकर मुनि स्नेह युक्त प्रिय वचन बोले हे राम! आप आज जनकपुर दूत भेजें। राजा जनक भी अपने सारे राज समाज सहित आवें।

आप सेवकों को, नगर वासियों को और सब मंत्रियों को आदर सहित बुलाकर शीघ्र ही हाट, बाट, नगर के द्वार और घर सबकी सुन्दर रचना कराओ। एक बहुत बड़ा पंडाल बनाकर उसकी सुन्दर रचना कराओ। ।।दो॰ ३२।।

हे रघुवंशियों के शिरोमणि राम सुनिये! आप सब नगरवासियों सब जाति के वरुण, कुबेर, देवता, इन्द्र, यम, मुनि, एवं देव गुरु को न्योता देकर बुलाओं।

सबको निमंत्रण देकर प्रभु मुनि जी के साथ अवधपुर आये और वहीं की सजावट देखकर बड़े प्रसन्न हुए। दूत तुरंत ही मिथिलापुरी पहुँच गये और देश विदेश के सभी राजाओं को बुलाया। विमानों में चढ़कर देवताओं की पत्नियां बड़ी सराहना करने लगीं और वे ऐसे सुन्दर कंठ से गान गाने लगीं जिसे देखकर कोयल के कंठ भी लजाने लगे। विश्वामित्र जी के सात सहस्र शिष्यगण ऋषि-मुनि और इच्छाचारी आये।

महामुनि परासर, भृगु, अंगिरा, नारद व्यास और महामुनि अगस्त्य सब मुनियों के समूह समाज सहित सब के सब आए और मुनीश्वर देवल, महामुनि पुलस्त्य जी भी आए। देव मुनियों सहित सब यज्ञ स्थल पर आकर अपने-अपने डेरों में ठहर गये। जहाँ उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएं थीं। ।।दो॰३३।।

यज्ञ का स्थान जो परम शोभायमान था उसे देखकर सभी ने परम सुख पाया। मिथिलापुर में जो दूत भेजे थे उन्हें देखकर जनकपुर वासियों ने परम सुख पाया और सबने द्वारपालों को सूचित किया कि अवधपुर से पत्र आया है। समाचार सुनकर जनकराज विदेह सहसा ही उठकर दौड़े और तन मन से पुलकायमान होकर उनके नेत्रों में प्रेम के जल भर आए।

राजा के मन में जितना आनंद हुआ उतना शारदा, शेष भी नहीं कह सकते। वे बेसुध होकर ड्योढ़ी पर आए और दूतों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। राजा ने दूतों से पूछा कि कहो! श्री रामचन्द्र जी भाइयों सहित कुशल हैं? तब पत्र देकर के दूतों ने सब कुशल सुनाई। पत्रिका को हृदय से लगाकर नेत्रों से लगाया और वाणी गद्-गद् हो गई कि कुछ कहा नहीं जाता।

राजा जनक ने दूतों को बुलाकर अनेक प्रकार से उनकी पूजा की तब मुनि सतानन्द के पास गये और वे ऐसे प्रसन्न हो रहे थे मानो चारों पदार्थ मिले हों। ।।दो४३४।।

सब समाचार राजा ने सतानंद को सुनाए, उसके मन में बहुत आनन्द हुआ। वह बोला हे राजन! चलिये! इस महान यज्ञ को देखने अवश्य चलिये। सारा कटक जाकर अवश्य सजवाइए। तब राजा सतानन्द से विनय करके राज मन्दिर में आए, वहां सब सेवकों को बुलाकर कहा कि सुन्दर चतुरंगिनि सेना को सजाओं यह समझाकर राजा राजभवन में गये।

पत्री हाथ में लिए हुए राजा जनक रनिवास में आये और फिर वह पत्रिका महाराज ने सबको बांचकर सुनाई। सारे रनिवास ने प्रसन्न होकर सब साधु ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत-सा दान दिया। बहुत धन द्रव्य याचकों को दिया और आदर सहित दोनों दूतों को बुलाकर सब स्त्रियाँ अलग-अलग सब बातें पूछती हैं और प्रभु के सुन्दर गुणानुवाद सुनती हैं।

महाराजा जनक मुनियों को साथ लेकर बिगुल और नगाड़े तथा अनेक प्रकार के बाजों सहित तीसरे पहर तक अवधपुर के निकट पहुँच गये। ।।दो४३५।।

महाराजा जनक का शुभागमन सुनकर प्रभु आदर सहित लेने चले। दोनों बड़े प्रेम से मिले और उत्तम स्थान में निवास देने चले।

महाराजा जनक का सारा समाज राम ने भरत जी को सोंपकर स्वयं वहाँ आये जहां राजाओं के शिरोमणि महाराज जनक थे। राजा ने फिर मिलकर राम को अपने निकट बैठाया और गद्-गद् होकर वचन बोले। प्रभु के चरण चूम कर उनके बदन को देख-देख कर आनंद में इतने मग्न हो गये कि उनका प्रेम हृदय में नहीं समा रहा है। प्रभु की विनती और सभी प्रकार से सेवा की। तब प्रभु ने भरत और मंत्री को बुलाया।

तब प्रभु ने आकर महामुनि विश्वामित्र के चरणों में प्रणाम किया और इच्छानुसार वर पाकर प्रभु ने सभी देवों की और ऋषि-मुनि-साधुओं की वंदना की, उनसे उत्तम आशीष पाकर प्रसन्न हुए। बहुत मुनिवरों के दल आए, प्रभु सभी को सुन्दर डेरों में स्थान दिया। चन्द्र, सूर्य, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और जनक आदि जो परम अनादि हैं वे सब भी आए।

ज्ञान महायज्ञ में प्रभु के प्रवचनों का संक्षिप्त वर्णन

उस अवसर की शोभा सीमा रहित थी। ऐसा कौन कवि होगा जो वर्णन कर सकेगा। विश्व के आधार कृपालु विभु ने अति अपार चरित्र किये। ।।दो४३७।।

स्वर्ण में जड़ित सुन्दर मणि और मालाओं से सुशोभित सिंहासन पर आनंदकंद कृपा सिंधु प्रभु विराजमान हुए। श्री सीता जी सहित प्रभु के दर्शन करके सभी देव-मुनि बड़े प्रसन्न हुए। सभी ने अति प्रसन्न हो कर प्रभु को प्रणाम किया। अति अधिक भीड़ देखकर विज्ञानी मुनि-विश्वामित्र ने सब रिद्धि और सिद्धियों को बुलाकर उनका सम्मान किया और कहा कि तुम सब जाकर जिसको जो चाहिये उसी के अनुसार जो उचित है वह करो।

मुनि विश्वामित्र की आज्ञा पाकर और प्रभु का रुख पाकर उन सिद्धियों ने रिद्धि सहित सब रचना की और करोड़ों गृह बना दिये जो विधाता को भी सुहावने लगे। सब नगरवासी दल बनाकर आए, जो भी प्रभु के प्रवचन सुनते थे वे बहुत ही प्रसन्न होते थे। सब ऋषि-मुनि और संत जन जय जयकार करते हुए वेदमंत्रों को पढ़-पढ़ कर प्रभु के गुण गा-गाकर आशीष पा रहे हैं। अनेक प्रकार के बाजे-तबले नगाड़े बजते हैं। सभी भक्त जय हो! जय हो! कहकर प्रभु के गुण गा रहे हैं।

जनक आदि संत, भुसुण्डि, लोमश आदि महामुनि जो जीवन मुक्त हैं और ब्रह्म में लीन हैं, वे भी ध्यान छोड़कर आनंदकंद प्रभु के प्रवचन सुनते हैं। जो प्रभु की कथा में प्रेम नहीं करते उनके हृदय पत्थर हैं। ।।दो४३८।।

एक बार परम प्रभु ने सबको बुलाया। सब नगर निवासी ऋषि मुनि आए और वहाँ जितने भी महामुनि, संत जन थे सब बैठे तब भक्तों के भय को दूर करने वाले वचन प्रभु बोले हे नगर निवासियों! मेरी बात सुनो! मैं न तो ममता वश कहता हूँ न प्रभुता के बल पर और न अनीति की बात ही कहता हूँ। जो कुछ भी मैं कहता हूँ पहले उसे मन लगाकर सुनो तब जो तुम्हें अच्छा लगे वह करना।

वही मेरा सेवक और प्यारा भक्त है जो मेरी आज्ञा में रहता है। हे भाइयो! मैं यदि कुछ अनुचित कहूँ तो भय त्यागकर मुझे रोक देना। यह मानव तन जो हम सबको मिला है यह बड़े भाग्य की बात है। सभी सद्ग्रन्थ कहते हैं कि मानव तन देवताओं को भी दुर्लभ है, परलोक के लिये जीवन को नहीं सुधारा।

वह देह त्यागकर सिर धुन-धुन कर पछताकर अत्यन्त दुःख पाता है और समय को, कर्म को, ईश्वर को मिथ्या दोष लगाता है।

इस मानव तन पाने का फल विषय भोग नहीं है। यदि यह पुण्य करके स्वर्ग प्राप्त कर ले तो भी वह सुख थोड़ा ही है। पुण्यक्षीण हो जाने पर अत्यन्त दुःख भोगना पड़ता है। अतः जो मानव तन पाकर विषयों में मन लगाते हैं वे अमृत के बदले विष ग्रहण करते हैं। उसे कोई भला नहीं कहता जो पारस मणि को त्यागकर गुंजा ग्रहण करता है वह अभागा चौरासी लाख योनियों को प्राप्त करता है जो अंडे, पसीने, रक्त और पृथ्वी से उत्पन्न होती हैं।

वह समयानुसार गुण, स्वभाव और कर्मानुसार फल भोगने के लिए माया की प्रेरणा से भरमाता है। तब इसे महान् दुखी देखकर प्रभु दया करके बिना किसी कारण के मनुष्य शरीर देता है। वह नर देह भवसागर से पार होने के लिए नौका है, जिसे चलाने में प्राणवायु ही मेरा सहारा है और इस नाव के पार करने वाला सद्गुरु हैं। जिस साज से जीव पार होता है वह दुर्लभ साज सद्गुरु से ही सुलभ होता है।

जो मानव ऐसा संतों का समाज पाकर भी यदि भवसागर से पार उतरने वाले साधन को प्राप्त न करे तो वह मंदबुद्धि आत्म हत्या की गति को प्राप्त होता है।

॥दो.४४०॥

यदि आप इस लोक और परलोक में सुख चाहते हो तो मेरे वचनों को सुनकर हृदय में दृढ़ धारण करो। यही एक मार्ग सुलभ और सुख को देने वाला है। जो मेरी भक्ति है जिसका वेद शास्त्रों ने वर्णन किया है। उस भक्ति के बिना ज्ञान बड़ा अगम है, उसमें बाधा भी बहुत हैं और साधन भी कठिन हैं तथा भक्ति के बिना ज्ञान में मन भी नहीं टिकता। यदि बहुत कष्ट करने पर ज्ञानी हो भी गया तो सभी सेवा भक्ति के बिना न वह मुझे प्यारा है और न उसका ही मन मुझ में टिकेगा।

भक्ति स्वतंत्र और सभी गुणों की खान है किंतु बिना संतों के कोई पा नहीं सकता। जब तक पुण्यों का पुंज न हो तब तक संत नहीं मिलते और संतों की संगति ही जन्म मरण के बंधन को नष्ट करती है। प्रभु की सेवा भक्ति करते हुए बिना यतन और परिश्रम जन्म मरण के बंधन का मूल भेद भ्रम नष्ट हो जाते हैं। भक्ति में भोजन हित के लिये इतना करे जिससे क्षुधा की तृप्ति हो जाय और उस भोजन को जठराग्नी पचा सके।

और भी एक अति गुप्त रहस्य है, मैं हाथ जोड़कर कहता हूँ किशंकर भजन के बिना मानव मेरी भक्ति पा नहीं सकता।

आप ही बताइए। भक्ति के मार्ग में कठिनाई ही क्या है? योग-यज्ञ, जप, तप, उपवास ये कुछ भी नहीं केवल शंकर भजन और मेरी भक्ति करनी है। सरल स्वभाव से रहकर मन में कुटिलता न करे, जो प्राप्त हो उस में संतोष करे। जो दास तो मेरा कहाता हो और आशा दूसरे की करे तो बताओ उस पर मेरा विश्वास कैसे हो? मैं अधिक क्या कहूँ बस इसी आचरण से मैं वश में रहता हूँ।

जो बैर, कलह किसी से न करे, न भय ही रखे और न किसी से आशा करे तो उसके लिए सभी दिशाएं सुख दाई हैं। जो बिना आज्ञा के कोई नया कार्य आरंभ न करे, जिसका घर न हो, मान न हो, पापी न हो, क्रोधी न हो और चतुर विज्ञानी हो। जो संतों से प्रेम करे, उनके संपर्क में रहे और विषय, स्वर्ग, अपवर्ग को तिनके के समान समझे। भक्ति के पक्ष में हठ करना उचित नहीं है, दुष्टता को और दुष्ट तर्कों को अपने मन से दूर भगा दे।

जो मेरे ही गुणों को गाते हुए नाम में ही लीन रहता है। ममता, मद और मोह से रहित है उसका सुख वही जानता है, वह परमानंद का घर है। ।।दो४४२।।

भगवान राम के अमृतमय वचन सुनकर सबने कृपासागर प्रभु के चरण पकड़ लिए। कहा कि हे कृपानिधान! आप हमारे माता-पिता, गुरु और रक्षा करने वाले दीन बंधु भगवान हैं। हे कृपा नाथ! हमारे प्राणें से भी अधिक प्यारे हो! आप ही हमारे तन, धन और धाम हैं, आप ही हितकारी हैं। हे नाथ! सभी प्रकार से आप शरणागतों के दुःखों को हरने वाले हो। आपके सिवाय ऐसी शिक्षा हमें कौन देगा? माता-पिता भी अपने स्वार्थ में लीन रहते हैं।

हे प्रभु! बिना हेतु के जगत में दो ही उपकारी है। एक आप और दूसरा आपका सेवक। हे नाथ! जगत में सब स्वार्थ के ही मित्र हैं। उनमें स्वप्न में भी परमारथ नहीं है। सब के प्रेम में सने हुए वचन सुनकर प्रभु हृदय में बड़े प्रसन्न हुए। प्रभु की आज्ञा पाकर सब नगर वासी अपने-अपने घर को गये। आपस में प्रभु की चर्चा, प्रभु के गुण एवं उनकी सुन्दर कथा की प्रशंसा करते हुए चले।

सब को भाँति-भाँति का भोजन कराकर, मुनियों को बुलाकर विदा किया। सब मुनि एवं राजा अपने-अपने स्थानों को गये तब राम ने अत्यंत सुख पाया। प्रभु को देखकर मुनियों ने प्रणाम किया, प्रभु ने सब का उचित आदर किया और जल देकर आसन पर बैठाया तथा सभी को परम सुख दिया।

प्रभु ने करोड़ों गौ, भूमि, धन और आश्रम दिये जिनका वर्णन कहाँ तक किया जाय। महाराजा जनक सब मुनियों को पहुँचाकर आए तब प्रभु द्विजवर सतानंद और विश्वामित्र जी को बुलाकर बैठे।

प्रभु ने जनक जी की पूजा करके उन्हें विदा किया और दोनों मुनिवरों की पूजा करके चरणामृत लिया। प्रभु ने उनके साधुओं को एवं ऋषि मुनियों को गौवें, वस्त्र, भूमि, धन एवं स्थान देकर उनकी सभी इच्छा पूर्ण की।

हे पार्वती! अवध निवासी नगर के सभी स्त्री-पुरुष अति ही भाग्यशाली हैं पूरणब्रह्म आनंदकंद सच्चिदानंद स्वरूप प्रभु राजा रूप में विराजमान हैं। ।।दो४४३।।

देह से उत्पन्न हुआ आध्यात्मिक, मन से दैविक और संसार से उत्पन्न होने वाला भौतिक ये तीनों ताप राम के राज्य में किसी को भी नहीं व्यापते थे। सब प्रेम से रहते थे, धर्मानुसार वेद की रीति पर चलते थे। धर्म के चारों चरण भरपूर हैं, कोई स्वप्न में भी पाप नहीं करता। सभी स्त्री-पुरुष भगवान की भक्ति में लीन हैं और सभी परम गति के अधिकारी हैं।

राम के राज्य में न तो अल्प मृत्यु है, न कोई दुःखी है और सभी सुन्दर-निरोगी हैं। न दरिद्र हैं, न दुःखी हैं, न अज्ञानी और न लक्षण हीन ही हैं। सब स्त्री-पुरुष कपट रहित, धर्म में लीन, चतुर और गुणी हैं। सभी गुणवान, पण्डित और विज्ञानी हैं। अपने कर्तव्य को जानने वाले कृतज्ञ हैं कोई भी कपट में चतुर नहीं है।

हे पार्वती! राम का राज्य सदा सुखमयी आनंद स्वरूप है। जगत में चर-अचर जितने भी प्राणी हैं उनमें से किसी को भी समय, कर्म, स्वभाव और गुणों से उत्पन्न होने वाले दुःख नहीं भोगने पड़ते। सभी निष्काम भाव से प्रभु की आज्ञा में रहते हैं। ।दो॰४४।।

पार्वती द्वारा मानस प्रशंसा

हे पार्वती! मैंने यह विशुद्ध कथा अपनी मति अनुसार कही है। प्रभु के चरित्र सौ करोड़ अपार हैं उन सबका वर्णन वेद शारदा भी नहीं कर सकते। राम अनन्त हैं प्रत्येक जन्म के गुण अनंत हैं। पृथ्वी के कण और जल की बूंद गिनी जा सकती हैं परन्तु प्रभु के चरित्रों का कोई पार नहीं पा सकता।

हे पार्वती! जो कथा मुनि भुसुण्डि जी ने गरुड़ को सुनाई थी वह सब सुहावनी कथा मैंने तुम्हें कह सुनाई। मैंने भगवान राम के कुछ थोड़े से गुण बखान कर कहे हैं। हे पार्वती! बताओ अब और क्या कहूँ? भगवान राम की मंगलमयी कथा सुनकर पार्वती जी हर्षित होकर नम्र एवं कोमल वाणी बोलींहे नाथ! मैं धन्य ह ूँ, धन्य हूँ! जो मैंने जन्म-मरण के भय को दूर करने वाली प्रभु की कथा सुनी।

पार्वती जी कहती हैंहे कृपा के धाम प्रभु! अब आपकी कृपा से मेरे कर्म सफल हो गये, अब मुझे मोह-भ्रम नहीं रहा। हे प्रभु! अब मैं आनन्दकंद सच्चिदानंद प्रभु के प्रताप एवं नाम गुण और प्रभावों को जान गयी।

हे नाथ! आप के मुख चन्द्र से भगवान राम का यश रूपी अमृत बह रहा है। जिसे कान रूपी दोनों से पीकर के धीरबुद्धि पुरुष भी नहीं अघाते।

पार्वती कहती हैंराम के चरित सुनते-सुनते जो तृप्त हो जाते हैं उन्होंने राम के रसरूपी नाम को जो राम गुण है उसे जाना ही नहीं। जो जीवन मुक्त महामुनि लोमश, भुसुण्डि आदि हैं वे भी भगवान विष्णु के नाम के गुणों को निरंतर सुनते रहते हैं। जो भवसागर से पार होना चाहता है उसके लिए तो यह रामकथा शक्तिशाली नौका है। फिर प्रभु के गुण समूह तो विषयी प्राणियों के लिये भी कानों को सुख देने वाले मन को आनन्द देने वाले हैं।

संसार मे सुनने वाला ऐसा कौन है जिसे राम की कथा अच्छी न लगती हो। वे मनुष्य बुद्धिहीन हैं और अपनी आत्मा के हनन करने वाले हैं जिन्हें प्रभु की कथा अच्छी नहीं लगती। हे नाथ! आपने भगवान विष्णु के गुण जो रामचरित मानस में गाए हैं उन्हें सुनकर के हे नाथ! मैंने परम सुख पाया। किन्तु आप ने जो कहायह सुन्दर कथा मुनि भुसुण्डि जी ने गुरुड़ को सुनाई, सो कैसे?

हे प्रभु! मुझे बड़ा भारी सन्देह यह है कि जिसका ज्ञान में अति प्रेम विज्ञान में दृढ़ता है तथा रामभक्ति में अति स्नेह है उस महामुनि भुसुण्डि जी को काक का तन कैसे मिला और उस देह में भगवान की भक्ति कैसे की।

हे नाथ! सुनिये, सहस्त्रों मनुष्यों में कोई एक ही मनुष्य धर्मव्रत को धारण करने वाला होता है और करोड़ों धर्मात्माओं में कोई एक ही विषयों के त्याग और वैराग में तत्पर रहता है। वेद की वाणी है कि करोड़ों विरक्तों में कोई एक ही यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है और करोड़ों ज्ञानियों में कोई एक ही जीवन मुक्त होता है।

ऐसे सहस्त्रों में भी सुख देने वाला ब्रह्म लीन विज्ञानी दुर्लभ है। धर्म शील, विरक्त और ज्ञानी, जीवन मुक्त और ब्रह्म निष्ठइन सबसे भी वह दुर्लभ है जो मद और माया से रहित होकर राम भक्ति में लीन रहता है। वह भगवान विष्णु की भक्ति कौए के तन में कैसे मिली। हे विश्व के स्वामी! आप मुझे समझाकर कहिए।

हे नाथ! प्रभु के परायण हुआ नाम में लीन और सब गुणों का भण्डार, धारी मति महामुनि भुसुण्डि ने कौए का शरीर कैसे पाया?

हे कृपालु! काक भुसुण्डि जी ने ये प्रभु का सुन्दर चरित कहाँ पाया? और हे नाथ! इसे आपने कैसे सुना? यह भी बताने की कृपा करें। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। गरुड़ जी! तो महान ज्ञानी, सब गुणों के भण्डार, भगवान विष्णु के सेवक और उनके अत्यंत ही निकट रहने वाले हैं। गरुड़ जी ने मुनि सनक आदि को जो परम संत हैं उन्हें निकट छोड़कर भुसुण्डि के पास जाकर कथा क्यों सुनी?

मुनि भुसुण्डि और गरुड़ दोनों ही भगवान विष्णु के भक्त थे फिर कहिए उन दोनों में संवाद किस प्रकार हुआ। पार्वती जी की सरल और सुहावनी वाणी सुनकर शिव जी प्रसन्न होकर बोलेसुनो! यह परम पवित्र ऐतिहासिक बात है जिसके सुनने से मोह और भ्रम नष्ट हो जाता है, प्रभु के चरणों में प्रेम उत्पन्न होता है और बिना ही प्रयास के मानव भवसागर के महान दुःखों से पार हो जाता है।

गरुड़ भुसुण्डि संवाद की ऐतिहासिक कथा

हे पार्वती! तुम्हारी तरह ऐसे ही प्रश्न गरुड़ जी ने जाकर काक भुसुण्डि जी से किए थे। वह सब मैं आदर सहित कहूँगा, हे उमा! तुम चित लगाकर सुनो!

संसार के बंधनों से छुड़ाने वाली यह कथा जिस प्रकार मैंने सुनी हे पार्वती! वह प्रसंग सुनो। पहले तुम्हारा जन्म दक्ष के गृह में हुआ था उस समय तुम्हारा नाम सती था। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में अपमान के कारण तुमने अति क्रोध करके अपने प्राणों को त्याग दिया तब मेरे सेवक गणों ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया, वह सारा प्रसंग तुम जानती ही हो।

सुमेरू पर्वत के उत्तर की ओर कुछ दूरी पर एक बहुत ही सुंदर नील पर्वत है। उस पर्वत के उपर चार सुंदर शिखर स्वर्णमयी शोभायमान थे जो मेरे मनको बहुत प्यारे लगे। उन पर एक-एक विशाल वृक्षपीपल, बरगद, पाकर और आम हैं। पर्वत के ऊपर एक सुंदर सरोवर शोभा दे रहा था उसकी मणिमय पैड़िया देखकर मेरा मन मोहित हो गया।

उन सरोवर का जल शीतल, निर्मल और मधुर है उसमें अनेक रंगों के बहुत से कमल के फूल हैं। वहाँ हंस के गण भाँति-भाँति की बोली बोल रहे हैं और भौरें मधुर गुंजार कर रहे हैं।

उस सुंदर नील पर्वत पर काक भुसुण्डि रहते हैं जिनका नाश कल्पांत के अंत में भी नहीं होता। माया से उत्पन्न हुए बहुत से गुण, दोष, मोह काम आदि और अज्ञान समस्त जगत में व्याप रहे हैं। किंतु उस पर्वत के निकट कभी नहीं जा सकते। हे पार्वती! भुसुण्डि जी वहाँ रहकर जिस प्रकार भगवान विष्णु को भजते हैं उसे तुम प्रेम सहित सुनो!

काक भुसुण्डि जी पीपल के तले भगवान विष्णु का ध्यान करते हैं और जप यज्ञ पाकर-वृक्ष के नीचे करते हैं तथा आम की छाया में मानस पूजा-मन की तृप्ति करते हैं। भगवान के भजन के सिवाय दूसरा काम नहीं है। बरगद वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की कथा सुनाते हैं। वहाँ बहुत से पक्षी आते और कथा सुनते हैं। जब मैंने वहाँ जाकर वह दृश्य देखा तो मेरे हृदय में बहुत आनंद उपजा।

गरुड़ जी को भ्रम होने का कारण

तब हंस की देह धारण करके मैंने कुछ समय तक वहाँ निवास किया और आदर पूर्वक प्रभु के गुणों को सुनकर कैलाश आया।

हे पार्वती! मैंने वह सब इतिहास कहा जिस समय मैं काक भुसुण्डि के पास गया था। अब तुम वह कथा सुनो! जिस कारण से पक्षिराज गरुड़ काक भुसुण्डि जी के पास गए। जब प्रभु ने रण में लीला की उस समय के चरित्र को देखकर मुझे लज्जा लगी। प्रभु मेघनाद के हाथों से बंधाए तब नारद ने वहाँ गरुड़ को भेजा।

बंधन को काटकर जब गरुड़ गए तब उनके हृदय में भ्रम पैदा हो गया। प्रभु के बंधन को देखकर गरुड़ दुःखी होकर बहुत तरह से विचार करने लगे। जो प्रभु व्यापक, विकार रहित, वाणी के ईश्वर और माया मोह से परे परब्रह्म परम ईश्वर विभुविष्णु हैं। मैंने सुना है कि वही प्रभु अवतार लेकर आए हैं परंतु मैंने उनका कोई प्रभाव नहीं देखा। जैसा सुना है।

जिसके नाम को जपकर मानव भवसागर के बंधन से छूट जाते हैं उसी प्रभु को एक क्षुद्र निशाचर ने नाग पास में बांध लिया है।

गरुड़ जी ने अपने मन को बहुत ही समझाया परंतु समझ में नहीं आया, हृदय में भ्रम छा गया और दुःख से उदास होकर तुम्हारी ही भाँति के मोह के वश में हो गए। वे व्याकुल होकर नारद के पास गए और मन में जो संशय था वह कह सुनाया। नारद जी को बड़ी दया लगी तब वे बोले कि हे गरुड़ जी! सुनो! प्रभु की माया बड़ी ही प्रबल है। प्रभु में संशय होने पर तुरंत घेर लेती है।

जो माया ज्ञानियों के चित को बलपूर्वक हरण कर लेती है और उनके मन को भ्रमित करके मोह उत्पन्न करती है। जिसने मुझे भी बहुत बार नचाया है। हे पक्षिराज गरुड़ जी! वही माया आपको भी व्याप गई है। हे गरुड़ जी! आप भगवान शंकर जी के पास जाओ। हे तात् कहीं भी और किसी से नहीं पूछना, तुम्हारा संशय वहीं जाकर नष्ट होगा। मुनि नारद जी की वाणी सुनकर गरुड़ जी चल दिये।

शिव जी का गरुड़ को भुसुण्डि के पास भेजना

ऐसा कह कर नारद जी रामगुण गाते चले और अति शीघ्रता से गरुड़ मेरे पास आए। हे पार्वती! उस समय मैं कुबेर के घर जा रहा था और तुम कैलाश में थीं।

गरुड़ जी ने आदर सहित मेरे चरणों में सिर नवाया और अपना संदेह सुनाया। हे पार्वती! गरुड़ की विनती और कोमल वाणी सुनकर मैंने प्रेम सहित कहाहे गरुड़ जी! आप मुझे मार्ग में मिले हो सो अब तुम्हें कैसे समझाऊं। जब आप बहुत समय तक संतों का संग करेंगे तब ही आपके सब संशय नष्ट हो सकेंगे।

हे गरुड़! जहाँ प्रतिदिन हरिकथा होती है तुमको मैं वहाँ भेजता हूँ। वहाँ जाकर कथा सुनते ही तुम्हारा सब संदेह दूर हो जाएगा और तुम्हें प्रभु के चरणों में अतिशय प्रेम होगा। अतः आप वहाँ जाओ और भगवान विष्णु की सुन्दर सुहावनी कथा सुनो! जो भाँति-भाँति से मुनियों ने गाई हैं। जिस कथा में प्रभु के आदि स्वरूप का और मध्य काल में उनके अवतारों का तथा अंतिम उनका क्या स्वरूप है उसका वर्णन है। प्रभु का स्वरूप सर्वव्यापक सब में रमा है जिसे राम कहा है।

बिना संतों के मिले भगवान विष्णु की कथा सुनने को नहीं मिलती और उसके बिना मोह-भ्रम भी नष्ट नहीं होता, मोह गये बिना प्रभु के चरण कमलों में प्रेम नहीं होता।

चाहे कोई कितना ही योग साधन करे, जपयज्ञ करे, ज्ञानीऔर परम वैरागी हो परन्तु बिना प्रेम के प्रभु नहीं मिलते। उत्तर दिशा में एक सुन्दर नीला पर्वत है वहाँ मुनि भुसुण्डि रहते हैं जो बड़े शील स्वभाव के और राम भक्ति में परम प्रवीण-चतुर हैं। वे बड़े ज्ञानी, गुणों के घर और बहुत समय के पुराने हैं। मैंने जब बातें समझाकर कहीं तब वह मेरे चरणों में सिर नवाकर अति प्रसन्न होकर चला।

हे पार्वती! मैंने उसे इसलिए भी नहीं समझाया कि मैं प्रभु की कृपा से उसका भेद पा गया था। उसने कभी अभिमान किया होगा जिसे प्रभु खोना चाहते हैं और कुछ इसलिये भी अपने पास नहीं रखा कि पक्षी ही पक्षी की भाषा को समझता है। हे पार्वती! प्रभु की माया बड़ी बलवान है ऐसा कौन ज्ञानी है जिसे मोह अथवा भ्रम न हो!

मुनि भुसुण्डि द्वारा गरुड़ का स्वागत

जो ज्ञानी भक्तों में भी शिरोमणि हैं और त्रिभुवन पति भगवान विष्णु के विमान चालक हैं वे गरुड़जी भी प्रभु की माया वश उनकी लीला को देखकर भ्रमित हो गये। प्रभु की माया बड़ी प्रबल है, वह नीच है जो घमण्डी अभिमान करता है।

गरुड़ जी वहाँ गये जहाँ अगाध बुद्धि-अखण्ड भक्ति युक्त मुनि काक भुसुण्डि जी रहते थे। उस पर्वत को देखकर उनका मन अति प्रसन्न हुआ और मुनि के दर्शनों से ही माया-मोह तथा सब चिंताएं दूर हो गई। सरोवर में स्नान और जलपान करके वे प्रसन्न चित होकर बट बृक्ष के नीचे गये जहां बूढ़े-बूढ़े पक्षीरूपी संत कथा सुनने आये हुए थे। वे वहाँ राम के सुन्दर गुणों का श्रवण करते थे।

भुसुण्डि द्वारा गरुड़ का स्वागत

काक भुसुण्डि जी कथा आरम्भ करना ही चाहते थे कि पक्षिराज गरुड़ जी वहाँ आ पहुँचे। उन्हें आते देखकर काक भुसुण्डि जी सहित सभी समाज अति प्रसन्न हुआ। उन्होंने गरुड.जी का बहुत ही आदर-सत्कार से स्वागत किया और कुशल पूछ कर बैठने के लिये सुंदर आसन दिया। तब प्रेम सहित पूजा करके काक भुसुण्डि जी मधुर वचन बोले

हे नाथ! आपके दर्शन से मैं कृतार्थ हो गया हूँ। अब आप जो आज्ञा दें मैं वही करुँ। हे प्रभु! आप किस कार्य से यहाँ आए हैं? तब मधुर शब्दों में गरुड़ जी बोलेहे भुसुण्डि जी! आप तो सदा ही कृतार्थ स्वरूप हो। जिनकी महिमा शिव जी ने स्वयं वर्णन की है।

हे तात, सुनिए! मैं जिस कारण से यहाँ आया हूँ वह सब तो आपके दर्शन से ही पूरे हो गए। आपका पवित्र, अति सुन्दर आश्रम देखकर मेरे सब संदेह-भ्रम मिट गए। अब हे तात! प्रभु की वह कथा सुनाइए! जो अति पवित्र सुख की दाता और सब दुःखों को नष्ट करती है। हे प्रभु! मैं आपसे बार-बार विनय करता हूँ। मुझे वह कथा सुनाइए।

गरुड़ जी की विनय युक्त सरल प्रेमभरी, सुखों की दातापरम पवित्र वाणी सुनकर भुसुण्डि जी ने प्रथम तो रामचरितमानस का वर्णन किया और हे पार्वती! तत्पश्चात वह सब कथाएं वर्णन की जो मैंने तुम्हें राम अवतार की कथाएं सुनाईं।

रामचरित मानस सुनकर गरुड़ का मोह नष्ट

हे पार्वती! रामचरित मानस की सब कथाएं सुनकर गरुड़ जी का संदेह मिट गया और मनमें अति प्रसन्न हुए। जो धूप से व्याकुल होता है वही वृक्ष की छाया के सुख को जानता है। गरुड़ जी प्रसन्न होकर बोलेहे तात! यदि मुझे ऐसा मोह न होता तो मैं आपसे कैसे मिलता और अपने इष्टदेव की अति विचित्र कथा कैसे सुनता, जो आपने भाँति-भाँति प्रसंग सुनाए हैं।

वेद, शास्त्र एवं पुराणों का यही मत है और मुनिगण भी ऐसा ही कहते हैंइसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि सच्चे संत उसी को मिलते हैं जिसे प्रभु कृपा दृष्टि से देखते हैं। मैंने प्रभु के मनुष्यों जैसे चरित्र देखे, जिससे मेरे मन में बड़ा भारी संशय हुआ किंतु प्रभु की कृपा से मुझे आपके दर्शन हुए और आपकी कृपा से मेरे सब संशय मिट गये।

हे पार्वती! उत्तम बुद्धि, शील स्वभाव, पवित्र, कथा के प्रेमी और आनंदकंद भगवान विष्णु के दासों को पाकर संत जन इस गुप्त रहस्य को उनके प्रति प्रकाशित करते हैं।

काक भुसुण्डि जी की आकाशपति श्री गरुड़ जी पर प्रीति कम नहीं है, वे फिर बोलेहे नाथ! आप भगवान विष्णु के कृपा पात्र हैं और मेरे सभी तरह से परम पूजनीय हैं। आपको न संशय है न माया का मोह ही है, मुझ पर आपने बड़ी दया की है। हे गरुड़ जी! मोह के बहाने आपको भेजकर प्रभु ने मुझे बड़ाई दी है।

हे गोस्वामी गरुड़ जी! आपने अपना मोह कहा। यह कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकिनारद जी, शिव जी, ब्रह्मा जी और सनक आदि जो आत्म तत्व के मर्मज्ञ, उपदेशक एवं सभी महामुनियों के भी नायक हैं, उनमें कौन ऐसा है जो मोह से न भरमाया हो। जगत में ऐसा कौन है जिसे काम शक्ति न व्यापी हो, तृष्णा ने पागल न बनाया हो और क्रोध ने हृदय न जलाया हो?

संसार में ऐसा कौन ज्ञानी तपस्वी शूर-वीर, कवि, विद्वान और गुणों का भंडार हैं जिसे लोभ ने माया जाल में नहीं फसाया हैं।

प्रभु की माया एवं प्रभुताई का वर्णन

प्रभु की माया ने तो शिव और ब्रह्मा को भी मोहित कर दिया तो और बेचारे हैं ही किस गिनती में! ऐसा विचार कर माया पति भगवान विष्णु को मुनिजन भी भजते हैं।

जो माया सारे संसार को नचाती है और जिसकी करनी को किसी ने जान नहीं पाया। हे गरुड़ जी! वह माया प्रभु की भौंहों के मध्य भृकुटि में विराजमान है और प्रभु के इशारे पर अपने समाज सहित नटी की भाँति नाचती है। वह प्रभु सत् चित् आनंद स्वरूप जो प्रकाश है उसमें विराजमान हैं जिसकी चेतना सब में रमी हुई हैं, वह राम है। जो अजन्मा है। अखिल विश्व की जो शक्ति है वह जिनकी है वही व्यापक भी हैं और उस व्यापक में व्याप्य भी हैं वह विभु प्रकाश में नित्य विराजमान हैं।

व्यापक विभु गुण नहीं गुणों की खान हैं वाणी और इंद्रियों के ज्ञान से उसका ज्ञान न्यारा है। वह समदर्शी अजय, ममता रहित, अकार से रहित, निर्मोही, नित्य, रचना से न्यारा, सुखों का घर और इस प्रकृति से परे वह विभु सबके हृदय आकाश में निवास करता है उसकी दिव्य देह रज रहित अविनाशी है। यहाँ मोह का कारण नहीं, सूर्य के निकटतम नहीं हैं।

उसी विश्व निवासी विभु ने भक्तों के हित के लिए राजा राम का रूप धारण किया। एक मनुष्य को जो उत्तम कर्म करना चाहिए तदानुसार अनेकों पवित्र लीलाएँ कीं।

हे गरुड़ जी! राम की प्रभुता को सुनो! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वह सुहावनी कथा कहता हूँ। हे प्रभु! मुझे जिस प्रकार मोह हुआ वह सब कथा भी आपको सुनाता हूँ। हे तात! आप प्रभु की कृपा के पात्र हैं प्रभु के गुणों में आपकी प्रीति है जो मेरे लिए सुखदाई है। इसी कारण मैं आपसे कुछ भी नहीं छिपाता हूँ और अति रहस्य की बातें आपकों सुनाता हूँ।

सुनो! राम का सहज ही स्वभाव है कि वे अपने भक्त का अभिमान नहीं रहने देते। जितने भी जीवन-मरण के कारण भाँति-भाँति के दुख हैं उन सभी दुखों से अधिक दुखदाई अभिमान है। इसलिए हे तात! कृपा निधि इसे दूर करते हैं, प्रभु की सेवक पर प्रीति है। जिस प्रकार बच्चे के तन में फोड़ा होने पर माँ कठोर हृदय से उसके हित के लिए चीरा लगा देती है।

काक भुसुण्डि का मोह एवं प्रभु की विचित्र लीला

हे गरुड़ जी! प्रभु की कृपा और अपनी अज्ञानता की बात मैं कहता हूँ आप मन लगाकर सुनो। जब जब प्रभु मनुष्य तन धारण करके अपने भक्तों के लिए बहुत सी लीलाएँ करते हैं तब तब मैं जन्म भूमि में जाकर उनकी बाल लीलाओं को, उनके जन्मोत्सवों को देखकर अति प्रसन्न होता हूँ और पाँच वर्ष तक आनंद में मग्न रहता हूँ।

काक भुसुण्डि जी कहते हैं कि हे गरुड़ जी, सुनिए! प्रभु की लीलाएँ सेवक के लिए सुखदाई हैं। मेरे इष्ट देव श्री बालभगवान जी हैं जिनके बदन में करोड़ों कामदेव की शोभा है। मैं अपने प्रभु के दर्शन करके अपने नेत्रों को सफल करता हूँ। छोटे से कौए का रूप धारण करके अपने प्रभु के साथ-साथ रहता हूँ और भाँति-भाँति की लीलाएँ देखा करता हूँ।

बालपन में वे जहाँ-जहाँ भी जाते हैं, वहाँ-वहाँ मैं भी साथ-साथ उड़ता हूँ। उनकी जूठ जो आंगन में गिरती है उसे उठा-उठाकर मैं खाता रहता हूँ।

एक बार प्रभु ने बड़ी अद्‌भुत लीला दिखाई। प्रभु की उस लीला को याद करते ही मेरा मन आनंद में मग्न होकर तन की सुध भुला देता है।

राजभवन सभी प्रकार से सुंदर है, भवन में सोने के अंदर भाँति-भाँति के रतन आंगन का तो वर्णन ही क्या जो चारों भाई जहाँ खेलते हैं। माता को सुख देने वाले बाल विनोद करते हुए आंगन में विचरते हैं मकृतमणि के समान सुंदर गोरा श्याम और कोमल वदन में बहुत से कामदेवों की शोभा छाई हुई है।

नवीन कमल के समान लाल-लाल कोमल चरण हैं, सुंदर-सुंदर अंगुलियां हैं और नखों की ज्योति चंद्रमा की कांति को हरने वाली है। तलवों में बज्र अंकुश ध्वजा और कमल के चार सुंदर चिह्न हैं। चरणों में मधुर शब्द करने वाले घुंघरू हैं, मणियों से जड़ी सोने की सुंदर करधनी तगड़ी है। लाल-लाल हथेलियां, नाखून और अंगुलियां मन को हरने वाले हैं, जो मन को चुरा लेते हैं, विशाल-विशाल भुजाओं पर कड़े, कंगन बाजूबंद, अनंत-भुजबंध आदि आभूषण शोभित है।

प्रभु के रूप की शोभा एवं लीलाओं का वर्णन

सुंदर मनोहर तीन रेखाएं हैं पेट पर नाभी सुंदर और गहरी है, हृदय स्थल पर अनेकों प्रकार के आभूषण सुंदर वस्त्रों पर चमक रहे हैं।

सिंह जैसे कंधे और शंख के समान गला है, सुंदर ठोड़ी, और मुख तो छवि की सीमा ही है। तोतले वचन लाल-लाल होठ हैं, सुंदर उज्जवल और छोटी-छोटी ऊपर और नीचे की दो-दो दंतुलियां हैं। नीले कमल के समान सुंदर वदन, लाल कमल जैसे सुंदर नेत्र जन्म मरण के भय छुड़ाने वाले हैं। ललाट पर गोरोचन का तिलक शोभायमान है। भौहें टेढ़ी, कान सम, और सुंदर हैं काले घुंघराले बालों की शोभा छा रही है।

पीली और महीन झगुली वदन पर शोभा दे रही है। उनकी किलकारी और चितवन मुझे बहुत ही प्यारी लगती है। राजा के आंगन में विहार करने वाले रूप की राशि प्रभु अपनी परछाई देखकर नाचते हैं। मुझसे बहुत प्रकार के खेल खेलते हैं। उन लीलाओं का वर्णन करते हुए मेरा मन सकुचाता है। किलकारी मार कर जब वे मुझे पकड़ने दौड़ते हैं तो मैं भाग जाता हूँ तब वे मुझे पुआ दिखाते हैं।

साधरण बच्चों जैसी लीला देखकर मुझे मोह हुआ कि सच्चिदानंद आनंदकंद प्रभु यह कौन सी लीला कर रहे हैं?

हे गरुड़ जी! मेरे मन में इतना विचार आते ही प्रभु की प्रेरणा से माया मुझ पर छा गई। परंतु वह माया मुझे न तो दुख देने वाली हुई और न दूसरे जीवों की भाँति संसार में जन्म मरण के चक्र में बाँधने वाली हुई, इसका कारण है सो हे गरुड़ जी! सावधान होकर सुनिए। ज्ञान अखंड है वह है माया पति भगवान विष्णु, जीव सभी माया के वश में हैं।

जो सब के पास एक रस ज्ञान रहे तो ईश्वर और जीव में भेद ही कैसा? प्रभु जिसको जितना जना दे यदि न जनावे तो जीवात्मा निर्गुण है। प्रभु का ज्ञान पाकर जीव अभिमान वश माया के वश हो जाता है। सर्वगुणों की खान माया ईश्वर के वश में है। जीव परवश हैं स्ववश तो एक लक्ष्मी पति भगवान विष्णु ही हैं दूसरा नहीं। माया से उत्पन्न हुआ जो भेद है यह यद्यपि मिथ्या है पर भगवान विष्णु के बिना करोड़ों उपाय करने पर भी जन्म-मरण के बंधन का भेद मिट नहीं सकता।

प्रभु भक्ति के बिना ज्ञान सफल नहीं

प्रभु भजन के बिना जो अपना कल्याण चाहता है वह ज्ञानवंत और चतुर होने पर भी बिना सींग और पूंछ के जानवर हैं। जो अपनी मक्खी भी नहीं उड़ा सकता। यदि रात्रि में सोलह कला पूर्ण चंद्रमा, तारों का समुदाय हो और सारे पर्वतों पर आग जला दी जाए तो भी सूर्य के बिना रात्रि नहीं जाती। ।।दो४७०-४७१।।

इसी प्रकार हरि भजन के बिना जीवों का कलेश नहीं मिट सकता। प्रभु के सेवक को अविद्या रूपी माया नहीं व्यापती, उसे विद्यारूपी भक्ति का ज्ञान व्यापता है। हे गरुड़ जी! इसलिए दास का नाश नहीं होता और प्रभु में प्रेम भक्ति बढ़ती है। जब प्रभु ने मुझे भ्रम से चकित हुआ देखा तो हँसे उस समय की लीला सुनो।

यह भेद माता-पिता और भाईयों ने भी नहीं जाना। हाथ एवं घुटनों से चलकर प्रभु मुझे पकड़ने दौड़े। हे गरुड़ जी! तब मैं भाग चला। प्रभु ने मुझे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाए किंतु जैसे-तैसे मैं आकाश में गया वहाँ मैंने प्रभु की भुजाओं को अपने निकट ही आते देखा।

मैं ब्रह्मलोक तक गया, उड़ते हुए जब मैंने पीछे देखा तो हे तात! मेरे में और राम की भुजाओं में दो अंगुल का अंतर रह गया। मैं सातों आकाशों को पार करके जहाँ तक भी मेरी गति थी, गया, वहाँ भी प्रभु की भुजाओं को देखकर फिर मैं व्याकुल हो गया। ।।दो४७२ -४७३।।

भयभीत होकर मैंने आँखें मूँद लीं, खोलकर देखा तो अवधपुरी में पहुँच गया। मुझे देखकर राम हँसे तो मैं उनके मुँह में चला गया। हे गरुड़ जी! मैंने प्रभु के पेट में अनेकों ब्रह्माण्डों के समूह देखे। वहाँ उनमें अनेकों विचित्र लोक थे जिनकी रचना एक से एक बढ़कर थीं।

करोड़ों ब्रह्मा जी, शिव जी, अगनित तारागण, सूर्य, चंद्रमा, अगनित लोकपाल, यम, काल, विशाल पर्वत और भूमि थी। असंख्य समुद्र, नदी, सरोवर, वन आदि का विस्तार देखा। देव, मुनि, सिद्ध, नाग, मनुष्य, किन्नर तथा चारों प्रकार की खान के जड़ और चेतन जीव देखे।

भगवान के पूजा, ध्यान एवं वंदना से ही कल्याण

प्रभु के भीतर अनेक ब्रह्माण्डों को देखना

मैंने भिन्न-भिन्न सब कुछ देखा, अगनित विचित्र ब्रह्माण्डों में फिरा किंतु परम प्रभु राम को दूसरा नहीं देखा, प्रभु का ज्ञान बड़ा विचित्र है ॥ दो४७६॥

प्रभु की बाल लीला और प्रभुताई को देखकर एवं उस समय की अद्भुत रचना को समझ कर मैं देह की दशा को भूल गया। अति विचित्र लीलाओं को देखकर मुँह से कुछ बोला नहीं गया। पृथ्वी पर गिरकर मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि हे दुःखियों के, भक्त जनों के रक्षक मेरी रक्षा करो! रक्षा करो! परम प्रभु की भक्त वत्सलता देखकर मेरे हृदय में अति प्रेम उत्पन्न हुआ। नेत्रों में प्रेम के आँसू भरे हुए पुलकायमान होकर मैंने हाथ जोड़कर बहुत प्रकार से विनती की

मेरी विनय सुन कर अपने दास को दीन जानकर प्रभु सुख देने वाले मीठे गंभीर वचन प्रेम सहित बोलेहे भुसु ण्डि! तूँ मुझे अति प्रसन्न जानकर वर माँग ले। अणिमादिक रिद्धि और सब सिद्धियाँ, सब गुणों की खान मोक्षजो भी तूं चाहे माँग ले। ।। दो४७७-४७८।।

ज्ञान, विवेक और विज्ञान में अतिशय प्रेम आदि जो मुनियों को भी दुर्लभ हैं जिन्हें जग जानता है कि ये प्रभु की कृपा के बिना मुनिजन भी नहीं पा सकते। सो अब आज मैं तुम्हें देता हूँ इसमें कुछ भी संशय नहीं है। जो तेरे मन को अच्छा लगे वह माँग ले। आनंदकंद लक्ष्मीपति एवं मायापति भगवान विष्णु के वचन सुनकर मैं मन में अति प्रसन्न हुआ। मैंने मन में अनुमान किया कि प्रभु ने मुझे सभी सुख देने के लिए कहा, वह सब सही है परंतु अपनी भक्ति देने के लिए नहीं कहा।

भगवान विष्णु की भक्ति के बिना सारे गुण और सभी सुख कैसे हैं जैसे लवण के बिना बहुत से व्यंजन फीके लगते हैं भक्ति के बिना ये सभी सुख किस काम के हैं? ऐसा विचार कर हे गरुड़ जी! मैंने कहाहे प्रभु! आप प्रसन्न होकर मुझे वरदान देते हो, मेरे पर आप कृपा करते हो और मुझ पर आपका प्यार है तो हे स्वामी! मैं मन भावता वर माँगता हूँ, आप हृदय के बड़े उदार हैं आप हृदय की जानने वाले हैं।

हे प्रभु! आपकी जो परम पवित्र, अखंड, निष्काम सेवा-भक्ति है जो संसार के सभी विषयों को त्याग कर की जाती है जिसकी वेद पुराण महिमा गाते हैं। जिसे प्राप्त करने के लिए योगेश्वर एवं महामुनि बड़े प्रयत्न करते हैं परंतु हे प्रभु! आपकी कृपा प्रसाद से ही कोई एक मुनि उस भक्ति को पाता है। हे भक्तों की इच्छा पूरी करने वाले, कल्पवृक्ष के समान फल देने वाले, शरणागतों का हित करने वाले प्रभु! हे कृपा सिंधु, सब सुखों के धाम, आनंद स्वरूप प्रभु! दया करके वही अपनी निज भक्ति कृपा करके मुझे दीजिए। ॥दो.४७६-४ ८०॥

ऐसा ही हो कहकर प्रभु परम सुख देने वाले वचन बोलोसुनो, हे काक भुसुण्डि जी आप बड़े चतुर हैं। ऐसा वरदान क्यों नहीं माँगो। तुम्हारे समान भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है जो तुमने सब गुणों की खान भक्ति माँगी है। यह बात मुझे बहुत ही अच्छी लगी, मैं तुम्हारी चतुराई देखकर अति प्रसन्न हूँ।

हे काक भुसुण्डि जी, सुनो! मेरी कृपा से अब समस्त शुभ गुण तेरे हृदय में बसेंगे। जिन्हें मुनि जन योगाग्नि में तन जलाने पर एवं करोड़ों यत्न करने पर भी नहीं पाते। वह परम भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, वैराज्ञ-विराग और योग के सभी गुणों एवं रहस्यों को विभाग सहित, सबका भेद तुम मेरी कृपा प्रसाद से जानोगे। जिससे तुम्हें साधन में कोई खेद या अड़चन उत्पन्न नहीं होगी। तुम्हारे सभी काम बाधा रहित होंगे।

अब तुम्हें माया से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रकार के भ्रम नहीं व्यापेंगे। तुम मुझे अनादि, अजन्मा, सनातन ब्रह्म, सत-रज-तम, इन तीनों गुणों से न्यारा और सब गुणों का स्वामी-सभी सद्गुणों को उत्पन्न करने वाला जानोगे। मुझे मेरे भक्त सदा प्यारे हैं, ऐसा विचार कर हे भुसुण्डि जी! तुम तन, मन, धन एवं वचन से मेरे चरणों में अटल श्रद्धा भक्ति सहित प्रेम करो। ॥दो.४८१-४८२॥

भुसुण्डि द्वारा प्रभु के भीतर अनेक ब्रह्माण्डों को देखना

भगवान का निजी सिद्धांत

हे भुसुण्डि! मैं तुम्हें अपना सिद्धांत सुनाता हूँ, सुनो! और मनमें धारण करो! सबको त्याग कर मेरा भजन करो। मेरी माया से उत्पन्न हुआ यह संसार है जिसमें भाँति-भाँति की जाति के जीव चर और अचर हैं, ये मेरे ही उत्पन्न किए हैं और सब मुझे प्यारे हैं किंतु इन सबमें मनुष्य ही मुझे अच्छे लगते हैं। मनुष्यों में विरक्त मुनि ज्ञानी और ज्ञानी से भी विज्ञानी अतिप्रिय हैं।

उन विज्ञानियों से भी प्यारे मुझे अपने निज दास हैं जिन्हें सब प्रकार से मेरी ही गति है, मेरा ही भरोसा है और मेरे सिवाय किसी पर आशा नहीं रखते। मैं तुझे बार-बार कहता हूँ, यह सत्य है कि मुझे सेवक के समान कोई भी प्यारा नहीं है। बिना भक्ति के ब्रह्मा भी क्यों न हो वह भी मुझे सबके समान प्रिय है परन्तु भक्तिवान छोटा-सा प्राणी मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय है। ऐसा मेरा कथन है।

पवित्र सुशील और उत्तम बुद्धि वाला सेवक बताओ किसे प्यारा नहीं लगेगा? वेद पुरान ऐसी नीति कहते हैं। हे गरुड़ जी! तुम सावधान होकर सुनो! ॥दो॰-४८३॥

यह सारा विश्व मेरा ही उत्पन्न किया हुआ है और सब पर मेरी बराबर ही दया है। ऐसे ही एक पिता के अनेको पुत्र हैं, वे पृथक-पृथक गुण, शील, स्वभाव और आचरण के होते हैं। कोई पंडित विद्वान, कोई तपस्वी, कोई ज्ञाता, कोई धनवान, कोई शूरवीर और कोई दाता होता है। कोई सर्वज्ञ धर्म में लीन रहता है। इन सब पर पिता का प्रेम एक समान होता है किंतु कोई पुत्र मन वचन और कर्म से पिता का भक्त है वह स्वप्न में भी दूसरा धर्म नहीं जानता भले ही वह सभी प्रकार से बेसमझ और अयाना है वह पुत्र पिता को प्राणों के समान प्यारा होगा। इसी तरह तीनों लोकों में चर अचर जितने भी सब जीव हैं। देव-दनुज, नर आदि सारा विश्व मेरा प्यारा है परन्तु उनमें जो मद, माया को त्यागकर मुझे मन, वचन और शरीर से भजता है

वह पुरुष, नपुंसक, नारि या चल, अचल कोई भी क्यों न हो जो कपट तजकर सभी तरह से मुझे भजता है वह मुझे परम प्यारा है। ॥दो॰-४८४॥

हे भुसुण्डि जी! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ उत्तम सेवक मुझे प्राणों के समान प्यारा है। ऐसा विचार करके तुम सब आशाओं को, सबके भरोसों को त्यागकर मुझे ही भज। ॥दो०४८ ५॥

तुम्हें कभी भी काल नहीं मारेगा, सदैव लगातार मेरा सुमिरण भजन करते रहना। हे गरुड़ जी! प्रभु के ऐसे अमृतमयी वचनों को सुनकर मैं तृप्त नहीं हुआ, मेरा तन पुलकायमान और मन अति ही हर्षायमान हो गया। वह सुख मन और कान ही जानते हैं, रसना उसका वर्णन नहीं कर सकती। जिन नैनों से प्रभु की शोभा देखी गई वह भी नहीं कह सकते क्योंकि उनके वाणी नहीं जो बोल सकें वे तो रोकर ही बता सकते हैं।

बहुत सुख देकर, भाँति-भाँति से समझाकर प्रभु बाल लीला करने लगे, नेत्रों में जल भरकर, मुख कुछ रूखा करके माता की ओर देखा मानो, बहुत जोर से भूख लगी है। यह देखकर माता तुरंत दौड़ी और कोमल वचन कहकर प्रभु को छाती से लगा लिया। गोद में लेकर प्रभु को दूध पिलाने लगी और प्रभु के गुण गाने लगी।

उस सुख का लवलेश मात्र भी जिन्होंने यदि स्वप्न में भी देख लिया तो हे गरुड़ जी! वे उत्तम बुद्धि वाले संतजन तब समझेंगे कि ब्रह्म के ध्यान करने का फल क्या है और वह तभी सफल होता है जब प्रभु के दर्शन हों। आनंद तो आनंदकंद भगवान विष्णु के दर्शनों में छिपा रहता है जो भक्तों को देख कर प्रगट होता है। दर्शन के बिना ध्यान भी सफल नहीं होता। ॥दो०-४८७॥

हे गरुड़ जी! अब मैं आपसे अपना निजी अनुभव कहता हूँ। आनंदकंद भगवान विष्णु के बिना क्लेश नहीं मिटते। उनकी कृपा के बिना हे गरुड़ जी! सुनो! प्रभु की प्रभुताई जानी नहीं जाती और प्रभु की प्रभुताई जाने बिना प्रभु पर विश्वास नहीं होता। विश्वास के बिना प्रभु से प्रेम नहीं होता और प्रीति के बिना भक्ति दृढ़ नहीं रहती जिस प्रकार जल में चिकनाई नहीं ठहरती।

क्या? बिना गुरु के ज्ञान हो सकता है? यदि ज्ञान हो भी गया तो क्या बिना वैराग्ञ के ज्ञान दृढ़ रह सकता है? इसी प्रकार वेद और पुराण गाते हैं कि भगवान विष्णु की भक्ति के बिना कोई ज्ञानी भी सुखी नहीं हो सकता। विषयों के त्याग के बिना जब तक विषयों का चिंतन होगा ध्यान नहीं होगा। हे तात! कोई सहज स्वभाव और संतोष के बिना शांति नहीं पाता जैसे जल के बिना नाव नहीं चलती चाहे कोई कितने ही उपाय करके क्यों न पच मरे। ॥दो॰-४८८-४८९॥

कामनाओं के रहते हुए कोई सुखी नहीं रह सकता और कामना संतोष के बिना नहीं मिटतीं। जिस प्रकार थल के बिना वृक्ष उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार प्रभु के भजन के बिना न तो कामना ही मिट सकती है और न संतोष-शांति ही हृदय में आ सकती है। जिस प्रकार आकाश के बिना अवकाश प्राप्त नहीं होता उसी प्रकार विज्ञान के बिना समता नहीं आती। बिना श्रद्धा के धर्म नहीं होता जैसे पृथ्वी के बिना कोई गंध नहीं पाता।

तपस्या के बिना क्या तेज विस्तार कर सकता है? क्या जल के बिना संसार में रस हो सकता है? हे गरुड़ जी! जिस प्रकार तेज के बिना रूप नहीं हो सकता उसी प्रकार बुद्धिमानों की सेवा के बिना शीलता नहीं आती। जिस प्रकार वायु के स्पर्श नहीं होता उसी प्रकार अपने निजात्मिक सुख के बिना मन स्थिर नहीं रहता। जिस प्रकार विश्वास के बिना कोई सिद्धि नहीं होती उसी प्रकार प्रभु भजन के बिना जन्म मरण का भय नहीं मिटता। क्योंकि

ऐसे ही बिना विश्वास के भक्ति नहीं और भक्ति के बिना भगवान की जीव पर कृपा नहीं होती। प्रभु की कृपा के बिना जीव स्वप्न में सुख, शांति नहीं पाता। ऐसा विचार कर धीर बुद्धि संत जन संपूर्ण कुतर्कों को त्याग संशय रहित होकर दया के सागर आनंदकंद कृपासिंधु भगवान का ही भजन करते हैं। ॥दो॰४९०-४९१॥

हे गरुड़ जी! मैंने अपनी मति अनुसार प्रभु के प्रताप और महिमा का जो वर्णन किया है यह कोई बात युक्ति से बनाकर नहीं कही है। यह सब मैंने अपनी आँखों देखी और अपने अनुभव की बातें कही हैं। यह सुंदर सुहावने वचन सुनकर गरुड़

जी! अति प्रसन्न हुए, उन्हें ये वचन बहुत ही अच्छे लगे। प्रभु के प्रताप को हृदय में समझकर आँखों में प्रेम का जल भर आया और मन में अति प्रसन्न हुए।

हे भुसुण्डि जी! आप सब कुछ जानने वाले, तत्व के ज्ञाता हो, अज्ञान अंधकार से रहित और अति परे हो। आप उत्तम बुद्धि से युक्त, सरल स्वभाव और शीतलता को धारण करने वाले हैं। आपके आचार और व्यवहार अति सुंदर हैं। आप सदैव ज्ञान में प्रेम और विज्ञान में निवास करते है। आप रघुकुल के नायक हंस बंस के सूर्य भगवान विष्णु के दास हैं। हे तात! क्या कारण है जो आपने कौए की देह पाई! यह कैसे मिली मुझे समझाकर कहिए। हे स्वामी! यह श्री रामचरित मानस अति सुंदर सरोवर आपने कहाँ पाया और कैसे प्राप्त किया? हे आकाशमार्ग में विचरण करने वाले नभगामी! मुझे यह सब कृपा करके समझाकर कहें।

हे कृपालु! ऐसा अति महान कारण क्या है जो तुम्हें काल नहीं व्यापता? यह ज्ञान का प्रभाव है या योग का बल है वह सब मुझे बताइए। ॥दो॰४६२॥

हे उमा! गरुड़ जी की वाणी सुनकर काक भुसुण्डि जी प्रसन्न हुए और प्रेम पूर्वक बोलेहे गरुड़ जी! आपको धन्य है, आपकी बुद्धि को धन्य है। आपके प्रश्न मुझे बहुत ही प्यारे लगे। आपके प्रेमयुक्त सुंदर प्रश्न सुनकर मझे अपने अनेक जन्मों की याद आ गई। मैं अपनी कथा विस्तार पूर्वक कहता हूँ। हे तात! आदर सहित मन लगाकर सुनो!

जप, तप, यज्ञ, प्राणों की समानता, विषयों से इंद्रियों का दमन, व्रत, दान, वैराज्ञ, विवेक, योग और विज्ञान इन सबका फल प्रभु के चरणों में प्रेम करना है। जिसके बिना किसी का कल्याण नहीं होता। इस तन में वही प्रभु की प्रेम भक्ति मैंने पाई है इसीलिए मुझे इस शरीर में ममता है। जिसका जिसमें अपना स्वार्थ सिद्ध होता हे उस पर सभी ममता करते हैं।

हे गरुड़ जी! वेद के सम्मत से संतजन ऐसा कहते हैं कि नीति ऐसी है जिससे अपना परमहित हो तो भले ही वह नीच क्यों न हो, उससे प्रीति करके अपना काम निकाल लेना चाहिए। ॥दो॰४६३॥

जीवन का सच्चा स्वार्थ-परम हित यही है कि उसका मन, कर्म और वचन से प्रभु के चरणों में प्रेम हो, कोई नीच बाधक न बने। शरीर वही सुंदर और पवित्र है जिसको पाकर प्रभु का भजन किया जाए। ब्रह्मा जैसी देह पाकर भी जो भगवान से विमुख हो तो उसकी प्रशंसा विवेकी कवि भी नहीं करते। इस तन में मुझे प्रभु की भक्ति प्राप्त हुई है। इसलिए हे स्वामी! मुझे यह देह प्यारी है।

देह का त्यागना मेरी इच्छा पर निर्भर होने पर भी मैं इस देह को नहीं त्यागता क्योंकि देह के बिना ज्ञान और भजन नहीं बनता, हे गरुड़ जी! संसार में ऐसी कौन-सी योनि है जिसमें मैंने जन्म न लिया हो? मैंने कर्म भी बहुत करके देख लिए और उनका फल भी भोगने के लिए भ्रमता रहा किंतु अब की भाँति मैं सुखी नहीं हुआ। मुझे अनेकों जन्मों की याद है यह मुझ पर शिव जी की कृपा है जिससे मेरी बुद्धि में भ्रम नहीं होता।

हे गरुड़ जी! अब मैं प्रथम जन्म की बातें कहता हूँ सुनिए! जिन्हें सुनकर प्रभु के चरण कमलों में प्रीति उत्पन्न होती है और सभी क्लेश मिट जाते हैं। ॥दो॰-४६४॥

हे प्रभु! पूर्व समय में एक मलों का मूल-अवगुणों की खान कलियुग था। जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष अधर्म में लीन और शास्त्रों के विपरीत आचरण करते थे। शास्त्रों का नियम था परमात्मा को जानकर ही पुत्र और पुत्री-पत्नी बन सकते थे किंतु इस धर्म का पुत्र और पुत्री दोनों के माता और पिताओं ने लोभ वश धर्म का परित्याग कर दिया और सभी शास्त्रों के विरुद्ध चलने लगे। कारण कि कलयुग के पाखंडी धूर्तों ने अपनी कल्पना से अनेकों पंथ प्रगट करके शास्त्रोक्त ज्ञान की बातों को क्या, ज्ञान को ही छिपा दिया जिससे धर्म लुप्त हो गया। ॥दो॰-४६५-४६६॥

कलियुग के सभी लोग मोह के वश हो गए और उनके लोभ ने सभी शुभ कर्मों को समाप्त कर दिया। हे, भगवान विष्णु के विमान चालकगरुड़ वाहक! सुनिए! आप ज्ञान के भंडार हैं, मैं आपको कुछ कलियुग के धर्म सुनाता हूँ जो मानवता के विरुद्ध और मानव धर्म के विपरीत हैं। ॥दो॰-४६७॥

कलियुग ने चारों वर्णों को धर्महीन बना दिया धर्म को न जानकर मान-बढ़ाई के कारण ऊँच-नीच का भेद फैलाकर घृणा करके मानव-मानव को नीच समझने लगा। वर्ण को जाति मान बैठा जबकि एक ही वर्ण में कई जाति के लोग होते हैं। जाति अभिमान से मानव धर्म छोड़ बैठा।

ब्रह्मचर्य आश्रमजहाँ ब्रह्म का आचरण सिखाया जाता था, ध्यान भजन सुमिरण का अमृत पान कराया जाता था। वहाँ पीले वस्त्र धारण करके तोता रटन को ही ब्रह्मचर्य मान लिया है।

गृहस्थ आश्रमजहाँ दीन और दुःखियों को आश्रय मिलता था वहाँ उन्हें भी लूटने का प्रयत्न किया जाता है। धर्म को न जानकर अधर्मियों की पूजा करना ही धर्म मान बैठे हैं। यहाँ तक कि हमारे गुरु ने बताया कि गुरु भगवान से बड़े हैं। इसलिए भगवान को छोड़कर गुरु को मानो, धर्म को छोड़ अधर्म करो। जहाँ ज्ञान की बातें हों वहाँ मत सुनों हँसी मजाक की बातें ही धर्म हैं।

वान प्रस्थजहाँ वृद्धावस्था में गृहस्थी एवं राजा-रानी भी गृह त्यागकर तीर्थों में जाकर साधु संतों की सेवा, भजन ध्यान किया करते थे जिससे मरते समय सांसारिक लोगों का, विषयों का चिंतन न होकर केवल प्रभु के नाम का ही चिंतन हो। किंतु बिना ज्ञान के वे अपने को ही आधा सन्यासी मानते हैं।

सन्यासजो प्रभु की शरणागत होकर गृहस्थ का त्यागकर सन्यास धारण करते थे और ऋषि मुनियों को तथा जिज्ञासुओं को प्रभु का ज्ञान देते थे, एक ईश्वर को ही गुरु मानते थे। वे कलियुग में ज्ञान और प्रभु से वंचित रहकर स्वयं गुरु बनने के लिए न्यारे-न्यारे मत फैलाने लगे। जिससे जो जिसको अच्छा लगे वही मार्ग रह गया और पंडित वही है। जो गाल बजाना जानता हो वही विद्वान साधु है। जो बातें बनाकर दूसरों के धन को हरण करे वही बड़ा चतुर और मण्डलेश्वर है। उनमें भी जितना अधिक दंभ पाखंड करता हो वही बड़ा सदाचारी है। झूठ, कपट, दंभ में जो रत है उसे ही सब संत कहते हैं।

कलियुग में बहुत से गुरु अंधे हैं। जिन्हें अज्ञान के कारण भला-बुरा नहीं दीखता। शिष्य विवेक के बिना अंधे हैं, उन्हें सुनते हुए भी नहीं सुनता। पत्नी के मरने पर, घर और सम्पति के नष्ट होने पर मूंड मुंडाकर सन्यासी हो जाते हैं। ये निगुरे होने पर भी गुरू बनने के लिए साधु का वेष धारण करते हैं। माता-पिता भी बालकों को बुलाकर जिस प्रकार भी पेट भरे वही धर्म है, यह सिखाते हैं। वे कहते हैं कि गृहस्थों का धर्म केवल-कमाना और खाना है। सब मनुष्य अपनी-अपनी कल्पनाओं के अनुसार ही आचार करते हैं, कलियुग की अनीति अपार है कही नहीं जाती।

वेद के मतानुसार आनंदकंद भगवान विष्णु की भक्ति का मार्ग जो प्रेम और भक्ति युक्त है उस पर लोग नहीं चलते। अज्ञानी जन मोहवश अनेकों मार्गो की कल्पना करते हैं। ॥दो॰-४९८॥

कलियुग के स्त्री-पुरुष बातें बड़ी-बड़ी ब्रह्मज्ञान की करते हैं किंतु कौड़ियों के लिए धन के लालच-लोभ वश सच्चे सद्गुरुदेव एवं भगवान विष्णु के भक्तों से द्वेष करते हैं, उन्हें भाँति-भाँति से कष्ट देकर भक्ति मार्ग में बाधा पहुँचाते हैं। ॥दो॰-४९९॥

सुनो, गरुड़ जी! यद्यपि कलियुग पाप और अवगुणों का मूल है किंतु इस युग में गुण भी बहुत है जिनसे बिना ही प्रयास के भव बंधन से छुटकारा मिल जाता है। सतयुग, त्रेता और द्वापर में जो गति योग साधन से, ज्ञान यज्ञ से और पूजा से होती है वह कलियुग में आनंदकंद भगवान विष्णु के नाम के गुण गाने से हो जाती है। ॥दो॰-५००-५०१॥

सतयुग में सब योगी और विज्ञानी अपने हृदय में भगवान श्री विष्णु का ध्यान करके भवसागर पार उतरते हैं। त्रेतायुग में भाँति-भाँति के ज्ञान यज्ञ करते हैं और प्रभु को अर्पण करके भवसागर से तर जाते हैं। द्वापर युग में भगवान कृष्ण की पूजा-सेवा भक्ति द्वारा, तरते हैं और दूसरा कोई उपाय नहीं है। किंतु कलियुग में आनंदकंद भगवान विष्णु के गुण गाने से ही भवसागर की थाह पा लेते हैं।

कलियुग के भक्तों का आधार एक मात्र नाम के गुण गाना ही है। जो सब भरोसों को त्यागकर प्रभु के हंस नाम को भजेगा और प्रेम सहित गुण गणों को गाएगा

वह इस भवसागर से अवश्य ही पार हो जाएगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है। क्योंकि वह नाम हंसरूप में कलियुग में प्रकट होगा, जिसके प्रताप से भक्तगण नाम का सुमिरन कर-करके भवसागर से पार उतर जाऐंगे।

हे गरुड़ जी! कलियुग के समान दूसरा कोई युग नहीं है। यदि मानव इस बात पर विचार करके विश्वास करे। कलियुग में केवल नाम के गुण गाने से ही नर बिना प्रयास के ही तर जाऐंगे। कयोंकि धर्म के चार पद हैं। प्रकाश का ध्यान, नाम का जप योग जिसे योग यज्ञ कहा है, प्रभु के चरण कमलों की पूजा एवं नाम का सुमिरन। किन्तु कलियुग में एक नाम ही प्रधान है। किसी तरह भी हो नाम को प्राप्त करले तो उसका कल्याण अवश्य ही होगा और जो उस नाम के लिए दान करेगा, नाम के प्रचार में धन लगाएगा उसका भी कल्याण ही है। ॥दो०-५०२-५०३॥

हृदय स्थित राम की प्रेरणा से सदैव ही सबके सभी युग धर्म होते हैं। सतयुग में शुद्ध सतोगुण समता और विज्ञान से मन प्रसन्न होता है। सतोगुण अधिक रजोगुण थोड़ा कर्म में प्रेम, सब तरह से सुखी त्रेता का धर्म है। रजोगुण अधिक, सतोगुण थोड़ा और कुछ तमोगुण मन में हर्ष भय द्वापर का धर्म है। जिस प्रकार धर्म के ये सभी अंग जगत माता की दया से सभी को होते हैं। ध्यान, नामक अभ्यास, सद्गुरु की पूजा तथा भक्तों का ज्ञान के लिए दान।

कलि के प्रभाव से तमोगुण बहुत, रजोगुण थोड़ा है जिससे चारों ओर विरोध है। बुद्धिमान भक्त समय के इन प्रभावों को जानकर अधर्म को त्यागते हैं। और धर्म करते हैं। समय का दुष्प्रभाव उसे नहीं व्यापेगा जिसके हृदय में आनंदकंद प्रभु के चरणों में प्रेम होगा। कलियुग में एक अति उत्तम प्रभु का प्रताप यह है कि यदि मन में भजन करने या पुण्य की इच्छा हो और न कर सके तो उसे फल मिल जाता है। परन्तु पाप की इच्छा होने पर भी बिना किए फल नहीं मिलता। जिसके लिए जिसकी इच्छा होती है वह उसी के लिए प्रयत्न करता है किंतु जो माया में लिप्त होकर प्रभु की पूजा नहीं करते और पाप करना चाहते हैं पर जगत माता की कृपा से कर नहीं पाते तो उनको उसका फल नहीं मिलता। माया उन्हें जबरन भक्ति में लगाती है।

किन्तु प्रभु की माया से उत्पन्न हुए दोष और गुण प्रभु के भजन के बिना नहीं जाते ऐसा विचार कर सभी कामनाओं को त्यागकर प्रभु को भजो! उनकी सेवा-पूजा तन मन धन से करो। नहीं तो काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि दोष नहीं छूट सकते। ॥दो॰-५०४॥

भुसुण्डि-लोमश संवाद

हे गरुड़ जी! उस कलियुग में मैं बहुत समय तक अवध में रहा। जब वहाँ अकाल पड़ा तो विपत्तियों के कारण मैं विदेश में गया। ॥दो॰५०५॥

विदेश में कुछ समय बीतने पर संपत्ति मिली तब मैं भगवान शिव जी की सेवा पूजा करने लगा। एक विप्र शिव जी की पूजा वेद की विधि से करते थे, पूजा को छोड़कर उन्हें दूसरा कार्य न था। वे परम साधु और परमार्थ के ज्ञाता थे, शिव जी के उपासक थे किंतु दूसरे साधुओं की भाँति हरि निंदक भी नहीं थे। मैं उन सच्चे साधु की सेवा कपट सहित करता था, सच्चे हृदय से नहीं, किंतु वे दयालु थे और नीति के भंडार थे।

हे नाथ! बाहर से मेरा नम्र भाव देखकर मुझे पुत्र की भाँति पढ़ाया और शिव मंत्र मुझे विप्र वर ने दिया और भाँति-भाँति से उपदेश दिया। मैं शिव जी के मंदिर में जाकर मंत्र जपता था, किंतु मुझे बड़ा अभिमान था और मैं बड़ा दंभी था। एक बार उन्होंने मुझे बुलाया और भाँति-भाँति से नीति सिखाने लगे।

वे मेरे आचरणों को देखकर बड़े दुखी थे और नित्य मुझे नीति की बातें समझाते थे किंतु मुझे बड़ा क्रोध उत्पन्न होता था। क्योंकि दंभियों को नीति की बातें नहीं सुहातीं।

दयालु मुनि ने फिर भी मुझे समझाया। हे पुत्र! शिव सेवा का फल ही प्रभु के चरण कमलों में अविरल भक्ति का होना है। हे तात! राम को तो शिव और माता विधाता भी भजती हैं तो बेचारे नर की तो गिनती ही क्या है। जिस प्रभु के चरणों के ब्रह्मा और शिव जी भी प्रेमी हैं, उस प्रभु से द्रोह करके तूँ सुख चाहता है?

तेरे समान अभागा कौन होगा? मुनि ने शिव जी को विष्णु का सेवक कहा तो हे गरुड़ जी! मेरा हृदय क्रोध से जलने लगा। किंतु

मुनि बड़े दयालु थे, उनमें तनिक भी क्रोध न था। वे बार-बार उत्तम ज्ञान की बातें समझाते थे। ज्ञानी-विज्ञानी वक्ता इस नीति का वर्णन करते हैं कि दुष्ट-मूर्ख से झगड़ा करना और अति प्यार करना अच्छा नहीं होता। दुष्टों से तो उदासीन भाव से अलग ही रहना चाहिए, दुष्ट को कुत्ते की भाँति त्याग देना चाहिए। मैं दुष्ट हृदय का कपटी और मन का कुटिल था, वे मेरे हित की कहते थे पर मुझे उनकी बातें अच्छी नहीं लगती थीं।

एक बार शिव जी के मंदिर में मैं नाम जप रहा था। मुनि आए किंतु मैंने अभिमान के कारण प्रणाम नहीं किया। ।।दो१०७।।

मंदिर में आकाशवाणी हुई कि अरे अभागे, अभिमानी! यद्यपि मुनि ने क्रोध नहीं किया, वह पूर्ण ज्ञाता और कृपालु हैं। तब भी अरे दुष्ट! मैं तुझे शाप दूँगा। मुझे नीति का विरोध अच्छा नहीं लगता। यदि तुझे दण्ड नहीं देता हूँ तो ज्ञान का मार्ग भ्रष्ट हो जाएगा।

अरे दुष्ट! जो साधु संतों से ईर्ष्या करते हैं, वे करोड़ों युगों तक घोर नरक में गिरते हैं। वे कीट पशु और पक्षियों की योनियों में शरीर धारण करते हैं और अनेकों जन्मों तक दुख पाते हैं। अरे पापी! तूँ अजगर की भाँति बैठा रहा और लम्बे-लम्बे स्वांस लेता रहा तेरी, बुद्धि पाप से ढक गई है तूँ सर्प हो जा। अरे अधम! तूँ अधोगति पाकर किसी बड़े भारी वृक्ष की खोह में जाकर रह।

मेरी इस घोर गति को देखकर द्विज शिव जी के सन्मुख हाथ जोड़कर दण्डवत प्रणाम करके गद्-गद् वाणी से प्रेम सहित विनय करने लगे। ।।दो१०८।।

हे ईश्वरों के परम ईश्वर विभु! आपका निर्वाण रूप व्यापक, ब्रह्म एवं ज्ञानकार स्वरूप है। आप अजन्मा, निर्गुण और व्यापक होते हुए भी गुणों के स्वामी, इच्छा एवं कल्पना रहित हैं। जिस चैतन्य से महाकाश आच्छादित है उस परम प्रकाश में आपका निवास है, मैं आपको भजता हूँ।

आप आकार रहित, ओंकार के मूल तूरिया रूप हैं। तूरियावस्था में ही देखे जा सकते हो। आप वाणी और इंद्रियों के ज्ञान से न्यारे और शिव जी के हृदयाकाश में निवास करने वाले परम ईश्वर हो। हे कृपालु विभु! आप महाकाल के भी विकराल काल, गुणों के भंडार, संसार से पार उतारने वाले हो। मैं आपको दण्डवत् प्रणाम करता हूँ।

जो आप हिमालय के सदृश गौर वर्ण एवं गंभीर है, जिनके वदन की शोभा कोटि कामदेवों के समान परम जयोतिर्मय देदिप्यमान दिव्य स्वरूप हैं। मस्तक पर सुंदर तरंग वाली दिव्य गंगा सुशोभित है, जिसमें योगीजन गोता लगाते हैं और उगता हुआ पूर्णिमा का चंद्रमा जैसा ललाट है। अंग, कंठ, भुजाएँ अति सुंदर, कानों में कुंडल शोभायमान हैं, भौहें अति सुंदर हैं, विशाल नेत्र, प्रसन्न मुख, महादेव जी! जो बाघम्बर, सुंदर रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले शंकर के प्यारे सबके ईश्वर हैं। हे विश्व रूप मैं आपको भजता हूँ।

हे परम ईश्वर आप प्रचण्ड तीक्ष्ण और अत्यंत श्रेष्ठ, अखंड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान हैं। दैविक, मानसिक और भौतिक तीनों शूलों को नाश करने वाली त्रिशूल आपके हाथ में है। हे भवानीपति शंकर के भाव गम्य मैं आपको भजता हूँ।

हे परम ईश्वर आप प्रचण्ड तीक्षण और अत्यंत श्रेष्ठ अखण्ड अजन्मा, करोड़ों सूर्यो के समान प्रकाशमान है। दैविक, मानसिक और भौतिक इन तीनों शूलों का नाश करने वाली त्रिशूल आपके हाथ में है। हे भवानीपति शंकर के भाव गम्य में आपको भजता हूँ।

हे विभो! आप कला से परे कल्याणकारी हो, आपका कल्पान्त में भी अंत नहीं है। सदा संत जनों के दाता! आप सत् चित् आनंद के भंडार, मोह एवं भ्रम को हरने वाले प्रभु कृपा करके प्रसन्न होइए।

जब तक उमापति महादेव के चरण कमलों की वंदना न की जाए तब तक न तो सुख शांति मिलती है और न दुःखों का नाश ही होता है। हे सब भूतों के अधिपति, देवताओं के अधिपति परमेश्वर प्रसन्न होइए।

अपने गुरुदेव को प्रणाम न करने पर भुसुण्डि को शाप तथा सर्वज्ञ शिव की स्तुति

हे स्वयंभू! मैं न तो योग जानता हूँ, न जप और न पूजा ही मैं तो सदा सर्वदा भगवान शिव जी की पूजा करता हूँ। हे विभु! बुढ़ापा और जन्म के दुःखों से पीड़ित मुझ दुखी की रक्षा कीजिए। हे प्रभु! मैं आपकी शरण हूँ। मुझ पर कृपा कीजिए।

हे पार्वती! विप्र ने इस अष्टपदी स्तुति को गाकर प्रभु को संतुष्ट किया। जो मानव इसे भक्ति भाव से पढ़ेंगे उन पर स्वयंभू-विभु प्रसन्न होकर कृपा करेंगे। ॥दो.५०९॥

सर्वज्ञ शिव-स्वयंभू विभु ने विप्र का प्रेम देखकर पुनः मंदिर में आकाशवाणी की द्विजवर! वर माँगो! तब मुनि बोलेहे नाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं और इस दीन पर दया है, तो हे प्रभु अपनी भक्ति देकर यह वर दीजिए। ॥दो.५१०-५११॥

हे प्रभु! आपकी माया वश यह प्राणी आपको भूला हुआ है इस पर क्रोध न करके क्षमा कीजिए। हे कल्याणकारी विभु! दीनों पर दया करने वाले, अब इस पर कृपा कीजिए। इसका शाप थोड़े ही समय में पूरा कीजिए। ॥दो.- ५१२-५१३॥

हे कृपानिधान! आप वही कृपा करें जिससे इसका कल्याण हो। विप्र की परोपकारी वाणी सुनकर परम प्रभु-विभु आकाशवाणी द्वारा बोलेऐसा ही होगा किंतु देखो! जो इंद्र के बज्र से, काल के दण्ड से और भगवान विष्णु के चक्र से मारा भी नहीं मरता वह भी विप्र द्रोह रूपी अग्नि में जल मरता है। किंतु

जो दूसरों को क्षमा करते हैं, शील स्वभाव के हैं और दूसरों का उपकार करते हैं वे साधु मुझे शिव जी के समान प्यारे हैं हे द्विज! मेरा शाप व्यर्थ नहीं होगा! यह एक सहस्र जन्म तो अवश्य ही पायेगा किंतु जन्मने में और मरने में जो अतिशय दुःख होता है वह इसे नहीं होगा। हे शुद्र-श्रेष्ठ मुनियों में भी अति श्रेष्ठ साधु सुनो! किसी भी जन्म में इसका ज्ञान नहीं मिटेगा, यह मेरे वचन प्रमाणित जानो।

समयानुसार विंध्यांचल पर्वत पर जाकर सर्प हुआ और थोड़े ही समय में सब शरीर बिना कष्ट के त्याग दिये। जैसे मानव पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र धारण करता है उसी तरह मैं बिना कष्ट के देह धारण कर के त्याग देता था। प्रभु ने नीति भी रख ली और मुझे क्लेश भी नहीं हुआ। इस प्रकार अनेक देह धारण करने पर भी मेरा ज्ञान नहीं गया। ॥दो.- ५१४-५१५-५१६॥

तीनों लोकों में देव और मनुष्यों की जो भी देह धारण करूँ उसी में मैं प्रभु का भजन करता रहूँ। बस मेरे मन में एक यही पश्चाताप था कि मुनि का कोमल, शील स्वभाव नहीं भूलता था। मैंने परम पवित्र द्विज की देह पाई जो देवताओं को भी अति दुर्लभ है जैसा कि वेद, पुराणों में वर्णन है। सदा शिव-स्वयंभु के कृपा प्रसाद से मुझे कहीं भी जाने में बाधा नहीं थी मैं जहाँ तहाँ महामुनियों के आश्रमों में भगवान विष्णु के गुणानुवाद सुनता रहा।

भौतिक तीनों प्रकार की वासना तो छुट गई। एकमात्र यही लालसा मन में रही कि जब मैं प्रभु के चरण कमलों के दर्शन करूँ तो जीवन सफल समझूं। जिससे पूछता हूँ वह मुनि यही कहता है कि ईश्वर सभी भूत प्राणियों के हृदय में रहता है। उनका यह निर्गुण मत मुझे अच्छा न लगा। मेरे हृदय में सगुण ब्रह्म के प्रति अधिक प्रेम था।

सुमेरु पर्वत की चोटी पर पहुँचा जहाँ वटवृक्ष की छाया में महामुनि लोमश जी बैठे थे। मैंने उन्हें देखकर चरणों में सिर नवाया और अति दीनता के साथ वचन कहे। ॥दो.५१७॥

ब्रह्मज्ञान में लीन विज्ञानी महामुनि लोमश जी मुझे अधिकारी जानकर उपदेश करने लगे पूरणब्रह्म परम प्रभु-विभु अजन्मा हैं, वह एक ही हैं, त्रिगुणातीत एवं सबके हृदयाकाश में स्थित परम ईश्वर हैं। वह कलाओं से परे, इच्छाओं से रहित है। उसका कोई नाम है न रूप है, वह अनुभव गम्य प्रभु अखंड और अनुपम है। वह इंद्रियों के ज्ञान से जाना नहीं जाता, मलरहित और अविनाशी है। वह सभी काम आदि विकारों से रहित, बाधा रहित एवं सब सुखों का दाता है।

तब मैंने मुनि लोमश जी के चरण कमलों में प्रणाम करके कहा- हे मुनीश्वर! मुझे सगुण ब्रह्म की उपासना बताइए। जब मुनि ने भगवान विष्णु की अनुपम एवं सुंदर कथा सुनाई और फिर प्रभु को निर्गुण बताकर सगुण होने का खंडन करने लगे। तब मैंने भी उनका निर्गुण मत दूर करके बड़ी सुंदरता से भगवान विष्णु के सगुण होने का हठपूर्वक निरूपण किया कि हे मुनीश्वर! आपने प्रभु की कथाएँ सुनाई उनकी लीलाओं का वर्णन किया तो वे विश्व को उत्पन्न करने वाले, सर्व सुखों के दाता, सर्व शक्तिवान होकर भी निर्गुण कैसे हुए? इस प्रकार उत्तर प्रति उत्तर करने से महामुनि के मन में क्रोध उत्पन्न हो गया।

जब मैंने बार-बार सगुण के पक्ष का निरूपण किया तब मुनि लोमश जी क्रोध में आकर बोलेअरे मूढ़! मैं तुझे उत्तम शिक्षा देता हूँ पर तूँ नहीं मानता और उत्तर प्रति उत्तर देता है। तूँ सत्य वचनों पर विश्वास नहीं करता और कौए की भाँति कांय-कांय करता है। तूँ हठपूर्वक अपने पक्ष को रखता है, तेरा हृदय विशल है, रे दुष्ट! तूँ शीघ्र ही कौआ हो जा।

हे गरुड़ जी! मैंने मुनि लोमश जी का शाप अपने सिर पर धारण किया, मेरे मन में न भय हुआ और न दीनता ही आई। आनंदकंद परम प्रभु कृपा के सागर हैं, प्रभु ने मेरे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए मुनि की मति भ्रमा दी सुनोः प्रभु! अति अधिक अवज्ञा करने पर महा ज्ञानियों के हृदय में भी क्रोध उत्पन्न हो जाता है। यदि कोई अति संघर्ष करे तो चंदन से भी अगिन प्रगट हो जाती है।

हे पार्वती! जिनका प्रभु के चरणों में प्रेम है और काम, मद, मोह से रहित हैं। वे प्रभु सारे जगत में व्यापक देखते हैं, कोई भी प्रभु के बिना कुछ नहीं कर सकता तो वे विरोध किससे करें? ॥दो:५१८॥

हे गरुड़ जी! मन, कर्म और वचन से मुझे अपना भक्त जान कर प्रभु ने मुनि की मति फिर फेरी। तब मुनि ने चकित होकर, बार-बार पछताकर, आदर सहित बुलाया और भाँति-भाँति से समझाया तब मैंने मुनि के चरण कमलों में प्रणाम किया। मुनि बोले- हे तात! राम चरित मानस एक गुप्त सरोवर हैउसे भगवान शंकर की कृपा से मैंने पाया है।

वही राम कथा अब मैं तुम्हें राम का निज भक्त जानकर सुनाता हूँ। हे तात! जिनके हृदय में राम की भक्ति नहीं है उन्हें यह कथा कभी भी नहीं सुनाना। महामुनि लोमश जी ने कुछ समय तक वहाँ रखा, तब राम के गुणों की, महिमा के प्रताप को भली भाँति से वर्णन किया। मुनि ने मुझे आशीर्वाद दियामेरी कृपा से तेरे हृदय में राम भक्ति अखंड रूप से सदा रहेगी।

तुम सदा राम के प्यारे रहोगे, तुम्हें कभी मान नहीं होगा और सभी शुभ गुणों के भण्डार रहोगे। तुम अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण करके त्याग सकोगे और ज्ञान, विराग में निपुण रहोगे। ॥दो:५१९॥

महर्षि लोमश जी द्वारा भुसुण्डि को शाप

जहाँ और जिस आश्रम में भी तुम रहोगे, वहाँ पर एक योजन तक अविद्या माया नहीं व्यापेगी, जहाँ भी तुम भगवान का सुमिरण करते रहोगे। ॥दो०-५२०॥

हे गरुड़ जी! मुनिवर लोमश जी ने अपने हस्त कर मेरे सिर पर रखकर आशीर्वाद बड़े प्रसन्न होकर दिया। तुम्हें काल, कर्म, और स्वभाव से उत्पन्न हुए गुण-दोष और दुःख कुछ भी नहीं व्यापेंगे। जो तुम मन में इच्छा करोगे भगवान विष्णु की कृपा प्रसाद से कुछ भी दुर्लभ नहीं रहेगा। हे पक्षिराज! सुनो यहाँ इस आश्रम में रहते हुए मुझे सत्ताइस कल्प बीत गए।

मैं सदा रघुकुल के स्वामी, हंसवंश के सूर्य विष्णु के गुण गाता हूँ जिसे भक्ति का पक्ष रखने वाले संत जन बड़े आदर सहित सुनते हैं। जब-जब भी परम प्रभु विभु भक्तों के लिए देह धारण करते हैं, तब-तब मैं जाकर प्रभु के नगर में रहता हूँ और उनकी बाल लीलाओं को देखकर बालरूप भगवान के दर्शन करके सुख पाता हूँ। मैंने ये सभी कथाएँ तुम्हें सुनाई जिस कारण से मैंने काक देह पाई।

देखो गरुड़ जी! मैं भक्ति का पक्ष हठ पूर्वक करता रहा, महा मुनि ने मुझे शाप भी दिया किंतु उन्हीं से मैंने दुर्लभ वर भी पाया, यह प्रभु के भजन का प्रताप और शिव जी की सेवा का प्रभाव है। ॥दो०-५२१॥

जो भक्ति की ऐसी महिमा जानकर भी उसे छोड़कर सेवा भक्ति न करके केवल ज्ञान के लिए ही परिश्रम करते हैं वे बुद्धिहीन ऐसे हैं जैसे कामधेनु को घर में छोड़कर दूध के लिए आक खोजते फिरते हैं। हे गरुड़ जी! सुनिए! जो जन भगवान विष्णु की भक्ति छोड़कर दूसरे किसी भी उपाय से सुख चाहते हैं तो वे दुष्टजन ऐसे हैं जो बिना नौका के समुद्र से पार जाने का यत्न करते हैं। उनकी करनी बुद्धि हीन है।

हे पार्वती! काक भुसुण्डि के वचन सुनकर गरुड़ जी प्रसन्न होकर बोलेहे प्रभु! तुम्हारे कृपा प्रसाद से मेरे हृदय में संशय, शोक, मोह, भ्रम कुछ भी नहीं है। आपकी कृपा से मैंने राम के पवित्र गुणों को सुना जिससे मुझे शांति मिली। हे प्रभु! मैं आपसे एक बात पूछता हूँ। हे कृपा निधान! समझाकर कहिए।

गरुड़ जी बोलेहे नाथ! संत, मुनि, वेद-पुराण सब यही कहते हैं कि ज्ञान के समान दुर्लभ कुछ भी नहीं है। वही ज्ञान मुनि ने आपसे कहा परंतु आपने भक्त के

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख राशी।
सो माया वश भयउ गोसाईं। वंध्यो कीर मरकट की नाईं।।

समान उसका आदर नहीं किया। हे गोस्वामी! मुझे यह सब समझाकर कहिए भक्ति और ज्ञान में अंतर कितना है? गरुड़ जी के वचनों को सुनकर काक भुसुण्डि जी ने परम सुख माना और आदर सहित बोले।

भक्ति और ज्ञान में कुछ भी भेद नहीं है, दोनों ही संसार के क्लेशों को नष्ट करते हैं। किंतु हे नाथ! मुनि जन इसमें कुछ अंतर बताते हैं। सावधान होकर सुनिए! ज्ञान, वैराग्य, योग और विज्ञान ये सब पुरुष रूप हैं। पुरुष का प्रताप भी सभी भाँति से प्रबल है किंतु माया रूपी स्त्री भी अपने बल से मोह और मद उत्पन्न करती है।

वही पुरुष मायारूपी स्त्री को त्याग सकता है जो धीर बुद्धि हो और माया से विरक्त हो। किंतु जो कामनाओं के वशीभूत हैं, विषयों के वश में हैं और प्रभु के चरण कमलों से विमुख हैं, वे माया का त्याग नहीं कर सकते। उन्हें माया मोहित कर लेती है। ॥दो॰-५२२॥

मैं यहाँ कुछ पक्षपात की बात नहीं करता, केवल वेद, पुराण और संतों का मत कहता हूँ। हे गरुड़ जी! यह नीति बड़ी अनुपम है सुनो! माया और भक्ति दोनों नारी वर्ग हैं यह सभी जानते हैं। भगवान को भक्ति प्यारी है इसलिए माया प्रबल होने पर भी भक्त को नहीं मोहती और उसे सुख देती है।

भगवान भक्ति के अनुकूल रहते हैं इसीलिए माया प्रभु की भक्ति से डरती है। राम की भक्ति उपमा रहित और सब उपाधियों से भी न्यारी है। वह प्रभु की भक्ति जिस भक्त के हृदय में सदा बाधा रहित बसती है। उसको देखकर माया सकुचाकर कुछ अपना प्रभाव नहीं दिखाती। ऐसा विचार कर जो मुनि विज्ञानी हैं वे प्रभु की सेवा-भक्ति ही चाहते हैं जो सभी गुणों की खानि है।

प्रभु की भक्ति का यह रहस्य किसी की समझ में नहीं आता। यदि कोई जान पाता भी है तो वह प्रभु की कृपा से ही जान पाता है, उसे फिर स्वप्न में भी मोह-भ्रम नहीं होता। सदैव भगवान का भजन एवं भक्ति में लीन रहता है। ॥दो॰-५२३॥

और भी एक भेद ज्ञान और भक्ति का सुनिए! जिसके सुनने से प्रभु के चरण कमलों में अखंड प्रेम उत्पन्न होता है। ॥दो॰-५२४॥

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख राशी।
सो माया वश भयउ गोसाईं। वंध्यो कीर मरकट की नाईं।।

हे तात! सुनो! यह कहानी बड़ी अकथनीय है जिसके समझने पर ही सुखदाई है, कही नहीं जाती। ईश्वर का अंश जीव अविनाशी है, चेतन है और मल से रहित सहज ही सुख का भंडार है किंतु वह माया के वशीभूत होकर, लालच में आकर तोते और बंदर की भाँति बंध गया। बंदर चेतन-चल है और सुराई जड़-स्थिर है और उसमें रखे हुए चनों का लालच है। जैसे ही बंदर ने चनों को हाथ से पकड़ा तो मुट्ठी की गांठ पड़ गई। न लालच छूटे न बंधन टूटे। यद्यपि यह झूठा है पर छूटना कठिन है

जब से यह जीव संसारी बना, जन्म-मरण के बंधन की गांठ पड़ गई। जब तक यह गांठ नहीं छूटेगी तब तक सुखी नहीं होगा। यद्यपि वेद पुराणों ने अनेकों उपाय बताए हैं फिर भी ग्रंथी नहीं छूटती और अधिक उलझती जाती है। जीव के हृदय में अज्ञान और मोह अधिक है तब यह ग्रंथि कैसे छूटे? यह समझ में नहीं आता। हाँ तब भले ही यह ग्रंथि छूट जाय, जब प्रभु ऐसा संयोग कर दें।

जब आनंदकंद सद्गुरूदेव भगवान विष्णु की कृपा से हृदय में सात्विक श्रद्धा रूपी गाय आ बसे और वह तप, सेवा, व्रत, सद् व्यवहार, संयम, नियम जो भी वेद ने कहे हें उन सब हरी घास को चरे तब भाव रूपी बच्चा पैदा हो और उसे पन्हावे। तत्पश्चात निवृत्ति रूपी नाई बाँधकर विश्वास रूपी पात्र में, अपने निर्मल मन को जो अपना दास हो वह अहीर-ग्वाला गाय को दूहे।

हे भाई! मानव के परम धर्म रूपी इस दूध को दूहकर निष्काम रूपी अग्नि से अवटावे। उसे संतोष और क्षमा रूपी वायु से ठंडा करके धैर्य का जामन लगाकर जमावे। उस दही को विवेक रूपी मथानी से प्रसन्न होकर मथे किंतु उस विवेक रूपी मथानी को भी इंद्रियों के दमन रूपी आधार से सत्य और उत्तम वाणी रूपी रस्सी से बाँधें तब मथकर विमल वैराग निर्मल पवित्र मक्खन निकाल ले।

नाम के जप यज्ञ-योगाग्नि में शुभ-अशुभ कर्मों को जलाकर उस अग्नि में बुद्धि द्वारा ज्ञान रूपी घृत पकावे, जब मन की ममता रूपी मल जल जाए।

ज्ञान और भक्ति की अकथ कहानी

तब विज्ञान का निरूपण करने वाली बुद्धि उत्तम घृत पाकर चित रूपी दीपक में भरकर समता रूपी दियट पर रखे। तीन अवस्थाएँ, तीन गुणों को कपास से काढ़कर तुरिया रूपी रूई को लेकर संवार कर गाढ़ी बत्ती बनाएँ। 'जागृत स्वप्न और सुसुप्ति ये तीन अवस्था हैं तथा सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ये तीन गुण हैं।'

इस प्रकार ज्ञानमयी तेज का भंडार दीपक तैयार करें जिसके निकट जाते ही मद आदि जितने भी विकार हैं सब जलकर भस्म हो जाते हैं।

जैसा प्रभु का नाम है और परम ब्रह्म में चित्त की वृत्तियों को अखंड रूप से स्थित करे तब दीपक की शिखा से परम ज्योति प्रचण्ड रूप से प्रगट होगी। आत्मा का अनुभव और हंस का स्वरूप विभु का रूप प्रकार में दिखाई देगा। तभी सब जन्म मरण के मूल-भेद, भ्रम सब मिट जाऐंगे। जो अपार हैं। तत्पश्चात् वह बुद्धि उस प्रकाश स्वरूप को पाकर उसमें प्रभु का ध्यान कर, अपने हृदय में बैठाकर भव बंधन रूपी माया की गांठ से मुक्त होगी। नहीं तो विषयों में ही भटकती रहेगी।

उस ग्रथि के छोड़ सकने पर ही यह जीव कृतार्थ होता है तभी यह अपनी करनी में सफल होता है। परंतु हे गरुड़ जी! जब यह पता माया को लगता है कि यह बंधन से छूट रहा है तो वह अनेकों विघ्न करने लग जाती है। हे भाई! वह माया को भेजकर बुद्धि को लोभ दिखाती है और अपनी वाणी के बल पर छल करके पास जाकर अपने अंचल की वायु से दीपक को बुझा देती है।

दीपक बुझ जाने के पश्चात् जीव नाना प्रकार के जन्म-मरण के क्लेश पाता है। हे गरुड़ जी! भगवान विष्णु की माया अति अपार है इससे कोई पार नहीं पा सकता।

यदि वह बुद्धिमान-चतुर हो माया को देखना ही अपना अनहित जाने और माया की सभी बाधाओं से बच जाए तो भी देवगण उपाधि करते हैं और इंद्रियों के देवता इंद्रियों में थाना बनाकर बैठे हैं जैसे ही विषयों की वायु आती है तो हठ से कपाट खोल देते हैं। उसका ज्ञान रूपी दीपक बुझ जाता है।

भक्ति हीन ज्ञान से मुक्ति पाना अति दुर्लभ

जब वह विषय रूपी पवन हृदय रूपी घर में आती है तब विज्ञानी के उस दीप को बुझा देती है तब ग्रंथी नहीं छूटती और प्रकाश भी छिप जाता है। तब विषयों की पवन से बुद्धि बेचैन हो जाती है। इंद्रियों के देवताओं को ज्ञान अच्छा नहीं लगता। देवताओं को विषय भोगों में ही सदा प्रीति रहती है और विषय बुद्धि को बौरा देते हैं। अब फिर पहले की भाँति दुबारा उस दीपक को कौन जलाए।

जिसका वर्णन करना भी कठिन है, समझना भी कठिन है और उसका विवेक भी कठिन है। यदि कोई शब्द विवेक और न्याय में भी निपुण हो तो उसके लिए भी अनेकों समस्याएँ हैं।

ज्ञान का मार्ग तलवार की धार है, हे गरुड़ जी! इसमें गिरते देर नहीं लगती। जो सांसारिक बंधनों एवं बाधाओं से निर्विघ्न रह कर उस मार्ग से पार हो जाए तब एकमात्र उस परम पद को प्राप्त कर सकता है। किंतु संत, पुराण और वेद शास्त्र ऐसा कहते हैं कि परम पद जो अति दुर्लभ है वह प्रभु की सेवा-भक्ति से, बिना इच्छा भी मिल जाता है प्रभु का भजना ही मुक्ति है।

जिस प्रकार स्थल के बिना जल नहीं रह सकता चाहे कोई करोड़ों उपाय करे । उसी प्रकार हे गरुड़ जी! बिना हरि भक्ति के मोक्ष, सुख नहीं रह सकता। ऐसा विचार कर जो भगवान विष्णु के भक्त हैं। वे बुद्धिमान मुक्ति न चाहकर प्रभु की सेवा- भक्ति चाहते हैं। मोक्ष की दाता परम सुख को देने वाली भक्ति जो सरल है उसे ऐसा कौन मूढ़ होगा? जिसे अच्छी न लगे।

हे गरुड़ जी! विचारकर देखिए! वैराग्य रूपी ढाल और ज्ञान रूपी तलवार से जो लोभ, मोह-मद आदि शत्रुओं पर विजय पाती है, वह भगवान विष्णु की ही सेवा भक्ति है।

यह ज्ञान का सिद्धांत मैंने समझाकर कहा है, अब भक्ति मणि की प्रभुताई सुनो! सुंदर चिंतामणि प्रभु की भक्ति जिसके हृदय में वह चिंतन करने योग्य परम प्रकाश

है जिसके लिए दीया, घी और बत्ती की आवश्यकता नहीं है। प्रभु की सेवा भक्ति के कारण उसके निकट मोह आदि दरिद्र नहीं जाते और लोभ रूपी पवन भी उसे नहीं बुझा सकती। वहाँ माया के परिवार की वश नहीं चलती।

प्रभु की भक्ति मणि जिसके हृदय में बसती है। उसका प्रबल अज्ञानांधकार मिट जाता है, मद आदि पतंगों का समुदाय हार जाता है और काम आदि दुष्ट उसके निकट नहीं आते। उस भक्त के हृदय में बड़े भयंकर मानसिक रोग नहीं व्यापते, जिन रोगों के बस में सभी जीव दुःखी हैं। जगत में वही चतुर शिरोमणि हैं जो उस मणि के लिए प्रयत्न करते हैं।

राम की भक्ति जो चिंतामणि है, वह जिसके हृदय में है उसे स्वप्न में भी दुःख नहीं होता। उसके लिए विष अमृत के समान और शत्रु मित्र के समान बन जाता है। उस मणि के बिना कोई भी सुख पा नहीं सकता। यद्यपि उसके मिलने के सुगम उपाय हैं परन्तु मानव बड़ा ही अभागा है। जो अपनी हठता के कारण वंचित रह जाता है।

हे गरुड़ जी! सेवक सेवा में रहते हुए भी सेवा के भाव के बिना भवसागर से तर नहीं सकता। अतः यह सिद्धांत विचार कर कि प्रभु कि सेवा भक्ति के बिना कल्याण नहीं है, प्रभु के चरणों की सेवा भक्ति करो। ।।दो॰- ५३२।।

वह बिना प्रभु के दास जिन्हें संत कहा जाता है उसके बिना नहीं मिलती। राम ऐसे हैं जैसे समुद्र और संत बादल के समान हैं।

हे प्रभु! गरुड़ जी! मेरे मन में ऐसा विश्वास है कि राम से अधिक राम का दास है क्योंकि सब शुभ कर्मों का फल- जो राम की भक्ति है जिस प्रकार बादल समुद्र से लेकर जल का खारापन चूसकर वर्षा करते हैं उसी प्रकार प्रभु की कृपा से ज्ञान भक्ति पाकर दूसरों को प्रेम सहित कृपा प्रसाद बाँटते हैं। अर्थात् सद्गुरुदेव आनंदकंद भगवान विष्णु चंदन के समान हैं और संत जन वायु के समान हैं। संत जन प्रभु से नाम रूपी सुगंध लेकर दूसरों को सुंघाते हैं। जिसे सूंघकर भक्त चंदन तक पहुँच जाता है और उसे सूघ कर सुगंधि द्वारा पहचान लेता है। ऐसा विचारकर जो संतों का संग करते हैं, हे गरुड़ जी! उन्हें भगवान की भक्ति सुलभ है।

कवियों ने संत का हृदय माखन के समान कहा, किंतु कहना नहीं जाना क्योंकि मक्खन अपने ही ताप से पिघलता है परंतु संतजनों का हृदय दूसरों के दुख की तपन से पिघल जाता है संतजन दूसरों के हित के लिए ही कष्ट सहन करते हैं। असंत अभागे हैं जो अपने तनिक लोभ के कारण दूसरों को दुःख देने का कारण बनते हैं। संत भोजपत्र के समान हैं जो दूसरों के हित के लिए सदैव विपत्तियाँ सहन करते रहते हैं। दूसरों के कल्याण के लिए दिन रात बेचैन रहते हैं और प्रभु के दर्शनों का आनंद छोड़ भक्तों को सत्संग सुनाने जाते रहते हैं।

गरुड़ के सात प्रश्न

ब्रह्म दूध रूपी अमृत का समुद्र है उसमें ज्ञानामृत रूपी मंदराचल पर्वत प्रभु का नाम है और संतजन ही देवता हैं जो अमृत बाल रूपी समुद्र को नाम रूपी मंद्राचल पर्वत के द्वारा मथकर कथा रूपी अमृत निकालते हैं जिसे रामकथा या रामचरितमानस कहते हैं जिसमें भक्ति मणि की मधुरता है। ।।दो०- ५३३।।

वेद और पुराण पवित्र पर्वतों के समान हैं और उन पर्वतों में राम की भाँति-भाँति की कथाएँ ऐसी हैं जैसे वन की शोभा। उन पर्वतों में भक्ति मणि की खान भी है किन्तु हे गरुड़ जी! जो मर्मी संत जन हैं। जिनके पास उत्तम बुद्धि रूपी कुदारी हो, ज्ञान वैराग्र के दो नेत्र हों और वे भाव सहित खोजें तब सर्व सुखों की खान प्रभु की भक्ति मणि मिल सकती है। इस कलियुग के भयंकर समय में जबकि कलियुग और यमराज के दूत एड़ी से चोटी तक का जोर लगाकर भक्तों को भगवान विष्णु की भक्ति के सिवाय अन्य-योग, यज्ञ, जप, पूजा, व्रत और तप आदि सभी साधन निष्फल हैं।

तब गरुड़ जी प्रेम सहित बोले किहे नाथ! आपका मुझ पर जो कृपा भाव है तो हे प्रभु! मुझे अपना सेवक जानकर मेरे सात प्रश्नों का वर्णन करके समझाइए। हे नाथ! धीर बुद्धि हे नाथ! आप पहले यह बताइए कि सबसे दुर्लभ कौन-सा शरीर है? सबसे बड़ा सुख और सबसे बड़ा दुख कौन-सा है? यह सब संक्षेप में ही विचार कर कहिए!

आप संत और असंत का मर्म जानते हो, उनके सहज स्वभाव का वर्णन कीजिए। कौन-सा विशाल पुण्य वेद में विदित है। कौन सा पाप विकराल है? मानस रोग भी आप समझाकर कहिए? हे नाथ! आप सर्वज्ञ हो, आपकी मुझ पर बड़ी कृपा है। तब भुसुण्डि जी बोले हे तात! तुम आदर सहित अति प्रेम से सुनो! मैं यह नीति संक्षेप में कहता हूँ।

मनुष्य तन के समान कोई भी देह नहीं है जिसकी चर और अचर सभी जीव याचना करते हैं। यह मानव तन नर्क, स्वर्ग और अपवर्ग की सीढ़ी है और इसी शरीर में ज्ञान, वैराग्य, भक्ति का सुख मिलता है ऐसा मनुष्य तन पाकर जो प्रभु का भजन नहीं करते वे विषयों में लीन प्राणी नीच से भी नीच हैं। वे मानव तन रूपी पारस मणि हाथ से गिराकर काँच के टुकड़ों को चुगते फिरते हैं।

जो चेतना जीव को जड़ जीव बना देते हैं और जड़ अर्थात् अचल को चलता फिरता चेतन बनाते हैं ऐसे प्रभु आनंदकंद भगवान को जो भजते हैं वे धन्य हैं। ।।दो॰- ५३४।।

जगत में दरिद्रता के समान दूसरा दुःख नहीं और संत मिलने के समान कोई सुख नहीं है। संतों का प्रगट होना सदैव सुख का कारण है। जिस प्रकार चंद्रमा विश्व को सुख देता हैं संतों की संगति संसार में बड़ी दुर्लभ है यदि एक पल के लिए भी मिल जाए।

मन से तन से और वचन से साधु की सेवा करना ही एक मात्र पुण्य है इसके अतिरिक्त दूसरा पुण्य जगत में नहीं है। जो कपट को त्यागकर सेवा करते हैं उन पर सभी मुनि और संत दया करते हैं किंतु वही द्विज सेवा कराने का अधिकारी है जो सद्‌गुरुदेव की सेवा करता हो, प्रेम हो, नीति युक्त हो। संतों पर उपकार करना ही सहज स्वभाव है, हे गरुड़ जी! वे मन वचन और तन से सदा उपकार में रत रहते हैं।

हे गरुड़ जी! दूसरों की निंदा करने के समान बड़ा भारी पाप दूसरा नहीं है। यह वेद में भी विदित है। जो सद्‌गुरुदेव आनंदकंद भगवान श्री विष्णु की निंदा करते हैं वे सहस्रों जन्मों तक मेढ़क का तन पाते हैं। जो संतों की निंदा करते हैं वे उल्लू का जन्म पाते हैं। जिन्हें माया-मोहरूपी रात्रि प्यारी है और ज्ञानरूपी सूर्य को देखना भी नहीं चाहते। जो सबकी निंदा करते हैं वे चमगादड़ का तन पाते हैं।

हे तात! गरुड़ जी! अब मानसिक रोग सुनिएजिनसे सभी लोग दुःख पाते हैं। सबसे अधिक मोह ही सब व्याधियों का मूल है, जिससे अनेकों प्रकार के दुख उत्पन्न होते हैं। अनेक प्रकार की कामना ही वायु के रोग हैं, अपार लोभ ही कफ की जैसी बीमारी है और क्रोध पित्त की भाँति छाती जलाता रहता है। ये तीनों काम, क्रोध और लोभ यदि प्रीति कर लेते हैं तो महान दुःखदाई सन्निपात उत्पन्न हो जाता है।

संसार के अनेकों विषयों की अनेकों कामनाएँ हैं, वे भाँति-भाँति के शूल अति दुखदाई है, जिनके नाम कहाँ तक कहे जाएँ? उनका अंत पाना कठिन है। ममता-दाद के खाज की भाँति दुखदायी है, ईर्ष्या करना कंडुरोग है और हर्ष-विषाद बहुत से कठिन रोग हैं। दूसरों के सुख को देखकर जो जलन होती है वह छई-छाजन का रोग है और मन में दुष्टता एवं कुटिलता ही कुष्ट रोग है। अहंकार ही डमरुआ रोग है और दंभ, कपट, मद और मान ही नहरूआ रोग है जो बढ़ता ही रहता है पर दिखाई नहीं देता।

तृष्णा बड़ा भारी जलोदर रोग है, त्रिविध ईर्ष्या प्रबल तिजारी है। द्वेष और अविवेक बहु प्रकार के ज्वर हैं, कहाँ तक कहूँ अनेकों बुरे रोग हैं। इसी प्रकार जगत में सभी जीव रोगी हैं। शोक, हर्ष, भय, प्रीति, वियोग, अनेक रोग हैं, जिनमें से कुछ मैंने कहे हैं। ये रोग सबको है पर जान कोई ही पाते हैं।

इनमें से एक व्याधि के वश होकर भी मानव मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। ये तो महा असाध्य बहुत-सी व्याधियाँ हैं। ये सदैव जीव को दुःख देती हैं तो वह समान भाव को कैसे प्राप्त होगा? कैसे उसके प्राण और अपान समान होकर ध्यान लगेगा? कैसे समाधि से शरीर त्यागकर परमगति, परमधाम पाएगा। ॥दो॰- ५३५॥

जानने से ये पाप कुछ कम तो हो जाते हैं पर इनका नाश नहीं होता। ये बड़े दुःखदायी हैं, जब भी विषयों का अंकुर पाते हैं तो मनुष्य बेचारे क्या करें ये, तो मुनियों के हृदय में भी उत्पन्न हो जाते हैं। हे गोस्वामी, गरुड़ जी! इस मन को तभी रोगों से मुक्त हुआ जानिए जब हृदय में विषयों से घृणा और प्रभु के चरणों में प्रेम उत्पन्न हो जाए। जब प्रेम की प्रबलता से विषयों की आशा दुर्बल हो जाए और नित्य प्रतिदिन उत्तम बुद्धि रूपी क्षुधा बढ़ती रहे।

तब उस उत्तम बुद्धि रूपी क्षुधा को ज्ञानामृत पिलाकर उसी में गोता लगावे तब भक्ति मणि हृदय में समावे। शिव जी, ब्रह्मा, सुकदेव, नारद और सनक आदि जितने भी मुनि विज्ञान के विशारद हैं, उन सबका मत यही है कि राम के चरण कमलों में प्रेम करो। वेद, पुराण और सभी सद्ग्रंथ कहते हैं कि आनंदकंद सच्चिदानंद प्रभु की भक्ति के बिना सुख नहीं है।

चाहे कितने ही नेम, व्रत, धर्म, आचार तप, योग, यज्ञ, जप, दान आदि औषध कर ले परंतु रोग तो भगवान विष्णु को जानकर उनकी सेवा भक्ति से ही जाऐंगे। ॥दो॰- ५३६॥

भगवान राम की कृपा से सभी रोगों का नाश हो सकता है जो इस प्रकार का संयोग बन जाए! वैद्यरूपी सद्गुरूदेव भगवान आनंदकंद कृपासिंधु के वचनों में विश्वास और प्रेम हो किंतु यहाँ विषयों की आशा न हो और प्रभु की भक्ति रूपी सजीवन बूटी का सेवन करे, वह भी प्रेम और श्रद्धा के साथ। इस प्रकार से भले ही मन के सब रोग मिट जाएँ, नहीं तो करोड़ों उपाय से भी नहीं मिटेंगे।

भले ही कछुवे की पीठ पर केश उग जावे, बांझ स्त्री का पुत्र किसी को मार दे और आकाश में अनेकों प्रकार के फूल फूलने लगें परंतु जीव भगवान विष्णु के प्रतिकूल रहकर कभी भी सुख नहीं पा सकता! भले ही हिमालय से अग्नि प्रगट हो जाए और अंधकार सूर्य को नष्ट कर दे प्रभु से विमुख रहकर कोई भी सुखी नहीं हो सकता।

जल के मथने से घी, पेरने से तेल भले ही निकल आए परंतु आनंदकंद सद्गुरुदेव भगवान विष्णु के बिना भवसागर से कोई पार नहीं पा सकता। यह सिद्धांत अटल है। ॥दो॰- ५३७॥

जिसकी महिमा वेद पुराण एवं संत जन गाते हैं उस सद्गुरूदेव आनंदकंद भगवान विष्णु की भक्ति के समान लाभ क्या कोई दूसरा हो सकता है? हे भाई! इस जगत में इसके समान भी क्या कोई हानि है जो मानव तन पाकर भजन न करे? चुगली करके दूसरों को नीचा दिखाने के समान भी क्या कोई पाप है? भगवान विष्णु को जानकर दूसरों पर दया करने के समान भी क्या कोई धर्म है? जो सभी का हित चाहता है, वह क्या कभी दुःखी हो सकता है? जिसके पास परसमणि हो वह क्या कभी दरिद्र हो सकता है?

परमात्मा को जानकर उसके नाम में लीन होने वाले क्या कभी भवसागर में पड़ सकते हें? धर्म-नीति के जाने बिना राज क्या राज्य है? क्या? भगवान विष्णु के गुण गाने से भी पाप रह सकते हैं? क्या बिना पुण्य किये पावन यश और बिना पाप किये अपयश होता है? सद्गुरू भगवान विष्णु के दास-संतजनों का अनहित करने पर बंश रह सकता है? जिसने अपने को और परमेश्वर के स्वरूप को जान लिया, तो क्या वह अपनी इच्छा से कर्म कर सकता है? नहीं। उसके सभी कर्म निष्काम होने से वह अकर्ता है। उसे शुभ और अशुभ कर्म नहीं बाँधते।

जब तक बुद्धि के विचारों में द्वैत अर्थात् भिन्नता नहीं होती तब तक क्रोध नहीं होता और विचारों में भिन्नता बिना अज्ञान के नहीं होती। जो माया के वश है, बुद्धि के हीन हैं ऐसे संत कहलाने वाले, असंत भी क्या ईश्वर या सद्गुरु हो सकते हैं? कभी नहीं हो सकते। परम प्रभु की दया दृष्टि से मच्छर भी ब्रह्मा बन सकता है और बिना प्रभु की भक्ति के ब्रह्मा भी मच्छर बन जाता है। मच्छर से भी नीच बन जाता है ऐसा विचार कर, सब संशय त्यागकर बुद्धिमान चतुर संत जन प्रभु की सेवा भक्ति करके सभी प्रकार से भजते हैं। ॥दो०- ५३८-५३९॥

हे नाथ! आनंदकंद भगवान विष्णु के गुणों का वर्णन जो उपमा रहित है, मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार कहीं विस्तार से और कहीं संक्षेप में वर्णन किए हैं। हे गरुड़ जी! यही वेद का सिद्धांत है कि सब कामनाओं को त्यागकर प्रभु को भजो। सूर्य बंश रघुकुल के स्वामी आनंदकंद सच्चिदानंद प्रभु को छोड़ और किसकी सेवा भक्ति की जाए? जिसकी मुझ जैसे दुष्ट पर भी ममता है। हे गरुड़ जी! आप विज्ञानरूप हैं, आपको मोह नहीं है, यह तो मुझ पर मेरे प्रभु ने अति कृपा की है। जो मैंने इस बहाने आपके दर्शन किये और आपने दर्शन देने का कष्ट किया।

जो कि आपने मुझसे यह रामचरित मानस-कथा पूछी है जो मुनि सनक आदि और शिव जी को प्रिय लगने वाली है। हे गरुड़ जी! अपने हृदय में विचारिए कि क्या मैं प्रभु के भजन का अधिकारी था? जो कौआ जैसा सकुन बताने वाला चतुर और कांय-कांय

करने वाला अधम एवं सभी तरह से अपवित्र था परंतु प्रभु ने मुझे जगत में पावन प्रसिद्ध कर दिया। हे तात मैंने तुम्हारे सब प्रश्न कहे हैं, प्रभु की भक्ति के गुण बहुत हैं और महिमा अति भारी है।

यद्यपि मैं सब प्रकार से हीन हूँ तो भी आज मैं धन्य हूँ, और अति ही धन्य हूँ, जो प्रभु ने मुझे अपना निज जन जानकर संत समागम दिया है। हे गरुड़ जी! मैंने यथा शक्ति जो कुछ भी वर्णन किया है उसमें कुछ छिपाकर नहीं रखा। प्रभु के गुणों का भंडार समुद्र है जिसकी थाह कोई नहीं पा सकता।

प्रभु के गुण समूहों का स्मरण करके महामुनि भुसुण्डि जी बार-बार प्रसन्न हो रहे हैं। जिस प्रभु की महिमा वेद ने इस प्रकार गाई है। जिसका कल्पांत में भी अंत नहीं होता, जिसका तेज अतुलनीय है और प्रताप एवं प्रभुता अपार है। जिस प्रभु के चरण भगवान शिव, ब्रह्मा द्वारा सेवित हैं। जो सभी प्रकार से परम पूजनीय हैं। उस प्रभु की कृपा मुझ पर होना उनकी बड़ी दयालुता है। मैंने प्रभु जैसा स्वभाव न कहीं देखा है और न कहीं सुना ही है। मैं प्रभु के समान किसी को भी नहीं देख रहा हूँ।

साधक, सिद्ध, विमुक्त, विरक्त, कवि-विद्वान कर्म के ज्ञाता, सन्यासी, योगेश्वर, तपस्वी, ज्ञानी, धर्म परायण, पंडित और विज्ञानी- ये कोई भी मेरे स्वामी सद्गुरूदेव श्री आनंदकंद सच्चिदानंद भगवान की सेवा के बिना नहीं तर सकते। मैं राम को बार-बार प्रणाम करता हूँ। जिनकी शरण में आने पर मुझ जैसे पापी भी साधना में सिद्ध होकर प्रणाम करने योग्य और अविनाशी हो गए।

प्रभु की कृपा से संत समागम

जिस प्रभु का हंस नाम मरण रूपी रोग की औषध है और तीनों प्रकार के भयंकर तापों को हरणे वाला है। वह कृपा सिंधु आनंदकंद सद्गुरुदेव भगवान तुम पर और मुझ पर सदा प्रसन्न रहें।

गरुड़ जी बोलेहे तात! प्रभु की भक्ति रस में सनी हुई है आपकी वाणी सुनकर मैं कृत कृत्य हो गया हूँ। प्रभु के चरणों में नया प्रेम उत्पन्न हुआ है और

माया जनित सारी विपत्तियाँ नष्ट हो गई हैं। हे नाथ! मोह रूपी समुद्र से पार पाने के लिए आप नौका बने और मुझे भाँति-भाँति के सुख दिये। मुझ से आप के उपकारों का प्रति उपकार नहीं हो सकता, मैं आपके चरणों की बार-बार वंदना करता हूँ।

हे तात! तुम्हारे समान कोई भाग्यशाली नहीं है, आप पूरण काम हैं, प्रभु के चरणों के प्रेमी हैं संत, वृक्ष, नदी, पर्वत, पृथ्वी, इन सब की करनी दूसरों के हित के लिए ही होती है। आज मेरा जन्म, जीवन सफल हो गया जो आपके कृपा प्रसाद से मेरा सब संशय मिट गया। हे पार्वती! गरुड़ जी बार-बार यही कहते हैं कि मुझे सदा अपना दास समझना।

भुसुण्डि जी के चरणों में प्रेम सहित सिर नवाकर और हृदय में प्रभु को धारण करके धीरबुद्धि गरुड़ जी बैकुण्ठ को चले गए।

रामचरित मानस के श्रवण का प्रभाव

हे पार्वती! संत समागम के समान दूसरा कोई लाभ नहीं है, वह बिना हरि की कृपा के हो नहीं सकता ऐसा वेद, पुराण कहते हैं।

हे पार्वती! मैंने यह परम पवित्र इतिहास कहा हैजिसके कानों से सुनते ही भवसागर का बंधन छूट जाता है। जहाँ तक भी, जितने भी साधन वेद ने वर्णन किये हैं। सबका फल प्रभु की भक्ति है। जिसे प्रभु की कृपा से ही पाया है। उस संत का जन्म धन्य है जिसमें प्रभु की भक्ति है और वह घड़ी भी धन्य है जब सत्संग हो। प्रभु की कृपा के वही अधिकारी हैं जिन्हें सत्संग प्यारा है।

हे पार्वती! मैंने यह कथा अपनी बुद्धि के अनुसार कही है। यद्यपि पहले यह तुम से गुप्त करके रखी थी। हे पार्वती! यह कथा जो मैंने कही है यह कलि के मल को नष्ट करके मन के मैल को धोती है। यह तेरी प्रीति देखकर सुनाई है। उनके लिए यह कथा विशेष सुखदाई है जिनको प्रभु प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं।

हे पार्वती! वही कुल धन्य है, जगत में पूज्य और पवित्र है जिसमें ऐसा मनुष्य उत्पन्न हो जो नम्र स्वभाव का हो और प्रभु की आज्ञानुसार सेवा भक्ति में लगा रहे। जो प्रभु के चरण कमलों में प्रेम चाहे और निर्वाण पद चाहता हो तो इस कथा को भाव सहित सुने। मुनियों को भी दुर्लभ जो भक्ति है वह बिना ही परिश्रम के पाऐंगे जो यह कथा निरंतर विश्वास मानकर सुनेंगे।

प्रभु की भक्ति-जिसे वेद ने गाया है वह भक्ति भगवान की कृपा से ही किसी एक को मिलती है। वही सर्वज्ञ है, वही गुणी, ज्ञाता, पृथ्वी का भूषण और दाता हैं वही कुल भी धर्म परायण है और कुल का उद्धार करता है जो प्रभु के चरणों में लीन है। वह नीति में परम चतुर है और वेद का सिद्धांत भी भली भाँति उसी ने जाना है।

वही ज्ञानी और विज्ञानी है तथा रण में धीरता पूर्वक विजय पाने वाला भी वही वीर है, जो काम क्रोध आदि लोभ और मोह को जीतकर, छल छोड़कर प्रभु का भजन और भक्ति करता है। यह राम कथा जन्म-मरण के रोगों को नष्ट करने के लिए सजीवन बूटी है। जिसकी वेद भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। प्रभु की सब कथाएँ श्री माता पार्वती जी को जो सर्व मंगल मई मंगलों की दाता हैं बड़ी अच्छी लगीं, वे सुंदर सुहावने वचन बोलींहे नाथ! आपकी असीम कृपा से मेरा सब संदेह चला गया और प्रभु के चरण कमलों में नया प्रेम उत्पन्न हुआ है।

हे प्रभु! हे विश्व के ईश्वर! मेरे नाथ! अब मैं आपकी कृपा के प्रसाद से धन्य-धन्य हो गई, मेरे सारे कर्तव्य सफल हो गए। प्रभु की भक्ति उत्पन्न हुई और उसमें दृढ़ प्रेम हो गया, जिससे मेरे सभी कलेश मिट गए।

शंभु कृत 'रामचरित मानस' के रचयिता'गोस्वामी संत तुलसीदास जी' कहते हैं कियह पवित्र शंभु-उमा संवाद सुख उत्पन्न करने वाला, दुःखों को नष्ट करने वाला है। यह सज्जनों को, महात्माओं को और भक्तों को आनंद का दाता और अति ही प्यारा है। यह सुहावना परम पवित्र रामचरित मैंने भगवान शिव जी के कृपा प्रसाद से भाषा की कविता में गाया है।

स्तुति अष्टपदी

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालं। गुणागार-संसार-पारं नतोऽहम्।
तुषाराद्रिसंकाशागौरं गंभीरं। मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।
प्रचंड प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्ड अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रिधा-शूल-निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी। सदासज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।
न यावत् उमानाथपदारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताविधवासम्।
न जानामि योगं जपं नैव पूजा। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम!।
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।

महात्मा सर्वाज्ञानन्द